"रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ. मुहम्मद इक़बाल के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन"

पी. एच. डी. के लिये प्रस्तुत शोध प्रबंध

हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय (हिंदी विभाग)

हैदराबाद

1991

प्रस्तुत कर्ता

सालेहा उस्मानी

निर्देशक

प्रो. विजेन्द्र नारायण सिंह

एम. ए, डीलिट (हिन्दी)

निर्देशक

प्रो. मुजाविर हुसैन रिज़वी

एम.ए.पी.एच.डी. (उर्दू)

अध्यक्ष

प्रो. वेंकट रमना राव

एम. ए. (तेलुगु), एम. ए. पी. एच. डी. (हिंदी)

C E R T I F I C A T E

This is to certify that the thesis entitled "Comparative study of Ramdhari Singh Dinkar and Dr. Mohammed Iqbal's thoughts" submitted by Mrs. Saleha Usmani, Research Scholar of the Hindi Department of Hyderabad Central University for the Degree of Ph.D., has been prepared under my supervision. This is her original work, and this or any part thereof has not been submitted to any other University.

Date :

SUPERVISOR.

Bijendra Narain Sinha
SUPERVISOR. 5/10/1991

Dean,
School of Humanities,
University of Hyderabad,
HYDERABAD-500 134.
9.10.91

विषय सूची

		पृ. सं.
भूमिका :		7
	प्रथम अध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
क.	रामधारी सिंह दिनकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व	9
1	- जीवन परिचय	10
2	- बचपन	11
3	- शिक्षा और नौकरी	12
4	- संस्कार	13
5	- वेशभूषा	14
6	- प्राभावित परिस्थितियाँ - राजनैतिक, समाजिक धार्मिक एवं साहित्यिक	15
7	- मृत्यु	23
8	- रचनाओं का परिचय	23
9	- सम्मान	30
ख.	डॉ. इकबाल "व्यक्तित्व एवं कृतित्व"	32
1	- जीवन परिचय	33
2	- बचपन	35
3	- सय्यदमीर हसनएवं सय्यद अहमद खाँ	37
4	- शिक्षा	42
5	- लाहौर में शिक्षा	44

पृ. सं.

6 - नौकरी तथा शोध 45
7 - योरोप में निवास 48
8 - रोजगार 49
9 - निजि जीवन 50
10 - रचनात्मक चमत्कार 52
11 - सर की उपाधि 55
12 - दक्षिण भारत की यात्रा 57
13 - मुस्लिम प्रांत का सुझाव 57
14 - गोलमेज़ कांफ्रेंस 58
15 - अफ़गानिस्तान की यात्रा 59
16 - बिमारी तथा मृत्यु 60

अध्याय दो:

रामधारी सिंह दिनकर और
डॉ. इकबाल की राष्ट्रीय भावना
का तुलनात्मक अध्ययन 64

1 - मातृभूमि से प्रेम 70
2 - हिमालय के प्रति दोनों कवियों की भावना 71
3 - देश का गुण गान 74

पृ. सं.

4 – प्रकृति चित्रण 82
5 – वर्तमान दुर्दशा का चित्रण 96
6 – एकता की भावना 106
7 – कष्ट सहन और बलिदान 115
8 – ब्रिटिश शासकों के प्रति विद्रोह की भावना 119
9 – स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा 123
10 – देश के लोक नायकों के गुण गान 129

अध्यय तीन:

रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ॰ इकबाल
की क्रांतिकारी भावना
तुलनात्मक अध्ययन 137

1 – राजनैतिक क्रांति 139

–सम्राज्यवाद एवं ब्रिटिश
शासक का विरोध

पृ.सं.

2 - समाजिक क्रान्ति - क समाज की शोषित गरीब जनता की अभावग्रस्त अवस्था का चित्रण

ख मजदूरों किसानों में नवजागरण पैदा करना 149

ग आर्थिक समानता की माँग 170

3 - धार्मिक क्रान्ति - क कर्मवाद की स्थापना योग्यवाद का खंडन 175

ख मानवतावाद की स्थापना 179

अध्याय चार - रामधारीसिंह दिनकर एवं डॉ. इकबाल के काव्य में ब्रह्म जगत एवं मनुष्य सम्बन्ध दृष्टि कोण 185

1 - ईश्वर के बारे में जानने की जिज्ञासा 186

2 - दिनकर जी के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप 188

3 - इकबाल के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप 190

4 - दिनकर जी के काव्य में ब्रह्म सम्बन्धी रहस्यवादी दृष्टिकोण 194

5 - डॉ. इकबाल के काव्य में ब्रह्म सम्बन्धी दृष्टिकोण 199

6 - आत्मा का परमात्मा में विलय 1-दिनकर जी के काव्य में 203

2-इकबाल के काव्य में 206

क. दिनकर जी और अल्लमा इकबाल के काव्य में जगत सम्बन्धी दृष्टिकोण 208

1 - दिनकर जी के काव्य में जगत और उसके क्षणभंगुरवादी दृष्टिकोण 208

2 - डॉ. इकबाल के काव्य में जगत और उसकी क्षणभंगुरवादी दृष्टिकोण 212

पृ. सं.

ख. डॉ. इकबाल और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धि दृष्टिकोण 215

1 - इकबाल के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धी दृष्टिकोण 215

2 - दिनकर जी के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धी दृष्टिकोण 222

अध्याय पाँच - रामधारी सिंह दिनकर और डॉ. इकबाल का जीवन दर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन 231

1 - जीवन की परिभाषा 233

2 - फ़िलसफ़े ख़ुदी/आत्म दर्शन 237

3 - निश्चित उद्देश्य 245

4 - संघर्ष शीलता 250

5 - संघर्ष शीलता का प्रतीक शाहीं 256

6 - कर्मवाद एक स्वभाव 259

7 - सम्पूर्ण मानव 268

8 - मानवतावादी जीवन दर्शन 288

9 - व्यक्तिगत और समिष्टिगत जीवन दर्शन 277

10 - यथार्थवादी जीवनदर्शन 293

अध्याय छः 307

1 - प्रेम का अर्थ 308

2 - दिनकर जी के काव्य में अध्यात्मिक प्रेम 310

3 - इकबाल की शायरी में अध्यात्मिक प्रेम 318

4 - बुद्धि और प्रेम - दिनकर जी के काव्य में 332

पृ. सं

5 - बुद्धि और प्रेम - इकबाल की काव्य में 335

6 - दिनकर जी और डॉ. इकबाल के काव्य में नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण 341

क. दिनकर जी के काव्य में नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण-मानव सृष्ट के विकास में नारी का योगदान, नारी माता का रूप, पत्नी का रूप, प्रेमिका का रूप 341

ख. इकबाल के काव्य में नारी मानव सृष्टि के विकास के नारी का योग दान नारी का माता का रूप, नारी का प्रेमिका का रूप। 351

उपसंहार 365

ग्रन्थ सुची 366

- - -

भूमिका

यूँ तो रामधारी सिंह दिनकर और डॉ॰ इकबाल पर अनगिनत पुस्तकें अलग अलग प्रकाशित हो चुकी है परन्तु रामधारीसिंह दिनकर और डॉ॰ इकबाल के विचारों को तुलना शायद मेरा प्रथम प्रयास है। यूँ तो दोनों कवियों के समय में काफी अन्तर है। दिनकर के जन्म के समय ही इकबाल सामान्य जनता में प्रसिद्ध हो चुके थे। लेकिन मैंने दोनों के विचारों में समानता को देखते हुये यह शोध ग्रन्थ लिखने का प्रयास किया है। दोनों ही कवियों का जीवन दर्शन कर्म का जीवन दर्शन है। जहाँ समानता होती है, वहाँ असमानता जैसा प्रश्न भी उठता है इसलिए मैंने जहाँ दोनों कवियों के पक्षों में समानता है उनको विशेष रूप से दृष्टि में रखा है। लेकिन जहाँ दोनों कवियों के विचारों में असमानता है उन पक्षों पर भी थोड़ा बहुत प्रकाश डाला है।

प्रथम अध्याय के मैंने दोनों कवियों का जीवन परिचय प्रस्तुत किया है लेकिन अलग प्रकार से दिनकरजी के जीवन परिचय मैंने शीर्षकों पर ध्यान दिया है जबकि इकबाल के जीवन परिचय में समय को ध्यान में रखा गया है, इकबाल के जन्म के पूर्व फिर जन्म और जन्म के बाद जैसे जैसे जो घटनाएँ उनके जीवन में घटित होती गयी उनको उसी क्रम में मैंने लिखा है।

दूसरे अध्याय में विभिन्न दृष्टियों से दोनों कवियों की राष्ट्रीय भावना की तुलना की गयी है, दिनकर जी तो राष्ट्र कवि थे ही । इकबाल के प्रारम्भिक काल में राष्ट्रीयता की गहरी छाप दिखायी देती है । इकबाल के विचारों में बाद में परिवर्तन आता है लेकिन मातृ भूमि से उन्हें सदैव प्रेम रहा। इन बातों को ध्यान में रखकर दोनों की राष्ट्रीय भावना में एकता के तत्व दिखायी दे ही जाते हैं।

तीसरे अध्याय में मैंने दोनों कवियों की क्रान्तिकारी भावना को तुलना की है मैंने देखा की दोनों कवियों पर काल मार्क्स के समाजवादी दर्शन का बहुत अधिक प्रभाव है और दोनों के विचारधारायें इस सम्बन्ध में एक सी है इसलिए मैंने इसे इस अध्याय में दोनों कवियों की क्रान्तिकारी भावना का तुलना की है।

चौथे अध्याय में मैंने दोनों कवियों के दर्शन को तुलना की है, दोनों ही कवियों के काव्य में जिज्ञासा के भावना पायी जाती है और उस जिज्ञासा कारण कवि मनुष्य, जगत, और ब्रह्म सम्बन्धि विचार कवि अपने काव्य में प्रस्तुत करता है और मैंने दोनों कवियों के इन्हीं विचारों अर्थात् मनुष्य जगत जीवन के बारे में विचारों की तुलनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत की है।

पाँचवां अध्याय मेरे शोध प्रबन्ध का मुख्य अध्याय है क्योंकि इस अध्याय में मैंने दोनों कवियों के जीवन दर्शन की तुलना तो विभिन्न दृष्टियों से की है साथ ही मैंने इकबाल के जीवन दर्शन का दिनकर जी पर क्या प्रभाव पड़ा इस पर भी इस अध्याय में विचार किया गया है।

छठा और अन्तिम अध्याय में मैंने दोनों के प्रेम सम्बन्धी भावना की तुलना की है और इस अध्याय में एकता के तत्त्व कम होते हुयी भी मैंने दोनों कवियों के अध्यात्मिक प्रेम को देखतेहुये यह अध्याय लिखने का प्रयास किया है।

मैंने जहाँ तक हो सका दोनों कवियों के विचारों की हर दृष्टि से तुलना इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत की है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शोध प्रबन्ध लिखने की प्रेरणा मुझे मेरे निर्देशक प्रो. विजेन्द्र नारायण सिंहजी ने दी और उन्हीं के कारण यह शोध प्रबन्ध मैं लिख पाया हूँ। मैं कहाँ तक इस शोध प्रबन्धन को लिखने में सफल हुयी स्वयं भी नहीं जानती।

Saleha Usmani

--सालेहा उस्मानी

प्रथम अध्याय

रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ० इक़बाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. जीवन परिचय
2. बचपन
3. शिक्षा और नौकरी
4. संस्कार
5. वेषभूषा
6. प्रभावित परिस्थितियाँ -
   राजनैतिक, सामाजिक - धार्मिक
   एवं साहित्यिक
7. मृत्यु
8. रचनाओं का परिचय
9. सम्मान

. . . . .
. . .
.

प्रथम अध्याय

रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ० इकबाल का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

रामधारी सिंह दिनकर

जीवन परिचय - कहा जाता है किकोई कवि यदि प्रेम का कवि है तो वह राष्ट्रीयता से दूर, दर्शन से दूर प्रेम में खोया रहता है, कल्पना की संसार ही उसका अपना संसार होता है, वह वर्तमान और भविष्य से बेखबर रहता है । परन्तु बीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी साहित्य ने एक ऐसे अनमोल रत्न को पाया जिसकी आत्मा एक तरफ प्रेम में रमती हुयी दिखायी देती है, तो दूसरी तरफ वह समाज की तरफ भी खिचता हुआ दिखायी देता है । समाज में फैले अत्याचार से वह क्षुब्ध हो, अपने आप को चारण और वैतालो कहने लगता है, तीसरी तरफ यही कवि एक दार्शनिक के रूप में भी हमारे सामने आता है, जो हमें जीवन का रहस्य बताता है जो हमें बताता है जीवन हार मान लेने का नाम नहीं है न ही भाग्य के सहारे बैठे

रहने का, जीवन नाम है संघर्ष का, कर्म का । जिस कवि के अन्दर एक साथ इतनी बहुत सारे गुणों का समावेश है उस कवि का नाम "रामधारी सिंह दिनकर" है । दिनकर जी का जन्म 30 सितम्बर, 1908 ई० में सिमारिया नामक गाँव में हुआ, सिमारिया पटना से लगभग 60 मील पूर्व गंगा के उत्तरी तट पर स्थित है, यह गाँव दो तरफ से नदियों से घिरा हुआ है । इसके दक्षिण में गंगा नदी तथा उत्तर में वाया बहती है । यह दोनों नदियाँ सिमरिया में ही मिलती हैं । सच कहा जाय तो सिमरिया और वहाँ के पीड़ित किसानों ने ही दिनकर की वाणी में तेज और क्षोभ भर दिया है । क्योंकि जिस समय दिनकर जी का जन्म हुआ सिमरिया के किसान अत्यन्त गरीब थे और उनके ऊपर जमींदारों द्वारा तरह तरह अत्याचार हो रहे थे, दिनकर जी के काव्य में इसी अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आवाज सुनाई देती है । दिनकर के राष्ट्रीय और क्रान्तिकारी काव्य का प्रेरणा श्रोत भी इनकी अपनी जन्म भूमि की पीड़ित और शोषित जनता थी जिसकी दयनीय दशा देखकर दिनकर का मन विद्रोह कर उठता था। दूसरी तरफ शायद इनके काव्य का प्रेम श्रोत भी सिमिरिया से ही निकलता दिखायी देता है । प्रकृति का सुन्दर वातावरण नदी के किनारे शाम का ढलता सूरज नदी से गागर भरी गाती सुन्दर युवतियाँ किसी भी कवि की भावनाओं को वाणी का स्वर दे सकती है ।

दिनकर जी के पिता साधारण किसान थे उनका स्वर्गवास उस समय हो गया जब दिनकर जी केवल दो वर्ष के थे उनके पिता का देहाँत हो गया उनका पालन पोषण और शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध उनकी विधवा माँ ने किया । कवि दिनकर का बचपन ग्रामीण वातावरण में सिमरिया में ही गुजरा जिसकी भूमि को गंगा न जाने कब से सींचती आ रही है, कवि ने बचपन से सिमरिया की दयनीय दशा को देखा है तो दूसरी ओर सिमरिया को हर्ष व उल्लास से सुसज्जित प्रकृति को देखा था । उन्होंने गाँवों में लहलहाते पौधे, सरसों के पीले पीले फूल और गंगा के कल कल बहती पानी

का आनन्द उठाया है जैसे को पहले ही कहा गया इन्होंने गाँव के किसानों के खाली खलिहान देखे जो किसानों का अच्छी उपज के बावजूद खाली हो जाते थे। किसानों के बच्चों को भूख से बिलखते देखा। इसी प्रकार किसानों की पत्नियों की भी दुर्दशा देखी।

स्वयं दिनकर जी ने भी बचपन में कठिनाई भी उठाई क्योंकि इनके पिता का जब स्वर्गवास हुआ दिनकरजी केवल दो साल के थे और यह पिता के प्यार से वंचित रहे इनकी माता जी ने काफी कठिनाइयाँ उठाकर इन्हें पाल पोस कर बड़ा किया।

शिक्षा-

दिनकर जी को बचपन से ही पढ़ने लिखने का बहुत शौक था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। (हाईस्कूल की परीक्षा इन्होंने मोम का घाट के हाई स्कूल से 1928 में पास की इंटर और बी ए इन्होंने पटना कालेज से 1932 में किया,) इन्होंने उस समय बी ए आनर्स किया जब कम ही लोग करते थे और ग्रेजुएट आनर को जल्दी नौकरी मिल जाती थी। वे गरीब परिवार के थे। माँ ने बे पेट काट कर बड़ी उम्मीदों और जतन से पाला था। इसलिएदिनकर जी की आर्थिक परिस्थितियाँ ठीक न थी। अत: माँ की इच्छा हुयी की यह नौकरी करके घर संभाल ले और दिनकर जी की आगे पढ़ाई की इच्छा परिस्थितियों का शिकार होकर रह गया जब इन्होंने नौकरी की तलाश शुरू की तब भी इन्हें काफी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी। उन दिनों भूमिहार लोगों का काफी प्रभाव सरकारी क्षेत्रों में था और इन लोगों के अच्छे अच्छे पद मिल जाया करते थे। क्योंकि दिनकर जी एक साधारण कृषक परिवार से संबंध रखते थे, इसलिए नौकरी के लिए इन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ी। इसलिए शुरू शुरू में इनको हाई स्कूल की हेडमास्टरी का पद स्वीकार करना पड़ालेकिन वहाँ के वातावरण आपस में एक दूसरे से चलती लड़ायी को देखकर दिनकर जी परेशान हो गये और इन्होंने इस पद से त्याग पत्र दे दिया और उसके बाद आपने सब रजिस्ट्रार का पद स्वीकार कर लिया यहाँ उनकी तनख्वाह काफी कम थी

अक्तूबर, 1934 से 1947 तक दिनकर जी सब रजिस्ट्रार के पद पर रहे। इन्ही दिनों इनके "रेणुका" के "हुंकार, रसवन्ती और द्वन्द्वगीत" आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हुये क्योंकि इन्होंने राष्ट्रीय और राजनैतिक कवितायें लिखी, जैसा की रेणु का को देखकर पता चलता है, उसमें किस प्रकार की विद्रोही कवितायें दिनकर जी ने लिखी है। इसलिये सरकार इन्हें सरकार विरोधी समझती थी, और नौकरी में इनके एक जगह से दूसरी जगह तबादले का सिलसिला चलता रहता था। 1942 में के आन्दोलन के समय इन को, पोस्टिंग जिस डिवीजन में थी वहां के ए डी ओ की हत्या कर दी गई जिससे सरकारी क्षेत्र में स्थिति ने काफी भयानक रूप धारण कर लिया था। सेना बुला ली गयी और निर्दयता पूर्वक दमन चक्र चला, यू इस दमन से दिनकर जी सुरक्षित रहे लेकिन इनके मन में विद्रोह की भावना पनपने लगी, इनका मन अपने देशवासियों की स्थिति देख कर क्षोभ और दुख से पागल सा हो जाता, उसके बाद जिस दूसरे डी एस पी की नियुक्ति हुयी उससे दिनकर जी का सम्बन्ध मित्रों के जैसा था। इसलिये बाद में कुछ दिन यह शान्त पूर्ण वातावरण में रहे। उन्होंने "उदयाचल" नामक संस्था की स्थापना की। कांग्रेस के शासन संभालने के बाद उन्हें प्रचार विभाग के डिप्टी डायरेक्टर बना दिया गया। दिनकर जी का मन नौकरी में नहीं लगता था, उन्होंने इस्तीफा भी देना चाहा परन्तु गवर्मेन्ट इन्हें छोड़ना नहीं चाहती थी। इसके बाद इनकी नियुक्ति मुजफ्फरपुर कालेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में हो गई, कालेज का वातावरण थोड़ा अच्छा था। वहां जाने के बाद दिनकर जी ने चैन की सांस ली। लेकिन 1952 में इन्होंने इस पद से भी त्याग पत्र दे दिया। उसके बाद यह राज्य सभा के पद पर सम्मानित रहे। इसके बाद 1964 में यह भागलपुर के उपकुलपति हो गये और राज्य सभा का पद छोड़ दिया। इन्होंने भारत सरकार के गृह विभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। संस्कार एवं सांस्कृतिक सरकारों से दिनकर जी में प्राचीनता और नवीनता दोनों का मिश्रण था जहां यह प्राचीन विचारों का खंडन करते दिखाई देते हैं।

जहाँ दिनकर जी की प्रवृत्ति में पुरानी संस्कृति का मोह भी दिखायी देता है। ये रीतिरिवाजों का पालन करते, शादी ब्याह, यज्ञ इत्यादि में यह क्रान्तिकारी कवि रूढ़िवाद से ग्रस्त था। साधु सन्तों पर यह काफी हद तक विश्वास करते थे। गृहस्थी के प्रति इन्हें बहुत मोह था। माता जी का यह बहुत प्यार करते थे। ईश्वर को पूजा पाठ इत्यादि में उनकी पूर्ण आस्था थी। विदेशों में भी वह प्रात: काल स्नान, ध्यान पूजा पाठ किये बगैर भी भोजन नहीं करते थे। वे भूत प्रेत ओझा स्यानों और सपनों पर भी विश्वास करते थे। भारतीय परम्परा के अनुसार उन्हें संयुक्त परिवार परम्परा पसन्द थी। वह अपने पुत्र और पौत्रियों के प्रति ही नहीं वरन अपने भाई भतीजो, बहन, भान्जो के प्रति भी अपने कर्तव्य को पालन करना अपना धर्म समझते थे। उन्होंने कभी भी अपने दायित्वों से मुख मोड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

उनके व्यक्तित्त्व इतना आकर्षक, मिलनसार और हँसमुख था कि वह जहाँ जाते सब पर छा जाते थे। उनके अनेकों मित्र थे प्रत्येक वर्ग उनको अपने बीच देखकर हर्ष का अनुभव करता था। यह अपने प्रत्येक मित्र को एकसा चाहते थे।

दिनकर जी वेदना में भी हँसते रहना जानते थे और अपनी वेदना जल्दी व्यक्त नहीं करते थे। वास्तव में आनन्द और उल्लास ही उनके व्यक्तित्त्व के अंग थे।

दिनकर जी राष्ट्र भाषा हिन्दी के समर्थक थे, वह स्वदेशी भाषा के परित्याग पर बल देते थे कवि के साथ साथ वह वक्ता भी थे। जब वह भाषण देते लोग मुग्ध होकर सुनते थे।

<u>वेषभूषा</u> - दिनकर जी सादा जीवन व्यतीत करते थे। वे खादी का साफ सुथरा कुर्ता और धोती पहनते थे। शीत ऋतु में अचकन पहनते और उसी के रंग का मफलर बांधते थे। उनके हाथ में अधिकतर छड़ी भी देखी जा सकती थी।

परिस्थितियाँ -

कहा जाता है साहित्य समाज का दर्पण होता है। और किसी भी समाज के बिगड़ने, बनाने में साहित्य का काफी योगदान होता है। तलवार जो काम नहीं कर पाती वह मनुष्य कर लेता है। अगर कोई साहित्यकार या कवि पर यह बात पूरी नही उतरता तो ऐसा समझना चाहिये कि वह कवि अपने साथ न्याय नहीं कर पाया है। कहने का तात्पर्य यह है कवि भी एक सामाजिक प्राणी होता है। साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के नाते समाज के प्रति अपने कर्तव्य को साहित्य की सर्जना द्वारा पूरा करता है, वह अपने साहित्य के माध्यम से न केवल समाज के विकास में योगदान देता है बल्कि वह समाज को हर प्रकार से उन्नतशील बनाने का प्रयत्न करता है। वह अपने चारों ओर फैले परिवेश से प्रभाव ग्रहण कर उसे साहित्य के माध्यम से व्यक्त करता है। अत: यह स्पष्ट है कि साहित्यकार के साथ युग और परिवेश का गहरा सम्बन्ध होता है। युग और परिवेश से अलग रहकर कोई साहित्यकार सृजन कर ही नहीं सकता। अत: किसी कवि या साहित्यकार के साहित्य के बारे में अध्ययन करने से पहले आवश्यक हो जाता है कि हम उस समय की परिस्थितियों का जायजा ले ले।

दिनकर जी ने जब लिखना शुरू किया तब हमारे देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। यू तो भारत को गुलाम हुये कई सौ सौल बीत गये थे। मंगोल मुगल पठान कई विदेशी जातियाँ यहाँ आई कई तो केवल लूट मार करके चली गयी, कुछ ने यहाँ शासन किया तो वे यही के होकर रह गये। उन लोगों ने यहाँ के रीति रिवाज अपनाने, यहाँ शादी ब्याह किया यहाँ की सभ्यता को अपनाया, यहाँ की संस्कृति और सभ्यता को रौंदा नहीं। अंग्रेज़ पहले विजेता थे जिन्होंने हिन्दुस्तानियों को बुरी तरह गुलाम बनाया, वह यहाँ के व्यापार को नष्ट कर यहाँ के धन का प्रयोग अपने राष्ट्र को समृद्धि बनाने में कर रहे थे। वह भारत वासियों पर तरह तरह अत्याचार करते थे। इस प्रकार से भारत की समस्त जनता अंग्रेजों के

राज्य में समान यातना का अनुभव कर रही थी । 1899 में लार्ड कर्जन भारत के वाइसराय होकर आये उस समय हमारा देश को प्लेग और दुर्भिक्ष से ग्रस्त था । प्लेग की रोकथाम के लिये एक अधिकारी की नियुक्ति की गयी जो इंगलैंड से आने वाले आदेशों का पालन कठोरता से करता था । उसने लोगों की मदद करना तो दूर की बात बल्कि लोगों से जज़ियाना वसूल किया । इस प्रकार अंग्रेज़ों के लिये भारतियों के मन में घृणा की भावना बढ़ती गयी । 1904 में वंगभंग कानून से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को और प्रोत्साहन मिला । यद्यपि ब्रिटिश सरकार की जालि माना । नीति को शिथिल करने और भारतियों के मन में संतोष की भावना जगाने के लिए वाइसराय मिंटोने 1909 में कुछ सुधार किये किन्तु वह भी नहीं के बराबर इसके बाद 1914 में विश्व युद्ध छिड़गया । अंग्रेज़ों ने कहा यह युद्ध लोगों की रक्षा के लिये लड़ जा रही है और भी कई प्रकार की आशाई ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को बधायी किन्तु युद्ध के अन्त होने के बाद भारतीयों की आशाये निराशा में बदल गयी 1919 में रौलट एक्ट पास हुआ उसने भी भारतीयों की आशाओं पर पानी फेर दिया इसके बाद जलिया वाला बाग का हादसा हुआ । अनगिनत लोग मारे गये । अंग्रेज़ों ने जलियां वाला बाग में जो हत्याकांड किया जितनी निर्दयता से भारत वासियों का खून किया उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है । इक़बाल जो हालात का डट कर मुकाबला करने को हमेशा तैयार रहते हैं, वह कह उठते है जितने भी आंसू बहाओ कम है इन शहीदों के लिये ।

1920 में तिलक के निधन के बाद लोगों में असन्तोष और बढ़ गया । 1927 में साइमन कमीशन का लाहोर में अधिवेशन हुआ और 1930 में गांधी जी द्वारा बुलायी गई गोल मेज कान्फ्रेंस ने लोगों की आशाओं को निराशा में बदल दिया अंग्रेज़ भारतीयों पर तरह तरह के अत्याचार करते, स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वालों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता । उन्हें निर्दयता पूर्वक मारा जाता था । इस प्रकार जनता त्राहि त्राहि पुकारने लगी फिर अंग्रेज़ों की चाल से भारत में हिन्दू मुस्लिम दंगे होने लगे ।

इन दंगों का प्रभाव भी दोनों कवियों पर बुरा पड़ा । संवेदनशील कवि दिनकरजी तो इन दंगों से काफी परेशान होने लगे । सामधेनु की कई कविताओं में दिनकर जी ने बताया है सम्प्रादायिक दंगे भारत को खोखला कर देंगे । टुकडे टुकडे में बाँट देंगे ।

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध छिडा जिसने सबको और कमजोर कर दिया । युद्ध का भीषण परिणाम निकला कुछ लोगों का तो कहना है दिनकर जी का काव्य कुरुक्षेत्र में इसी युद्ध की विभीषिका का बताना कविता का उद्देश्य है । युद्ध कितनी तबाही लाता है कवि ने अपनी आखों से देखा और यह दर्द कवि के 'कुरुक्षेत्र' में जीते जागते रूप में आया है । अंग्रेज़ों ने युद्ध के पहले ही लीडरों को मुक्त कर दिया था । आखिर 15 अगस्त, 1947 में हमें आजादी मिली मुस्लिम लीग और कांग्रेस में मतभेद के कारण भारत के दो हिस्से भी हो गये । फिर 26 जनवरी, 1950 में भारत को पूर्ण स्वाधीनता मिला, स्वाधीनता के बाद जो भारत की राजनीतिक स्थिति हो गयी उससे भी दिनकर जी काफी अप्रसन्न से नेताओं को अपनी अपनी गद्दी की चिन्ता भी सामान्य जनता का अब भी बुरा हाल देख कर दिनकर जी उनमें आत्म विश्वाश जगाना चाहते हैं ।

उठ मन्दिर के दरवाजे से
जोर लगा खेतों में अपने
नेता नहीं भुजा करती है
सत्य सदा जीवन के सपने
.. .. ..
नेताओं का मोह
केवल तुझको ठगने वाला है ।

उसके बाद 1962 ई में जब चीन का भारत पर आक्रमण हुआ जब भारत की राजनैतिक दशा अत्यन्त खराब हो गई थी उसका भी प्रभाव दिनकर

1• रश्मिलोक - नेता

जी पर काफी पड़ा उसी दौरान इन्होंने "परशुराम की प्रतीक्षा" पुस्तक की रचना की जिसमें इन्होंने परशुराम को अपने आदर्श पुरुष बताते हुये भारतीयों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया ।

बाहों से हम अम्बुधि अगाध थाहेंगे ।
धंस जायेगा यह धरा अगर चाहेंगे
तूफान हमारे इंगित पर ठहरेंगे
हम जहां कहेंगे मेघ वहीं ठहरेंगे ।
.. .. ..
गरजो अम्बर को भरो गुणोच्चारों से
क्रोधांध शोर हाको से हुकारों से
यह आग मात्र सीमा की नहीं लपट है
पूरी स्वतंत्रता पर ही यह संकट है ।

दिनकर जी ने जब लिखना शुरू किया तब देश की राजनैतिक स्थिति तो शोचनीय थी ही देश की धार्मिक और सामाजिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी, दिनकर जी के समय समाज का ढांचा बिखरा हुआ था । सामान्य जनता जाति द्वेष के आग में जल रही थी लोगों के धार्मिक दृष्टिकोण में संकीर्णता आ गई थी ब्राह्मण जाति अपने को सब से ऊँच समझती थी और दूसरी जाति वालों को वह हेय समझती थी । अछूतों की दशा तो और भी शोचनीय थी उन्हें ठाकुरों के कुओं से पानी तक पीने का अधिकार नहीं थे, छुआछूत की भावना लोगों में बहुत अधिक थी, समाजवर्गों में बंटा हुआ था और समाज के अनैतिक मूल्यों का पालक ... सब को करना पड़ता था । शिक्षा भी उच्च वर्ग तक सीमित होकर रह गया था ।

स्त्रियों की उस समय दशा हीन थी वह घर की चार दीवारी में ही बन्द रहती थी और पुरुषों विशेष कर पति की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझती थी । बाल विवाह व वृद्ध विवाह जनता में सामान्य

---

1. रश्मि लोक - पृ सं0 210

सी बात थी, दहेज प्रथा समाज का दीमक की तरह चाट रही थी जिसके कारण माता पिता मजबूर होकर अपनी कन्याओं का विवाह वृद्ध पुरुषों से कर देते थे । यद्यपि 1891 में सहवास वारा कानून भी बनाया गया इसके बावजूद बाल विवाह होते रहे , विधवाओं का जीवन तो उस समय अभिशाप ही था, उनसे जीने के सभी अधिकार छीन लिये जाते थे कहीं कहीं सती प्रथा का भी प्रचलन था ।

किसानों मजदूरों पर भी उस समय तरह तरह के अत्याचार हो रहे थे उसका जीता जागता चित्र दिनकर जी ने अपनी कविताओं में जहाँ तहाँ प्रस्तुत किया है । ऐसा यथार्थ चित्रण तो हिन्दी साहित्य में केवल प्रेमचन्द के ही पास देखने को मिलता है । लोगों में धार्मिक संकीर्णता इतनी आ गई थी, कि लोग अपने अपने देवताओं को श्रेष्ठ मानते थे । लोग पुरानी आस्थाओं और रुढ़ियों को सीने से लगाये बैठे थे । जिनमें केवल दिखावा था बौद्धिकता नहीं तीर्थ भाव, अवतारवाद, वेद इत्यादि का बोलबाला था, इस ब सब का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने ईसायी धर्म का प्रचार शुरू किया, दूसरी तरफ भारत में शिक्षा का जब श्रेष्ठ प्रचार हुआ तो लोगों की धार्मिक नीति में थोड़े परिवर्तन हुये । इसायी धर्म और हिन्दू धर्म के सम्बन्ध ने भी अनेक आन्दोलन को जन्म दिया । इस समय अनेक संस्थायें बनी जिन्होंने नये दृष्टिकोण से जीना सिखाया और हमारे बिखरे हुये समाज को सुसंगठित रूप देने का प्रयत्न किया ।

दिनकर जी के लिखने के बहुत पहले ही ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राम मोहन राय द्वारा हो चुकी थी । जो हिन्दू नव उत्थान के प्रथम नेता थे । ब्रह्म समाज ने धार्मिक रुढ़ि ग्रस्ता सती प्रथा, जाति प्रथा मूर्तिपूजा अवतार वाद पर विश्वास आदि को मिटाने का प्रयत्न किया । राजा राम मोहन राय को मान्यता थी धर्म ग्रन्थों, वेदों उपनिषदों में जिस धर्म का निरूपण हुआ है वह हिन्दुओं के व्यवहारिक धर्म से अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रगतिशील है । इसके बाद देवेन्द्रनाथ टैगोर और उसके बाद केशवचन्द्र सेन ने ब्रह्म समाज को आगे बढ़ाया । केशवचन्द्र सेन प ने ब्रह्म

समाज के प्रचार के लिये दूर दूर तक यात्रायें की थी । इन्होंने अन्तजातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया और ब्रह्म समाज में स्त्रियों के प्रवेश को प्रोत्साहन दिया ।

उत्तरी भारत में आर्य समाज की स्थापना 1875 में हो चुकी थी, इसका मुख्य उद्देश्य हिन्दू धर्म में फैले आडम्बर को दूर कर वैदिक धर्म की स्थापना करना था । इसमें भी मूर्ति पूजा का विरोध किया गया । बाल विवाह वृद्ध विवाह अस्पृश्यता और सती प्रथा को इस समाज में कड़ी आलोचना की गई । फिर प्रार्थना समाज की स्थापना हुयी जो ब्रह्म समाज का ही नया रूप था, इसकी स्थापना समाज में परिवर्तन लाने के लिये की गयी । इसमें नर नारी अधिकार में समानता को भी बल दिया गया । रानाडे जो महाराष्ट्र के थे के कारण प्रार्थना समाज में काफी प्रगति हुयी । इन्होंने प्रार्थना समाज को ऐसा रूप देने का प्रयत्न किया जिससे सब का कल्याण हो ।

एक संस्था मे थ्योसफिकल सोसाइटी {ब्रह्म विद्या समाज} की स्थापना एक रूसी महिला द्वारा न्यूयार्क में हुयी थी 1875 में इसी सोसाइटी को उद्देश्य पूर्ण बनाने के लिये इसकी एक शाखा श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने भारत में स्थापित की । इस सोसाइटी द्वारा हिन्दू धर्म के प्राचीन आदर्शों और परम्पराओं को ~~पुनर्न~~ पुनरुज्जीवित करने का प्रयत्न किया गया । इसके अतिरिक्त, स्वामी विवेकानन्द ने राम कृष्ण मिशन की स्थापना की, जीवन को नयी दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया । इनकी साधना का अध्यात्मिक तत्व था मानवतावाद और लोक कल्याण । सभी धर्मों के तत्वों में वे रुचि लेते थे और सभी धर्मों में एक ही परम ईश्वर को देखते थे । इसके बाद दिनकर जी के समय तक अन्य बहुत से ऐसे महापुरुषों ने भारत में जन्म लिया जिन्होंने भारत को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया और धार्मिक आडम्बरों का खंडन किया । ईश्वर चन्द्र विद्या सागर, गांधी जी, टेगोर सभी के प्रयत्नों से हिन्दू धर्म में अनेकों सुधार हुये ।

इन लोगों ने देश के हित के लिये सम्प्रदायिकता की भावना को अहितकर बतला कर सम्पूर्ण राष्ट्र और समाज को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया ।

साहित्य

दिनकर जी ने जब लिखना शुरू किया तब साहित्य के क्षेत्र में काफी प्रगति हो चुकी थी और : साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं वरन साहित्य हमारे जीवन के उत्थान में हमारे समाज की प्रगति में एक अच्छे भूमिका निभा सकता है । यह बात कवि और साहित्यकार भली भांति समझ चुके थे । भारतेन्दु युग में ही कविता के क्षेत्र में काफी प्रगति हो गई थी, भारतेन्दु युग के कवियों ने अतीत के माध्यम से वर्तमान को संवारने का प्रयत्न किया था, और राष्ट्रीय भावना का उदय भारेन्द्र युग से हो चुका था । इन युग में कविता नवीनता की तरफ कदम बढ़ा चुकी थी, इसी लिये इस काल को पुर्नजागरण काल कहा जाता है, द्विवेदी युग में पुर्नजागरण काल ने सुधार काल और मानवतावाद का रूप ले लिया था । गांधी का असहयोग आन्दोलन भी उस समय आगे बढ़ कर दूर दूर तक फैल रहा था ।

नारी स्वतंत्रता, अछूतों और गरीबी के प्रति सहानुभूति, पूंजीवाद के प्रति विद्रोह इसकाल के मुख्य विषय थे । इन युग की कविता में सामान्य जनता के सुख दुःख का चित्रण दिखायी देता है । इस युग की कविता में काव्य को जीवन के निकट लाने का प्रयत्न किया गया है और राष्ट्र प्रेम की भावना को महत्व दिया गया । फिर काव्य के इतिहास में प्रादुर्भाव हुआ : छायावाद का, छायावादी कवि एक तरफ तो कल्पना के पंख लगाकर खुले आसमान में विचरण करते दिखायी देते हैं तो दूसरी तरफ छायावाद में ब्रिटिश शासकों के प्रति विद्रोह का उग्र रूप और स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रबल आकांक्षा दिखायी देती है । दिनकर जी ने छाया वाद के ही समय से लिखना शुरू कर दिया था और यही कारण है कि कुछ परिस्थितियां और गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता की पुकार ने और उस समय

के साहित्य से प्रेरणा ग्रहण कर दिनकर जी राष्ट्रीय कवि बन गये वैसे दिनकर जी का सम्बन्ध प्रगतिवादी धारा से जोड़ा जाता है, क्योंकि दिनकर जी की कविता क्रान्तिकारी कविता है। इस प्रकार देखा जाय तो दिनकर जी ने जब लिखना शुरू किया तब सामाजिक परिस्थितियाँ ऐसी थी जो परिवर्तन अथवा क्रान्ति की माँग कर रही थी दूसरे दिनकर जी के पहले छायावादी कविता विशेष रूप से माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्राकुमारी चौहान की राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत कविताएँ सामान्य जनता तक पहुँच रही थी और पूरे देश में राष्ट्रीय भावना का प्रसार कर रही थी। पूरे देश में उस समय ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति विद्रोह की भावना पायी जाती है।

दिनकर जी संवेदन शील कवि थे साथ ही उनमें क्रोध आवेश की मात्रा अधिक थी, और उनके इन ही विचारों ने दिनकर जी का राष्ट्र कवि बनाया। दिनकर के सोचने समझने के अनोखे अन्दाज थे। वे अध्ययनशील थे हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त इन्होंने बंगला भाषा में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, काजी नजरुल इस्लाम तथा उर्दू भाषा में स्व० मुहम्मद इकबाल की पुस्तकों का गहन अध्ययन किया और उनसे प्रभावित भी हुये। इसके अतिरिक्त उन्होंने योरोपीय भाषा की भी कई उपन्यास और कहानियाँ पढ़ी। वे बहुत ही विनम्र और निश्चल स्वभाव के थे। बड़ों के प्रति हमेशा श्रद्धा और विनय का भाव रखते थे। देश की राजनैतिक कारवाइयों में भी हिस्सा लेते थे, वे दानशील थे किसी पर संकट आने पर मदद के लिये तैयार रहते थे। उसकी हर प्रकार की आर्थिक मदद करते और दूसरों से करवाते। वे भावुक भी बहुत से मार्मिक प्रसंगों पर रो देते थे।

दिनकर जी के लिये अन्त में यही कहना ठीक होगा उनके जैसा निर्भीक साहित्यकार मिलना जरा मुश्किल है। इसका उदाहरण स्वयं उनकी पुस्तक परशुराम की पतीक्षा है। वे बहुत ही स्वाभिमानी थे उनके स्वाभिमान

को ठेस पहुँचे तो उनसे सहन नहीं होता था ।

मृत्यु

दिनकर जी का जीवन भी हमेशा संघर्षों से जूझने में बीता । अत: उन्होंने अनेकों रोगों से भी संघर्ष किया । वे ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारी से पीड़ित रहे । इसके अतिरिक्त वे ऐनजइना के दर्द से भी पीड़ित रहे और 24 अप्रैल, 1974 को उनका स्वर्गवास हो गया जिसका आभास शायद उन्हें पहले ही से था । 23 अप्रैल को उन्होंने तिरुपति मन्दिर का कई बार दर्शन किया । हिन्दी साहित्य तो दिनकर जैसे कवि को पाकर धन्य हो गयी । उनका जीवन हमारे लिये संघर्ष का संदेश है ।

रचनाओं का परिचय एवं उपाधि

दिनकर जी की मुख्य काव्य रचनाओं का परिचय इस प्रकार है :-

रेणुका-

रेणुका दिनकर जी का सर्व प्रथम काव्य संग्रह है और अपने प्रथम काव्य संग्रह द्वारा ही दिनकर जी लोकप्रिय हो गये । रेणुका की कविताओं में मुख्य प्रधानता राष्ट्रीयता की भावना की है, इसमें दिनकर जी ने अतीत का गौरव और वर्तमान परिस्थितियों का चित्रण किया है, रेणुका की कुछ कविताएँ क्रान्ति और विद्रोह की भावना से ओत प्रोत दिखायी देती है । रेणुका की कवितायें देश की परतंत्रता और विषमता के लिये कवि के मन की अथाह वेदना को व्यक्त करती दिखायी देती है । इसके अतिरिक्त रेणुका की कुछ कवितायें श्रृंगार परख भी दिखायी देती है ।

हुंकार -

हुंकार में एक तरफ दिनकर जी का जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण है वह दिखायी देता है तो दूसरी तरफ रेणुका की राष्ट्रीय भावना का विकसित रूप हुंकार में दिखायी देता है, इस काव्य में कवि ने देशवासियों को जागृत करने के लिए, असमय आह्वान और अनोक धन्धा जैसी रचनाएँ लिखी है ।

कुरुक्षेत्र-

कुरुक्षेत्र दिनकर जी का प्रबन्ध काव्य है जिसमें कवि के जीवन सम्बन्धी विचार हमारे सामने इस प्रकार आये है कि हमें उद्वेलित कर के रख दे । हमारे अन्दर संघर्ष की भावना पैदा करें दिनकर के कुरुक्षेत्र मानव का मार्गदर्शन करने वाला काव्य है इसमें दिनकर जी का उद्देश्य केवल महाभारत के कथानक को दुहराना नहीं और नहीं केवल युद्ध की वीभत्सता का चित्रण करना है । बल्कि इस काव्य में दिनकर जी ने अपने समस्त जीवन के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत किया है । इस काव्य में दिनकर जी ने जीवन का स्पष्ट परिभाषा हमारे सामने रखी है ।

प्रवृत्ति और निवृत्ति, बुद्धि और प्रेम, हिंसा, अहिंसा, व्यक्तिगत और समिष्टिगत जीवन के बीच का जो संघर्ष और संबंध है उनका चित्रण इस काव्य में किया है । इसके अतिरिक्त भाग्य कर्म, योग और त्याग युद्ध और शान्ति जैसे जटिल प्रश्नों का समाधान इस काव्य में कवि ने ढूंढने का प्रयत्न किया है । कुल मिलाकर एक वाक्य में कहा जा सकता है, कुरुक्षेत्र में दिनकर जी के जीवन दर्शन की स्पष्ट छाप दिखायी देती है और वह है अपनी शक्ति को पहचानते हुये संघर्षमय जीवन व्यतीत करने का संदेश।

रश्मिरथी -

रश्मिरथी दिनकर जी का ऐसा प्रबन्ध काव्य है जिसे बार बार पढ़ने की इच्छा होती है, जिसमें दिनकर जी ने कर्ण को एक आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है वह अपनी धर्मनिष्ठा, दानशीलता, अटूट मैत्री,

और जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण और मर्यादा जाति की परवाह की अवहेलन करने के कारण पाठक के मन पर छा जाता है, वास्तव में दिनकर जी का कर्ण आज के युग की माँग है जो कहता है -

विक्रमी पुरुष लेकिन सिर पर
चलता न छत्र पुरखो का घर
अपना बल तेज जगाता है
सम्मान जगत में पाता है
.. .. ..
मैं गरुड़ बाज मैं पक्षीराज
सिर पर चाहिये न मुझे ताज ।

वह इसी शान से कहता है ।

चाँदनी पुष्प छाया में पल
नर भले बने सुमधुर कोमल
पर अमृत क्लेश का पिये बिना
आतप अंधड़ में जिये बिना

वह पुरुष नहीं कहला सकता
विघ्नों को नहीं हिला सकता ।

इस पुस्तक के बारे में शब्दों में ब्यान करना तो मुश्किल है लेकिन इतना ही कहा जा सकता है । कर्ण के चरित्र को लेकर यह सर्वोत्तम कृति है । जो समस्त मानव जाति को इस धरती पर उनके आने का उद्देश्य बताता है । उन्हें कर्म की तरफ प्रेरित करती है ।

उर्वशी -

उर्वशी दिनकर जी की ऐसी काव्य रचना है जिस पर उन्हें ज्ञान पीठ पुरस्कार मिला हैं, उर्वशी में मनुष्य के भावों को अन्दोलित करने

---

1. रश्मि रथी - पृ सं0

की अपूर्व क्षमता । उर्वशी में दिनकर जी ने आज के द्विविधा ग्रस्त मानव की ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जो उनकी अपनी अनोखी देन है । उर्वशी में काम की अनुभूति के दाहक और शीतल, कोमल और कठोर मोहक और पीड़ित क्षणों का अत्यन्त सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है । उर्वशी में दिनकर जी ने केवल नारी के प्रेमिका के रूप में का ही चित्रण नहीं प्रस्तुत किया है बल्कि नारी के माता के रूप का सुन्दर चित्रण इस काव्य में देखने को मिलता है । इस काव्य रचना में मनुष्य की सांसारिक प्रेम के द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की ओर जाने की प्रेरणा मिलती है ।

रसवन्ती -

दिनकर जी ने चक्रपाल की भूमिका में रसवन्ती के बारे में स्वयं लिखा है "संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया किन्तु मेरा मन यही चाहता है मैं गर्जन वर्जन से दूर रहूँ और केवल ऐसी कवितायें लिखूं जिससे कोमलता और कल्पना का उभार हो । यही कारण था कि जिन दिनों हुंकार की कविताएं लिखी जा रही थी उन्हीं दिनों मैं द्वंद्वगीत, रसवन्ती की भी रचना कर रहा था । यह अजब संयोग है कि सन् 1936 में ये तीनों पुस्तकें एक वर्ष के भीतर भीतर प्रकाशित हो गई और सुयश मुझे हुंकार से ही मिला । किन्तु आत्मा मेरी अब भी रसवन्ती में बसती है"[1]।

रसवन्ती की कविताओं में मुख्य रूप से श्रृंगार चेतना और नारी भावना की प्रधानता दी गई है, दिनकर जी की श्रृंगार परख कविताओं में प्रेम के लौकिक रूप की स्वीकृति दी गई है, उनमें रसिकता है । लेकिन दिनकर जी की रसिकता व्यक्तिक धरातल से ऊपर उठती दिखायी देती है । रसवन्ती का श्रृंगार जो नदी की पवित्र धारा है जो अपनी शीतलता चारों ओर बिखेरती चलती है । रसवन्ती में मुख्य रूप से श्रृंगार परख रचनाएं है । गीत अगीत रास की मुरली, पावस गोष्टी है इन रचनाओं में कवि ने जीवन

---

1. चक्रपाल की भूमिका - पृष्ठ - 37

के कोमल और सुन्दर क्षणों की अभिव्यक्ति की है, रसवन्ती में इतना रस है जिसे पाकर मनुष्य तृप्त हो जाते । रसवन्ती की श्रृंगार परख कविताओं में शारीरिकता का कम महत्त्व दिया गया है, इन कविताओं में तीव्रता न होकर माधुर्य और सात्त्विकता के दर्शन होते हैं । इसके अतिरिक्त रसवन्ती में दिनकर जी ने नारी के सम्बन्ध में अपनी भावना व्यक्त की है । उसे एक दिव्य आभा के रूप में देखा है । वह ज्योति की ऐसी कली है जो रोशनी ही रोशनी चारों तरफ बिखेरती रहती है । पुरुष के भी प्रेम का चित्रण रसवन्ती की कविताओं में मिल जाता है । नारी सृष्टि की एक ऐसी कला है जिसकी एक मुस्कान बड़े बड़े ऋषियों मुनियों के आसन को हिला देती है । पुरुष प्रिया में कवि ने नारी के जिस स्वरूप का चित्रण कवि ने किया है, वह आँखें मूंद कर महसूस करने योग्य है ।

सामधेनु - 1947

सामधेनु में कवि की रहस्यवादी दार्शनिक, द्वंद्वमूलक तथा कुछ राष्ट्रीय कविताएँ संकलित है । सामधेनु की कुछ कविताओं के माध्यम से अन्तर्जातीय चेतना प्रकट हुयी है । लेकिन सामधेनु की अधिकतर कविताओं में देश की आजादी के लिये दिनकर जी के दिल में जो तड़प है वह देखा जा सकती है । वह भगवान से प्रार्थना करते हैं ।

ठहरी हुयी तरी को ठोकर लगा चला दे
जो राह हो हमारी उस पर दिया जलादे
गति में प्रयोजनों का आवेग फिर सबल दे
इस जाज की घड़ी में निष्ठा कड़ी अचल दे ।
प्यारे स्वदेश के हित वरदान माँगता हूँ ।
तेरी दयाविषद में भगवान माँगता हूँ ।[1]

---

1. सामधेनु दिनकर

द्वन्द्वगीत

द्वन्द्वगीत में कवि की अध्यात्मिक भावना की झलक दिखायी देती है, इसमें कवि ने (एक तरफ ब्रह्म के रहस्यमयी स्वरूप को जानने का जिज्ञासा व्यक्त की है तो दूसरी तरफ मानव अस्तित्व के बारे में तरह तरह के प्रश्न उठाये हैं)। कवि सृष्टि के एक एक कण में एक ही रचयता की झलक देखता है।

किरणों के दिल चीर देख सब में दिन मणि की लाली है
चाहे जितने फूल खिले पर एक सभी का मालटेर। 1

द्वन्द्वगीत के छन्दों द्वारा कवि अपने जीवन दर्शन को प्रतिपादित करता दिखायी देता है और जीवन के अनेक प्रश्नों से वह इन छन्दों में जूझता है ईश्वर के सम्बन्ध में कवि के मन में आस्था और अनास्था के प्रश्न उठते हैं।

इतिहास के आँसू -

यह कवि की ऐतिहासिक कविताओं का संग्रह है - इसकाव्य संकलन की कुछ कविताएं रेणुका में पहले ही प्रकाशित हो चुकी है जैसे "पाटली पुत्र की गंगा", "वैभव समाधि", "कलिंग विजय" इत्यादि। कवि ने इस संकलन की कविताओं में इतिहास का सहारा लेकर वर्तमान को संवारने का प्रयत्न किया है। इस संकलन की कविताओं में हम भारत की गौरवमयी अतीत का जीता जागता चित्र देख सकते हैं। इन में ऐतिहासिक वीरों, स्थलों एवं घटनाओं को चित्रण कर भारतीयों में जागरण की भावना पैदा कर वर्तमान को संवारने का प्रयत्न किया गया है।

नीलकुसुम -

नीलकुसुम में दिनकर जी की राजनैतिक, और सामाजिक चेतना से प्रभावित कवितायें मिलती है, इस संकलन की कुछ कविताओं में दार्शनिक भाव

---

1. रश्मिलोक - पृ सं0 102

के भी दर्शन होते है, "हिमालय का संदेश" "किसको नमन करु मै भारत" "नीव का हाहाकार" इत्यादि कविताओं मे ? कवि की राष्ट्रीय भावना की झलक दिखायी देती है जो कहीं कहीं अन्तर्राष्ट्रीय भावना मे भी परिणित होती दिखायी देती है ।

बापू

इसमें दिनकर जी की बापू "महात्मा गांधी" पर लिखी गई कविताएं है, बापू काव्य की रचना तब हुयी जब बापू साम्प्रदायिक दंगों को समाप्त करने के लिये नोआखाली यात्रा कर रहे थे, गांधी उस समय, सत्य और अहिंसा का रास्ता लिये प्रेम, क्षमा और अध्यात्मिक शक्ति के आधार पर लोगों के मन मे जिस तरह भाइचारे की भावना पैदा की और उनके मन से धार्मिक अन्ध विश्वासों को दूर किया इस सबसे दिनकर जी प्रभावित दिखायी देते हैं और इन कविताओं मे गांधी जी के प्रति दिनकर जी के मन मे अपार श्रद्धा और भक्ति भावना की झलक देखी जा सकती है ।

दिल्ली-

इस पुस्तक मे दिल्ली से सम्बन्धित चार कविताओं का संग्रह है । इनमें कवि की राष्ट्रीय भावना की झलक है, इसी दिल्ली कविता मे दिनकर जी, वर्तमान पर क्षोभ व्यक्त करते हुये, इतिहास का स्मरण करते हुये, दिल्ली पर अंग्रेजों को समारोह मनाते देख रोष व्यक्त करते दिखायी देते हैं।

नीम के पत्ते-

नीम के पत्तों नामक संग्रह मे मुख्य रूप से व्यंग्य प्रधान कविताएं है, जो अधिकतर हमारे देश के कर्णधारा और नेताओं पर किये गये है ।

नये सुशोभित -

नये सुशोभित की दिनकर जी की अपने ढंग की मौलिक रचनाओं का संग्रह है, इनमें मनुष्य की छोटी छोटी भावनाओं और बातों का चित्रण कहीं कविने हास्य और कहीं व्यंग्य के माध्यम से लिया है ।

परशुराम की प्रतीक्षा -

इस काव्य की रचना दिनकर जी ने 1962 में भारत चीन आक्रमण के समय की थी इसमें की कई विताएँ सामधेनु में पहले ही प्रकाशित हो चुकी है । चीनी आक्रमण के समय समस्त भारत को जो दशा हुयी उस का प्रभाव दिनकर जी पर बहुत अधिक पड़ा वह समाज से उन बुराइयों को दूर करना चाहते थे जो हमारे राष्ट्र को दुर्बल बना रही है । राष्ट्र की नींव खोखली कर रही है, परशुराम की प्रतीक्षा द्वारा कवि ने न केवल समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया बल्कि अपने देश वालों के अन्दर देश शक्ति का संचार भी इस काव्य के माध्यम से दिनकर जी ने किया है ।

कोयल और कवित्व -

कोयल और कवित्व में दिनकर जी की 40 कवितायें संकलित है जो शब्द चयन और अद्भुत अभिव्यंजना कौशल के कारण प्रसिद्ध है ।

सम्मान

1973 में दिनकर जी को अपनी पुस्तक "उर्वशी" के लिये देश का सम्मानित पुरस्कार ज्ञानपीठ मिला । 1953 में आपको आपके ग्रन्थ "संस्कृति के चार अध्याय" के लिये साहित्य एकादमी ने राष्ट्रीय पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया । 1949 में इन्हें पद्मभूषण की उपाधि दी गयी । 1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय ने इन्हें डाक्टर आफ लिटरेचर की उपाधि

दी । इसके अतिरिक्त इन्हें भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार एवं नागरी प्रचारणी द्वारा अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुये । दिनकर जी की कुछ कविताओं को भारत के बाहर भी आदर मिला दूसरी भाषाओं में वे अनुवादित की गयी । इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र को साहित्यकार संसद की ओर से भी 1,000/- रुपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ । नागरी प्रचारणी सभा द्वारा भारतेन्दु हरीशचन्द्र की प्रथम जन्म शती के अवसर पर इसी पुस्तक को द्विवेदी पदक भी मिला । इन सब के अतिरिक्त दिनकर जी ने अपना स्थान लोगों में इतना बना लिया था कि यह कई विशिष्ट पद पर भी रहे । यह साहित्य एकादमी संगीत नाटक एकादमी के भी सदस्य रहे ।

ख. डॉ. इकबाल "व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

1 - जीवन परिचय

2 - बचपन

3 - सय्यदमीर हस एवं सय्यद महमद खाँ

4 - शिक्षा

5 - लाहोर में शिक्षा

6 - नौकरी तथा शोध

7 - योरोप में निवास

8 - रोजगार

9 - निजि जीवन

10 - रचनात्मक चमत्कार

11 - सर की उपाधि

12 - दक्षिण भारत की यात्रा

13 - मुस्लिम प्रांत का सुझाव

14 - गोलमेज कांफ्रेंस

15 - अफगानिस्तान की यात्रा

16 - बिमारी तथा मृत्यु

0 इक़बाल - व्यक्तित्व और कृतित्व

0 जीवन परिचय :

इस बात को अस्वीकार करना कठिन है कि पुरानी ब्राह्मण परिवार से जुड़े रहने की भावना ने इकबाल की रचनाओं पर गहरा प्रभाव डाला है । एक दस्तावेज में इकबाल ने अपना जाति सप्रू लिखा है । उन्होंने अपने पिता से सुन रखा था कि उनके पूर्वज जिन्होंने इस्लाम ग्रहण किया । बाबा लोग हज के नाम से पुकारे जाते थे जो कश्मीर के सुल्तान जैनुल आबदीन के समय बाबा नासिरुद्दीन के चेले थे । जैनुल आबदीन का नाम इस कारण चर्चा योग्य है कि उनके समय कश्मीर में आत्म ज्ञान और सांसारिक ज्ञान दोनों के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुयी,। उन्होंने संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद फारसी में और फारसी पुस्तकों का अनुवाद संस्कृत में करवाकर हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे को समझने का अवसर प्रदान किया।

इकबाल के पूर्वज बाबा लोल हज का संबंध सूफियों के जिस क्रम से था उसका विवरण बहुत अधिक रोमांचक है । इतिहास के भिन्न-भिन्न कालों में सूफियों के जो क्रम या मार्ग स्थापित हुये उनके निर्माण कर्ता, सामंत, सैय्यद थे जो मध्य एशिया या मध्य पूरब से यहाँ आये थे और यहीं मृत्यु को प्राप्त हुए । उनके खलीफा या उत्तराधिकारी भी अधिकतर उनके अपने परिवार या संतान में से हुए लेकिन ऋषियों के क्रम का एक विशेष गुण यह है कि उसकी स्थापना करनेवाले कश्मीर ही के एक क्षत्रिय राजपूत नव मुस्लिम के सुपुत्र थे और उनके खलीफा या उत्तराधिकारी और चेले भी सब के सब नव मुस्लिम थे, दूसरी विशेषता इस मार्ग का यह है कि इसकी शिक्षा पर वेदान्त और इस्लामी ब्रह्मवाद दोनों का प्रभाव था । सन्यास की शिक्षा तो शुद्ध वेदान्तिक था ।

अनुमान यह है कि इक़बाल के पूर्वजों ने अठारहवीं शताब्दी के अन्त में या उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में कश्मीर छोड़कर सियालकोट में निवास किया होगा । इक़बाल के पिता शेख़ नूर मुहम्मद का जन्म सम्भवत: 1837 के आस-पास हुआ । इन्होंने 93 साल की आयु पायी और सन् 1930 में उनका देहान्त हुआ ।

इक़बाल के पूर्वजों के विवरण से तो यही स्पष्ट होता है कि उनका संबंध एक ऐसे परिवार से था जो सदैव सांसारिक माया मोह से अधिक स्वाभाविक और आत्मिक संतोष की खोज में था । और जो संसार की तुलना में सदैव धर्म को अधिक मान्यता देता था । शायद इसी कारण इक़बाल "ज़र्बे कलीम" की अपनी नज़्म "जावेद से" में कहते हैं ---

" ग़ारत गरे दीं है यह ज़माना
है इसकी निहाद काफ़िराना
दरबारे शहन्शाही से ख़ुशतर
मर्दाने ख़ुदा का आस्ताना
ख़ाली हुआ उनसे अब दबिस्ताँ
थी जिनकी निगाह ताज़ियाना
जिस घर का मगर चिराग़ है तू
है उसका मज़ाक आरफ़ाना ।"[1]

कश्मीर और कश्मीरियों के लिये इक़बाल के हृदय में जो प्रेम था उसकी परछाईं उनके काव्य में देखी जा सकती है । इसी प्रकार अपने ब्राह्मन वंश का मोह भी इक़बाल ने अपने काव्य में कई जगह संकेत किये हैं ---

1. कुल्लियाते इक़बाल, पृ. 548-549

"मरा बिनगर कि दर हिन्दुस्तां दीगर नमी बीनी
ब्रहमन ज़ादये रमज़ आशनाये रूमो तबरेज़ अस्त ।"

अर्थात् मुझको देखो हिन्दुस्तान में रूमी और शम्स तबरेज़ के दर्शन रहस्य को समझनेवाला ब्रहमन और कहीं नहीं मिलेगा । शायद यही कारण था इकबाल के यहाँ गाय का गोश्त नहीं पकता था । वह ज्योतिष को नहीं मानते थे, परन्तु उन्होंने अपने पुत्र जावेद के जन्म पर दो जन्मपत्रियाँ बनवायी जो अब भी सुरक्षित हैं ।

इकबाल के पिता नूर मुहम्मद ने स्कूल में शिक्षा नहीं पायी था परन्तु वह उर्दू और फारसी की छपी किताबे पढ़ सकते थे । व्यापारी होने पर भी वह सूफी सन्तों और ज्ञानियों की सभाओं में बैठते और उनकी संगत में रहने के कारण शरीयत और सूफीवाद की बारीकियों और मर्मों की अच्छी जानकारी रखते थे । बहुत धार्मिक थे इसलिए उनके कुछ समकालीन ज्ञानी उन्हें "अनपढ़ फलसफी" कहते थे । इकबाल की माताजी इमाम बी भी स्यालकोट के कश्मीरी परिवार की थी वह अनपढ़ होने के बावजूद बहुत समझदार महिला थी ।

o बचपन :

जुमा 9 नवंबर, 1877 ई० को सुबह-सुबह तड़के शेख नूर मुहम्मद के छोटे से एक मंजिल के मकान की अंधेरी कोठरियों में किसी एक में दीप की टिमटिमाते हुए प्रकाश में एक सुर्ख सफेद प्यारे से बालक ने जन्म लिया जिसने परिवार के सदस्यों की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित कर ली । बालक का नाम मुहम्मद इकबाल (प्रताप) रखा गया । प्रताप बिजली की सुविधा वंचित शेख नूर मुहम्मद के घर में इस छोटे से बच्चे ने चलना सीखा और फिर शिक्षा प्रारंभ होने के पश्चात इसी घर की अंधेरी कोठरियों में दीपक के प्रकाश में इसने प्रारंभिक पाठ कंठस्थ किये ।

जब इकबाल चार साल चार महीने के हुए तो शेख नूर मुहम्मद ने उन्हें मस्जिद में मौलाना गुलाम हसन के पास ले गये और इसी मस्जिद में इकबाल ने एक साल तक कुरआन पढ़ा ।

इसके पश्चात इकबाल ने सय्यद मीर हसन के मदरसे में उर्दू, फारसी और अरबी साहित्य पढ़ना आरंभ किया । इकबाल, बहुत बुद्धिमान और होनहार थे इसलिए मीर हसन ने उन्हें बड़े ध्यान से शिक्षा देना प्रारंभ किया । यह क्रम तीन वर्ष तक चला । इस बीच सय्यद मीर हसन ने स्कॉच मिशन स्कूल में भी पढ़ाना प्रारंभ किया । वह मुसलमानों में आधुनिकता के प्रचार के समर्थक थे । इसलिए उन्होंने शेख नूर मुहम्मद की सहमति से इकबाल को स्कॉच मिशन स्कूल में प्रवेश दिला दिया । इकबाल अध्यापकों से केवल स्कूल ही में नहीं पढ़ते थे बल्कि स्कूल के पश्चात् सय्यद मीर हसन के घर पर भी शिक्षा का क्रम चलता रहता था । बल्कि सय्यद मीर हसन का तो नियम था कि यदि बाजार सौदा लेने निकलते तो भी शिष्य पीछे चलते जाते और पढ़ने पढ़ाने का क्रम टूटने न पाता ।

शेख नूर मुहम्मद रोटी कमाने के धन्धे से जब छुट्टी पाते तो अधिकतर समय या तो ज्ञानियों की संगत में गुज़ारते थे या ईश्वर स्मरण में । ज्ञान, ध्यान की आदत के अतिरिक्त उन्हें तसव्वुफ (ब्रह्मवाद) से भी बहुत रूचि थी यहाँ तक कि मुहीउद्दीन इबने अरबी की रचनाओं (फतूहाते मक्किया" और "फसूसुल हकमन" का उनके घर पर पाठ होता था । इकबाल स्वयं लिखते हैं :--

"........... मेरे पिता को फतूहाते मक्किया और "फसूसुल हकम" से बहुत रूचि रही है और चार बरस से मेरे कानों में

---

1. मुहीउद्दीन इबने अरबी (1165-1240) अरब ज्ञानी, कवि और सूफी इन्होंने ब्रह्मवाद की शिक्षा दी

मुहिउद्दीन अरबी का नाम और उनकी शिक्षा पढ़नी आरम्भ हुयी. वर्षों तक इन दोनों पुस्तकों का पाठ हमारे घर में रहा, बचपन के दिनों में मुझे इन समस्याओं की समझ न थी फिर भी पाठ सभा में हर रोज़ भाग लेता इसके पश्चात जब अरबी सीखी तो कुछ कुछ स्वयं भी पढ़ने लगा और ज्यों ज्यों ज्ञान और अनुभव बढ़ता गया मेरी रूची और जानकारी अधिक होता गई ।[1]

शेख नूर मुहम्मद इब्ने अरबी के शिक्षा से बहुत प्रभावित थे उनके व्यक्तित्व पर ब्रह्मवादी तसव्वुफ का कितना प्रभाव था उसको इकबाल ने अपने एक लेख में यूं व्यक्त किया है --

"हजार पुस्तकालय एक ओर और पिता की प्रेम दृष्टि एक ओर .... परसों शाम ..... किसी संबंधी की चर्चा कर रहे थे जिनका कुछ ही समय पहले देहान्त हुआ था । बातों के बीच में कहने लगे -- "पता नहीं बन्दा अपने रब से कब का बिछड़ा हुआ है ।" ..... इस विचार से इतने प्रभावित हुए कि लगता था बेहोश हो गये और रात के दस बारह बजे तक यही स्थिति रही ।--यह मौन लेक्चर हैं जो पूरब के ज्ञानियों से मिल सकते हैं । योरोप के विद्यालयों में इनका निशान नहीं ।"[2]

0 सय्यद मीर हसन एवं सर सय्यद अहमद :

ऊपर चर्चा हो चुकी है कि सय्यद मीर हसन मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा के प्रचार के लिये प्रयत्नशील थें । वह सर सय्यद अहमद खाँ को 1873 से जानते थे और मुस्लिम एजुकेशनल कांफ्रेंस के इजलासों में नियमानुसार भाग लेते थे ।

---

1. जावेद इकबाल जिन्दा रूप - भाग-एक, पृ. 52
2. - वही - पृ. 53

यहाँ मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा के प्रचार के संबंध में सरसय्यद अहमद खाँ (1817 - 1898) के आन्दोलन और सेवाओं का चर्चा आवश्यक है। सन् 1859 में सरसय्यद अहमद खाँ इंगलिस्तान की यात्रा पर गये आप योरोपीय संस्कृति से बहुत प्रभावित हुये। 1870 ई० में वहाँ से लौट कर उन्होंने मुसलमानों के धार्मिक स्वाभाविक, सामाजिक, सामाजिक, साहित्यक, शिक्षित, आर्थिक और राजनैतिक सुधार के लिये अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया इस सुधार आन्दोलन का कारण वास्तविकता में वह बदलाव था जो हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज के सुदृढ़ होने पर आया था और जिससे मुसलमान अभी अभी प्रभावित हुए थे।

सरसय्यद को शायद अनुमान था कि आधुनिक साईंस धर्म के लिये बहुत घातक है। परन्तु आधुनिक साईंस का अध्ययन क्योंकि वह मुसलमानों के लिये अत्यन्त आवश्यक समझते थे इसलिए उनके विचार में इस्लामी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण परम्परागत प्रकार से करने का जगह नये और बदले हुए दृष्टिकोण से करना आवश्यक था। इनकी राय में जब तक शोध की भावना मुसलमानों में जीवित रही उनका कर्म रचनात्मक था और साईंस और विकास का इस्लाम से टकराव न हुआ परन्तु ज्योंही शोध को जगह अनुकरण ने ली इस्लाम गतिशील, कर्मक और रचनात्मक धर्म होने के बजाय एक जड़ धर्म बना दिया गया।

राजा राम मोहन राय जैसे सुधारकों ने अर्ध-शताब्दी पूर्व अपने सहधर्मियों को पश्चिमी संस्कृति की महत्वपूर्णता का अनुभव दिला दिया गया था और हिन्दु अपने समाज के नवनिर्माण में मुसलमानों से लगभग पचास साल आगे निकल चुके थे।

सरसैयद ने इंगलैंड से लौटने के तुरन्त पश्चात अपनी पत्रिका "तहज़ीबुल अख़लाक़ (स्वभाव सुधार) प्रकाशित किया जिसमें लेखों के द्वारा वह अपने समर्थक पढ़े लिखे मुसलमानों को बदलाव का अनुभव दिलाने, अपना दृष्टिकोण बदलने की शिक्षा देने लगे। सरसैयद के विचार में हिन्दुस्तान में अंग्रेज राज्य की स्थापना मुस्लिम समाज के तमाम रोगों का अकेला कारण न था बल्कि मुसलमानों की गुलामी और दुर्दशा का कारण वास्तव में उनका अशिक्षित होना, अंधविश्वास, स्वार्थपरता, घमंड, रूढ़िवादिता, दृष्टि संकोच, कर्म शक्ति और भाईचारे की भावना का न होना था। उनके विचार में किसी जाति की महानता का आधार उसके व्यक्ति या सोचने के ढंग और कर्म पर होता है जो व्यक्तिगत स्वार्थ की जगह सामाजिक स्वार्थ की प्राप्ति के लिये सदैव प्रयास करते रहते हैं। यह पत्रिका आठ दस साल तक प्रकाशित होता रहा। इस क्षेत्र में सरसैयद अहमद खाँ के प्रयासों का अच्छा परिणाम यह निकला कि पढ़े लिखे मुसलमानों में एक नया साहित्यिक सोच पैदा हुआ। अभी तक उर्दू कवियों ने काव्य की फारसी परम्पराओं को अपना रखा था और इनके विषय सीमित थे। उर्दू गद्य ने भी कोई चर्चा योग्य विकास नहीं किया था। परन्तु नये कवियों ने जाति के सुधार और विकास के लिये उद्देश्यपूर्ण शायरी की नींव डाला। इसी प्रकार उर्दू गद्य में भी बदलाव आया।

आधुनिक शिक्षा के प्रचार के संबंध में सरसैयद की सेवायें अत्यन्त महान थी। मुसलमानों में अंग्रेजी शिक्षा के विरोध के कई कारण थे। कई शताब्दियों में उन्होंने अपना एक विशेष शिक्षा पद्धति बनाया था, जो धर्म शास्त्र और सांसारिक विज्ञानों का एक अनोखा मिश्रण था। इसके पश्चात यह शिक्षा पद्धति इस्लाम का एक भाग समझी जाने लगी। मुसलमान अपनी शिक्षा पद्धति पर सदैव गर्व करते थे और उसे दूसरी पद्धतियों से उत्तम समझते थे, इसलिए 1835 में जब अंग्रेज

अंग्रेज सरकार ने उनकी पद्धति को समाप्त कर के अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू की तो मुसलामनों ने उसे स्वीकार करने से इंकार कर दिया। मुसलमानों को संदेह था कि नया शिक्षा उनके बच्चों को इस्लाम से दूर कर देगी। सरसय्यद 1858 ई० से अंग्रेजों के समर्थक थे पहले तो उनका विचार था कि आधुनिक विज्ञान पर अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद उर्दू में कर दिया जाए। इस संबंध में उन्होंने 1863 ई० में गाजीपुर में साइंटिफिक सोसाइटी स्थापित की जिसका लक्ष्य मुसलमानों को धार्मिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को सामग्री रखते हुए उनको आधुनिक शिक्षा से परिचित कराने के लिये पाठ्यक्रम तैयार करना था। इसके पश्चात रुपया इकट्ठा करने के लिए फंड कमेटी स्थापित हुयी ताकि एक मुस्लिम कॉलेज का निर्माण किया जा सके। उलमा के विरोध के बावजूद अच्छी राशा एकत्रित हुयी। अन्ततः 1877 में अलीगढ़ में एंग्लो ओरिएण्टल कालेज की नींव डाली गयी। यह कालेज 1920 ई० में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी बना दिया गया। 1884 में सरसय्यद ने पंजाब का दौरा किया और मुसलमानों को नयी शिक्षा की प्राप्ति की महत्वपूर्णता का अनुभव दिलाने के लिये कई भाषण दिये। सरसय्यद को पंजाब में जिन व्यक्तियों पर भरोसा था और जिनका वे आदर करते थे उनमें इकबाल के गुरू सय्यद मीर हसन भी थे।

इकबाल के प्रारम्भिक विद्यार्थी जीवन पर सय्यद मीर हसन का व्यक्तित्व हावी है। सय्यद मीर हसन के पढ़ाने का ढंग ऐसा था कि अपने विद्यार्थियों में उर्दू फारसी और अरबी भाषा के प्रति रुचि पैदा कर देते थे। फारसी के किसी शेर का अर्थ बताते समय वह उसके समार्थी उर्दू और पंजाबी की बोलियों पंक्तियाँ पढ़ डालते थे। सय्यद मीर हसन ने इकबाल को अरबी फारसी और उर्दू साहित्य ज्ञान दर्शन और तसव्वुफ आदि की शिक्षा देकर इनके हृदय में पुराने इस्लामी

ज्ञान के लिये बहुत अधिक प्यास जागृत कर दी थी । इकबाल के स्वभाव की सादगी, निश्चलता, संतोष चंचलता और नम्रता सब मीर हसन के स्वभाव का प्रभाव था । इकबाल अपने गुरू का बहुत आदर करते थे । यहाँ तक की उनके सामने कभी अपने शेर सुनाने की धृष्टता नहीं करते थे ।

इकबाल को सरसय्यद और अलीगढ़ आन्दोलन का अनुभव सय्यद मीर हसन के माध्यम से हुआ था । इकबाल को 1923 में जब सर की उपाधि प्रदान की गयी तब इन्होंने पंजाब के राज्यपाल से कहा जब तक इनके गुरू को साहित्यिक योगदान मान्यता न दी जाएगी तब तक वह पदवी ग्रहण नहीं करेंगे । गवर्नर ने पूछा सय्यद मीर हसन को कुछ रचनायें हैं । इकबाल ने उत्तर दिया मैं स्वयं उनकी रचना हूँ । इसलिये इकबाल को उपाधि दी जाने के अवसर पर सय्यद मीर हसन को भी शम्सुल उलमा की उपाधि प्रदान की गयी ।

इकबाल अल्प आयु में ही बहुत बुद्धिमान से उन्हें शिक्षा में बहुत रुचि थी । वे अथक परिश्रम करते थे, काफी रात तक पढ़ते थे । खेल कूद में भी इकबाल को रुचि थी । उनके माता-पिता ने उन्हें जिस प्रकार की शिक्षा दी थी उसका अनुमान निम्नलिखित उदाहरण से हो जाता है । (एक दिन एक भिखारी उनके घर के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया और कई बार कहने पर भी नहीं गया । इकबाल के लड़कपन का ज़माना था । फकीर के बार-बार पुकारने पर उन्हें ताव आ गया और उन्होंने एक थप्पड़ फकीर को रसीद कर दिया । इकबाल के पिता शेख नूर मुहम्मद इकबाल की इस हरकत पर बहुत दुखित हुए और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे इन्होंने इकबाल से कहा

"जब क़यामत के दिन अल्लाह के रसूल के चारों तरफ इस्लाम के सिपाही यानी शहीद, धार्मिक सूफी और अपने गुनाहों पर पछताने वाले साधारण लोग इकट्ठा होंगे तब इस भीड़ में इस अभागे भिखारी की फरयाद रसूल की मुबारक दृष्टि को अपनी ओर आकर्षित कर लेगी और अल्लाह के रसूल मुझसे पूछेंगे कि एक युवक को तुझको सौंपा गया था इसलिये कि उसमें तू हमारे बताये हुए सिद्धान्तों के अनुसार संस्कार भरे परन्तु यह सरल कार्य भी तुझसे न हो सका कि तू एक मिट्टी के ढेर को मनुष्य बना देता ? तब मैं अपने स्वामी को क्या मुंह दिखाऊंगा? बेटा तू इस भीड़ का ध्यान कर और तू मेरी इस सफ़ेद दाढ़ी को देख, ईश्वर के लिये अपने स्वामी के सामने मुझे यूं ज़लील न कर ।"[1], इक़बाल के पिता के इस तरह के संस्कार थे । इकबाल के पिता जब भी किसी बात पर रोक लगाते इकबाल को या किसी को कुछ करने से रोकते सदैव कुरान शरीफ और रसूल के जीवन का उपदेश देते ।

इकबाल को शिष्टाचार की शिक्षा देने में उनकी माता जी का भी बहुत अधिक योगदान था । इकबाल अपनी माता जी से बहुत प्रेम करते थे । इकबाल के घर का वातावरण भी ऐसा था कि जिसमें छोटों को प्रेम करने के साथ ही बड़ों का आदर करना भी बहुत महत्व रखता था ।

0 शिक्षा :

इकबाल ने 1893 ई० में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और सियालकोट मिशन कालेज में इण्टर में प्रवेश ले लिया । इकबाल जब स्कूल में ही थे छोटी-छोटी गज़लें कहा करते थे और उनको किसी योग्य न समझ फाड़ कर फेंक देते थे । कुछ पुरानी गजलों से जो दिल्ली की

1. ज़िन्दारूद - जावेद इक़बाल - भाग 1 - पृ० 64,65

"जबान" पत्रिका के नवंबर, 1898 के अंक में और उसके बाद प्रकाशित हुआ, उससे स्पष्ट हो जाता है, कि वह न केवल सोलह सत्रह वर्ष की अल्प आयु में अच्छी गज़लें कहने लगे थे बल्कि उनकी गज़लें देहली की पत्रिकाओं की शोभा भी बनती थी ।

उर्दू के कवियों में उन दिनों दाग देहलवी बहुत प्रसिद्ध और निजाम दक्कन के गुरू होने के कारण उनकी प्रसिद्ध और अधिक बढ़ गयी थी । जो लोग उनके पास नहीं जा सकते थे पत्र-व्यवहार द्वारा दूर ही से उनके शागिर्द बनकर गर्व महसूस करते थे । गज़लें डाक से उनके पास जातीं और फिर शुद्धि के पश्चात् डाक ही से वापस जातीं । मुहम्मद इकबाल ने उन्हें खत लिखा और कुछ गजलें शुद्धि के लिये भी भेजा । इस प्रकार इकबाल को उर्दू शायरी के लिये भी ऐसे गुरू मिले जो अपने समय में भाषा और गुणों के संबंध में गजल में निपुण माने जाते थे । इन आरम्भिक गजलों में वह बातें तो मौजूद न था जिनसे इसके पश्चात इकबाल का काव्य प्रसिद्ध हुआ है । मगर जनाब दाग की पैनी दृष्टि इस बात से भली भाँति परिचित हो चुकी थी कि यह विद्यार्थी कोई साधारण कवि नहीं शीघ्र ही उन्होंने कह दिया इकबाल के काव्य में शुद्धि की आवश्यकता नहीं के बराबर है और इस प्रकार शिष्य और गुरू का संबंध काफी समय तक न रह सका । दाग के जीवन काल में ही इकबाल काव्य के मैदान में काफी प्रसिद्ध हो चुके थे । दाग इस बात पर सदैव गर्व करते थे कि इकबाल भी उन लोगों में से एक हैं जिनके काव्य की शुद्धि उन्होंने की । 1905 में दाग देहलवी की मृत्यु पर इकबाल ने जो नजम लिखी वह बांगेदरा के संकलन में सम्मिलित है, उससे भी डा० इकबाल और दाग देहलवी के संबंध का स्पष्ट ब्यौरा मिल जाता है । शिक्षा एवं विवाह मई 1893 में जब इकबाल ने केवल मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी इनका विवाह

एक कश्मीरी घराने के पुत्री करीम बी से हो गया । परन्तु यह विवाह असफल रहा ।

० लाहौर में शिक्षा :

सितंबर, 1895 में इकबाल ने गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर में प्रवेश लिया और कालेज के हास्टल में अपने विद्यार्थी जीवन के चार साल व्यतीत किये । हास्टल में इकबाल का कमरा धीरे-धीरे मित्रों के जमघट और काव्य सभाओं का केन्द्र बनने लगा । इन सभाओं में उर्दू शायरी की शुद्धि और विकास और उसमें पश्चिमी काव्य का नया रंग उत्पन्न करने की चर्चा बार-बार होती थी ।

बी॰ए॰ की क्लास में इकबाल के विषय अंग्रेजी, दर्शन और अरबी थे इकबाल ने 1897 में बी॰ए॰ अरबी और अंग्रेजी में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण किया और पदक पाये, इसके अतिरिक्त पूर्ण रूप से वह सेकेण्ड क्लास में उत्तीर्ण हुए ।

दर्शन में रुचि होने के कारण इकबाल ने एम॰ए॰ दर्शन में प्रवेश लिया । इस तरह इकबाल को ग्यारह फरवरी 1898 ई० में आरनल्ड के शिष्य बनने का अवसर मिला जिनके पथ प्रदर्शन में इकबाल की दर्शन के प्रति रुचि और बढ़ गया और आर्नल्ड स्वयं भी इकबाल से इतने प्रभावित हुए की उनसे मित्रों की तरह व्यवहार करने लगे । आरनल्ड ज्ञान की खोज के नये मार्गों से भली भाँति परिचित थे । इस प्रकार गुरु और शिष्य के संबंध का अंततः परिणाम यह निकला कि शिष्य भी गुरु के पीछे-पीछे इंग्लैण्ड पहुँचे । इकबाल ने एम॰ए॰ दर्शन की परीक्षा 1899 में तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण की मगर युनिवर्सिटी भर में इस विषय के अकेले सफल विद्यार्थी होने के कारण वह प्रथम रहे और रजत पदक भी प्राप्त किया । एम॰ए॰ दर्शन के साथ ही साथ इकबाल ने लाहौर में कानून की शिक्षा प्रारंभ कर दी थी लेकिन उनकी यह शिक्षा लंदन में पूर्ण हो सकी ।

उस समय लाहौर में मुशायरा काफी प्रचलित था। मुशायरे में श्रोता गड की काफी भीड़ रहती थी। नवम्बर 1895 को एक साँझ इकबाल के कुछ सहपाठी उन्हें एक मुशायरे में ले गये प्रसिद्ध शायर मिर्जा अरशद गोरगानी देहलवी वहा उपस्थित थे। लाहौर में इकबाल ने शायद पहली बार मुशायरे में अपनी गज़ल पढ़ी। जब इस शेर पर पहुँचे

मोती समझ के शाने करीमी ने चुन लिये।
क़तरे जो थे मेरे अरक़े इनफ़िआल के।

तो अरशद ने बहुत प्रशंसा की लाहौर में एक साहित्यिक सभा हुयी जिसके अध्यक्ष मदन गोपाल और संचालक खान अहमद खान थे। इसी सभा की बैठक में इकबाल ने अपनी नज़्म-'हिमालय' भी पढ़कर सुनाई। इकबाल की यह नज्म नये रंग की थी, जिसमे विचार पश्चमी थे और शैली फारसी साथ ही इस नज़्म में देश प्रेम की मिठास मौजूद थी, इस प्रकार इस सभा से 1898 ई से नये प्रकार की शायरी प्रारम्भ हुयी।

मुसलमानों की शिक्षा केलिए स्कूल और कॉलेज स्थापित करने के लिए लाहौर में "अंजुमन हिमायते इस्लाम" की स्थापना हुयी। यह अन्जुमन अनाथ मुस्लिम बच्चों के लिए अनाथ आश्रम ~~और अनाथ बच्चों केलिए अनाथ आश्रम~~ और उन की शिक्षा और पालन पोषण की व्यवस्था करती थी। अंजुमन अपने सामाजिक कार्यों के लिए वार्षिक उत्सव करके चन्दा इकट्ठा करती थी। इकबाल ने 1900 ई में पहली बार "अंजुमन हिमयते इस्लामी" के वार्षिक उत्सव में नज़्म सुनाई इसके पश्चात नियमानुसार नज़्म सुनाते रहे। इसके बाद वह एक लोक प्रिय और इस्लामी शायर के रूप में जाने जाने लगे।

नौकरी और शोध:- मई 1899 से 1905 ई तक इकबाल लाहौर के ओरी--इन्टल कालेज और फिर गवर्नमेन्ट कालेज में अंग्रेजी इतिहास, अर्थशास्त्र और

अन्ततः दर्शन पढ़ाते रहें। इस समय इन्होंने निम्न लिखित अनुवाद संग्रह संकलित और प्रकाशित करवाये-

1§ "शुद्ध अद्वैतवाद का सिद्धांत" प्रस्तुत शेख अब्दुल करीम अलजेरी यह अंग्रेजी में एक शोध निबन्ध था जिसमें अलजेली की रचना "सम्पूर्ण मानव" पर विवाद किया गया है।

2§ स्ब्ट्स की रचना "अगली प्लेनटेजनेस्ट" का उर्दू में सारांश और अनुवाद यह पुस्तक इंगलैंड के आकस्मिक इतिहास से संबंधित थी।

3§ वाकर की रचना पोलेटिकल इकानमी का उर्दू में सारांश अनुवाद- इस पुस्तक में वाकर ने अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर वर्तालाप किया है।

4§ "अर्थशास्त्र" इकबाल की पहली प्रकाशित गद्य रचना है। यह 1904 में प्रकाशित हुई, बाद में इकबाल ने स्वयं इसे पुनःप्रकाशन योग्य न समझा।

इकबाल ने अपनी इस समय की शायरी में परम्परागत गज़ल से काफ़ी हद तक छुटकारा पा लिया था। कही कही उनके काव्य में रंगीलीपन या नारी प्रेम की झलक दिखायी दे जाती थी। परन्तु उसमें वासना की भावना जरा भी नही थी। उनकी नज़्मों में प्रकृतिक दृश्यों, सौन्दर्य और सृष्टि प्रेम को महत्त्व दिया गया है, जो वस्तु भी उनको आकर्षित करती उसपर शेर कह देते। नयी शिक्षित पीढ़ी के सामने उस समय यह वास्तविकता स्पष्ट थी, कि अंग्रेजी और योरोप की दूसरी जातियों ने राष्ट्रीयता की भावना के कारण विकास किया। अगर वह भी यह भावना अपने अन्दर उत्पन्न कर ले तो वह भी विकसित और स्वतंत्र जाती की पंक्ति में खड़े हो जायेंगे।

इकबाल युवक और शिक्षित एवं नयी पीढ़ी के थे। इसलिए अपने प्रारंभिक शायरी में इन्होंने राष्ट्रीय विचारों को अपना लिया। और "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा" जैसा गीत लिखा।

इक़बाल की इस समय की शायरी का अध्ययन करने से पता चलता है कि इक़बाल ने इस समय हिन्दू दर्शन को समझने केलिए संस्कृत भाषा का भी कही गहराई से अध्ययन किया। पंजाब के सूफी "स्वामी रामतीर्थ" इक़बाल के समकालीन थे। हृदय शुद्धि के कारण इन्होंने अध्यात्मिक जगत में एक उत्तम पद प्राप्त किया इनकी मृत्यु गंगा में डूबने से हुई। इक़बाल से इनके गहरे संबंध थे। इक़बाल ने इनके देहान्त पर एक बहुत अच्छी नज़्म कही जो "बागे दरा" में संकलित है।

1905 के बाद की शायरी में राष्ट्रीयता का रंग उतना गहरा नहीं था जितना पहले था। प्रश्न यह उठता है क्यों। शायद मुसलमानों की पतनशीलता से प्रभावित होकर इकबाल ने अपने बाद की शायरी में इस्लाम और दर्शन को महत्व दिया लेकिन उनका दर्शन सबके लिए जीने का संदेश था किसी एक जाति केलिए नहीं। दूसरा बात उस समय विश्व की परिस्थियाँ ऐसी थी। 16 वीं और 17 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति, चर्च और राष्ट्रके आपस के संघर्ष में राष्ट्र की विजय और राष्ट्रीयता का विकास। बुनियादी तौर पर नये ज्ञान और विज्ञान के विकास ने पूंजीवाद को जन्म दिया। उद्योग और व्यापार के फैलाव की इच्छा ने योरोपीय देशों में दूसरे देशों को जीत कर उस पर शासन करने का लालच पैदा की, इसके कारण रूस और अंगलैंड, हालैंड, फ्रांस आदि योरोपीय देशों का इस्लामी दुनियाँ के विभिन्न क्षेत्रों पर शासन स्थापित हो गया और इसलामी जगत राजनैतिक आर्थिक पतन की स्थिति पर आ खड़ा हुआ। अरब, उत्तरी अफ़्रीका मध्य ऐशिया और हिन्दुस्तान में दो प्रकार के शुद्धि अन्दोलन उत्पन्न हुये जिनका लक्ष्य इस्लामी देशों में उन बुराइयों को जड़ से मिटाना था जो मुसलमानों के पतन का कारण थीं। हिन्दुस्तान में इन आन्दोलनों के पथ प्रदर्शक सय्यद अहमद बरेलवी और सर सय्यद अहमद खाँ थे। इक़बाल इन दोनों से प्रभावित हुये। नवयुवक शिक्षित वर्ग राष्ट्रीयता के साथ-साथ राष्ट्रीय विरुद्ध-

साम्राज्यवादी आन्दोलनों से प्रभावित हुये जो उस समय असफल दिखायी दे रहे थे। आये दिन किसी मुस्लिम देश पर साम्राज्यवादियों के हाथों विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता और हिन्दुस्तानी मुस्लमान केवल दर्शक थे, वे मातम के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते थे।

इकबाल की भी इस समय की शायरी मुस्लिम समाज में इसी प्रतिकूलता का प्रतिनिधित्व करती है।

योरोप में निवास:- 1905 में इकबाल उच्च शिक्षा केलिए इंगलैंड गये डाक्टरेट केलिए इकबाल ने जो विषय चुना वह था "ईरान में ब्रह्म ज्ञान दर्शन का विकास"। शोध लेख प्रस्तुत करने केलिए रजिस्ट्रेशन जर्मनी की म्यूनिख युनिवर्सिटी में हुआ था। जर्मन युनिवर्सिटी में लेक्चरों में उपस्थिति अनिवार्य होती है। और शोध भी जर्मन भाषा में लिखना होता है। परंतु कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी के प्रोफेसरों की सिफारिश के आधार पर उन्हें अपना शोध अंग्रेजी में लिखने की छूट मिल गयी थी। पी.एच.डी. की मौखिकी परीक्षा केलिए इकबाल ने जर्मन भाषा पढी।

साथ ही बैरिस्टरी की उपाधि के लिए इकबाल ने 6 नवम्बर 1965 में "लिंकन्स इन्न" लन्दन में प्रवेश लिया। उन्हें बैरिस्टरी की उपाधि 1968 में मिल गयी।

योरोप में निवास के दौरान इकबाल ने जर्मन साहित्य का गहन अध्ययन किया इसका एक कारण यह भी था कि गोयटे की शायरी में फारसी शायरी का प्रभाव अधिक दिखायी देता है।

योरोप में निवास के दौरान इकबाल में जो सब से बड़ा परिवर्तन आया वह यह कि वह मानसिक और हार्दिक प्रकार से इस्लामी सिद्धांतों की तरफ खिंचते गये। योरोप में इकबाल ने देखा की योरोपीय ज्ञान कला का

लक्ष्य तन है मन नहीं अर्थात मस्तिष्क को शिक्षा तो मिल जाती है परन्तु हृदय प्यासा रह जाता है। योरोप के बुद्धिवाद का आधार वस्तुवाद पर रखा गया था। उसका आदर्श लाभ ग्रहण करना था और वह उस प्रेम भावना से वंचित था जो आत्मा के भीतर प्रवेश कर वास्तविक एकता एवं प्रेम भावना को जन्म देती है। इसलिए इक़बाल को योरोप की चमक दमक में मानव सभ्यता का पतन दिखायी दिया। इक़बाल 19 जुलाई को इंगलैंड से रवाना होकर बम्बई जाते हुए 25 जुलाई 1908 में देहली फिर सियालकोट पहुँचे।

रोजगार:- सम्भवत: 1907 के अन्त में योरोप में निवास के समय ही इक़बाल ने गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर की नौकरी त्याग दी थी अब इक़बाल को वकालत का पेशा ग्रहण करने के अतिरिक्त कोई चारा न था। निवास और कार्यालय के लिए एक घर किराये पर ले लिया कानूनी पुस्तकों की एक छोटी मोटी लाइब्रेरी मोल ले ली। प्रेक्टिस का आरंभ निचले न्यायालयों से किया 30 अक्टूबर 1908 से उन्हें चीफकोर्ट पंजाब में प्रेक्टिस करने की अनुमति मिल गई। चीफ़ कोर्ट पंजाब में अपने मुकदमें की पैरवी के लिए इक़बाल बहुत मेहनत करते थे यहाँ तक कि शेरो शायरी से भी कुछ समय तक अलग रहे।

इक़बाल ढंग की आमदनी के किसी ऐसे माध्यम की खोज में थे जो रोजगार की खींच तान से उन्हें कम से कम इतना समय दे दे जिससे वह अपने विचार संसार तक पहुँचा सकें। इक़बाल की आत्मा की गहराइयों में यह भावना बेकल थी कि उनका मुख्य लक्ष्य काव्य के माध्यम से एक नया संदेश अपनी जाति तक पहुँचना है। इस चरण पर उनका ध्यान हैदराबाद दकन की तरफ गया। वह 18 मार्च 1910 ई. को हैदराबाद के लिए रवाना हो गये। हैदराबाद में यह समय अन्तिम निजाम जनाब जनाब महबूब अली खाँ के शासन का था। नवाब साहब दाग़ के शिष्य और इस प्रकार इक़बाल के उस्ताद भाई थे। दाग़ का देहान्त हो चुका था इक़बाल ने हैदराबाद में एक नज़्म 'गोरिस्ताने शाही के

शीर्षक से लिखी जो गोलकुन्डा के कुतुबशाही मकबरे से प्रभावित होकर लिखी थी। हैदराबाद में इकबाल महाराज कृष्न प्रसाद से मिले जो उन दिनों रियासत के प्रधान मंत्री थे। महाराजा कृष्णप्रसाद संस्कृत के अतिरिक्त अरबी, फारसी और उर्दू का अच्छा ज्ञान रखते थे। उनके विचार सूफ़ियाना थे उनका वातावरण ईसाना था परन्तु स्वभाव साधु संत का सा था। शायरी भी कर लेते थे। इन्होंने जल्द ही इकबाल का हृदय मोह लिया और दोनों में गहरे संबंध स्थापित हो गये जो अंतिम आयु तक बने रहे। 23 मार्च 1910 इकबाल हैदराबाद से लाहौर वापस आये और वकालत में जुट गये।

यह समय उस्मानी तुर्कों के नेतृत्व में इस्लामी जगत के पतन का था। खिलाफत में सम्मलित क्षेत्र एक एक करके योरोपीय देशों के शासन में जा रहे थे। इस प्रकार अंग्रेजी सरकार की तुर्क विरोधी नीति से मुसलमानों में बहुत बेचैनी उत्पन्न हो गयी थी। इकबाल भी इस वातावरण से प्रभावित हुए बगैर न रह सके और 1912 में उनकी अपनी असफलताओं, हिन्दुस्तानी मुसलमानों की गिरती हुयी स्थिति और संसार पर लगातार टूटती हुयी विपत्तियों के फलस्वरूप उन्होंने 'शिकवा' जैसी नज़म लिखी। शिकवा "अंजुमन हिमायत इस्लाम " के 1911 के वार्षिक उत्सव में पढ़ी गई। अब्दुल कादिर जो वहीं उपस्थित थे लिखते हैं इकबाल ने अपनी प्रसिद्ध नज़म 'शिकवा' अपने विशेष ढंग से पढ़ा। बहुत लोगों को याद होगा जब कैसा दुख का वातावरण जलसे पर छाया हुआ था। उनके प्रशंसक फूलों से झोलियां भर कर लाये थे और जब वह पढ़ रहे थे तो उन पर फूल बरसा रहे थे। -1

निजी जीवन:- जैसा कि ऊपर चर्चा हो चुकी है, इकबाल का विवाह करीम बी से परम्परा के अनुसार हुआ था। और उनसे वह दो बच्चों के पिता

1- ज़िन्दा रूद - जावेद इकबाल पृ. 152

बन चुके थे। योरोप से वापसी के बाद पता चल गया कि इस विवाह का निभाना कठिन है कारण दूसरे अध्याय में बताया जायेगा। यहाँ इतना ही कहना आवश्यक है। योरोप से वापसी के बाद इकबाल अपनी पत्नी से अलग हो गये और एक निश्चित रकम उन्हें हमेशा भेजते रहे।

इस समय इकबाल विवाहित शान्ति की खोज में थे। उन्होंने अन्ततः दूसरा विवाह 1910 ई. में लाहौर के एक निर्धन कश्मीरी परिवार की साधारण सी एक 19-20 साल की लड़की से किया। लेकिन सिर्फ निकाह हो पाया था कि इकबाल को एक गुमनाम चिट्ठी मिली, जिसमें सरदार बेगम के चरित्र पर तरह तरह के आरोप लगाये गये थे। इकबाल असमंजस में पड़ गये। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह सरदार बेगम को तलाक देकर कहीं और विवाह करेंगे। उन्होंने अपने मित्रों से इस पत्र के बारे में पता लगाने को भी कहा। इस तरह तीन साल गुजर गये। इकबाल की तीसरी शादी सम्भवतः 1913 के आरंभ में लुधियाना के एक धनी परिवार की लड़की मुख़तार बेगम से हुयी। इसी बीच इनके मित्रों ने गुमनाम चिट्ठी के बारे में छानबीन करके बताया कि यह चिट्ठी एक वकील साहब ने भेजी थी, जो सरदार बेगम से अपने पुत्र का विवाह करना चाहते थे। सरदार बेगम ने स्वयं भी इकबाल को एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने लिखा कि "आप को झूटे आरोप पर विश्वास नहीं करना चाहिये था। मेरा विवाह तो आपसे हो चुका है अब मैं किसी दूसरे से विवाह के बारे में सोच भी नहीं सकता। मैं इसी स्थिति में पूरा जीवन बिता दूँगी और कयामत के दिन आपका दामन पकडूंगी।"[1] इकबाल चिट्ठी पढ़कर अपनी भूल पर बहुत लज्जित हुये उन्होंने चिट्ठी मुखतार बेगम को दिखायी वह बहुत निर्मल हृदय की थी। उनकी अनुभूति से इकबाल सरदार बेगम को घर ले आये फिर दोनों सगी बहनों की तरह रहीं।

---

1 जिन्दा रूद, जावेद इकबाल पृष्ठ 167

रचनात्मक चमत्कार:- मसनवी असरारे खुदी- योरोप के साम्राज्य देश सैनिक बल के नशे से चूर दो गुटों में बटे हुये केवल किसी ऐसी घटना की तलाश में थे, जो युद्ध आरंभ करने के लिए बहाना बन सके यह घटना 28 जून 1914 में घटी और प्रथम महा युद्ध छिड़ गया। दोनों ओर से लाखों लोग मारे गये और करोड़ों बेकार हो गये। यह युद्ध डाकू जातियों का युद्ध था जो लूट घसूट वाले व्यावहार को बढ़ावा देने पर निर्बलों के शोषण के लिए लड़ा जा रहा था। उनकी दृष्टि में नया मानव एक व्यापारी समाज की उपज था जो आत्मिक सामाजिक, स्वाभाविक और मानवी मूल्यों को रौंदता हुआ राष्ट्रीयता की पशु-भावना से तृप्त होकर आत्म हत्या के कर्म में व्यस्त था। इक़बाल इस तरह के वातावरण से दुखित थे। वह भविष्य के उस मानवी खोजों में कर्मशील थे, जो भविष्य के मुस्लिम समाज को उन्नति दिला सके। इक़बाल युद्ध की बीभित्सता से बेखबर असरारे खुदी लिखने में जुटे थे। असरारे खुदी 1915 में प्रकाशित हुयी। इक़बाल ने अन्जुमन हिमायते इस्लाम के जलसे में भाषण देते हुये बताया "असरारे खुदी के नाम से मैंने एक मसनवी लिखी है जो ईरानी तसव्वुफ़ के उस जाल के टुकड़े टुकड़े कर देगी जिसने मुसलमानों को उनकी कार्य शक्ति से वंचित करके गतिहीन बना रखा है। सूफियों का कहना है मनुष्य अपने आप को मिटा ले और अपने आत्म को नष्ट कर दे तभी वह ईश्वर ज्ञान का लक्ष्य पा सकता है। यह तसव्वुफ़ इस्लाम के विरूद्ध है|इस्लाम चाहता है कि मनुष्य अपने अहं को न केवल बनाये रखे बल्कि विकास के रास्ते पर चलते चलते उस स्थान पर पहुँच जाये जो उसके लिए निश्चित है और जिससे बड़ा कोई स्थान मानव कल्पना में न हो।[1]

मसनवी असरारे खुदी जब प्रकाशित हुयी तो सूफियों की ओर से इस संबंध में पत्र पत्रिकाओं में काफी वर्तालाप हुयी। इक़बाल ने एक चिट्ठी 3 अप्रैल 1916 में महाराजा कृष्ण प्रसाद को लिखी जिसमें लिखा "मैंने मुसलमानों

---

1 जिन्दा रूद जावेद इक़बाल पृ. 219

और हिन्दुओं के भूतपूर्व मानसिक, इतिहास और आधुनिक स्थित पर बहुत विचार किया है जिस से मुझे यह विश्वास हो गया है कि इन दोनों जातियों के चिकित्सकों को अपने रोगी के मूल रोग अब तक मालूम नहीं हो सका। मेरा विश्वास है कि इनका मूल रोग जीवन शक्तियों की दुर्बलता है और यह दुर्बलता अधिकतर एक विशेष प्रकार के साहित्य का परिणाम है जो ऐशिया की जातियों के दुर्भाग्य से उनमें उत्पन्न हो गया--- अब वर्तमान परिस्थितियों की यह मांग है कि इस दृष्टि कोण का सुधार किया जाय" [1] असरारे खुदी का अंग्रेजी अनुवाद कैमब्रिज के प्रसिद्ध ज्ञानी निकलसन ने किया जो लन्दन से 1920 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात यौरोप के कई लेखकों ने इस मसनवी पर टिप्पणी की और इसके गुणों से लोगों को परिचित कराया।

यौरोप में महायुद्ध के आरंभ होते ही हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य का वर्ताव कठोर होने लगा। 1914 ई में पंजाब के किसानों में बचैनी फैली बंगाल में आतंकवादियों की क्रान्तिकारी आन्दोलन उग्र होता गया। अंग्रेजी राज को भय था कि भारत में बेचैनी प्रदर्शन और आतंकवादियों का क्रान्तिकारी आन्दोलन कहीं समान्य विद्रोह का रूप न धारण कर ले इस के कारण 1917 में रौलट कमीशन की नियुक्ति की गयी, जिसका उद्देश्य राजनैतिक अपराधियों के विरूद्ध कार्रवाई के बारे में विचार करना था। रौलट कमीशन ने राजनैतिक अपराधियों के विरूद्ध जो सुझाव अंग्रेजी शासक को प्रस्तुत किये उसमें प्रशासन और पुलिस को अनुचित अधिकार दिये गये थे। अत: रोलट ऐक्ट की धारा राजनैतिक दलों का विरोध करने पर भी 1819 में पास हो गयी और रोलट ऐक्ट के विरूद्ध भारत वर्ष में जलूसों और प्रदर्शनों का तांता बंध गया। इसको कुचलने के लिए अंग्रेजों ने हिंसा और हत्याकांड का रास्ता अपनाया। इससे इकबाल बहुत दुखित हुये। दिसंबर 1919 में खिलाफत कांफ्रेंस और कांग्रेस के जलसे अमृतसर में हुए जिन्में मौलाना शौकत अली, मुहम्मद अली, गांधीजी, मोतीलाल

---

1. जिन्दा रूद जावेद इकबाल पृ. 233

जैसे बड़े नेता सम्मिलित हुए। इक़बाल भी अमृतसर पहुँचे। इस अवसर पर अली बन्धुओं को संबोधित करते हुये उन्होंने अपनी नज़्म "असीरी" शीर्षक पढ़ी जो ~~उस समय~~ लाहोर से अमृतसर की यात्रा के समय इक़बाल ने लिखी थी।

मई 1920 में सेवरे समझौते के द्वारा जब तुर्की को बाँट दिया गया तो खिलाफ़त बचाओ माँग की पुष्टि में कांग्रेस ने गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन की घोषणा की जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया गया और अंग्रेजी सरकार से सहायक राशि लेने वाले शिक्षा संस्थाओं का भी बहिष्कार किया गया। मौलाना अहम्मद अली आदि ने अलीगढ़ युनिवर्सिटी की बड़ी संख्या को तोड़ कर स्वतंत्र राष्ट्रीय विश्वविद्यालय "जामि मिल्लिया इस्लामिया" का नींव डाला। गांधीजी ने इक़बाल को चिट्ठी लिखी "मुस्लिम नेशनल युनिवर्सिटी आप के आवाज दे रही है यदि आप उसका चार्ज ले सके तो मुझे विश्वास है वह आपके सही निर्देशन में विकास पा सकेगी -- ।

इक़बाल ने इस पत्र के जवाब में गांधीजी को लिखा कि उनमें वह क्षमता नहीं कि युनिवर्सिटी चलाने में आरंभ में जो खींचतान होती है उससे वह निपट सकें। इक़बाल उस समय राजनीति से हटकर 'प्यामे मश्रिक़' लिख रहे थे।

अन्जुमन हिमायते इस्लामी के वार्षिक उत्सव में इक़बाल ने अपना प्रसिद्ध नज़्म 'ख़िज़्रे राह' 20 हज़ार श्रोतागण के सामने पढ़ी। इस नज़्म की शैली ने दर्शकों को रुला दिया। निम्नलिखित शेर पढ़ते समय स्वयं रो पड़े और दर्शकों को भी रुला दिया।

बेचता है हाशमी नामूसे दीने मुस्तफ़ा
ख़ाको ख़ूँ में मिल रहा है तुर्कमाने सख़्त कोश -2

यह नज़्म इक़बाल ने महायुद्ध की विजयी जातियों की धाँधली और उनके

---

1. जिन्दा रूद पृष्ट 252
2. कुलयाते इक़बाल

1924 ई. में इक़बाल के यहाँ सरदार बेगम की कोख से बेटा पैदा हुआ। उसका नाम जावेद इक़बाल रखा था। इन्हीं दिनों इनकी दूसरी बीवी मुख़्तार बेगम की मृत्यु हो गयी। इसका प्रभाव इक़बाल पर बहुत पड़ा।

इसी समय के आस पास कुछ उलमा ने जो इक़बाल के विरुद्ध थे इक़बाल पर कुफ्र का फ़तवा दिया। इसको सिद्ध करने केलिये उन लोगों ने इक़बाल की नज़्म "आफ़ताब" जो "गायत्रीमंत्र" का अनुवाद है का उदाहरण देते हुये कहा कि इक़बाल ने सूर्य में ख़ुदा के गुणों का आरोपण किया है और उससे प्रार्थना की है और साथ ही यह भी कि इक़बाल आख़िरत के जीवन पर विश्वास नहीं करते इत्यादि। इन लोगों की चारों तरफ़ से निंदा की गयी परन्तु यह उलमा के एक वर्ग की उस व्यक्ति से प्रतिस्पर्द्धा था जिसने अपनी जाति को ख़ुदी का एहसास दिलाकर जागरण का संदेश दिया था।

राजनीति: 6 दिसम्बर, 1926 को इक़बाल पंजाब विधान सभा का चुनाव जीत कर उसके सदस्य बने और 1930 तक इस पद पर बने रहे परन्तु इस दल की नीति से यह असंतुष्ट थे। बाद में यह पंजाब मुस्लिम लीग के संचालक बन गये उस समय इक़बाल का विचार सदैव यह रहा कि मुस्लिम जातियों को अपने आर्थिक और सामाजिक विकास केलिये पृथक प्रतिनिधित्व के अधिकार से किसी प्रकार विरक्त नहीं होना चाहिये।

जून 1927 इक़बाल की फ़ारसी काव्य 'ज़बूरे अज्म' प्रकाशित हुई जैसा की इक़बाल स्वयं मानते है इस काव्य के चार भाग है। पहले में मनुष्य का ईश्वर के प्रति हार्दिक प्रेम व्यक्त किया गया है। दूसरे अध्याय में मनुष्य के बारे में मनुष्य की राय तीसरे अध्याय में फ़ारसी शायर महबूब शबिस्त्री के प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं, चौथे अध्याय एक मसनवी है जिसमें बताया गया है गुलामी का प्रभाव ललित कलाओं पर क्या पड़ता है।

साईमन कमीशन की असफलता के बाद 19 मई 1928 को एक कमेटी मोतीलाल नेहरू जी के नेतृत्व में बनायी गई जिसके भावी हिन्दुस्तान के विधान की रूप रेखा तैयार की गई। इस पृष्ठ भूमि में बहुदलीय मुस्लिम कान्फ्रेन्स अस्तित्व में आई। इक़बाल इस के प्रवर्तकों में से एक थे। उन्होंने मुस्लिम कान्फ्रेन्स की ओर से मांगों की रूप रेखा तैयार की।

इसके बाद इक़बाल उत्तर भारत की यात्रा पर रवाना हो गये। और जगह जगह मुस्लिम ब्रह्मज्ञान पर भाषण दिया।

दक्षिण भारत की यात्रा:- मद्रास के सेठ जमाल मुईउद्दीन की देख रेख में एक मुस्लिम ऐसोसिएशन की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य जानी मानी मुस्लिम ज्ञानियों को मद्रास निमंत्रित करके इस्लाम से संबंधित विषयों पर भाषण देना था। इक़बाल ने भी भाषण दिये अपने भाषण में इक़बाल ने बताया इस्लाम का जीवन जड़ नहीं, गतिशील है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई भाषण दिये जिसमें मुस्लिम धर्म और संस्कृति और उसके पुनः निर्माण पर भाषण दिये।

11 जनवरी, 1929 को वह श्रीरंगपटनम टीपू सुलतान की मज़ार पर गये।वहां ज़ियारत की फिर हैदराबाद पहुँचे।वहाँ वह महाराजा कृष्ण प्रसाद से मिले और मुशायरे में भी शरीक हुये।

मुस्लिम प्रान्त का सुझाव:- 31 दिसम्बर 1930 को इक़बाल इलाहाबाद पहुँचे और मुस्लिम लीग के अध्यक्ष के रूप में भाषण दिया।अन्य बातों के अतिरिक्त उन्होंने कहा "मुसलमानों की यह माँग कि हिन्दुस्तान में एक मुस्लिम हिन्दुस्तान स्थापित हो उचित है। मेरे विचार में सर्वदलीय मुस्लिम कान्फ्रेंस के प्रस्ताव का आधार भी यही आदर्श है कि इस ताल मेल वाले संपूर्ण देश केलिये आवश्यक है कि उसके खंडों के व्यक्तित्व का गला घोंटने के बजाय

उन्हें इस बात का अवसर दिया जाय कि वह उन सभी सम्भावित शक्तियों को काम में ला सकें जो उनमें विद्यमान हैं" -1 कुछ लोग इकबाल के इस विचार को पाकिस्तान के विचार से जोड़ते हैं।

गोलमेज कान्फ्रेंस:- पहली गोलमेज कान्फ्रेंस में इकबाल को निमंत्रित नहीं किया गया। दूसरी गोल मेज कान्फ्रेंस में इकबाल निमंत्रित किये गये। इस तरह 23 साल बाद फिर इकबाल योरोप पहुँचे। इस बीच वहाँ बहुत परिवर्तन आ चुके थे। इटली में फासिस्ट पार्टी ने शासन स्थापित कर लिया था और जर्मनी हिटलर की नाज़ी पार्टी के नेतृत्व मे था।

इकबाल की सब कुछ ताड़ जाने वाली दृष्टि यह सब देख रही थी और वह यह अनुभव कर रहे थे कि विश्व को व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता है।

अक्टूबर 1931 में इकबाल ने गोल मेज कान्फ्रेंस में शिरकत की। जिसके कोई विशेष परिणाम नहीं निकले। 21 नवम्बर 1931 को इकबाल लन्दन, रोम रवाना हुये। वहाँ उनकी भेंट इटली के तानाशाह मुसोलिनी से हुयी। यह समय मुसोलिनी के चर्मोत्कर्ष का था। इकबाल उनसे प्रभावित हुये बिना न रह सके।

वहाँ से इकबाल काहिरा होते हुये 7 दिसम्बर 1931 यरोशलम (फिलस्तीन) पहुँचे और 7 दिसम्बर से चौदह दिसम्बर तक मोतमर के इजलासों में भाग लिया। 30 दिसम्बर 1931 को लाहौर पहुँचे।

फरवरी 1932 में इकबाल की प्रसिद्ध रचना "जावेदनामा" प्रकाशित हुयी। इसके विषय के बारे में इकबाल ने स्वयं ही एक साल पहले लन्दन की एक सभा में कहा था कि यह वास्तविकता में एशिया की डिवाइन कमेडी है।

---

1. इकबाल जाइगरे हिन्दी अनुवाद - अतीक़ सिद्दीकी - पृ. 125

इसमें शायर विभिन्न नक्षत्रों की सैर करता हुआ विभिन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों की आत्माओं से मिलकर बातें करता है। फिर स्वर्ग में जाता है और अन्ततः खुदा के सम्मुख पहुँचता है। इस रचना में आधुनिक काल के सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, स्वाभाविक और समाज सुधार के समस्याओं पर वार्तालाप की गई है।

तीसरी गोल मेज कांफ्रेंस 17 नवम्बर, 1932 में होनेवाली थी परन्तु इकबाल एक महीने पहले ही अर्थात 17 अक्टूबर, 1932 ई० को योरोप रवाना हुये। कांफ्रेंस में भाग लेने के बाद इकबाल 30 दिसम्बर 1932 ई० को पेरिस पहुँचे वहाँ इन्होंने प्रसिद्ध दार्शनिक बर्गसांसे मुलाकात भी की।

5 या 6 जनवरी, 1933 को इकबाल मैड्रिड (स्पेन) पहुँचे। यहाँ तीन सप्ताह रहे। स्पेन में इकबाल ने मैड्रिट युनिवर्सिटी में इस्लामी दर्शन पर कई भाषण दिये। इकबाल ने क़रतबा(स्पेन)में अरबों की मध्यकाल में बनायी हुयी मस्जिद भी देखी|इस विषय में वह स्वयं लिखते है "मेरे विचार में इससे सुन्दर और शानदार मस्जिब इस धरती पर कहीं और निर्माण नहीं हो सकती। ईसाइयों ने कर्तबा पर विजय के बाद जगह जगह छोटे छोटे गिरजे बना दिये थे। जिन्हें फिर हटाकर मस्जिद को मूल स्थिति में लाने का सुझाव है। मैंने इतिहासिक भवसावशेषों का देखभाल करने वाले विभाग के डाइरेक्टर के साथ जाकर विशेष अनुभूति से इस मस्जिब में नमाज़ पढ़ी -- क़ुर्तबा पर ईसाइयों के अधिकार के बाद कमो बेश 450 वर्ष गुजरे। इस इस्लामी उपासना गृह में यह पहली इस्लामी नमाज़ थी । -1 यहीं इकबाल ने प्रसिद्ध क़ुर्तबा की मसजिद पर एक नज़्म लिखी। 26 जनवरी, 1933 को पेरिस आये|25 फरवरी को लाहौर के लिये रवाना हुए ।

<u>अफ़गानिस्तान की यात्रा:-</u> अफ़गानिस्तान के उस समय के बादशाह नादिर शाह

---

1. जिन्दा रुद जावेद इक़बाल - पृष्ट 501

ने शिक्षा पद्धति के विषय में सलाह मशवरे केलिये इक़बाल, सय्यद मसूद और सय्यद सुलेमान नदवी को अफ़गानिस्तान आने का निमंत्रण दिया। इक़बाल 23 अक्टूबर 1933 को काबुल पहुँचे। 28 अक्टूबर 1933 को काबुल की साहित्य सभा में भाषण देते हुये कहा :

" इस देश के शायरों केलिय आवश्यक है कि वह नव जाति के सच्चे मार्ग दर्शक बनें।जीवन की महानता की जगह मृत्यु को बढ़ा चढ़ाकर न दिखायें क्योंकि जब कला मृत्यु का चित्र खींचती है और उसको बढ़ा चढ़ा कर दिखाती है उस समय वह अधिक भयंकर और हानिकारक हो जाती है।"[1] गजनी में इक़बाल ने हकीम सनाई(मध्यकाल के शायर और दार्शनिक)के मक़बरे की ज़ियारत की कब्र के सिरहाने खड़े होकर बे अख्तियार रो पड़े 4 नवम्बर को वापस लाहौर पहुँचे। इक़बाल ने अफ़गानिस्तान की इस यात्रा पर अपनी शायराना भावनाओं का स मसनवे में व्यक्त किया जो 1934 में "मुसाफिर" के नाम से प्रकाशित हुयी।

डोलेट की उपाधि:- 4 सितम्बर 1933 पंजाब युनिवर्सिटी ने इक़बाल को डालिट की उपाधि प्रदान की।

बीमारी और मृत्यु:- 16 जनवरी, 1934 को इक़बाल ने ईद की नमाज लाहौर की बादशाही मस्जिद में पढ़ी वहाँ सर्दी लग गया। घर वापस पहुँच कर सेवाईयों पर दही डाल कर खाया। गला बैठ गया, युनानी और ऐलोपैथिक इलाज करने के बावजूद यह रोग अन्त तक उन्हें सताता रहा। जिसके परिणाम स्वरूप ऊँची आवाज में भाषण देने का सिलसिला भी बन्द हो गया । वकालत के कामों तो पहले ही उनकी राजनीति में रुचि के कारण हानि पहुँची थी। वह गठिया के रोग में भी ग्रस्त थे और हुक़्का पीने के कारण उन्हें दमा की भी शिकायत थी। इसी वर्ष इक़बाल चिन्ताओं में एक और चिन्ता का वृद्धि हो गयी यह उनकी पत्नी की सरदार बेगम की रोगग्रस्त स्थिति थी।

जनवरी 1935 में इक़बाल का प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ 'बाले जीबरील' लाहौर से प्रकाशित हुआ। इसी महीने इक़बाल भोपाल अपने गले के रोग की चिकित्सा

---

[1] ज़िन्दा रूद - जावेद इक़बाल - भाग 3 - पृ. 523

के लिये गये और इस संबंध में मार्च के पहले सप्ताह तक वहाँ रहे जब लाहौर वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा उनकी पत्नी सरदार बेगम की स्थिति पहले से अधिक खराब हो चुकी है। 23 मई 1935 को सरदार बेगम का देहान्त हो गया। सरदार बेगम की असमय मृत्यु ने इक़बाल में बुझा दिया। इक़बाल की आर्थिक स्थिति देखते हुये सर रास मसूद के प्रयास अन्ततः सफल हुये और उन्होंने मई सन् 1935 के अन्त में इक़बाल को सूचना दी कि नवाब भोपाल ने उनके लिये 500 रुपये मासिक जीवन भर के लिये निश्चित कर दी है। जुलाई और अगस्त 1935 में इक़बाल ने फिर भोपाल में अपने गले के रोग की विद्युत चिकित्सा करवायी। परन्तु पीड़ा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। इस 3 अक्टूबर 1935 को स्वास्थ्य की ओर से निराशा के कारण उन्होंने वसीयत नामा द्वारा अपनी सन्तान के लिये अभिभावक नियुक्त कर दिये। 8 अप्रैल 1936 को इक़बाल का भोपाल में विद्युत द्वारा चिकित्सा का अन्तिम कोर्स पूरा हो गया और वह लाहौर वापस आ गये। 6 मई 1936 को सांझ को मुस्लिम लीग के लीडर मुहम्मद अली जिन्हा इक़बाल से मिलने उनके घर जावेद मंज़िल आये। मुहम्मद अली जिन्हा ने इक़बाल के सम्मुख मुस्लिम लीग केन्द्रीय संसदीय मंडल का सदस्य बनने का प्रस्ताव रखा जो रोग ग्रस्त होने पर भी इक़बाल ने स्वीकार कर लिया। 12 मई 1936 में इक़बाल का उर्दू काव्य ग्रंथ लाहौर से प्रकाशित हुआ। दो महीने बाद उनकी फ़ारसी मसनवी "पसचे बायद कर्द ऐ अक़वामे शर्क़" प्रकाशित हुयी। जुलाई 1937 में फ़लस्तीन संबंधि अंग्रेजी राज्य के नियुक्त किये गये रायल कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुयी। जिसमें फलस्तीन के बटवारे का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। इक़बाल ने इस प्रस्ताव के विरोध में एक लेख अंग्रेजी में तैयार किया जिसका उर्दू अनुवाद 26 जुलाई 1937 ई० को लाहौर में प्रांतीय मुस्लिम लीग के सामान्य जलसे में सुनाया गया। द्वितीय महायुद्ध आरंभ होने को वाला था और इक़बाल बहुत चिन्तित रहते थे। इसी पृष्ठ भूमि में उन्होंने 1 जनवरी 1933 को नये वर्ष का संदेश दिया जो आल इंडिया रेडियो लाहौर से प्रसारित किया गया। आपने कहा "........ विचारक आश्चर्य

में हैं कि क्या आधुनिक संस्कृति के विकास की समाप्ति का समय आन पहुँचा है जो आपसी घृणा के कारण मनुष्य मनुष्य को नष्ट करने पर तुला है और अन्ततः हो सकता है कि इस जगत में मनुष्य के रहन सहन को असम्भव बना दिया जाय। याद रखो इस जगत में मनुष्य का जीवन मानवता के आदर को दृष्टि में रखने से ही सम्भव है ---

सो केवल एक ही प्रकार का संगठन विश्वास योग्य है और उस संगठन का आधार है मानवीय भाईचारा जो वंश, राष्ट्रीयता, वर्ण और भाषा से ऊँचा हो "[1]

9 जनवरी, 1938 को लाहौर और सारे भारतवर्ष में इकबाल दिवस बड़े गर्व के साथ मनाया गया। इस संबंध में इकबाल ने लिखा:---

"वह समारोह जिसे इकबाल दिवस का नाम दिया गया है उसमें मेरे लिये केवल यह विचार हृदय की प्रसन्नता का कारण है कि जिस धरती में मैं ने अपना बीज फेंका था वह धरती बन्जर नहीं।"[2] जनवरी 1938 के अन्तिम भाग में एक दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू भी इकबाल से मिलने जावेद मंजिल आये। नेहरू जी अपनी रचना "भारत एक खोज" में इस घटना की चर्चा करते है "....... देहान्त से कुछ महीने पहले जब वह रोगग्रस्त स्थिति में बिस्तर पर पड़े हुये थे। उन्होंने मुझे याद किया और मैं बहुत प्रसन्नता के साथ उनके आदेश की पूर्ति केलिये उनके पास गया। मैंने अनुभव किया कि मत भेदों के होते हुये भी हमारे बीच कितनी आपसी एकता थी --- मैं उनकी शायरी का प्रशंसक हूँ और मुझे यह जानकर बहुत अधिक प्रसन्नता हुयी कि वह भी मुझे पसन्द फरमाते है और मेरे बारे में अच्छी राय रखते है।"[3]

मध्य मार्च 1938 मे उनकी स्थिति में चिन्ताजनक होती चली गयी। दमे के दौरे पड़ते थे। हृदय, गुर्दे और यकृत ठीक प्रकार कार्य नहीं कर रहे थे। नींद नहीं आती थी। दिन रात जागते रहते थे। उनको अनुमान

1,2, ज़िन्दा रूद - इकबाल जावेद - भाग 3 - पृ 655,656
3. इकबाल और कौमी यकजहती - पृ 57,59

हो गया था कि उनकी मृत्यु का समय पास आ गया है। कुछ दिन पहले जब किसी ने उसके स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता प्रकट की तो कहा:-
"मैं तो मौत से नहीं डरता" फिर अपना यह शेर पढ़ा था।

निशाने मर्दे मोमिन बातू गोयम
चूँ मर्ग आयदतबस्सुम बर लेबे ऊस्त

{अर्थात मुसलमान आदमी की मैं तुझे निशानी बताता हूँ। जब उसकी मृत्यु आती है और उसके होंठों पर मुस्कान होती है}

इसलिये 20 अप्रैल 1938 को रात को वह कुछ अधिक प्रसन्न दिखायी दे रहे थे। मोढ़ों में अधिक पीड़ा के कारण नींद नहीं आ रही थी। मगर नींद की गोली लेने से इन्कार कर दिया कहा कि मैं बेहोशी के आलम में मरना नहीं चाहता। 21 अप्रैल सन् 1938 प्रातः काल इकबाल का देहान्त हो गया और उन्हें लाहौर की शाही मस्जिद के पास ही दफन किया गया। जनाजे के साथ हजारों की संख्या में हर धर्म के लोग सम्मिलित थे।

---

1. जावेद इकबाल जिन्दा रुद पृ. 672

अध्याय - दो

रामधारी सिंह दिनकर और डॉ० इकबाल की राष्ट्रीय भावना का तुलनात्मक अध्ययन

1. मातृ-भूमि से प्रेम
    क. हिमालय के प्रति दोनों कवियों की भावना
    ख. देश का गुणगान
    ग. प्रकृति चित्रण
2. अतीत का स्वर
3. वर्तमान दुर्दशा का चित्रण
4. एकता की भावना
5. कष्ट सहन और बलिदान
6. ब्रिटिश शासकों के प्रति विद्रोह की भावना
7. स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा
8. देश के लोक नायकों के गुण-गान.

अध्याय - दो

रामधारी सिंह दिनकर और डॉ० इकबाल की राष्ट्रीय भावना का तुलनात्मक अध्ययन

यह तो सर्व विदित है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और बचपन से ही उसे मिल जुल कर रहने की शिक्षा दी जाती है । बच्चे को शुरू शुरू में अपने घर वालों से प्रेम होता है और जैसे वह बड़ा होता है उसे अपने आस पास के लोगों और फिर उस गाँव से प्रेम हो जाता है जहाँ वह पैदा हुआ, फिर जब बच्चे को पता चलता है कि हम सब एक राष्ट्र में रह रहे हैं तो यही प्रेम संकीर्णता छोड़कर एक समग्र देश और उसके अन्दर रहने वाली समग्र जातियों के प्रेम के रूप में परिणित हो जाता है ।

भारत में संपूर्ण राष्ट्रीयता का विकास आधुनिक काल की देन है क्योंकि अंग्रेज़ों ने पूरे भारतवर्ष पर शासन स्थापित कर लिया था और पूरी भारत की प्रजा चाहे वह किसी वर्ग या जाति की हो समान यातना का अनुभव कर रही थी और अंग्रेजों का अपने आप को गुलाम महसूस करने

लगी थी, और इनसे मुक्ति प्राप्त करने की बेचैनी किसी एक धर्म या प्रदेश तक सीमित न रहकर पूरे देश में व्याप्त हो गयी थी। डॉ० इकबाल और दिनकर जी ने जब लिखना शुरू किया जब राष्ट्रीयता का विकास हो चुका था। इकबाल ने तो दिनकर जी से काफी पहले लिखना शुरू किया था। इसलिये वे स्वयं इकबाल की राष्ट्रीय भावना से प्रभावित हुये थे और "तसवीरे दर्द" का दर्द उन्होंने महसूस किया था। इकबाल ने जब लिखना शुरू किया तब उर्दू साहित्य में राष्ट्रीय भावना का विकास हो चुका था। हाली, आजाद और शिबली की नज़्में भारतीयों के दिलों में नयी उमंगे, नया जोश भर रही थीं और समस्त भारतवासियों के हृदय में आज़ादी के लिए संघर्ष की भावना पैदा कर चुकी थी, दिनकरजी ने जब लिखना शुरू किया तब तो स्वतंत्रता संग्राम अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुका था। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण नवीन और मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ भारतीयों के दिलों में उमंगे पैदा कर चुकी थीं, और स्वयं दिनकर जी को भी इन कवियों की कविताओं ने प्रभावित किया है। इस प्रकार यह तो कहा जा सकता कि जब दिनकर जी ने लिखना शुरू किया तब राष्ट्रीयता के अनुकूल वातावरण था। राष्ट्रीयता की जड़ें समाज में गड़ी हैं और प्रत्येक व्यक्ति की तरह कवि भी सामाजिक प्राणी है। वह न चाहते हुए भी अपने वातावरण से प्रभावित होता है। वास्तव में देखा जाये तो उसी कवि की लेखनी सफल कही जायगी जो समाज से साक्षात्कार कर उसकी आवश्यकता को समझ, उसके दर्द को अपने अंदर समा कर फिर कला के साँचे में ढाल कर इस दर्द की अभिव्यक्ति करें। इसलिए चारों तरफ दर्द से पीड़ित लोगों को देखकर कवि की लेखनी कैसे चुप रह सकती यूँ तो दिनकर जी ने स्वयं "रश्मि लोक" की भूमिका में लिखा है।

"संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया किन्तु मन मेरा भी चाहता था कि गर्जन तर्जन से दूर रहूँ, और केवल ऐसी ही कविताएँ लिखूँ जिसमें कोमलता और कल्पना का उभार हो....... सुयश मुझे हुंकार से ही मिला किन्तु आत्मा मेरी अब भी "रसवन्ती" में ही

बसती है । राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं जनमी । उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया है ।"[1]

प्रश्न हमारे सामने है क्या यह सच है ? लेकिन दिनकर जी के समग्र साहित्य का अध्ययन करने पर मेरे विचार में ऐसा नहीं कहा जा सकता। यह हो सकता है दिनकर जी को प्रेम की कविताएँ लिखना पसन्द रहा हो लेकिन न चाहते हुये भी वह समाज की तरफ खिंचते गये और अपने उत्तरदायित्व के प्रति आँख न मोड़ सके वह अपनी माता की पुकार अनसुनी न कर सके वह स्वयं लिखते हैं ।

> रह रह कर पंखहीन सा मैं
>
> गिर पड़ता भू की हलचल में
>
> झटिक एक बहा ले जाती
>
> स्वप्न-राज्य आँसू के जल में ।"

ऊपर की पंक्तियों से साफ ज़ाहिर है कि वह चाहते हुये भी खुले आकाश में विचरण न कर सके पृथ्वी का आर्तनाद उन्हें अपनी तरफ खींच लेना वास्तव में कवि का पहला कर्तव्य समाज के प्रति होता है और अगर कवि इस कर्तव्य को पूरा न कर सकता तो वह सच्चा कवि कहलाने योग्य नहीं है । राष्ट्रीयता उस युग की माँग थी, जो दिनकर की लेखनी के माध्यम से सच्चे दिल से बाहर आयी दिनकर जी रश्मि लोक की भूमिका में लिखते हैं "प्रेम प्रकृति और नारी मूर्ति के चिंतन में जो रस है वह रस मैंने इस द्वन्द्व की कविता में प्राप्त कर लिया । लाचार होकर मैं इस नतीजे पर आता हूँ भावना का सुख मेरे लिए नहीं है मेरे लिए तो कर्तव्य ही प्रधान है ।

> फेंकता हूँ लो तोड़ मरोड़
>
> अरी निष्ठुर बीन के तार
>
> उठा चाँदी का उज्जवल शंख
>
> फूँकता हूँ भैरव हुंकार ।"[2]

1• दिनकर - चक्रपाल की भूमिका - पृ सं०

2• दिनकर - रश्मिलोक की भूमिका - पृ सं० 33

दिनकर ने देश वासियों के दर्द को जितना महसूस किया, अंग्रेज के प्रति जो क्षोभ व्यक्त किया, देश वासियों में जिस प्रकार क्रान्ति उत्पन्न करने का प्रयत्न किया वह एक सच्चा राष्ट्र कवि ही कर सकता है और ऐसा राष्ट्र कवि जिसके मन में भीतर से ही राष्ट्रीयता रूपी स्रोत प्रवाहित हुआ हो । यही नहीं कुरुक्षेत्र दिनकर का महान काव्य है, इसमें जिस दर्शन का प्रतिपादन है वह है संघर्षशील जीवन व्यतीत करना अत्याचार के आगे न झुकना कुरुक्षेत्र के माध्यम से दिनकर ने अपने देश-वासियों के दिल में जिस प्रकार संघर्षशील भावना का संचार किया है जिस प्रकार उन्हें कर्म को तरफ अग्रसर होने की शिक्षा दी है, और जिस प्रकार उन्हें यह बताया है कि जीवन अपने लिए नहीं दूसरे के लिये जीने का नाम है, इनसे स्पष्ट होता है, [illegible] निस्सन्देह दिनकर जी सच्चे राष्ट्र कवि थे । भारत माता की पुकार पर वह उनकी तरफ दौड़ पड़े । लेकिन साथ ही साथ यह भी कहना ही पड़ेगा दिनकर जी प्रेम के भी कवि थे ।

रसवन्ती और उर्वशी उनकी महान कृतियाँ है । लेकिन, राष्ट्रीयता और प्रेम दोनों धाराएँ उनके काव्य में समान्तर से बहती रही और शायद ऐसा लगता है दोनों एक दूसरे के विरोध में कभी खड़ी नहीं हुयी । एक तरफ अगर पाठक के मन में दिनकर की राष्ट्रीय कविताएँ पढ़कर रोष और क्रोध की भावना उत्पन्न होगी तो दूसरी तरफ प्रेम की कविताएँ पढ़ने पर पाठक के मन में अजीब ही अनुभूति अवश्य होगी।

डॉ0 इकबाल की राष्ट्रीय भावना का जहाँ तक प्रश्न उठता है वह कई कारणों से उपेक्षित रही है । उनकी शुरू की शायरी में सिर्फ राष्ट्रीय भावना का ही प्रभाव है और 1905 तक शायरी में देश से अथाह प्रेम की झलक पायी जाती है । परन्तु 1905 में वह योरोप गये वहाँ से वापस होने के बाद की शायरी में राष्ट्रीयता का वह रंग नहीं दिखायी

देता जैसा पहले था । लेकिन अपनी मातृ भूमि से प्रेम इकबाल का अन्त तक रहा । जावेद नामा इकबाल ने मरने से कुछ ही समय पूर्व लिखी है, जिसमें आजादी के लिए तड़प और वतन के लिये प्रेम का भाव जगह जगह दिखायी देता है । कुछ लोग इकबाल को पाकिस्तान का समर्थक मानते हैं । इसलिए उन्हें राष्ट्रीय कवि नहीं मानते । यह बात भी पूरी तरह ठीक नहीं है । इकबाल भारत में ही मुसलमानों का उनका अधिकार दिलाना चाहते थे । अपने एक लेख में 7 मार्च, 1934 में वह कहते हैं "बराहे करम यह ध्यान रहे कि यह आलोचक लोग मेरी स्कीम को पाकिस्तान के विचार के साथ जोड़ रहे हैं मैं तो इंडियन फडरेशन में एक मुस्लिम प्रदेश बनाने का हामी हूँ जब कि पाकिस्तान में सुमाली हिन्दी (उत्तर भारत) के मुस्लिम प्रदेश की एक अलग फेडरेशन की बात कही गयी है । जो इंडियन फेडरेशन से अलग है और सीधे इंगलिस्तान से जुड़ी है ।"[1] एक अन्य खत में डा0 इकबाल लिखते हैं " आप मुझे पाकिस्तानी दृष्टि का हमी, ठहराते हैं, मगर पाकिस्तान मेरा उद्देश्य नहीं, मैं तो केवल एक मुस्लिम प्रदेश के बनाये जाने की बात कर रहा हूँ ।"[2] इस प्रकार इकबाल को पाकिस्तान से जोड़कर उनकी राष्ट्रीय भावना की उपेक्षा करना उनकी शायरी के साथ न्याय नहीं होगा । इकबाल को अपने वतन से प्यार शुरू से था और अन्तिम दिनों तक रहा । अपनी उर्दू शायरी को आखरी दौर की किताब "अरबे कलीम" की एक नजब "शुआये उम्मीद" में वतन के लिये उनकी दिली मुहब्बत की भावना दिखायी देती है । इकबाल की राष्ट्रीय भावना के उपेक्षित रहने का एक कारण यह भी है कि इकबाल पर पाकिस्तानी आलोचकों ने अधिक काम किया हैं और इकबाल पर पाकिस्तान में बहुत अधिक मात्रा में पुस्तकें प्रकाशित हुयी हैं ।

यह कहना गलत न होगा कि राष्ट्रीय कविता इस समय समय की माँग थी । ताकि वह भारतवासियों के मन में उत्साह का संचार कर सके, उन्हें अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर सकें ।

---

1. इकबाल और कोयी यकजहती - सैयद मुजफ्फर हुसैन बरनरनी
2. -"- -"-

कवि चाहे न चाहे वह समाज का अंग है वह समाज की पुकार को अनसुनी नहीं कर सकता। कवि का समाज के प्रति जो दायित्व होता है उसे कवि को निभाना ही पड़ता है। चक्रवाल की भूमिका में दिनकर स्वयं लिखते हैं " भारत वर्ष के इतिहास में यह वह समय आया हुआ था जब कुछ दिनों के लिए व्यक्तिगत कर्तव्यों के निशान मिट जाते हैं। व्यक्ति भाव अनुभूतियाँ सिमट कर एक कोने में चली जाती है और सबकी जगह सामूहिक अनुभूतियाँ और सामूहिक कर्तव्य का साम्राज्य छा जाता है"। अपनी पुस्तक "मुकद्दमा शेरोशायरी" में हाली शायरी के गुण बताते हुये यही बात कहते हैं कि शायर चाहे न चाहे उसकी शायरी समाज से अवश्य प्रभावित होती है।

"कायदा यह है कि जिस कदर सोसाइटी के खयालात उसकी ~~स्वयं~~ राय उसकी रगबते का मिलन और मजाव बदलता है उस कदर शेर की हालत बदलती है और यह तबदीली बिलकुल बेइरादह मालूम होती है। क्योंकि सोसाइटी की हालत देख कर शायर अपना रंग नहीं बदलता बल्कि सोसाइटी के साथ साथ वह खुद ब खुद बदलता चला जाता है।"[2]

राष्ट्रीय भावना का रूप दोनों कवियों के यहाँ भिन्न भिन्न रूपों में पायी जाती है -

मातृभूमि से प्रेम

मातृभूमि से प्रेम राष्ट्रीय प्रेम की पहली सीढ़ी है। यही वह नींव है जिस पर आगे सुदृढ़ इमारत खड़ी होती है। मातृभूमि से प्रेम का तात्पर्य है, उस देश की प्रकृति से प्रेम, वहाँ की नदियों, पर्वतों से प्रेम वहाँ के ऐतिहासिक इमारतों और खण्डहरों से प्रेम और यह स्वाभाविक भी है कि जिस देश की मिट्टी में हम खेल कूद कर बड़े हुये हैं उस देश की हर वस्तु

---

1. चक्रवाल की भूमिका - दिनकर - पृ सं038
2. मुकद्दमा शेरो शायरी - हाली - पृष्ठ सं0 23

से हमें लगाव होता है । एक तरफ उस देश के ऊँच ऊँच पर्वत कवि को अपनी तरफ आकर्षित करेंगे तो दूसरी तरफ कल कल बहती नदियाँ हरे भरे खेत कवि को अपने तरफ पुकारेंगे हँसती खेलती प्रकृति का चित्रण राष्ट्रीय कविता की आत्मा है । शिवबालक राय जी अपनी पुस्तक "दिनकर" में लिखते हैं -

"एक सामान्य सांस्कृति परम्परा और ऐतिहासिक धारा से परिचालित होने वाले भू भाग राष्ट्र कहलाता है और राष्ट्रीय कविता अपने राष्ट्र की सांस्कृतिक परम्परा और अतीत गौरव का संरक्षण करती है । वर्तमान दशा का यथार्थ वणन कर भविष्य की रूप रेखा का स्पष्ट अंकन करती है । राष्ट्र कल्याण की कामना से वह क्रान्ति या सुधार का जयगान करती है । राष्ट्रीय कविता में देश की हँसती खेलती प्रकृति का चित्र अपेक्षित है ।"[1]

हिमालय के प्रति दोनों कवियों की भावना

हिमालय कुलयाते इकबाल की पहली नज़्म जिसमें इकबाल ने हिमालय के प्रति बड़ी श्रद्धा व्यक्त की है और इसके प्रकृतिक दृश्यों का वर्णन बहु सुंदर ढंग से कियाहै । इकबाल हिमालय को हिन्दुस्तान के सिर का ताज और हिन्दुस्तान का रखवाला बतलाते हैं ।

ए हिमालय ए फसीले किश्वरे हिन्दुस्ताँ
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आसमाँ
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना रोज़ी के निशाँ
तू जवाँ है गरदिशे शामो सहर के दरमियाँ
एक जलवा था कलीमे तूरे सीना के लिए
तू तजल्ली है सरापा चश्मे बीना के लिए ।"[2]

---

1. दिनकर - शिवबालक राय - पृ सं0 47
2. कुलयात इकबाल - पृ सं0 2

इकबाल को अपने धर्म से बहुत लगाव था । उसके बावजूद "तूर" पर्वत के तुलना मे हिमालय को महान बताते हैं । कहते है तूर पर तो हजरत मूसा ने खुदा का जलवा देखा लेकिन तू तो पूरी रोशनी है देखने वाली आँखों के लिए । दिनकर जी भी हिमालय को हिन्दुस्तान के सिर का ताज और भारत का रखवाला कहते हैं लिखते हैं -

साकार दिव्य गौरव विराट
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल
मेरी जननी के हिम किरीट
मेरे भारत के दिव्यभाल ।[1]

इसी प्रकार दोनों कवियों ने हिमालय पर बहने वाली नदियों का गान किया है ।

सुध सिन्धु पेवनद ब्रह्म पुत्र
गंगा जमुना की अमिट धार
जिस पुण्य भूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुण उदार ।[2]

इकबाल कहते हैं कि तेरे गोद में जो नदियाँ गाती हुयी बहती है, उनके सामने नदी कौसर जो जन्नत में है वह भी शरमा जाय । यह नदियाँ प्रकृति को आइना दिखाती हैं ।

आती है नद्दी फ़राज़े कोह से गाती हुयी
कौसरो तसनीम की मौजों को शरमाती हुयी
आईना सा शाहिदे क़ुदरत को दिखलाती हुयी ।
संगे रह से गाह बचती गाह टकराती हुयी ।

1· रश्मिलोक - दिनकर - पृष्ठ सं0 5
2· " " 6
3· कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 23

दिनकर जी ने अपनी कविता में अतीत को याद किया, वर्तमान में शक्ति संचार करने के लिए

तू पूछ अवध से राम कहाँ ?
वृन्दा बोलो घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध कहाँ मेरे अशोक ?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
-- -- --
री कपिल वस्तु कह बुद्धदेव के
के वे मंगल उपदेश कहाँ ?
-- -- --
वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी शान कहाँ ?[1]

इकबाल अपनी "हिमालय" कविता के अन्तिम छः पंक्तियों में अपने उज्जवल अतीत को आवाज़ देते हुये प्रतीत होते हैं -

ऐ हिमालय दास्ताँ उस वक्त की कोई सुना
मसकने आबाये इन्साँ जब बना दामन तेरा
कुछ बता उस सीधी सादी ज़िन्दगी का माजरा
दाग़ जिस पर ग़ाज़ये रंगे तकल्लुफ़ का न था
हाँ दिखा दे ऐ तसव्वुर फिर वह सुब्होशाम तू
लौट पीछे की तरफ ऐ गर्दिशे अय्याम तू ।[2]

दिनकर जी "हिमालय" कविता से क्रान्ति की आवाज़ दी गयी है । यह विद्रोही कविता है ।

तू मौन त्याग कर सिंहनाद
रे तपी आज तप का न काल
नव युग शंख ध्वनि जगा रही
तू जाग जाग मेरे विशाल ।[3]

---

1. रश्मि लोक - पृ सं0 6 2. कुल्याते इकबाल - पृ सं0 23
3. रश्मिलोक - पृ सं0 4

जबकि इकबाल की कविता में हिमालय और प्रकृति के प्रति प्रेम भावना की अभिव्यक्ति हुयी है ।

बर्फ़ ने बाँधा है दस्तारे फ़ज़ीलत तेरे सर
खन्दा ज़न है जो कुलाहे मेहरे आलमताब पर ।

-- -- --

हाय क्या फर्ते तरब में झूमता जाता है अब्र
फ़ीलेबेज़ंजीर की सूरत उड़ा जाता है अब्र ।

अर्थात् बर्फ तेरी टोपी है और तेरे यहाँ बादल ऐसे चलता है जैसे खुला हाथी मस्त चलता है ।

देश का गुण गान

दिनकर जी ने अपनी हिमालय का संदेश नामक कविता में अपनी मातृभूमि का गुण गान किया है और भारतीय की एकता के गुण गान करते हुये भारत को स्वर्ग बनाया है ।

भारत एक स्वप्न भू को ऊपर ले जाने वाला
भारत एक विचार स्वर्ग को भूपर लाने वाले
भारत एक भाव जिसको पाकर मनुष्य जगता है
भारत एक ज़लज जिस पर जल का न दाग लगता है
जहाँ कहीं एकता अखंडित जहाँ प्रेम का स्वर है
देश देश में खड़ा वहाँ भारत जीवित भास्वर है [2]

एक अन्य जगह कवि "किस को नमन करूँ" कविता में कवि भारत की बन्दना करते हुये भारत के प्राकृतिक दृश्यों का सुंदर चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं और इस कविता के द्वारा कवि ने भारत की महान संस्कृति और भारत वासियों के उच्च आदर्शों का भी गुण गान किया है ।

---

2. रश्मि लोग - पृ सं० 263 1. कुलयाते इकबाल - पृ सं० 22

तुझको या तेरे नदीश गिरि वन को नमन करूँ मैं
मेरे प्यारे देश : देह या मन को नमन करूँ मैं
किस को नमन करूँ मैं भारत किस को नमन करूँ मैं
.. .. ..

भारत नहीं स्थान का वाचक गुण विशेष नर का है
एक देश का नहीं शील यह भूमंडल भर का है ।

जहाँ कहीं एकता अखंडता जहाँ प्रेम का स्वर है
देश देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है ।
निखिल विश्व को जन्मभूमि वन्दन को नमन करूँ मैं
किसको नमन... .. ..
खण्डित है यह मही शैल से सरिता से सागर से
पर जब दो हाथ निकल मिलते आ द्वीपान्तर से
तब खाई को पार शून्य में महा मोद भवता है
दो बीचों के बीच सेतु यह भारत ही रचता है ।
किसको नमन करूँ मैं भारत किसको नमन करूँ मैं
उठे जहाँ भी घोष शान्ति का भारत स्वर तेरा है
धर्म दीप हो जिसके भीतर वह नर तेरा है
तेरा है वह वीर सत्य पर जो अड़ने जाता है
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है
मानवता के इस ललाट वन्दन को नमन करूँ मैं ।

डॉ० इकबाल ने अपनी नज़्म "तराने हिन्दी" में हिन्दुस्तान को सारे संसार में सब से अच्छा देश कहा है और दिनकर जी की ही तरह यहाँ की एकता, संस्कृति और प्राकृतिक दृश्यों का गुण गान इस कविता में इकबाल करते हैं -

---

1. रश्मि लोक - दिनकर - पृष्ठ सं० 234

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा ।
पर्वत वह सब से ऊँचा हमसाया आसमाँ का ।
वह सन्तरी हमारा वह पासबाँ हमारा
.. .. ..
गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिसके दम से रश्के जिनाँ हमारा
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा
युनानो मिस्रो रोमा सब मिट गये जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नामो निशाँ हमारा ।

इक़बाल की यह नज़म काफी पसन्द की गयी, गुलामी के जमाने में लोगों के दिलों में जोश पैदा करने के लिए यह नज़म काफी थी गाँधी जी ने अपने एक पत्र में आजाद को अपने नज़्म के बारे में लिखा है -

भाई मुहम्मद हुसैन

आप का ख़त मिला । डॉ० इक़बाल के बारे में क्या लिखूँ लेकिन इतना तो मैं कह सकता हूँ । जब उनकी मशहूर नज़्म "हिन्दोस्ताँ हमारा" पढ़ी तो मेरा दिल भर आया और यरोदह जेल में मैंने सैकड़ों बार नज़्म को गाया होगा । इस नज़्म के अलफाज मुझे बहुत मीठे लगे और यह खत लिख रहा हूँ, तब भी यह नज़्म मेरे कानों में गूंज रही है ।

आपका
एम•के•गांधी[2]

एक अन्य जगह गाँधीजी ने एक अवसर पर उर्दू हिंदी के अन्तर के सिलसिले में इस तराने को हिन्दुस्तान की कौमी ज़ुबान का नमूना कहा था ।

1• कुल्याते इक़बाल - पृ सं० 33
2• इक़बाल जादूगर हिंदी नजात - अतीक सिद्दीकी - पृ सं० 26-27

कहते हैं -

"कौन ऐसा हिन्दुस्तानी दिल है जो इकबाल का "हिन्दुस्तान हमारा" सुनकर धड़कने नहीं लगता अगर कोई ऐसा दिल है तो मैं इसे उसकी बदनसीबी समझूँगा । इकबाल के इस तराने की ज़ुबान हिन्दी या हिन्दुस्तानी है ? या उर्दू है । कौन कह सकता है कि यह हिन्दुस्तान की कौमी जबान नहीं है"।[1]

एक जगह और इकबाल ने "हिन्दुस्तानी बच्चों का कौमी गीत" में हिन्दुस्तानी पुरानी संस्कृति के गुण गाये हैं । दिनकर जी की तरह यहाँ के मनुष्य के गुण गाये हैं । इनका कहना है भारत वह देश है जिससे सारी दुनियाँ ने ज्ञान सीखा है । कहते हैं । यहाँ का जीवन तो स्वर्ग समान है ।

यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो हुनर दिया था
मिट्टी को जिस की हक़ ने ज़रका असर दिया था
तुरकों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है
टूटे ये जो सितारे फ़ारस के आसमाँ से
फिर ताब दे के जिस ने चमकाये कहकशाँ से

वहदत की लै सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से
मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है
बन्दे कलीम जिसके पर्वत जहाँ के सीना
नूहे नबी का आकर ठहरा जहाँ सफ़ीना

---

1. इकबाल जादूगरे हिन्दी [illegible] नज़ात - अतीक सिद्दीकी - पृ० सं० 27

रफ़्त है जिस ज़मीं की बामे फ़लक का ज़ीना
जन्नत की जिन्दगी है जिसके फ़िज़ा में जीना
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ।[1]

अपनी कविता "आग की भीख" नामक कविता में दिनकर जी उस समय की परिस्थितियों से परेशान दिखायी देते हैं और भगवान से दुआ करते हैं कि भगवान हमें इस परीक्षा की घड़ी से निकाल दें । हमें इतनी शक्ति दे की हम भारत की परतंत्रता की बेड़ियाँ काट सके ।

दाता पुकार मेरी संदीप्त को जिला दे
बुझती हुयी शिखा को संजीवनी पिलादे,
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ
चढ़ती जवानियों का श्रृंगार माँगता हूँ
ठहरी हुयी तरी को ठोकर लगा गिरादे
जो राह हो हमारी उस पर दिया जला दें
गति में प्रभंजनों का आवेग फिर सबल दें
इस जाज की घड़ी में निष्ठा कड़ी अचल दे
अपने अनल विशिख से आकाश जगमगा दे
प्यारे स्वदेश·· ·· ·· [2]

रेणुका के मंगल आह्वान में कवि भगवान से प्रार्थना करता है कि हे भगवान जहाँ जहाँ अंधेरा हो उस पथ को उजाले से भर दें और दुर्बलों के दिलों में शक्ति का संचार कर ।

1· कुलयाते इकबाल - पृ सं0 87

2· रश्मिलोक - दिनकर -

जहाँ जहाँ धन तिमिर हृदय में
भर दो वहाँ विभा प्यारी
दुर्बल प्राणों की नस नस में
देव फूंक दो चिन्गारी ।[1]

जबकि इकबाल इसी तरह की दुआ भगवान से छोटे छोटे बच्चों को ज़ुबान से मँगवाते हैं । वह कहते हैं "ऐ खुदा तू मुझे ज्ञान के भंडार से भर दे । मेरा काम दुर्बलों की सहायता करना हो, मेरा काम इस संसार में चारों तरफ रोशनी फैलाना हो ।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शमा की सूरत हो ख़ुदाया मेरी
दूर दुनिया का मेरे दम से अन्धेरा हो जाय
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाय
हो मेरे दम से यूंही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से मुझको हो मुहब्बत यारब.
हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मन्दों से ज़यीफ़ों से मुहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको ।[2]

इक़बाल का कहना है कि हमें भगवान को प्राप्त करने के लिए मंदिर जाने की आवश्यकता नहीं हमें अपने वतन के एक एक ज़र्रे से मुहब्बत करनी चाहिये ।

1• रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं० 3
2• कुलयाते इक़बाल - पृ सं० 34

खाके वतन का मुझ को हर ज़र्रा देवता है । [1]

इकबाल ने लन्दन से अपने बेटे जावेद को एक पत्र लिखा जो "बाले जिबरील" में संकलित है उस में उन्होंने अपने बेटे को लिखा है - तू फिरंगियों का एहसान न उठा और हिन्दुस्तान की मिट्टी से सुन्दर सुन्दर मीना व जाम बना ।"

खुदा अगर दिले फ़ितरत शनास दे तुझको,
सकूते लाला व गुल से कलाम पैदा कर
उठा न शीशा गिराने फ़िरंग के एहसाँ
सिफ़ाले हिन्द से मीना व जाम पैदा कर । [2]

इकबाल की नजमों का संग्रह "बाले जिबरील" बहुत बाद का है लेकिन उसमें भी हमें कुछ नज़्म ऐसी मिल जाती है जिसमें अपने देश के लिए अत्यधिक प्रेम झलकता दिखायी देता है । एक ऐसी ही नजम जरबे कलीम में "शोआय उम्मीद है" इस नजम में इकबाल ने उस समय की परिस्थितियाँ बताते हुये अपने देश वासियों को जगाने का प्रयत्न किया । इस नज़्म में सूरज की एक किरण के माध्यम से शायर अपने भाव व्यक्त करते हैं सूरज की एक किरन जो सूरज से रुखसत माँगती है क्योंकि वह भारत के एक एक भाग में रोशनी फैला सके । यह किरन उस समय तक भारत में रहना चाहती है । जब तक कि यहाँ के एक एक भारतीय के दिल में वतन के लिये मुहब्बत की शमा न जला दे उन्हें जागृत न कर दे ।

एक शोख़ किरन शोख़ मिसाले निगहे हूर,
आराम से फ़ारिग़ सिफ़ते जौहरे सीमाब ।
बोली कि मुझे रुख़सते तनवीर अता हो ।
जब तक न हो मशरिक़ का हर एक ज़र्रा जहाँ ताब ।
छोड़ूँगी न मैं हिन्द की तारीक फ़िज़ा को,

1· कुलयाते इक़बाल - 88
2· कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 439

जब तक न उठें ख्वाब से मदाने गिरां ख्वाब
खावर की उम्मीदों का यही ख़ाक है मरकज़
इकबाल के अश्कों से यही ख़ाक है सेराब
चश्मे महो परवीं है इसी ख़ाक से रोशन
यह खाक कि है जिसका खज़ब रेज़ा दुरे नाब,
इस ख़ाक से उठे हैं वह ग़ोवासे मा आनी
जिन के लिए हर बहरे पुर आशाब है पायाब
जिस साज़ के नगमों से हरारत थी दिलों में
महफ़िल का वही साज़ है बेगानये मिज़राब
मशरिक से हो बेज़ार न मग़रिब से हज़र कर
फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि हर शब को सहर कर ।[1]

इकबाल की इस नजम को पढ़कर कोई भला यह कैसे कह सकता है अन्तिम दौर में इकबाल को वतन से मुहब्बत न थी ।

जावेदनामा (फारसी में) इकबाल का शाहकार कहा जाता है जो इन्होंने दांते की डिवाइन कमेड़ी के आधार पर लिखी है । यह मसनवी इन्होंने मृत्यु से कुछ ही पहले लिखी है जिससे जगह-जगह इन्होंने सच्चे हिन्दुस्तानी होने का सबूत दिया है । कावेरी नदी पर शायद ही किसी हिन्दी , उर्दू या किसी और जबान के कवि ने अपनी लेखनी उठायी है । लेकिन इकबाल के वतन के जर्रे जर्रे से मुहब्बत थी । इन्होंने कावेरी नदी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुये इस प्रकार लिखा है स्वर्ग में टीपू सुल्तान कावेरी को सम्बोधित करते हुये कहते हैं -

रूदे कावेरी यके नरमक ख़राम
ख़सतई शायद कि अज़ सैरे दवाम
दरकुहिस्तां उम्र हा बालीदई
राहे ख़ुद राबा मिज़ा कावीदई

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 570-571

ऐ मरा ख़ुशतर जे जयहूनो फ़रात
ऐ दकन रा आबे तो आबे हयात ।[1]

अर्थात् ऐ कावेरी धीरे धीरे बह, तू शायद चलते चलते थक गई होगी, तू पर्वतों में युगों तक पनपी है और तूने अपना रास्ता अपनी पलकों से खोदकर बनाया है, तू मुझे जेहून नदी और फ़रात नदी से अधिक प्यारी है और तेरा पानी दकन के लिये अमृत है ।

प्रकृति चित्रण

राष्ट्रीय कविता में जीती जागती प्रकृति का चित्रण आवश्यक है । प्रकृति मनुष्य की हमेशा सहचरी रही है । प्रकृति और मानव जीवन का गहरा सम्बन्ध है, प्रकृति मानव जीवन को प्रेरित करती है । प्रकृति के कोमल और सुन्दर रूप को देख मानव मन उल्लासित हो उठता है, यही नहीं प्रकृति के रूपों को जानने की जिज्ञासा मानव मन में जागृत होती है । कवि तो अधिक संवेदनशील होता है । वह बहुत शीघ्र प्रकृति के दृश्यों से प्रभावित होता है । राष्ट्रीय कवि की सबसे बड़ी पहचान यही है कि उसकी कविता में हँसती खेलती प्रकृति का चित्रण हो ।

दिनकर जी मानव जीवन और उसकी समस्याओं के प्रति जितना सचेत थे, शायद उतना प्रकृति के प्रति नहीं लेकिन क्योंकि प्रकृति का मानव जीवन से गहरा सम्बन्ध है और प्रकृति द्वारा मनुष्य प्रेरणा ग्रहण करता है । इसलिए दिनकर जी के काव्य में भी प्रकृति चित्रण मिल जाता है और इकबाल ने तो अपने कलाम में जगह जगह हँसती, खेलती प्रकृति का चित्रण प्रस्तुत किया है और अपने देश की प्रकृति तो निराली है । यहाँ के हरे भरे खेत, कलकल बहती नदियाँ ऊँचे ऊँचे पहाड़ सुबह का दृश्य मानव मन को अपने तरफ आकर्षित कर लेते हैं । यों सिमरिया गाँव में रहने के कारण दिनकर का काफी समय प्रकृति के निकट रहने में गुजरा । रेणुका में एक जगह कवि प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण करते हैं ।

---

1. इकबाल और कौमी यहजहता - सैय्यद मुजफ़्फर हुसैन बरनी - पृ सं० 30

आज सरिता का कल कल छल छल
निर्झर का अविरल झर झर
पावस की बूंदों की रिमझिम
पीले पत्तों की मर्मर ।[1]

रसवन्ती में कवि प्रकृति का एक नीरव, खामोश और चंचल चित्र प्रस्तुत करते हैं ।

पर्ण कुन्जों में न मर्मर-गान
सो गया थककर शिथिल पवमान
अब न जल पर रश्मि बिम्बित लाल
मूंद उर में स्वप्न सोया ताल
सामने द्रुमराजि तम साकार
बोलते तमसे विहग दो बार
झींगुरों में और खग के लीन
बोलते ज्यों एक खग अस्पष्ट अर्थ विहीन
दूरश्रुत अस्फुट कहीं की तान
बोलते मानो तिमिर के प्राण ।[2]

एक अन्य कविता में कवि प्रकृति का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करता है, वातावरण ऐसा लग रहा है चन्द्रिका का स्वच्छ व रवत धारण किये हैं । प्रकृति पूरे यौवन अवस्था को प्राप्त है । नक्षत्रों से आसमान सजा है । तलाब दर्पण का कार्य कर रहा है, पेडे पर फूल खिले हैं । इन फूलों पर बिल लिया भड़रा रही है कही मैना चहक रही है अर्थात् प्रकृति को पूरा वातावरण में एक आकर्षण है ।

चन्द्रिका तट का कर परिधान
सज नक्षत्रों से श्रृंगार
प्रकृति पुलकाकुल आँखें खोल

1• दिनकर - रेणु का -
2• " " पृ सं0 88

देखती निज सुवर्ण संसार
चमकते तरु पर झिलमिल फूल
बौर जाता है कभी रसाल
अंक में लेकर नीला आकाश
कभी दर्पण बन जाता ताल
चहकती चित्रित मैना कहीं
कहीं उड़ती कुसुमों की धूल
चपल तितली सुकुमारी कहीं
दीखती फुदक रहे ज्यों फूल ।[1]

उर्वशी में कवि पुरुरवा की विरह भावना प्रकृति के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करता है, उसे प्रकृति की हर सुन्दरता में उर्वशी का रूप दिखायी देता है, लेकिन जिस फूल को वह पकड़ना चाहता है वह दूर हो जाता है ।

देखा इधर उधर डाली टहनियों पत्तों पर
देवी आपका यही कुसुम आनन जगमगा रहा था ।
हँसता हुआ प्रहृष्ट सत्य ही सद्य स्फुरित कमलसा
किन्तु हाय दुर्भाग्य जिधर भी बढ़ स्पर्श करने को
डूब गया वह छली पुष्प पत्तोंकी हरियाली में ।[2]

प्रकृति से न केवल मुहब्बत बल्कि साहित्य सृजन को प्रेरणा भी कवि को मिलती है, प्रकृति से कवि ने जीवन के रहस्यों को जानने का प्रयत्न किया है । डॉ० इकबाल की शायरी में जहाँ तहाँ प्रकृति का सुन्दर दृश्य खींचा गया है और प्रकृति और मनुष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया है, दिनकर जी भी प्रकृति से काफी प्रभावित दिखायी देते हैं वह इसे भगवान की बनायी वस्तु मानते हैं । जबकि इकबाल ने प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया । दिनकर जी के काव्यमें प्रकृति प्रेरणा श्रोत है । भावनाओं

1• रेणुका - दिनकर - पृ सं० 64
2• उर्वशी

की अभिव्यक्ति का साधन है । वह आलम्बन का काम करती है वह उद्दीपन का कार्य करती है, अगर प्रकृति से प्रेम भावना जागृत होती है तो विरह भावना भी तीव्र होती है ।

जब कि इकबाल ने प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण सुन्दर ढंग से किया और प्रकृति के स्थापित रहने में प्रेम की भूमिका के बारे में बताया है और यह भी बताया है प्रकृति कायम मनुष्य के दम से है ।

डॉ० इकबाल अपनी नज़्म मुहब्बत में लिखते हैं -

चमक तारे से माँगी चाँद से दाग़े जिगर माँगा
उड़ायी तीरगी थोड़ी सी शब की ज़ुल्फ़े बरहम से
तड़प बिजली से पायी हूर से पाकीज़गी पायी ।
हरारत ली नफ़स हाये मसीहे इब्ने मरियम से
फिर इन अजज़ा को घोला चश्मये हैवाँ के पानी में
मुरक्कब ने मुहब्बत नाम पाया अरशे आज़म से
मुहब्बत ने यह पानी हस्तिये नौ खेज़ पर छिड़का
गिरह खोली हुनर ने इसके गोया कारे आलम से
हुईं जुम्बिश आयाँ, ज़र्रों ने लुत्फ़े खाक को छोड़ा
गले मिलने लगे उठ उठ के अपने अपने हमदम से
खिरामे नाज़ पाया आफ़ताबों ने सितारों ने
चिटक गुन्चों ने पायी दाग़ पाये लाला ज़ारों ने। [1]

अर्थात् सारी प्रकृति में गति का कारण प्रेम है ।

इकबाल ने अपनी लम्बी नज़्म "खिजरे यह" में प्रकृति का सुन्दर दृश्य खींचा है, शायर नदी के किनारे बैठा है और दृश्य देख रहा है । वह दरया के दृश्य में बिल्कुल खो गया, दरया की खामोशी

---

1. कुलयात इक़बाल - पृ सं० 111 - 112

का दृश्य खींचता है जो बहुत सुन्दर और अनोखी अंदाज में खींचा गया है ।

साहिले दरया पे मैं एक रात था महवे नज़र
गोशये दिल में छिपाये एक जहाने इज़्तराब
शब सकूत अफ़ज़ा हवा आसूदा दरया नरम सैर
थी नज़र हैरां कि यह दरया है या तस्वीरे आब
जैसे गहवारे में सो जाता है तिफ़्ले शीरख्वार
मौजे मुज़्तर थी कहीं गहराइयों में मस्ते ख्वाब
रात के आफ्सूँ से तायर आशयानों में असीर
अन्जुमे कमज़ौ गिरिफ़्तारे तिलिस्मे माहताब ।[1]

अर्थात् रात में दरया का मनज़र शायर के दिल में हलचल मचा दे रहा है ।

"साकी नामा" की भूमिका में इक़बाल पहाड़ी नदी का दृश्य खींचते हुये बताते है कि वह हमें जीवन का संदेश देती है ।

हुआ खेमाज़न कारवाने बहार
इरम बन गया दामने कोहसार
गुलो नरगिसो सोसनो नस्तरन
शहीदे अज़ल लाला खूनीं कफ़न
जहां छिप गया परदये रंग में
लहू की है गर्दिश रगे संग में
फ़िज़ा नीली नीली हवा में सरूर
ठहरते नहीं आशयां में तयूर
वह जूये कोहिस्तां उचकती हुयी
अटकती लचकती सरकती हुयी
अछलती फिसलती संभलती हुयी
बड़े पेज चाकर निकलती हुयी ।

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 255

रुके जब तो सल चीर देती है यह
पहाड़ों के दिल चीर देती है यह
ज़रा देख ए साकये लालः फ़ाम
सुनाती है यह जिंदगी का पयाम ।।[1]

इस तरह इकबाल प्रकृति को जीवन से जोड़ते हैं और पहाड़ के मन्जर को इतना सुन्दर बनाते हैं कि चिड़ियाँ अपने घोसले को छोड़कर बाहर आगई, बहती नदी खिले फूल मनुष्य को नया जीवन दर्शन देते हैं ।

अतीत का स्वर

अतीत ऐसी शक्ति है जिनके सहारा लेकर आनेवाले कल को संवारा जा सकता है ।यह तो निश्चित हैकिमानव जाति में जन्म सी सीखने की प्रवृत्ति पायी जाती है, और सीखने और प्रेरणा ग्रहण करने के लिये मन अतीत का सहारा लेते हैं । अपने सुन्दरअतीत के गान सम्बन्धी कविताएँ दोनों ही कवियों के यहाँ मिल जाता है । डॉ0 सावित्री सिन्हा लिखती हैं "अतीत के प्रति मोह और वेदना दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का प्रारम्भिक रूप माना जा सकता है ।" रेणुका में इस पक्ष की बहुत प्रधानता है -[2]

दिनकर जी ने अतीत की घटनाओं को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते हुये वर्तमान को सुधारने का प्रयत्न किया है । अतीत का वैभव दिनकर जी को हमेशा अपनी तरफ आकर्षित करता रहा ।

जब भी अतीत में जाता हूँ मुर्दों को नहीं जिलाता हूँ
पीछे हट कर फेंकता बाण जिससे कम्पित हो वर्तमान
खंडहर ही हो भग्नावशेष पर कहाँ बचा है स्नेह शेष ।[3]

एक अन्य जगह अतीत के महत्त्व को बताते हुये दिनकर जी लिखते हैं -

---

1• कुलयाते इकबाल - पृ सं0 414-415
2• दिनकर - सावित्री सिंन्हा
3• रश्मि लोक

देखी दुखद है वर्तमान की
यह असीम पीड़ा सहना
कहीं सुखद इससे संस्मृति में
है अतीत की रत रहना ।"[1]

कवि अतीत का सहारा लेकर वर्तमान लोक नायकों, को सोये हुए मनुष्यों का झकझोर डालना चाहता है ।

झकझारों झकझारो महान सुप्तों को
टेरो टेरो चाणक्य चन्द्रगुप्तों को
विक्रमी तेज असि की उददाम प्रभा की
राणा प्रताप गोविन्द शिवा सर जा को ।
.. .. ..
साहसी सूर के उस मतवालों को
टेरो टेरो आज़ाद हिन्द वालों को
खोजो टीपू सुल्तान कहाँ सोये हैं ।
अशफ़ाक और उसमान कहाँ सोये है
मतवाले वीर जवान कहाँ सोये हैं
वे भगत सिंह बलवान कहाँ सोये हैं ।[2]

डॉ० शिव बालक राय कहते हैं -

"उज्ज्वल अतीत सुन्हरी धूप है, जिससे आजादी का पोधा हरा भरा रहता है । पूर्वजों के ज्वलंत उदाहरण हमारी रंग रंग में गर्मी पहुंचाते हैं । धूप की कल्पना मात्र हममें उत्साह और आशा का संचार करती है ।"[3]

दिनकर के काव्य में इतिहास साकार होकर हमारे सामने आता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये लोगों के मन में उत्साह जगाने के लिये दिनकर जी ने एक तरफ ऐतिहासिक देश की स्मृति और गौरव का

---

1. रश्मिलोक दिनकर
2. रश्मि लोक - दिनकर - पृष्ठ सं0 30।
3. दिनकर - शिवबालक राय - पृष्ठ सं0 79

वर्णन किया है तो दूसरी तरफ अतीत के महान चरित्रों का वर्णन कर वर्तमान की बेहतर बनाने का प्रयत्न किया है । पाटलीपुत्र की गंगा में कवि ने स्कन्द गुप्त और दूसरे प्रतापी राजाओं को स्मरण हमें दिलाते हैं ।

तुझे याद है चढ़े पदो पर कितने जय सुमनोंके हार
कितनी बार समुद्रगुप्त ने धोयी है तुझ में तलवार
तेरे तीरों पर दिग्विजयी नृप के कितने उड़े निशान
कितने चक्रवर्तियों ने है किये कुल पर अवमृथ स्नान ।

.. .. ..

विजयी चन्द्रगुप्त के पद पर सेल्यूकस की वह मनुहार
तुझे याद है देवी मगध का वहविराट उज्जवल श्रृंगार
जगती पर छाया करती थी कभी हमारी भुजा विशाल
बार बार झुकते थे पद पर ग्रीक यवन के उन्नत भाल ।[1]

कवि अतीत से प्रेरणा ग्रहण कर वर्तमान को सवारने का प्रयत्न करना चाहता है । नालन्दा वैशाली के खंडहरों तथा दिल्ली की गौरव समाधि पर आँसू बहाना चाहता है ।

भावुक मन था रोक न पाया ।
सज आये पलकों में सावन
नालन्दा वैशाली के
ढूहों पर बरसे पुतली के घन
दिल्ली की गौरव समाधि पर
आँखों ने आँसू बरसाये
सिकता में सोये अतीत के
ज्योति वीर स्मृति में उग आये ।[2]

यही नहीं कवि को अपने राष्ट्र की कला संस्कृति और शौर्य को धूल में मिलाते देख अत्यन्त कष्ट हो रहा है ।

1· रेणुका - पृ सं० 32

2· " " 35

वे घनीभूत गायन से
अब महल कहाँ सोते हैं
वे सपने अमर कल के
किस खण्डहर में रोते हैं ।[1]

कवि ने दिल्ली के माध्यम से भी अपने देश की सभ्यता को याद किया है । कवि को आज दिल्ली पश्चात सभ्यता के रंग में रंगी दिखायी देती है, उसे लगता है शमशान में खड़ी दिल्ली श्रृंगार कर रही है । दिल्ली नामक कविता में कवि का आक्रोश छिपा है । कवि ने दिल्ली को परकीया नयिका, कुलटा इत्यादि कहा है और उसे पुराने स्मृतियाँ याद दिलायी है । उसे अकबर शेरशाह के क्रोध का स्मरण दिलाया । इस कविता के माध्यम से कवि ने अंग्रेजों की चापलूसी करने वालों पर व्यंग्य करते हुये उन्हें अपने सुन्दर अतीत का स्मरण दिलाया है, और उन्हें वर्तमान के लिये सावधान रहने को कहा है ।

हमने देखा यहाँ पाण्डु वीरों का कीर्ति प्रसार
वैभव का सुख स्वप्न कला का महा स्वप्न अभिसार
यहीं कहीं अपनी रानी थी तू ऐसे मत भूल
अकबर शाहजहाँ ने जिसका स्वयं किया श्रृंगार ।[2]

पराधीन दिल्ली का श्रृंगार कवि के भावुक मन को चोट पहुँचा रहा है, कवि को संस्कृति के साथ अपनी मिट्टी भी प्रिय है, उन्हें लगता है कुतुब मीनार, लाल किला, पुरानी कहानी सुना रहा है ।

अरी हया कर है जईफ यह खड़ा कुतुब मीनार
इबरत की माँ जामा भी है यही अरी हुशियार
इन्हें देख भी तो दिल्ली आँखे हाय फिराले
गौरव के गुरु रो ने पड़े हाँ घूंघट जरा गिरा ले ।[3]

1, 2,3 - रश्मिलोक - दिनकर - पृ सं0 46,47.

कवि दिल्ली से कह रहा तेरे यह हालत देख कर कहीं शेरशाह तलवार लेकर न आ जाय -

अरी संभल यह कब्र न फट कर कहीं बना दे द्वार ।
निकल न पड़े क्रोध में लेकर शेरशाह तलवार
समझायेगा कौन उसे ? अरे सभल नादान
इस घूंघट पर आज कहीं मच जाय न ये सहार ।[1]

इकबाल के यहाँ अतीत के स्वर में उतना आक्रोश नहीं है जितना दिनकर के यहाँ है, लेकिन फिर भी इकबाल के काव्य में कहीं कहीं अतीत प्रेरणा बनकर वर्तमान के सामने आ गया, वैसे इकबाल बहुत अधिक अतीत की शान की अभिव्यक्ति न करने के कायल न थे बल्कि उनको तो हिन्दुस्तानियों से यह शिकायत भी थी, कि वह अतीत के गर्व में चूर है वर्तमान से बेफिक्र है । "तस्वीरे दर्द" में इकबाल की आवाज में इतना दर्द है कि मानवता कराह उठे । वह अपने देशवासियों को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि तू पुरानी बातों को याद करके क्यों प्रसन्न हो रहा है, अब जो कुछ होने वाला है तू उसकी फिक्र कर ।

वतन की फ़िक्र कर नादाँ मुसीबत आनेवाली है
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में
ज़रा देख उसको जो कुछ हो रहा है होनेवाला है,
धरा क्या है भला अहदे कुहन की दास्तानों में ।[2]

लेकिन इसके बावजूद हिन्दुस्तान से मुहब्बत इन्हें ... अतीत का गौरव गान करने के लिये मजबूर करती है । उन्होंने अतीत के रूप को उजागर करते हुए सुन्दर भविष्य की कल्पना की है ।

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ामे हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया

---

1. रश्मि लोक - दिनकर - पृष्ठ सं0 48

2. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 71

जिसने हजाज़ियों से दश्ते अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो हुनर दिया था
मिट्टी जिस की हक ने ज़र का असर दिया था
तुरकों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था ।[1]
मेरा वतन वही है.........

इस प्रकार इकबाल का कहना है हमारे देश में नानक और चिश्ती जैसे लोगों ने जन्म लिया, सारी दुनिया को ज्ञान हमारे देश से मिला । इस प्रकार कभी कभी इकबाल अपनी पुरानी सभ्यता के बारे में सोचते हैं । जब भारतवासी सीधे सादे और ऊँचे विचार वाले थे ।

ऐ हिमालय दास्ताँ उस वक्त की कोई सुना
मस्कने आबा-ये इन्सान जब बना दामन तेरा
कुछ बता उस सीधी सादी ज़िन्दगी का माजरा
दाग़ जिस पर ग़ाज़ये रंगे तकल्लुफ़ का न था ।[2]

इकबाल को भारतीय साधु सन्तों के प्रति श्रद्धा थी क्योंकि इनका विचार था इन्हीं लोगों और इनके महान चरित्र और ऊँचे विचारों के कारण भारत कामयाबी के शिखर तक पहुँच सका । इन्हीं लोगों ने भारत वासियों को सीधे रास्ते पर चलना सिखाया । इकबाल के विचार में हमें अपने पूर्वजों पर गर्व करना चाहिये जिन्होंने हमें धार्मिक ढंग से चलना सिखाया । इन्होंने एक नज़्म "राम" शीर्षक से लिखी है, जिसमें उन्होंने भगवान राम की पवित्रता, बहादुरी और मनुष्य के प्रति उनके प्रेम की सराहना की है ।

लबरेज है शराबे हकीकत से जामे हिन्द
सब फलसफी है ख़ित्तये मग़रिब के रामे हिन्द

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 87
2. " " 23

यह हिन्दियों के फ़िक्रे फलक रस का है असर
रफ़त में आसमां से भी ऊँचा है बामे हिन्द
इस देश में हुये हैं हज़ारों मलक सरिश्त
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नामे हिन्द
है राम के वजुद पे हिन्दुस्तां को नाज़
अहले नज़र समझते हैं इसको इमामे हिन्द
तलवार का धनी था शुजाअत में फर्द था
पाकीज़गी में जोशे मुहब्बत में फ़र्द था । [1]

इकबाल की देश प्रेम का सर्वश्रेष्ठ नमूना रूप इनके "नया शिवाला" में देखने को मिलता जिसने यह ब्रह्मनों को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि मूर्ति पूजा में क्या रखा है, आओ हम लोग सब मिलकर एक ऐसे शिवाला बनाये जो सब मन्दिरों में सबसे महान हो जिसका कलश आसमान को छू रहा है, जिसमे हम लोग प्रेम के गीत गाये ।

पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है
खाके वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है
आ ग़ैरयत के पर्दे एक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक़्शे दुई मिटा दें ।
सूनी पड़ी हुयी है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ एक नया शिवाला इस देश में बना दें । [2]

इकबाल स्वामी रामतीर्थ से भी बहुत प्रभावित थे इक़बाल का कहना है कि स्वामी रामतीर्थ में अपने को मिटाकर लोगों को जीवन नयी पुकार से गुजारने की क्षमता प्रदान की, इस प्रकार इक़बाल का कहना है कि हिन्द के पुराने साधु सन्तों की वाणी इतनी प्रभावी होती थी कि वह लोगों को अन्दर से झकझोर देती थी ।

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 177
2. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 88

"स्वामी राम तीर्थ"

हम बग़ल दरया से है ऐ कतरये बेताब तू
पहले गौहर था बना अब गौहरे नायाब तू
आह खोला किस अदा से तूने राज़े रंगोबू
मैं अभी तक हूँ असीरे इम्तियाज़े रंगोबू
मिट के ग़ौग़ा ज़िन्दगी का शोरिशे महशर बना
यह शरारा बुझ के आतिश खानये आज़र बना
नफी हस्ती एक करिश्मा है दिले आगाह का
ला के दरया में निहां मोती है इल्लल्लाह का ।[1]

इक़बाल पर भगवत गीता का भी काफी प्रभाव पड़ा जिसमें कृष्ण ने आत्मा को ... अनश्वर बताया है और कहा है फल की चिन्ता किये बगैर कर्म करो ।

अपनी नजम असरारे खुदी में इकबाल इस भाव से प्रभावित दिखायी देते हैं -

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है ।[2]

इकबाल की धरती में पूरी मसनवी "जावेदनामा" है, जिसमें इकबाल सब से अधिक प्रभावित भर्तृहरि से दिखायी देते हैं, उन्होंने भर्तृहरि का परिचय शायर रोमी से यह कहर कर करवाया कि इस भारतीय कवि से मिलिए जिसकी दृष्टि के चमत्कार से ओस की बूंद मोती बन जाती है ।

आँ नवा परदाज़े हिन्दी रा निगर
शबनम अज़ फैज़े निगाहे ऊ गुहर ।[3]

इस पुस्तक में इकबाल भर्तृहरि के बारे में कहते हैं "कि यह जीवन के भेदों को खूब जानता है गोया इसकी कविता जमशेद की तरह है

1• कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं० 114
2• कुलयाते इक़बाल
3• प्राप्त इक़बाल और कौमी यकजहती मुजफ़्फर हुसैन बरनी - पृ सं० 39

§जमशेद ईरान का राजा था जो शराब के प्याले में देखकर सारे जगत का हाल बताया था ।§

कारगाहे ज़िन्दगी रा महरम अस्त
ऊ जमस्तो शेरे ऊ जामे जमस्त । [1]

चाँद में इकबाल की मुलाकात हिन्दी शेर विश्वामित्र से होती है । जिसको उन्होंने जहाने दोस्त के नाम से याद किया है । और इन्हें भारती ज्ञानी बताया है । विश्वामित्र चाँद की एक गुफा में धुनी जमाये हैं । गुफा अंधेरी है इकबाल इस गुफा में जाते हुये घबराये लेकिन गुफा के अन्दर जब इकबाल गये तो उन्हें मालूम हुआ कि इस भारतीय ज्ञानी के तेज और ज्ञान की रोशनी से हर तरफ रोशनी है इसी मुलाकात में विश्वामित्र ने रोमी और इकबाल को यह सुन्दर समाचार दिया कि पूरब के भविष्य से वह मायूस नहीं क्योंकि एक फरिश्ता कल ही चाँद के पहाड़ों से उतरा था और धरती के पूर्वी क्षेत्र की तरफ उसकी दृष्टि गड़ी हुयी थी । अब विश्वामित्र ने उससे प्रश्न किया की पूरब को इस बेजान मिट्टी में उसे उसे क्या दिखायी दे रहा है । तो उसने कहा -

गुफ़्त हंगामे तुलूये ख़ावर अस्त
आफ़ताबे ताज़ा ऊरा दरबरअस्त
लाल हा अज़ संगेरह आयद बुरूं
युसुफ़ाने ऊ ज़े चः आयद बुरूं
ख़ेज़े दर कनारश दीदा अम
लरज़ा अन्दर कोहसारश दीदा अम
ऐ ख़ुशा आँ कौमे किजाने ऊ तपीद
अज़ गिले खुद ख़ेश राबाज़ आफ़रीद
अर्शियां रा सुबहे ईद आँ साअते
चूं शवद बेदार चश्मे मिल्लते । [2]

---

1. प्राप्त - इकबाल और कौमो यहजहती - मुजफ्फर हुसैन बरनी - पृ सं0 39
2. इकबाल जादूगर ए हिन्द निजाद-अतीक अहमद सिद्दीकी - पृ सं0 125

अर्थात् कहा कि यह पूरब के जागने का समय है और एक नया सूरज उसकी गोद में है । रास्ते के पत्थरों से हीरे निकलने वाले हैं और इसके युसुफ़ कुएँ से बाहर आने वाले हैं।मैंने ~~म~~ पूरब में एक हंगामा और उसके पहाड़ों में एक हलचल देखी है । स्वर्ग के निवासियों के लिए यह ईद की सुबह होगी जब एक जाति (भारतीय) स्वप्न से जागृत होगी । युसुफ़ कुयें से बाहर आने से तात्पर्य है स्वतंत्रता सेनानी जेल से बाहर आने वाले हैं । इन शब्दों में विश्वामित्र की महानता बताना केवल इक़बाल का उद्देश्य नहीं बल्कि उन के शब्दों स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा भी दिखायी देती है और वह भारतीयों को स्वतंत्रता की खुली हवा में साँस लेते देखना चाहते हैं ।

वर्तमान दुर्दशा का चित्रण :-

हर मनुष्य समाज से प्रभावित होता है, इस तरह कवि भी एक सामाजिक प्राणी है अन्य मनुष्यों की अपेक्षा कवि कुछ अधिक भावुक होता है, समाज में होनेवाली प्रत्येक प्रक्रिया का उस पर प्रभाव पड़ता है, दोनों ही कवियों ने जब लिखना शुरू किया, बल्कि इक़बाल के समय तो कुछ आशा लोगों का भी एक अच्छे जीवन की व्यथा व्यतीत करने की लेकिन दिनकर जी तक आते आते यह आशा पूर्णतः निराशा में बदल चुकी थी । उस समय अंग्रेज़ों के अत्याचार से जनता त्राहि त्राहि पुकार उठी थी, अंग्रेज़ों के अत्याचार का शिकार किसान, मज़दूर सभी बने हुये थे, दिनकर और डॉ० इक़बाल दोनों ने युग एवं परिवेश की आवश्यकता को समझा और उस समय किसानों और मजदूरों की दुर्दशा का चित्रण करते हुये उन्हें विद्रोह के लिये उकसाया है । इतना आवश्यक है कि वर्तमान दुर्दशा का चित्रण जितना सजीव दिनकर जी के पास मिलता है इक़बाल के पास नहीं दिनकर जी तो यथार्थवादी ~~म~~ कवि कहे ही जाते और वर्तमान दुर्दशा का चित्रण यथार्थवाद के अन्तर्गत ही आता है, वैसे तो उस समय देश अनेक प्रकार की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों का समाना कर रहा था,

---

1.

लेकिन सब से बड़ी समस्या यह थी की भारत माता के पैर गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुये थे ।

दोनों कवियों ने केवल अंग्रेजों द्वारा मनुष्य का शोषण बल्कि मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है । दिनकर जी ने तो भूखे, अर्द्ध नग्न शरीर, भूख से बिलखते बच्चों, जाति पात के भेद इत्यादि जो दुर्दशा हमारे समाज में हो रही थी उसका चित्रण प्रस्तुत किया है ।

भारतीय कृषकों की उस समय बुरी दशा थी । वह वस्त्रहीन पीड़ित अपने ज़बान बन्द किये, अत्याचार सहते ~~थे~~ किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे थी । कवि ने उसके चित्रण ऐसा किया है कि कठोर से कठोर हृदय से कराह निकल जाये ।

मुख में जीभ शक्ति भुज में जीवन में सुख का नाम नहीं है
वसन कहाँ सुखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है
.. .. ..
विवश देखती माँ अंचल से नन्हीं ~~तर~~ जान तड़प उड़जाती
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती ।

किसानों से उनके जीने तक का अधिकार छीन लिया जाता है, सामाजिक और आर्थिक शोषण से किसान व मज़दूर त्रस्त है । किसानों की यह दयनीय दशा देख कवि पुकार उठता है वह ~~बदलाव~~ परिवर्तन चाहता है ।

रस्सों से कसे जवान पाप प्रतिकार नजब कर पाते हैं ।
बहनों की लुटती लाज देख काँप कांप रह जाते हैं
पी अपमानों के गरल घूंट शोषित जब होठ चबाते हैं
जिस दिन रह जाता क्रोध मौन मेरा वह जीवन जन्म लगन ।

1• दिनकर - रश्मिलोक - पृ सं0 34
2• दिनकर - हुंकार - पृ 77

दिनकर जी ने समाज की परिस्थितियों और समस्याओं का चित्रण करते हुये उनके समाधान की तरफ संकेत किया है । दिनकर जी का कहना है किसान हमेशा ऋण के बोझ से दबा रहता है । इस ऋण को उतारने के लिये ९ उसे अपने घरमें बधी गाय का एक एक बूंद दूध बेचना पड़ जाता है, और उसके बच्चे दूध के लिये मचलते रह जाते हैं । इस प्रकार का चित्रण कर कवि विद्रोह जगाना चाहता है ।

ऋण शोधन के लिए दूध घी बेच बेच धन जोड़ेंगे
बूंद बूंद बेचेंगे अपने लिए नहीं कुछ छोड़ेंगे
शिशु मचलेंगे दूध देख जननी उनको बहलायेगी
मैं फाड़ूंगी हृदय लाज से आँख नहीं रो पायेगा
इतने पर भी धनपतियों की उन पर होगी मार
तब मैं बरसूँगी बन बेबस के आँसू सुकुमार ।[1]

दिनकर जी सामाजिक वैषम्य का चित्रण जहाँ तहाँ प्रस्तुत किया है।एकही समाज में दो वर्गों में इतनी असमानता की एक वर्ग के कुत्ते भी दूध से नहलाये जाये और दूसरे वर्ग के बच्चे दूध के लिए तड़प तड़प कर मर जाय समाज की इस असमानता से कवि का हृदय कराह उठता है । वह समस्या का समाधान स्वयं ढूंढता है ।

कब्र कब्र में अबुध बालकों की भूखी हड्डी रोती है
दूध दूध की कदम कदम पर सारी रात सदा होती है ।
.. .. ..
दूध दूध ओ वत्स मन्दिरों से बहरे पाषाण कहां है
दूध दूध तारे बोलों इन बच्चों के भगवान कहाँ है ?
.. .. ..
वे यों यही दूध से जो अपने श्वानों को नहलाते हैं
ये बच्चे यों यही कब्र में दूध दूध जो चिल्लाते हैं ।[2]

1· रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 10

2· रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 35

कवि ने पराधीन भारत की दुर्दशा को देखा था इसलिये उन्होंने अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त किया है ।

"शैल श्रृंग" चढ समय सिन्धु के आर पार तुम हेर रहे
किन्तु ज्ञात क्या तुम्हें भूमिपर का कौनदनुज पथ घेर रहे
दो वज्रों के बीच विकट संघात धरा पर जाती है
वाहि रेणु चुन स्वप्न सजा लो छिटक रही चिनगारी है ।[1]

कवि अपनी हिमालय नामक कविता में हिमालय को एक यती के रूप मानते हुये उस समय की दुर्दशा का चित्रण करते है और चित्रण करते हुये क्रान्ति को आवाज देते हैं ।

वे हिमालय को सम्बोधित करते हुये कहते हैं -

ओ मौन तपस्या लीन यती
पल भर को तो कर दृगुन्मेष
रे ज्वालाओं से दग्ध विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश ।[2]

कवि शोषण करने वालों को सावधान कर रहा है और कह रहा है ऐ हिमालय तेरे पुत्रों का हर प्रकार से शोषण हो रहा है, अंग्रेजों जमीदारों और ~~प्र~~ पूंजीपतियों द्वारा किसानों और श्रमिकों का, ब्राह्मण द्वारा शूद्रों का और धार्मिक व्यवस्था द्वारा ~~स्त्रियों~~ स्त्रियों का -

उस पूज्य भूमि पर आज तपी
रे आन पड़ा संकट कराल ।
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल ।[3]

कवि को समाज की हालत देख कर बहुत दुख हो रहा है

---

1. रश्मि लोक - दिनकर -
2. रश्मिलोक - दिनकर - पृ सं0 4
3. रश्मि लोक - " 5

कवि को लग रहा है हमारी मनवतावादी संस्कृति नष्ट हो रही है, और हमारी सभ्यता का विनाश हो रहा है । शक्तिशाली अपने बल का प्रयोग निर्बल पर कर रहे हैं ।

दिक दिक में शस्त्रों की झनझन
धन पिशाज का भैरव नर्तन
दिशा दिशा में कलुष नीति,
हत्या तृष्णा पातक आवर्तन
दलित हुये निर्बल सब लेते
मिटे राष्ट्र उजड़े दरिद्र जन
आह सभ्यता आज कर रही
असहायों का भीषण शोषण ।

कवि को लग रहा है कि हमारे समाज की यह दशा है और नवयुवक जो समाज में परिवर्तन ला सकते हैं कुछ नहीं कर रहे हैं, नव जवानों को अपने यौवन को मिट्टी में मिलाते देख कवि का मन व्याकुल हो उठता है ।

क्या होगा भगवान हाल मिट्टी में पड़ी जवानी का
इस किशोर खिलती ज्वाला का इस चढ़ते से पानी का ।

उस समय ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों का जो शोषण हो रहा था कवि उससे असन्तुष्ट दिखायी देता है फिर गांधीजी का अछूतोद्धार आन्दोलन उस समय काफी उग्र रूप ले चुका था जिसका भी दिनकर जी पर प्रभाव था । वह मानव मानव में अन्तर से व्याकुल हो उठते हैं । भगवान ने सब को बनाया है फिर ऊँच नीच जाति का यह भेद क्यों दिनकर जी ने अछूतों को उनका हक दिलाने की प्रेरणा दी उनको जागृति का संदेश दिया ।

---

1. रेणुका - दिनकर - पृष्ठ सं० 38
2. रेणु का - दिनकर - पृष्ठ सं० 52

आज दीनता को प्रभु की पूजा का अधिकार नहीं
देव बना था क्या दुखियों के लिये निठुर संसार नहीं
धन विशाज की विजय धर्म की पावन ज्योति अदृश्य हुयी
दौड़ो बोधिसत्व भारत में मानवता अस्पृश्य हुई
..   ..   ..
अनाचार की तीव्र आँच में अपमानित फुलाते हैं
जागो बोधिसत्व भारत के हरिजन तुम्हें बुलाते हैं ।

"दिल्ली" नामक कविता में कवि ने भारतीयों को दयनीय दशा का चित्रण प्रस्तुत किया है

छाया छिनी।भूखों की रोटी
छिना नग्न का अर्द्धवसन है
मज़दूरों के कौर छिने हैं
जिन पर उनका लगा दसन है ।
..   ..   ..
आहे उठों दीन कृषकों की
मज़दूरों की तड़प पुकार
अरी गरीबों के लोहू पर
खड़ी हुयी तेरी दीवारें ।

भारतीय नारी की भी उस समय कम दुर्दशा न थी । उन पर तरह तरह के अत्याचार हो रहे थे । नारी भोग्या बन कर रह गयी थी । नारी का जीवन बहुत दुर्भाग्य पूर्ण होता है । खास कर "विधवा नारी" की हमारे समाज में बड़ी दुर्गति होती थी । उससे जीने के सभी अधिकार छीन लिये गये थे । अगर वह रूपवती भी है, तो विधवा के रूप का क्या महत्व

---

1. रश्मिलोक - पृ सं0 11, 12

2. रश्मिलोक - पृ सं0 46

जैसे कि उन्होंने स्वयं रश्मिरथी में नारी की दीन हीन दशा का चित्रण कवि इस प्रकार करता है -

बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी
अबला होती सचमुच योषिता कुमारी
है कठिन बन्द करना समाज के मुख को
सिर उठा न पाती पतिता निज सुख को ।

कवि विधवा नारी की दशा देखकर परेशान हो जाता है । वह पूछता है मरघट के एकान्त में खड़ी तुम किसको स्मृति में खोई हो कवि के मन में ऐसी नारी के लिये करूणा उत्पन्न होजाती है ।

नव यौवन की चिता बनाकर
आशा कलियों को स्वाहा कर
भग्न मनोरथ की समाधि पर तपस्विनी बैठी निर्जन में
जीवन के शुचि शून्य सूदन में ।

इकबाल ने उस समय का उतना जीता जागता चित्र तो नहीं प्रस्तुत किया है जितना दिनकर जी ने, इकबाल ने मजदूरों और किसानों को उतनी क्षमता का एहसास दिलाया। उन्होंनेबगैर यथार्थ चित्रण के उनमें सीधी विद्रोह की भावना भरते हुये उनको उनके अस्तित्व का एहसास दिलाना चाहा है । लेकिन इतना होते हुये भी इकबाल के यहाँ भी उस समय की दुर्दशा का चित्रण किसी न किसी रूप में मिल जाता है । अपनी नजम "परिन्दे की फरियाद" में डा० इकबाल ने गुलामी की अवस्था का चित्रण खींचते हुये आजादी के महत्त्व को बताया है, उनका कहना है : पिंजडे में कैद पक्षी कभी प्रसन्न नहीं हो सकता इस का मन खुले आसमान में विचरण के लिये बेचैन रहता है ।

1· रश्मि लोक - पृ सं0 192
2· रेणु का - पृ सं0 96

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना
वह बाग़ की बहारें वह सुब का वह वहाना
आज़ादियाँ कहाँ वह अब अपने घोंसले की
अपनी खुशी से आना अपनी खुशी से जाना
लगती है चोट दिल पर आता है याद जिस दन
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कुराना
वह प्यारी प्यारी सूरत वह कामिनी सी मूरत
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना
आती नहीं सादायें इसकी मेरे कफ़स में
होती मेरी रिहायी पै काश मेरे बस में
आयी बहार कलियाँ फूलों को हंस रही हैं
मैं इस अँधेरे घर में क़िस्मत को रो रहा हूँ

.. .. ..

आज़ाद मुझ को कर दे ओ क़ैद करने वाले
मैं बेजुबां हूँ कैदी तू छोड़ कर दुआ ले ।[1]

शायर के कहने का तात्पर्य यह है की गुलामी के जीवन में मनुष्य और उसकी आशायें तड़प तड़प कर दम तोड़ देती है ।

इस समय "जलियाँवाले बाग" में जो हत्याकाण्ड हुआ था जिस तरह भारत वासियों का खून बहाया गया था उसका प्रभाव भी शायर के दिल पर गहरा पड़ा है कहते हैं -

हरजायरे चमन से यह कहती है ख़ाके पाक
गाफ़िल न रह जहान में गर्दू की चाल से ।
सींचा गया है खूने शहीदों से इसका तुख़्म
तू आँसुओं का बुख्ल न कर इस निहाल से ।[2]

1· कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 38
2· प्राप्त इक़बाल से जादू गेमू हिन्दी निजाद - पृ सं0 83

इक़बाल ने जावेद नामा में भारत वासियों की लापरवाही का चित्र दिनकर जी की भाँति खींचते हुये भारत माता को बेड़ियों में ज़कड़ा हुआ दिखाया है। जबकि भारत माता बहुत सुन्दर है उसके चहरे से नूर बरस रहा है परन्तु गुलामी की बेड़ियों में बंधी होने के कारण वह उदास है।

बाचुनीं ख़ूबी नसीबश तौक़ोबन्द
बर लबे उ नाला हाये दर्दमन्द ।[1]

इतनी खूबियाँ (गुण) होते हुये इसकी क़िस्मत में गुलामी की जंजीरे और इसके होठों पर दर्दमन्द नाले हैं।

इक़बाल, भारत माता की जबानी उस समय की राजनैतिक अवस्था पर प्रहार करते हुये इस बात पर दुखी दिखायी देते हैं कि भारतवासी आपस में लड़ रहे हैं, उन्हें अपनी माँ की गुलामी की बेड़ियों को परवाह नहीं।

शमे जाँ अफ्सुर्द दर फ़ानूसे हिन्द
हिन्दियाँ बेगाना अज़ नामूसे हिन्द
मर्दकें नामहरम उज़ असरारे खेश
ज़ख़मये खुद कम ज़नद बरतारे खेश
बर ज़माने रफ़्ता बरबन्दद नज़र
ज़आतिशे अफ़सुर्दः मी सोज़द जिगर
बन्दहा बरदस्तोपाये मन अज़ूस्त ।
नाला हाये नारसाये मन अज़ूस्त ।[2]

अर्थात् भारत की आत्मा रूपी दीपक बुझा हुआ है। भारत वासियों को अपने देश का सम्मान प्यारा नहीं रहा, भारत वासी पुराने जमाने पर नज़र रखे हैं, वह अपनी क्षमता को पहचानने का प्रयत्न नहीं करते है और मुझे स्वतंत्र कराने के लिये संघर्ष नहीं कर रहे हैं।

---

1. इकबाल और कौमी यकजहती - पृ सं0 29-30 - सैय्यद मुजफ़्फर हुसैन बरनी
2. जावेद नामः में शरह , पृ 199

ऐसे भारतवासियों के कारण में ज़ंजीरों में बंधी हुयी हूँ । और इसीलिये मेरे रोने में कोई प्रभाव नहीं रहा ।"1

मज़दूरों और किसानों की दयनीय दशा का चित्रण इकबाल के पास अधिक नहीं मिलता, जितना दिनकर के पास है फिर भी कहीं कहीं वह मज़दूरों की हालत देखकर परेशान हो जाते हैं । इकबाल कहते हैं मजदूर किसान सीधे सादे हैं और अंग्रेज़ और पूंजीपति उनकी सादगी का फायदा उठाते हैं । उन से मेहनत लेते और मजदूरी भी कम देते हैं और जो कुछ मजदूरी देते हैं वह एहसान जताते हैं ।

दस्ते दौलत आफ़रीं को मुज़्द यूँ मिलती रही
एहले सरवत जैसे देते हैं ग़रीबों को ज़कात
मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार
इन्तेहाये सादगी से खा गया मज़दूर मात
उठ कि अब बज़्मे जहाँ का और ही अंदाज़ है
मशरिक़ो मगरिब में तेरे दौर का आग़ाज़ है ।1

मजदूरों की दशा देखकर दिनकर जी की तरह इकबाल भी परेशान दिखायी देते हैं । मानव मानव के बीच का अन्तर शायर को असह्य हो रहा है । वह अपनी नानक नज़्म में कहते हैं महात्मा बुद्ध ने अछूतों के उद्धार के बहुत प्रयत्न किये लेकिन हमारे देश वासी उससे अधिक लाभ न उठा सके । फिर पंजाब में नानक ने जन्म लिया, सोती हुयी कौमों को जगाने और मनुष्य मनुष्य के बीच के फर्क को मिटाने के लिये ।

कौमने पैग़ामे गौतम को ज़रा परवा न की
कर्द पहचानी न अपने गौहरे यकदाना की ।

---

1. कुलयाते इकबाल "- पृ सं0 262

आह शूद्रों के लिये हिन्दोस्ताँ ग़मखाना है
दर्दे इंसानी से इस बस्ती का दिल बेगाना है
ब्राह्मण सरशार है अब तक मये पिनदार में
शमा गौतम जल रही है महफिले अग़यार में
फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से
हिन्द को एक मर्दे कामिल ने जगाया ख़्वाब से।[1]

<u>एकता की भावना</u>

हमारे देश विभिन्न जातियों और सम्प्रदायों में बंटा हुआ है किसी अन्य देश में इस तरह की स्थिति नहीं है जैसी भारत की और यही नहीं धर्मों में विभिन्नता होने के कारण, उतने ही त्योहार उतने ही रीतियाँ भारत में है। हमारी यह विशिष्टता रही है कि हम एक होकर रहे आपस में एक दूसरे के दुःख और खुशियों के अवसर पर एक जाति के भारतवासी दूसरे जाति के भारत वासियों के साथ हमेशा साझेदार बने रहे, लेकिन कभी कभी दुर्भाग्य आ घेरता है और विभिन्न जातियों में आपसी फूट हो जाती है जिस से भारत की संस्कृति और सभ्यता को और आघात पहुँचता है। ऐसा ही एक समय आया था स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले जब ब्रिटिश शासकों को लगा कि वे अधिक भारत में नहीं टिक पायेंगे तो उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ाने के प्रयत्न किये ताकि वह भारत में टिक सके और इसी का दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हमारे सामने पाकिस्तान की शक्ल में आता है। इस तरह अंग्रेज़ों ने जगह जगह हिन्दू मुस्लिम दंगे करवा दिये वह लोग जो एक दूसरे के साथ प्रेम से रहते थे एक दूसरे के खून के प्यासे बन गये। हिन्दू मुसलमानों की यह दशा देख कर दोनों ही कवि रोते दिखायी देते हैं और दोनों ने ही अपने काव्य के माध्यम से दोनों में एकता का बीज बोना चाहा है। इन कवियों ने भारतवासियों को बताया हम किसी जाति या सम्प्रदाय के हो हम सब से पहले मनुष्य है, और हम भाई भाई क्योंकि

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ सं० 239

हमने एक धरती जो भारत की है । पर जन्म लिया है, अगर हम आपस में इस तरह लड़ते रहे तो हम मिट जायेंगे । डा० इकबाल कहते हैं

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

भारत में आपसी वैषम्य के कारण कई जगह सम्प्रदायिक दंगे हुये । 1927 में मुस्लिम लीग और कांग्रेस का समझौता असफल हुआ दिनकर जी पर इस घटना का बहुत प्रभाव पड़ा। दोनों जातियों के बीच में इस प्रकार वैषम्य और दंगे को वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के मार्ग में बाधक मानते थे । उन्होंने "तकदीर का बटवारा" नामक कविता में दोनों जातियों का ध्यान उनके उठे हुये गलत कदम की तरफ आकर्षित किया है । इस कविता में अथाह वेदना भरी हुई है और देश के नौजवानों को दिनकर जी सचेत करते हुये दिखाई देते हैं ।

हाथ की जिस की कड़ी टूटी नहीं
पांव में उसके बना जंजीर है
बांटने को हाथ तौला जा रहा
बेबसी उस कौम की तकदीर है ।

.. .. ..

ताज या जिसको का बांधे कौम को
एक होकर हम कहीं मुंह खोलते
तौलना आता कहीं तकदीर को
हिन्द वाले आसमां पर बोलते

.. .. ..

खूं बहाया जा रहा इन्सान का
सींग वाले जानवर के प्यार में
कौम की तकदीर फोड़ी जा रही
मस्जिदों की ईंट की दीवार से ।

सूझता आगे न कोई पुञ्ज है
है घनी गफलत घटा आयी हुई
नौजवानों कौम के तुम हो कहीं
नाश की देखो घड़ी आयी हुई ।

इस प्रकार नोआखली और बिहार में जो दंगे हुए, उनके प्रति दिनकर जी काफी सोचते रहे, निरअपराध लोगों का खून बह रहा है । लड़ाकों और राज्य करों की इस नीति से कवि बेचैन हो उठता है । और वह लोगों को काफी समझाने का प्रयत्न करता है ; जिस प्रकार एक माता के दो बेटे आपस में लड़े तो माँ कितनी बेचैन होती है यही हाल आज भारत माता का है, कहते हैं, उसमें जो आदर्श अपने पुत्रों को दिया वह आज जल कर राख हो रहा है ।

ओ बदनसीब इस ज्वाला में
आदर्श तुम्हारा जलता है
समझाये कैसे तुम्हें कि
भारत वर्ष तुम्हारा जलता है
.. .. ..
जलते हैं हिन्दू मुसलमा
भारत की आँखें जलती हैं
आनेवाली आजादी की
लो दोनों पाँखें जलती हैं । 2

आगे इन दंगों को देखकर भारत माता की दयनीय स्थिति का चित्रण दिनकर जी ने बहुत सुन्दर किया है ।

ये छुरे नहीं चलते, छिदती
जाती स्वदेश की छाती है
लाठी खाकर भारत माता
बे होश हुयी सी जाती है । 3

सामधेनु - दिनकर - पृ. 27,28,29

इस प्रकार हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे के खून का प्यासा देखकर कवि का मन लज्जा से भर जाता है । कवि खिन्न भाव से कहता है ।

बेबसी में काँप कर रोता हृदय
श्राप सी आहे गरम आईं मुझे
माफ करना जन्म लेकर गोद में
हिन्द की मिट्टी शरम आयी मुझे ।

आगे दिनकर जी देश वासियों से आपसी भेद भाव को मिटाकर मेल से रहने की शिक्षा देते हुए कहते हैं देश को बचाने का रास्ता यही है ।

आदर्श मांगता सुधा आज
आदर्श मांगता शीतल जल
ओ एक राष्ट्र के चिरवासी
आदर्श मांगता भाव अचल
~~आदर्श~~ आदर्श मांगता मुक्त पन्थ
वह कोलाहल में जायेगा
लपटों के घिरे महल में से
जीवित स्वदेश को लायेंगे ।

कस्मै देवाय कविता में दिनकर जी प्रेम से हिल-मिल कर रहने का संदेश देते हैं ।

धर्म भिन्नता होने पर भी सभी जन शत तरी में हिलमिल जाये
उषा के स्वर्णिम प्रकाश में भावुक भक्त मुक्त कंठ गाये ।

1• समाधेन्दु - पृ सं0 30

दिनकरजी की तरह इकबाल भी इन दंगों से बेचैन और परेशान नजर आते हैं। उनका कहना है जिस देश में इन्सान इंसान के खून के प्यासे हो जाय वह देश रह क्या जायेगा। अगर खिरमन {खेत} नष्ट हो जाय तो एक दाने का कोई अस्तित्व नहीं रहता।

जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे
हाँ डुबो दे ऐ मुहीते आबे गंगा तू मुझे
सरज़मीं अपनी कयामत की निफ़ाक़ अंगेज़ है
वसल कैसा यां तो एक क़ुरबे फ़िराक़ अंगेज़ है
बदले यकरंगी के यह ना आशनाई है ग़ज़ब
एक ही ख़िरमन के दानों में जुदायी है ग़ज़ब
जिसके फूलों में अखूवत की हवा आयी नहीं
इस चमन में कोई लुतफ़े नग़मा पैराई नहीं - 1

इनके एक और नजम "सैयूयद की लोह तुरबत" में इन्होंने एकता का संदेश दिया है।

वा न" करना फ़िरक़ा बन्दी के लिये अपनी ज़बाँ
छुप के है बैठा हुआ हंगामये महशर यहाँ। - 2

अपनी नजम तस्वीरे दर्द में इकबाल ने भारतवासियों का ध्यान उस समय की परिस्थितियों की परफ आकर्षित किया है, और दिनकरजी की ही तरह वह भारत वासियों को सचेत करते हुये कहते हैं कि हमारा देश इस समय भयानक परिस्थितियों का सामना कर रहा है। हमारे धार्मिक दंगे स्वतंत्रता के मार्ग में दीवार बन जायेंगे और हमारी पूरी जाति नष्ट हो जायगी। इसलिए वह भारतवासियों से कहते हैं, अपने देश की चिन्ता करो भेद भावों को भूल जाओ।

उजाड़ा है तमीज़े मिल्लतो आईं ने क़ौमों को
मेरे अहले वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे वतन भी है ?

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 42 2. कुलयाते इक़बाल-पृ सं0 52
3. कुलायते इक़बाल - पृ सं0 76

इसी नज़्म में डॉ० इकबाल कहते हैं, इन्हीं झगड़ों के कारण मनुष्य को अपने घर से निकलना पड़ता है।

शजर है फ़िरका आराई तास्सुब है समर इसका
यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को —1

जिस प्रकार दिनकरजी इस प्रकार के झगड़ों को देखकर विकल हो जाते हैं और कहते हैं —

चीखे किस का ले नाम, कहो
अपना कोई तो पास नहीं
धरती यह आज नहीं अपनी
अपना लगता आकाश नहीं। —2

उसी प्रकार इक़बाल भी घबरा जाते हुए दिखाई देते हैं। वह भी भाग जाना चाहते हैं क्यों कि यहाँ उन्हें कोई अपना नहीं लग रहा है —

पार ले चल मुझको ऐ किश्तिये मौजे अटक
अब नहीं भाती यहाँ के बूसतानों की महक —3

कवि का भावुक मन इन दंगों पर रो देता है। तस्वीरे दर्द में कइबाल न सिर्फ आँसू बहाते हैं बल्कि उस समय की परिस्थितियों के प्रति सचेत करते हुये दृढ संकल्प करते हुये दिखायी देते हैं कि हम अपने देशवासियों के लिए एकता प्रेम की ज्योति जला कर ही रहेगी।

रूलाता है तेरा नज़्ज़ारह ए हिन्दूस्ताँ मुझ को
कि इबरत खेज़ है तेरा फसाना सब फसानों में

.. .. ..

वतन की फिक्र कर नादाँ मुसीबत आने वाली है
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में

---

1. कुलयाते इकबाल — पृ सं० 74
2. रश्मिलोक —
3. कुलयाते इकबाल —

ज़रा देख इसको जो कुछ हो रहा है होने वाला है
धरा क्या है भला अहदे कुहन की दास्तानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ए हिन्दूस्ताँ वालों
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में
यह खामोशी कहाँ तक लज़्ज़ते फ़रयाद पैदा कर
ज़मीं पर तू हो और तेरी सदा हो आसमानों में।-1

कवि को इस बात का विश्वास है कि वह परिवर्तन ला सकता है। कविता तो परिर्वतन लाने का सशक्त माध्यम है। आगे इकबाल कहते हैं मैं लोगों के दिलों से नफरत दूर कर के ही रहूँगा।

हवेदा आज अपने ज़ख़्मे पिन्हां करके छोड़ूँगा
लहू रोरो के महफ़िल को गुलिस्तां करके छोड़ूँगा
जलाना है मुझे हर शमे दिल को सोज़े पिन्हां से
तेरी तारीक रातों में चिराग़ाँ करके छोड़ूँगा
पिरोना एक ही तस्बीह में इन बिखरे दानों को
जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसां करके छोड़ूँगा
दिखादूँगा जहाँ को जो मेरी आखों ने देखा है
तुझे भो सरूते आईना हैरां करके छोड़ूँगा। -2

यही नहीं इकबाल ने सब झगडों का हल एक ही शब्द में दिया है मानो "प्रेम" कबीर ने कहा है -

"ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।"

और इकबाल का भी यही कहना है कि प्रेम के बड़ी शक्ति है, प्रेम के द्वारा ही हम स्वतंत्रता की मंज़िल तक पहुंच सकते हैं। प्रेम रूपी दवा से जातीय भेद रूपी भयानक रोग मिट सकता है।

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 70-71
2. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 71,72

मुहब्बत से ही पायी है शफ़ा बीमार कौमों ने
किया है अपने बख़्ते ख़ुफ्ता को बेदार कौमों ने
बयाबने मुहब्बत दश्ते ग़ुरबत भी वतन भी है
यह वीराना कफ़स भी, आशयाना भी, चमन भी है ।
मुहब्बत ही वह मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा भी
जरस भी, करवाँ भी, राहबर भी, राहज़न भी है । [1]

इनका कहना है कि प्रेम स्वतंत्रता का राज़ है -

जो तू समझे तो आज़ादी है पोशीदा मुहब्बत में
गुलामी है असीरे इम्तयाज़े मा व तू रहना ।[1]

इस प्रकार देखा जाय तो दोनों ही कवि साम्प्रदायिक दंगों से परेशान दिखायी देते हैं । और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एकता पर बल देते हैं । वास्तव में, देश की सुदृढ़ नींव एकता में ही निहित है, अगर हम एक है तो बाहर की .. शक्तियाँ हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं, इकबाल उस समय के दंगों से परेशान ही दिखायी देते हैं । कबीर की नीति और अकबर के दीन इलाही को अगर हम ठीक से समझते तो आज यह नौबत न आती यही बात आज के युग में भी सही है ।

अपनी नज़्म तराने हिन्दी में इक़बाल कहते हैं - प्रत्येक धर्म हमें आपस में मिलजुल कर रहना सिखाता है । न कि बैर रखना ।

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्ताँ हमारा ।"[2]

अपनी काफी बड़ी नज़्म "तसवीर दर्द" में यो भी इकबाल उस समय की परिस्थितियों की तरफ इशारा करते हुये एकता पर बल देते हैं

1· कुलयाते इक़बाल - बागेदरा - पृ सं0 75
2· -वही- 83

दिनकर की ही तरह वह भी भारतवासियों को सचेत करते हुये कहते हैं कि वतन की फिक्र करो इस तरह के धार्मिक और धर्मगत झगड़े देश की स्वतंत्रता के लिये घातक सिद्ध होंगे, इस तरह के झगड़े से पूरी की पूरी कौम नष्ट हो जाती है -

उजाड़ा है तमीज़े मिल्लते आयीं ने कौमों को
मेरे अहले वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे वतन भी है ?[1]

अगर हम, इकबाल और दिनकर जैसे महान विचारकों के विचारों को उनके धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण को समझ सकते हैं तो आज जो परिस्थिति है जिस तरह साम्प्रदायिक दंगे देश को नींव को कमज़ोर बना रहे हैं, वह न होता, हर आदमी यही कहता ।

शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है ।[2]

अपनी नज़्म "नया शिवाला" में इकबाल एक ऐसे मंदिर की स्थापना करना चाहते हैं, यहाँ सारे पुजारियों के मन में प्रेम ही प्रेम देखना चाहते हैं, अर्थात् टूटती हुयी एकता को इकबाल फिर जोड़ना चाहते हैं ।

आ गैरयत के पर्दे एक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक्शे दुई मिटा दें
सूनी पड़ी हुयी है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ एक नया शिवाला इस देश में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामाने आसमाँ से इसका कलश मिला दें
हर सुबह उठ के गायें मन्तर वह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मय प्रीत की पिला दे ।[3]

1· कुल्याते इक़बाल - पृ सं0 76

2 व 3· कुल्याते इक़बाल - रागेदरा - पृ सं0 88

कष्ट सहन और बलिदान की भावना

जैसा कि पहले ही कह चुके है कि जब दोनों कवियों ने लिखना शुरू किया तब हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था । इस लिये देश को आजाद कराने की प्रबल इच्छा राष्ट्रियकविता की आत्मा है । कवि जगह जगह यह कहता है, जिस मिट्टी ने हमे जन्म दिया, जिस भारत माता की हम ने संतान है आज गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुयी है हमें आवाज दे रही है/ कवि का कहना है देश की आजादी के लिए अगर हमें सिर की भी बलि चढ़ानी पड़े तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिये, और वास्तविकता भी यही है आज जो हम आजाद है, आजाद वातावरण में सांस ले रहे हैं इस दिन को प्राप्त करने के लिए कई लोगों के अपनी जान गवा दी । कवि दिनकर और इकबाल के यहां बलिदान की भावना मिल जाती है, उतनी अधिक नहीं जितनी अन्य राष्ट्रीय कवियों जैसे माखनलाल चतुर्वेदी या सुभद्रा कुमारी चौहान के यहां लेकिन फिर भी देश के लिए अपनी जान की बाजी लगा देने वाले को दिनकर जी और इकबाल दोनों ही महान मानते हैं, दिनकर जी भी कविताओं में जगह जगह बलिदान को महत्व दिया गया है वह कहते हैं कि अगर स्वराज्य हासिल करने के लिये जीवन का बलिदान देना पड़े तो वीर पुरुष उसकी चिन्ता नहीं करते, वह राष्ट्र की बलि वेदी पर अपनी आहुति देने को तैयार है -

चाहती हो, बुझना यदि आज
होम की शिखा बिना सामान ?
अभय दो कूद पड़ू जय बोल
पूर्ण कर लू अपना बलिदान ।

"परशु राम की परीक्षा" दिनकर जी की आजादी मिलने की बाद की पुस्तक है उसमें भी उनकी राष्ट्रीयता की झलक दिखायी देती है । 1963 में चीन ने जब भारत पर आक्रमण किया और वह नेफा तक घुस भी आये

1• रश्मि लोक - पृष्ठ सं0 305

थे जब दिनकर जी क्षोभ और गुस्से से अजीब स्थिति में थे और उसी दौरान उन्होंने यह पुस्तक लिखी है जिसके द्वारा उन्होंने सोये हुये भारतीयों को जगाना चाहा । उनमें वीरता और साहस के भाव भरना चाहा । वह कहते हैं कि मनुष्य को कर्म की लगन नहीं छोड़नी चाहिये । चाहे उसके लिये सिर ही क्यों न कटवाना पड़े । मनुष्य का जीवन अमूल्य है वह बार बार नहीं आता इसलिये अच्छे कर्म के लिये मनुष्य को हमेशा तैयार रहना चाहिये और देश को उसकी इज्जत को बचाने से अच्छा कर्म और क्या हो सकता है ।

छोड़ो मत अपनी आन सीस कट जाये
मत झुको अनय पर चले व्योम फटजाये ।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है
मरता है जो एक ही बार मरता है ।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे
जीना है तो मरने से नहीं डरो रे ।

दिनकर जी का कहना मनुष्य जब मनुष्य से प्रेम करेगा तो वह बलिदान से नहीं डरता क्योंकि तब उसके मन में व्यष्टि के स्थान पर समष्टि की प्रधानता होती है ।

जिसकी बाहें बलमयी ललाट अरुण है
यामिनी वही तरुणी नर वही तरुण है
है वही प्रेम जिसकी तरंग उच्छल है
वारुणी धार में मिश्रित जहां गरल है ।
उद्दाम प्रीति बलिदान बीज बोती है
तलवार प्रेम से और तेज होती है ।

उनका कहना है शासन वही लोग कर सकते हैं वही लोग शक्ति शाली बन सकते हैं जो बलिदान देने में नहीं डरते हैं ।

---

1. रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 305
2. " " 304

धन-धाम विज्ञान मात्र सबल है
बस एक मात्र बलिदान जाति का बल है
सिर देने में जो लोग नहीं डरते हैं
वे ही प्रभंजनों पर शासन करते हैं ।

जब पड़े विपद, अपनी उमंग जाँचो रे
विकराल काल के फण पर चढ़ नाचो रे ।[1]

कवि वर्तमान दासता की स्थिति से असन्तुष्ट था, इस स्थिति से निपटने के लिये वह क्रान्ति को पुकारना चाहता है, और वह स्वतंत्रता के लिये बलिदान देने को तैयार है -

दो वज्रों का घोर विकट संघात धरा परजारी है,
चाहि रेणु चुन स्वप्न सजा लो छिटक रही चिंगारी है
रण की घड़ी जलन की बेला रुधिर पंक में गान करो ।
अपना साकल धराकुण्ड में तुम भी कुछ बलिदान करो ।[2]

परशुराम की प्रतीक्षामेंएक जगह कवि भारतीय सैनिकों की वीरता और साहस का परिचय एक सैनिक के मुख से करवाते हैं । सैनिक कहता है हम भारत की रक्षा के लिये हंसते हंसते ज्वालाओं में कूद पड रहे हैं । हम अपनी धुन के पक्के है हम कोई पीछे नहीं हट सकता ।

सामने देश माता का भव्य चरण है
जिह्वा पर जलता हुआ एक बस प्रण है
काटेंगे अरि का मुण्ड या स्वयं कटेंगे
पीछे परन्तु सीमा से नहीं हटेंगे ।[3]

कवि अपनी जवानियाँ नामक कविता में जवानी की परिभाषा देता है । कवि जवानी का आग से टकरा जाने वाली चीज़ समझता है कवि की दृष्टि में जवानी की सार्थकता इसी में है वह

1· रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 306
2· रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 307
3· " " 297

देश के हित के लिये भेंट चढ़ जाय ।

"व" देख लो खड़ी है कौन तोप के निशान पर
"व" देख लो अड़ा है कौन जिन्दगी की आन पर
"व" कौन थी जो कुद के अभीनिरी है आग में ।
अलभ्य भेंट काल को चढ़ा रही जवानियाँ ।

इकबाल की शायरी में बलिदान का सीधा रूप देखने को तो नहीं मिलता लेकिन वह संघर्ष का जीवन पसन्द ~~करते~~ करते हैं । क्रान्ति को आवाज देते हैं और समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं । और इनके संघर्षमय जीवन के बीच कोई भी वस्तु आये तो वह अपनी जान की परवाह किये बगैर उससे टक्कर लेने को तैयार दिखायी देते हैं और फिर हिन्दुस्तान की गुलामी से तो सर इकबाल जहाँ जहाँ परेशान दिखायी देते वह भी दिनकर जी की ही तरह लोगों के दिलों में आजादी के लिये चाहत और आजादी के लिए संघर्ष करने की भावना भरना चाहते हैं । वह उन लोगों को सराहना करते दिखायी देते हैं जो आजादी की लड़ाई में भाग ले रहे हैं और जेल जा रहे हैं । नज़्म "असीरी" उन्होंने अली बुदरान के स्वतंत्रता संग्राम में जेल जाने पर लिखी थी वे कहते हैं किसी महान कार्य के लिये जेल जाना तो गर्व की बात है और इसको उन्होंने अपनी नजम में बहुत सी सुन्दर उदाहरण द्वारा व्यक्त किया है, जिस तरह सुगन्ध हिरन कीनाभि में बन्द होकर भी वह जहाँ जहाँ जाता है वह सुगन्ध फैलती है उसी प्र-कार अगर कोई महान विचारों वाला मनुष्य जेल में बन्द कर दिया जाय तो भी वह अपने विचारों का प्रभाव जेल से भी दिखा सकता है । बहुत कम ऐसी चिड़ियाँ मिलेगी जो प्रसन्नता के साथ पिंजड़े में बन्द हो, अर्थात् कम मनुष्य ऐसे मिलते हैं जो ऐसा कोई महान कार्य कर जिसके लिये, उन्हें जेल जाना पड़ा । शायर नजम में आगे कहते हैं कि कोई कौए को जेल में नहीं बन्द करता गरुण को ही बन्द किया जाता है । तात्पर्य यह है कि काम के आदमी ही जेल में बन्द होते हैं ।

1• रश्मि लोक -

है असीरी ऐतबार अफ़ज़ा जो हो फ़ितरत बलन्द
कतरये नीसां है ज़िन्दाने सदफ़ से अर्जुमन्द
मुश्क अज़फ़र चीज़ क्या है एक लहू की बूँद है
मुश्क बन जाता है होकर नाफ़ये आहू में बन्द
हर किसी की तरबियत करती नहीं क़ुदरत मगर
कम हैं वह तायर कि हैं दामो कफ़स से बहरामन्द,
शहपरे ज़ाग़ो ज़ग़न दरबन्दे क़ैदो सैदनीस्त
ईं सआदत क़िस्मते शहबाज़ो शाहीं करदा अन्द । – 1

अपनी एक और नज़्म में इकबाल बलिदान के महत्व को बताये हुये कहते हैं कि

शहादत है मतलूबो मकसूदे मोमिन
न माले ग़नीमत न किशवर कुशायी । 2

ब्रिटिश शासकों के प्रति विद्रोह की भावना

प्रत्येक देश प्रेमी जो देश के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखता है वह देश की विभिन्न समस्याओं के प्रति सचेत रहता है वह यही चाहता है सारे विश्व में भारत का नाम रौशन हो । भारत उन्नति के शिखर पर पहुँचे वहाँ के सभी देश वासी मिल जुल कर प्रेम से रहे, और सब को जीने का समान अधिकार मिले । वह देश में अगर विषमता, अत्याचार देखता है, तो वह उबल पड़ता है । देश प्रेम का अर्थ ही यही होता है, अपनी जन्म भूमि के साथ अपने देशवासियों से प्रेम और उनके कष्टों और समस्याओं का निवरण करने का प्रयत्न और जब दोनों कवि लिख रहे थे, भारत विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था । अंग्रेज भारतीय को तरह तरह के कष्ट दे रहे थे । अगर गुब्बारे में अधिक हवा भरे तो वह फट जाता है । यही हाल भारत का हुआ । भारतवासी अत्याचार सहते सहते थक गये और उनके मन विद्रोह के भावना पैदा होगयी। सब जुट होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े दिनकर जी के विद्रोह पूर्ण स्वर

1. कुल्याते इक़बाल – 253 2. कुल्याते इक़बाल

हिमालय नामक कविता में ही दिखायी पड़ जाते हैं । वे हिमालय को सम्बोधित करते हुये कहते हैं यह अवसर तपस्वी बनने का नहीं आज भारत को जरूरत क्रान्ति लाने वाले मनुष्य की ।

कह दे शंकर से आज करें
वह प्रलय नृत्य फिर एक बार
सारे भारत में गूंज उठे
हर हर बम का फिर महोच्चार ।

कवि से देश की परिस्थिति सहन नहीं हो पा रही है । वह देश की पराधीनता पर व्याकुल हो समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं । उनके स्वर में विद्रोह की भावना दिखायी देती है । कवि को अपने क्रान्तिकारी स्वर पर अटूट विश्वास सा दिखायी देता है ।

जय हो युग के देव पधारो विकट रुद्र हे अभिमानी
मुक्त केशनी खड़ी द्वार पर कब से भावों की रानी
अमृत गीत तुम रचा कलानिधि बुना कल्पना की जाली
तिमिर ज्योति का समर भूमि का मै चारण मैं वैताली ।

दिनकर जी को कवि "विपगाथा में ब्रिटिश शासन के प्रति गहरा आक्रोश दिखायी देता है वह क्रान्ति का आवाज देते हैं, कवि का कहना है मनुष्य अत्याचार अधिक दिन नहीं सह सकता । एक दिन उसके अन्दर का मनुष्य सब भय भूल जाग अवश्य उठता है, तब उसकी आहे कान्ति में तबदील हो जातीं है और ऐसा आंधी तूफान खड़ा करती है जिससे सब कुछ बह जाये ।

जब हुयी हुकूमत आँखों पर जनमी चुपके मैं आहों में
कोड़े की खाकर मार पली पीड़ित की दबी कराहों में
सोने सी निखर जवान हुयी तप कड़े दमन की राहों में
ले जान हथेली पर निकली मैं मर मिटने की चाहों में
मेरे चरणों में खोच रहे भय कम्पित तीनों लोक शरण ।
झन, झन, झन....

1· रश्मि लोक - पृ सं0 7 2· हुकार - पृ सं0 52
3· रश्मि लोक - पृ सं0 41

इकबाल का दिल भी समाज की दुर्दशा देखकर विद्रोही हो जाता है उनके मन में भी ब्रिटिश शासक के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है। इकबाल इस बात से भी दुखी होते हैं कि अंग्रेज़ हमारे समाज के लिये घातक सिद्ध हुये। वह भाई भाई को लड़ा कर दूर बैठ कर तमाशा देखना चाह रहे।

मुझे ए हम नशीं रहने दे शगले सीना कोबी में
कि मैं दाग़े मुहब्बत को नुमाया करके छोडूँगा।
दिखा दूँगा जहाँ को जो मेरी आँखों ने देखा है
तुझे भी सूरते आइनः हैराँ कर के छोडूँगा
जो है परदों में पिन्हां चश्मे बीना देख लेती है
जमाने की तबीयत का तक़ाज़ा देख लेती है।

इकबाल खुदी का शायर है वह जानते हैं वही कौम गुलाम रह सकती है जो अपनी खुदी को न पहचाने अपनी आत्मा की आवाज से बेखबर रहे इसलिए जगह जगह मनुष्य का खुदी को बुलन्द रखने का संदेश देते हैं, लोगों में विद्रोह तभी जागृत हो सकता है, जब वह अपना खुदी अथवा क्षमता को पहचाने और केवल पहचानने से कुछ नहीं उसका सही उपयोग भी कर सके। वह कहते हैं कि मनुष्य गिरता है तो खुदी क मौत ही के कारण -

न है सितारे की गर्दिश न बाज़ये अफलाक
खुदी की मौत है तेरा ज़वाले नेमतो जाह

इकबाल का मन मज़दूरों और किसानों की हालत देखकर तड़प उठता है। शायर का दिल में बार-बार विद्रोह का भावना उत्पन्न होती है, शायर का दिल बार बार प्रश्न करता है, मजदूर दिन भर मेहनत कर अपना खून पसीना बहाते हैं तो उन्हें उनका हक मिलना ही चाहिये वह कहते हैं, ब्रिटिश शासकों का अन्त होना ही चाहिये कब तक यह हमारा खून चूसेगी अब मज़दूरों का दौर आना चाहिये क्योंकि दूसरे देशों

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 72   2. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 338

में क्रान्ति आ चुकी । साम्राज्यवाद का अन्त हो रहा है फिर हमारे देश के मजदूरों को भी विद्रोह करना ही है ।

उठ कि अब बजमें जहाँ की और ही अंदाज़ है
मशरिक़ो मग़रिब में तेरे दौर का आग़ाज़ है
हिम्मते आली तो दरया भी नहीं करती क़बूल
गुन्चा सां गाफ़िल तेरे दामन में शबनम कब तलक ।

शायर का कहना चाहता है कि हिम्मत वाले तो दरया से भी से तुष्ट नहीं होते और तू शबनम अर्थात थोड़ी सी मजदूरी से संतुष्ट है । उठ विद्रोह कर अपना हक मांग आज तेरा जमाना आ रहा है ।

किसानों की दयनीय दशा देखकर शायर का मन क्रोधित हो जाता है । वह कहता ऐसे खेतो को एक एक कर के जला देना चाहिये जिससे किसानों को रोटी न मिले, किसान ही मेहनत करते है तो सब को रोटी मिलती है, और वह ही भूखे रहे ऐसे समाज में परिवर्तन लाना ही होगा ।

अपनी एक और नजम में इकबाल मजदूरो को उसकी खूबियों का एहसास दिलाते हुये उनमें विद्रोह की भावना जाग्रत करना चाहते है ।

उठ की जुलमत हुयी पैदा उफ़के ख़ावर पर
बज़्म में शोला नवाई से उजाला कर दें
अहले महफ़िल को दिखादें असरे सैक़ले इश्क़
संगे इमरोज़ को आइनये फ़र्दा कर दें ।
रख़ते जां बुतकदये चीं से उठा लें अपना ।

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ सं0 263

सबा के मह्वे रुखे सो उदा व सुलेमा करदें
देख यसरब में हुआ नाक़ये लैला बेकार ।
क़ैस को आरज़ूए नौ से शनासा कर दें
गर्म रखता था हमें सादिये मग़ारिब में जो दाग़
चीर कर सीना उसे वक़्फे तमाशा कर दें
शमा की तरह जियें बज़्में गहे आलम में
खुद जलें, दीदये अग़यार को बीना कर दें ।

स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा और स्वतंत्रता आन्दोलन का समर्थन

आधुनिक युग में राष्ट्रीय कवियों में दिनकर का विशिष्ट स्थान तो है ही जब दिनकर जी ने लिखना शुरू किया था तब सारा भारत विदेशी सत्ता से मुक्त होने की प्रबल आकांक्षा से तड़प रहा था और स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा प्रत्येक भारतवासी के हृदय में जन्म ले रही थी । उस समय गांधी जी के आन्दोलन भगत सिंह, चन्द्रशेखर, आजाद के कारण लोगों के मन क में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये कुछ भी बलिदान करने का भाव तरंगें भर रहा था, फिर दिनकर जी को इन स्वतंत्रता सेनानियों ने प्रभावित किया दूसरे उन्हें काव्य भूमि भी इस प्रकार की मिली हुयी थी कि लेखनी से ऐसा वाणी फूटी जिसने देश वासियों को झकझोर डाला कवि बार बार कह उठता है अब हमारी गुलामी के बेड़ियां कटने ही वाली है । और हमारे जीवन में एक नये सूरज का उदय होने वाला है । हज़ार रुकावटें आये तो भी यह सूरज उदय होकर रहेगा ।

हटो हटो तमीचरों कि हो चुकी समाप्त रात है
कुहेलिका के उस पार जगमगा रहा प्रभात है
लपेट में समेटता रुकावटों को तोड़ कर
प्रकाश का प्रवाह आ रहा दिगन्त फोड़ कर ।[2]

1· कुलयाते इक़बाल - पृ सं० 132
2· सामधेनु - पृ सं० 69

कवि पूर्ण स्वतंत्रता के सपने देख रहा है, चाहे उसके लिये उसे अपनी नौकरी तक छोड़नी पड़े ।

उठो उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो
बढ़ो बढ़ो आग में गुलामियों को झोंक दो ।[1]

कवि को बार बार लग रहा है भारत वासी सुख शान्ति से रहे । आपस में भेद भाव भूले, जाय सब को जीने का बराबर अधिकार मिले । ऊँच नीच का भेद न रहे, यह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही सम्भव है । इस लिये सब भारत वासियों का यह कर्तव्य होना चाहिये वह भारत को स्वतंत्र कराने में योगदान दें ।

नग पति के पद में जब तक बधी हुयी, जंजीर
तोड़ सकेगा कौन, विषमता का प्रस्तर प्राचीर ।

कवि परतंत्रता का अभिशाप मानते है वह कहते हैं परतंत्रता में मानवता का नाश हो जाता है इसलिये भारतीयों को सबसे पहले परतंत्रता से मुक्ति का प्रयत्न करना चाहिये । ताकि सब चैन की जीवन व्यतीत कर सके ।

यह है परतंत्रता देश की रुधिर देश का पीने वाली
मानवता कहता तू जिसको उसे चबा कर जीने वाली ।
इस पहाड़ के नीचे पिसता मनुष का प्रेम नहीं है
इसका मुक्ति प्रयास स्वयं ही क्या उज्जवलतम श्रेय वही है ?[2]

इस प्रकार देखा जाय तो कवि के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये गहरी तड़प पायी जाती है । केवल स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा कुछ अर्थ नहीं रखती । स्वतंत्रता प्राप्त का आन्दोलन भी जब तक इसमें शामिल न हो, इसलिये कवि स्वतंत्रता आन्दोलन को प्रोत्साहन देता है और सरकार की स्वतंत्रता आन्दोलन की दमन नीति से क्षुब्ध दिखायी देता है । स्वतंत्रता आन्दोलन के कारण अंग्रेजों ने भारतीय जनता पर अत्याचार किये ताकि आन्दोलन समाप्त हो कवि अपनी कविताओं द्वारा स्वतंत्रता

---

1. सामधेनु - दिनकर - पृ सं० 67
2; 3 रश्मि लोक

आन्दोलन के सेनानी में नयी स्फुर्ति भरना चाहता। -

> दाता पुकार मेरी संदीप्ति को जिला दे
> बुझती हुयी शिखा को संजीवनी पिला दे ।
> प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ
> चढ़ती जवानियों का श्रृंगार माँगता हूँ
> उन्माद बेकली का उत्थान माँगता हूँ ।
> विस्फोट माँगता हूँ तूफान माँगता हूँ ।"[1]

यहाँ तक कि कवि हिंसा पर भी उतर आता है लेकिन वह स्वतंत्रता आन्दोलन प्रज्वलित देखना चाहता है ।

> किसने कहा पाप है समुचित
> स्वत प्राप्ति हित लड़ना
> उठा न्याय का खड्ग समर में
> अभय मारना मरना ।[2]

इकबाल ने अपनी शायरी में कई जगह कहा है अत्याचार करने वाला तो गुनहगार है ही लेकिन अत्याचार सहने वाला और भी गुनहगार है । वह चुपचाप अत्याचार सहने वाले को कायर कहते हैं यही दिनकर जी भी कहते हैं, उनके लिए नरक में स्थान है जो पाप सहते जाये ।

> नरक उनके लिये जो पाप को स्वीकार करते हैं
> न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते है ।[3]

इस प्रकार दिनकर जी की कविताओं में जगह जगह परतंत्रता को अभिशाप और स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा पायी जाती है । और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी दिनकर की राष्ट्रीय भावना के स्वतंत्रता को कायम रखने की उमंग पायी जाती है ।

---

1. साधेनु - दिनकर - पृष्ठ सं0 63 2. कुरुक्षेत्र - पृ सं0
3. कुरुक्षेत्र - पृ सं0

उसके बाद दिनकर जी तो स्वतंत्र भारत में भी रहे वह आजादी का स्वागत करते हैं -

सदियों की बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो की जनता आती है ।[1]

भारत स्वतंत्र हो गया उसके बाद नेता लोगों को बस अपनी गद्दी की चिन्ता रहने लगी सामान्य जनता की उन्हें कोई परवाह नहीं दिनकर जी इस पर क्षोभ प्रगट करते हैं । वह अपनी नेता कविता में कहते हैं -

नेता का अब नाम नहीं ले
अन्धे पन से काम नही ले ।
हवा देश की बदल गयी है,
चाँद और सूरज में भी अब
छिप कर नोट जमा करते हैं ।
और जानता नहीं अभागे ।

लेकिन वह जनता के मनमेविश्वास दिलाना चाहते हैं कि अब तू अपनी भुजाओं के बल से अपने सपने पूरा कर सकता है ।

इस मंदिर के दरवाजे से
जोर लगा खेतों में अपने
नेता नहीं भुजा करती है
सत्य सदा जीवन के सपने ।

1• रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 247

2• रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 215

3• रश्मि लोक दिनकर - पृ सं0 216

चीन के युद्ध के समय दिनकर जी ने परशुराम की प्रतीक्षा लिखा जिसमें . उन्होंने जगह जगज स्वतंत्रता के महत्त्व को बताया है -

स्वतंत्र जाति की लगन व्यक्ति की धुन है
बाहरी वस्तु नहीं यह भीतरी गुण है
न त हुये बिना जो अशनि - घात सहती है
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है ।

वीरत्व छोड पर का मत चरण गहो ऐ
जो पड़े आन खुद ही सब आग सहोरे ।

डॉ0 इकबाल ने अपनी शायरी और निबन्धों में भारतियों की अंग्रेजी की गुलामी के प्रति दुख और क्रोध के भाव प्रकट किये । दिनकर ही की तरह वह भी आजाद भारत का ख्वाब देखते नजर आते हैं और परतंत्रता को अभिशाप बताते है । इकबाल की मृत्यु क्योंकि देश के स्वतंत्र होने के पहले हो गयी थी इसलिए उनके पास ४ राष्ट्रीयता का आजादी के बाद का रूप नहीं मिलता जो कि दिनकर जी की कविताओं में प्रबल रूप में दिखायी देता है ।

इक़बाल की नज़म परिन्दे की "फ़रियाद"
आज़ाद मुझ को कर दे ऐ क़ैद करने वाले
मैं बेज़ुबां हूं क़ैदी तू छोड़ कर दुआ ले ।

में आज़ादी के लिये तड़प पायी जाती है । इकबाल की अपनी आत्मा भी इन्हें फटकारती है कि न केवल इनके देशवासी गुलाम है वरन वह अंग्रेजी सभ्यता को पसन्द करते हुये उस पर चलना गर्व की बात समझते हैं कहते हैं गुलामी में मनुष्य की अपनी सोचने समझने की क्षमता ही चली जाती है । जहां , उसका अस्तित्व एक कतरे के सामन रहता है । और आजादी एक ऐसे समुन्दर की तरह है जिसका कोई अन्त नहीं ।

1• रश्मि लोक - दिनकर - पृ सं0 305

2• कुलयाते इक़बाल - पृ सं0

बन्दगी में घट के रह जाती है एक जुए कम आब
और आज़ादी में बहरे बेकराँ है ज़िन्दगी ।[1]

एक अन्य शेर में इक़बाल, गुलामी की दुर्दशा बताते हैं कि अगर तू किसी के सामने झुका तो तेरा मन और तन तेरा नहीं रहेगा ।

पानी पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात
तू झुका जब ग़ैर के आगे, न मन तेरा, न तन ।[2]

इक़बाल का कहना है गुलाम कौमों का ज़मीर ही बदल जाता है । और धीरे धीरे बुरी बातें उन्हें पसंद आने लगती हैं -

था जो नाख़ूब बतदरीज वही ख़ूब हुआ
कि ग़ुलामी में बदल जाता है कौमों का ज़मीर ।
-- -- --
भरोसा कर नहीं सकते ग़ुलामों की बसीरत पर
कि दुनिया में फ़क़त मरदाने हुर की आँख है बीना ।[3]

जैसा कि पहेले भी कहा जा चुका है इक़बाल समझते हैं । गुलामी इंसान के सारे गुणों को दबा देती है । उसे अपने अस्तित्व से बेगाना कर देती है । उन्होंने आलइंड्या लीग के इजलास में 29 जनवरी, 1930 में जो खुतबा पढ़ा था उसकी चंद पंक्तियाँ यह है -

"हिन्दुस्तान की स्यासी ग़ुलामी सारे ऐशया के लिये बे पायाँ नकबत व फ़लाकत का सबब रही है ... उसने मशरिक़ की रूह को कुचल कर रख दिया है और उसे अपने इज़हार के उस वलवले से बिलकुल महरूम कर दिया है जिसकी बदौलत वह कभी एक अज़ीम और शानदार सक़ाफ़त का गहवारा हुआ करता था । हिन्दुस्तान के लिये जिसमें हमारा मरना जीना मुक़द्दर है हमारा कुछ फ़र्ज़ है ।[4]

1• कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 259 2• कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 323
3• इक़बाल और कौमी यकजयती - पृ सं0 40 मुजफ़्फर हुसैन बरनी
4• इक़बाल और कौमी यकजहती - पृ सं• 49-50 -"-

इकबाल खुदी का शायर है लेकिन वह बार बार यह कहते हैं कि गुलामी की जिन्दगी में खुदी ऊँचाई तक नहीं पहुंच सकता । वह स्वतंत्रता प्राप्त के महत्व को बताते है और ... दिनकर जी की तरह वह यह कहते दिखायी देते हैं कि वह कौम जिसकी खुदी ऊँची हो इरादा बुलन्द हो गुलाम रह ही नहीं सकती । हिन्दुस्तानी इस लिये गुलाम है कि वह अपनी खुदी को बुलन्द नहीं कर पा रहे हैं ।

खुदी की मौत से हिन्दी शिकस्ता बालों पर
कफ़स हुआ है हलाल और आशयाना हराम ।[1]

इकबाल का कहना है कि मनुष्य को मनुष्य की इज़्ज़त करनी चाहिये ।कोई मनुष्य किसी से कम नहीं है।इकबाल का यह भी कहना है अगर मनुष्य परिवर्तन लाना चाहता है तो उसे सब से पहले अपने आप को बदलना चाहिये, वही जाति गुलाम नहीं रह सकती जिस जाति में अपने आप को बदलने और अपने आप में परिवर्तन लाने की शक्ति है । इकबाल अपने देश वासियों से कहते हैं कि आजादी के लिये जरूरत है अपनी खुदी को समझते हुये अपनी शक्ति को बढ़ाओ और उसका सही प्रयोग करो ।

देश के लोक नायकों के गुणगान

जिस समय भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था उन्हें सच्चे मार्गदर्शक की आवश्यकता थी जो उन्हें सही राह दिखा सके उनमें शक्ति का संचार कर सके उनके दिलों में जोश और उमंग जागृत कर सके । यह काम उस समय के नेताओं ने किया जिनमें गांधी, विनोबा भाव, सुभाषचन्द्र बोस, अबुलकलाम आज़ाद आदि नाम उल्लेखनीय है । अलोच्य कवियों ने इन लोगों की राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर इस पर कविताएँ लिखे ताकि दूसरे भी प्रेरणा ग्रहण कर सके ।

---

1. कुलयाते इकबाल -

देश के लोकनायकों में सबसे पहला नाम गांधी का है, गांधी जी आज जब हमें आजादी मिलकर 42,43 साल हो चुके वैसे ही लोक प्रसिद्ध हैं।हमारे देश का छोटे से छोटा बच्चा गांधी जी का नाम जानता है फिर उस समय तो गांधी जी का आन्दोलन जोरों पर था । दिनकर जी की तो गांधी जी पर एक पुस्तक ही है, इकबाल ने भी एक नज़्म "गांधी" लिखी जिसमें उन्हें ने गांधीजी की महानता बड़े सुन्दर शब्दों में प्रकट की है ।

अपनी "गांधी " नामक कविता में दिनकर जी लिखते हैं -

जड़ता तोड़ने के लिये
भू कंप लाओ
घुप्प अंधेरे में फिर
अपनी मशाल जलाओ
पूरे पहाड़ को हथेली पर उठा कर
पवन कुमार के समान तरज
कवि गरजा गरजा गरजा

सोचता हूँ मै कब गरजा था
जिसे लोग मेरा गर्जन समझते हैं
वह असल में गांधी का था
उस आंधी का था जिसने हमें जन्म दिया
.. .. ..
गांधी तूफान के पिता
और बाजो के भी बाज है
क्योंकि वे नीरवता की आवाज है ।[1]

एक और कविता "बापू" में दिनकर जी गांधी की महानता के गुण गाते हैं -

---

1. बापू -

"बापू ! तू वह कुछ नहीं जिसे ज्वालाएं घेरे चलती है
बापू तू वह कुछ नहीं दिशाएं जिसको देख दहलती है
तू सहज शान्ति का दूत मनुज के सहज प्रेम का अधिकारी
दृग में उंडलकर सहजशील देखती तुझे दुनिया सारी ।

.. .. ..

अब प्रश्न नहीं यह एक किरण किस तरह दृढ़ से छूटेगा
है प्रश्न व्यूह पर इसी तरह बाकी किरणे कब टूटेगा
बापू ने राह बना डाली चलना चाहे संसार चले
डगमग होते हो पाँव अगर तो पकड़ प्रेम की तार चले ।[1]

अपनी कविता राजश्री अभिनन्दन में कवि कहता है इन्हीं महान लोक दर्शक के कारण भारत का नाम सारे विश्व में जगमगाने वाला है ।

संस्कृति से संयुक्त यहाँ विज्ञान मुक्त देव होगा ।
हुआ नहीं जो कहीं भारत में संभव होगा
एक हाथ में कमल एक में धर्म दीप विशाल
लेकर उठनेवाला है धरती पर हिन्दुस्तान ।[2]

इकबाल ने एक नज़म गांधी जी पर लिखी जो रोज़नामा "जमींदार" में छपी जिसमें गांधी जी को मर्दानगी और ऊँचे विचारों की प्रशंसा करते हुए इकबाल ने उन्हें हक़ पर चलनेवाला बताया है । और अंग्रेज़ जैसे कूट नीतिज्ञ से गांधी जैसे कमज़ोर आदमी के टक्कर लेने की प्रशंसा की ।

गांधी से एक रोज़ यह कहते थे मालवी
कमज़ोर की कमंद है दुनिया में नारसा
नाज़ुक यह सल्तनत सिफ़्ते बर्गे गुल नहीं
ले जाय गुलसिताँ से उड़ा कर जिसे सबा

---

1. रश्मिलोक - पृ सं0 152-54 2. रश्मि लोक - दिनकर पृ सं0 374

गादा इधर है ज़ेबे बदन और उधर ज़िरह
सरसर की रहगुज़ार में क्या अर्ज़े तूतिया
पिसकर मिलेगा गर्दे रहे रोज़गार में
दाना जो आसया से हुआ कूवत आज़मा
बोला यह बात सुनके कमाले विकार से
वह मर्दे पुख़्तःकारो हक़ अन्देशो बासफ़ा
ख़ारा हरीफ़े सैय्ये ज़ईफ़ाँ नमी शवद
सद कूचाएस्त दर बुने दन्दाँ ख़िलाल रा ।[1]

इसके बाद गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर भारतीय जनता ने जिस प्रकार अंग्रेज़ों से मुकाबला किया और उसके तख्त को हिला दिया उससे इकबाल काफी प्रभावित हुए अपने एक खत में वे लिखते हैं -

"देखने में महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के पश्चात भारत वर्ष में शान्ति बनी हुयी है मगर न लोगों के हृदय में उथल पुथल आश्चर्यजनक है। इतने थोड़े समय इतनी बड़ी क्रान्ति जातियों के इतिहास में देखने को नहीं मिलती हम लोग जो स्वयं क्रान्ति से प्रभावित होने वालों में है उसकी महानता और महत्त्व को इतना अनुभव नहीं करते। आनेवाली पीढ़ियाँ इसके इतिहास को पढ़कर आश्चर्य में डूब जायेंगी।"[2]

जावेद नामा में अल्लया इक़बाल ने एक जगह नेहरू और मोतीलाल नेहरू का भी जिक्र किया है -

हिन्द रा ईं ज़ौक़े आज़ादी के दाद ?
सैदरा सौदाये सैयादी के दाद ?
आँ ब्रह्मन ज़ादगाने ज़िन्दा दिल ।
लालये अहमर ज़रूये शाँ ख़िजिल
तेज़ बीनो पुख़्ता कारो सख़्त कोश
अज़ निगाहे शाँ फरंग अन्दर ख़रोश

1, 2 व 3 इक़बाल - जादूगरे हिन्दी नजाद - अतीक़ सिद्दीकी - पृ सं0 90-91

असलेशां अज़ खाके दामन जीरे मास्त
मतलये ईं अख्तरां कश्मीरे मास्त।

"जावेद नामा" में गनी काश्मीरी की जबान से यह प्रश्न इकबाल उठाते हैं कि भारतीयों के मन में स्वतंत्रता के विचार किसने उठाये, जवाब भी देते हैं कि यह भारतीय के मन में स्वतंत्रता की भावना उन कश्मीर ब्रह्मन पुत्रों ने पैदा की जिनके मुख की लाली देखकर लाला फूल भी शरमा जाये। [1] ये सितारे हमारे कश्मीर के आकाश से उदय हुये जिनको देख कर अंग्रेज घबरा जाया करते हैं"-

जावेद नामा में इकबाल ने पुराने ऋषि मुनियों का परिचय कराया है जिसमें विश्वा मित्र भरतहरि इत्यादि है इसके साथ ही भारत की आजादी के लिये तड़पने वाले लोक रक्षकों का भी परिचय कराया है। नेहरू, गांधीजी के अलावा इकबाल टीपू सुलतान को न भूल सके जिन्होंने भारत को आजादी के लिये अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

आं शहीदाने मुहब्बत रा इमाम
आबरूये हिन्दो चीनी रूमो शाम
नामश अज़ खुर्शीदो मह ताबिन्दातर
खाके कब्रश अज़मतो तू जिन्दातर
इश्क़ राज़े बूद बरसहरा निहाद
तू नदानी जां चेह मुश्ताकाना दाद
रफ़्त सुलतां ज़ी सराये हफ़्त रोज़
नौबते ऊ दर दकन बाक़ी हनोज़। [2]

अर्थात् वो मुहब्बत के शहीदों का इमाम है, हिन्दू, चीन, रोम शाम की आबारू है उसका नाम चाँद और सूरज से अधिक यशवान है, उसकी कब्र की मिट्टी भी मेरे और तेरे तुलना में अधिक जान रखती है,

1,2 इकबाल जादूगरे हिन्दी नजात - अलीक सिद्दीकी- पृ सं0 126,127

प्रेम एक राज था जिसको उसने सारे संसार में जाहिर कर दिया और अपने प्राणों का बलिदान हंसते दे दिया। इस नश्वर संसार से सुल्तान चला तो गया लेकिन उसके नाम डंका दकन में अब भी बजता है।"

इस तरह दिनकर जी और डॉ0 इकबाल की कविताओं में राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करने से हमें पता चलता है दिनकर जी जब कि वह स्वयं अपने को इस भावना से दूर रखना चाहते थे पूरी तरह राष्ट्रीय भावना के रंग में रंगे दिखायी देते हैं और डॉ0 इकबाल की राष्ट्रीय भावना से भी कोई इंकार नहीं कर सकता क्योंकि राष्ट्रीय भावना के जो गुण होने चाहिये वे सब इकबाल की शायरी में विद्यमान है। इतना लगाव देश और देशवालों के लिए इतनी तड़प जिस दिल में है उसके बारे में यह कैसे कहा जा सकता है कि वह राष्ट्रीय कवि नहीं इकबाल का जीवन दर्शन खुदी का दर्शन है, जो भारतीय को संघर्ष, कर्म और समानता की मांग की शिक्षा देता है। यह स्वयं अपने में राष्ट्रीय भावना है देशवासियों को आजादी के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा देना है।

मातृभूमि से गहरा लगाव और प्रेम डॉ0 इकबाल और दिनकर जी दोनों की शायरी में पाया जाता है। आज जब कि हिन्दुस्तान को आजाद हुये वर्षों गुजर कर 15 अगस्त हो या 26 जनवरी या कोई अन्य अवसर "सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा" की धुन से भारत का कोना कोना गूंजता है और इकबाल का हिन्दुस्तान से बेइन्तेहा प्रेम का सबूत देता है। दोनों कवियों के हिमालय कविता के लिखने के ढंग में अन्तर होते हुये भी भाव एक से लगते है। हिन्दू मुसलमानों को लड़ता देख दोनों बेचैन और क्रोधित होते हैं, अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना और प्रभाव दोनों कवियों पर स्पष्ट दिखायी देता है। इतना अवश्य है कि वर्तमान दुर्दशा के चित्रण और अतीत के स्वर को अभिव्यक्ति जितनी सशक्त दिनकर जी के पास है इकबाल के पास नहीं। पाटलीपुत्र की

गंगा, हिमालय और दिल्ली में गौरवमयी अतीत ऐसा लगता है हमारे सामने साकार रूप में खड़ा हो गया हो । स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा से दोनों कवि तड़पते दिखायी देते हैं देश की आजादी के लिये लड़ने वाले वीरों की और देश के स्वतंत्रता आन्दोलन को चलाने वाले महान् देश भक्तों की देश भक्ति की सराहना दोनों कवि ~~दिल~~ करते दिखायी देते हैं । यही नहीं डॉ० इकबाल का तो कहना है जो लोग अपने मुल्क के साथ गद्दारी करते हैं उन्हें नरक में भी जगह नहीं मिलता । यह महान पाप है ।

जाफ़र अज़ बंगालो सादिक़अज़ दकन
नंगे इन्साँ नंगे दीं नंगे वतन ।

अर्थात बंगाल से जाफर और दकन से मीर सादिक मानवता धर्म के लिये और देश के लिये कलंक है । "जाफर ने सिराजुद्दौला से गद्दारी और मीर सादिक ने टीपू सुल्तान ।"

दिनकर जी की राष्ट्रीयता का एक रूप और है, वह आजादी के बाद की राष्ट्रीयता दिनकर जी समाजवाद को प्रोत्साहन देते हैं । उनकी कविता "भारत का यह रेशमी नगर" में देश वासियों के लिए तड़प देखी जाती है । अपनी कविता "नेता" में भी उन्होंने उन नेताओं पर व्यंग्य किया है जिनको केवल गद्दी की चिन्ता होती है, जो यह भूल जाय कि कितने बलिदान देकर हमें आजादी मिली है । उस आजादी का हम दुरुपयोग कर रहे हैं ।

दिनकर जी कहते हैं -
हो गया एक नेता मैं भी तो बंधु सुनो
मैं भारत के रेशमी नगर में रहता हूँ
जनता तो चट्टानों की बोझ सहती है
मैं चाँदनियों का बोझ किसी विध सहता हूँ ।

1• इकबाल और कौम - यकजहता - पृ सं0 21 ले0 मुजफ्फर हुसैन बानी
2• रश्मिलोक - पृ सं0 215

पूरी कविता में हमारे उस समय के समाज का जीता जागता चित्र खींचा गया आज भी यही हो रहा है। नेता लोग अपनी गद्दी के लिये क्या कुछ नहीं करते। दंगे होते हैं असहाय लोग मरते हैं, क्या यही आजादी का अर्थ है। आज हमारे देश को आजादी का सही अर्थ बताने वाले दिनकर जी और इकबाल जैसे लोगों की आवश्यकता तो है जो कह सके -

"आ एक नया शिवला इस देश में बना दें।"

इकबाल ने मृत्यु से एक महीना पहले मार्च 1938 में राष्ट्रीयता के बारे में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये थे -

"हज़ारों लाखों बरस जातियाँ देश से और देश जातियों से जुड़े हुये हैं। हम सब हिन्दुस्तानी की हैसियत से पहचाने जाते हैं क्योंकि हम दुनिया के इस हिस्से में बसते हैं जिसे हिन्दुस्तान कहा जाता है। इसी तरह चीनी, अरब व जापानी, ईरानी सब अपने अपने मुल्कों के नाम से जाने जाते हैं। मातृभूमि की भावना एक विशेष भौगोलिक शब्द है जो इस्लाम के खिलाफ़ नहीं है। दूसरे शब्दों में हर शख़्स प्रकृतिक तौर पर अपनी जन्मभूमि से मुहब्बत करता है और इसके लिये जहाँ तक हो सके कुर्बानी देने को तैयार रहता है।"[1]

इस तरह यह कहा जा सकता है राष्ट्रीय भावना एक प्रकृतिक सी चीज़ है जो मनुष्य को जन्म के साथ मिलती है। हमें उसकी सही अभिव्यक्ति का अवसर तलाश करना चाहिए।

--

---

1. इकबाल और कौमी यकजहती (बरनी) - पृ सं0 32

अध्याय - तीन

रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ० इक़बाल की क्रांतिकारी भावना का तुलनात्मक अध्ययन

1. राजनैतिक क्रान्ति : साम्राज्यवाद एवं ब्रिटिश शासकों का विरोध

2. सामाजिक क्रान्ति : क. समाज की शोषित गरब जनता की अभावग्रस्त अवस्था का चित्रण
   ख. मज़दूरों, किसानों में नवजागरण पैदा करना
   ग. आर्थिक समता की मांग

3. धार्मिक क्रान्ति : 1. कर्मवाद स्थापना भाग्यवाद का खंडन
   2. मानवतावाद की स्थापना ।

अध्याय - तीन

रामधारी सिंह दिनकर एवं डा॰ इकबाल की क्रान्तिकारी भावना तुलनात्मक - अध्ययन

मनुष्य हमेशा से परिवर्तनशील प्राणी है और इस परिवर्तन के लिए उसे संघर्ष करना पड़ता है, संघर्ष के बिना मानव जीवन का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता और इसी परिवर्तन के लिए किये गये संघर्ष का नाम क्रान्ति है। डा॰ आदेश्वर राव कहते हैं " क्रान्ति संघर्ष और परिवर्तन का सम्मिलित रूप है। इसके द्वारा व्यक्ति अथवा समाज की प्रगति होती है सृष्टि में परिवर्तन का क्रम मन्द गति से चलता है परन्तु मानव समाज में यह तीव्र-गति से सम्पन्न होता है। संघर्ष का परिवर्तन जब आकस्मिक एवं अमूल होता है तब इसे क्रान्ति कहते है।[1]

प्रो॰ शिवबालक राय के अनुसार " क्रान्तिवाद एक उमड़ती हुयी बाढ़ है जो दुर्बलता का विनाश कर जीवन क्षेत्र में नयी मिट्टी भर देता है। क्रान्ति अमूल परिवर्तन पर विश्वास है। क्रान्ति समाज की उन्नति के लिये अनिवार्य सोपान है। क्रान्ति के लिये तीक्ष्ण बुद्धि, तीव्र वेग और प्रचण्ड शक्ति

- -

1. दिनकर वैचारिक क्रान्ति के परिवेश में एस॰आदेश्वर राव

की आवश्यकता होती है। क्रान्ति आंधी की तरह है। यह आंधी भी है वह चोटी पर चढ़ने के बदले खन्दक में गिर सकती है। क्रान्ति भवानी है। रूढ़ापों के पापों का विनाश करने वाली खड्गधारिणी है।

क्रान्ति को बल प्रदान करने वाले तत्त्व है आर्थिक वैषम्य। जहाँ एक ओर समाज का एक वर्ग ऐश आराम का जीवन व्यतीत कर रहा हो, उसके कुत्ते को भी दूध पीते हों, वहीं समाज का दूसरा वर्ग भी होता है। जिसे तन ढकने को वस्त्र और पेट भरने को अन्न भी उपलब्ध नहीं होते। इस तरह की परिस्थितियों में क्रान्ति का जन्म होता है - और दोनों कवि जब लिख रहे थे तब इसी तरह की परिस्थितियाँ हमारे देश में थी। अंग्रेज शोषक जमींदार और सामन्तवादी वर्ग भी गरीब जनता का शोषण कर रहा था और शोषक गरीब किसान मजदूरों को अपना व्यक्तित्त्व न जाने कहाँ खोता जा रहा था।

ब्रिटिश शासक एवं साम्राज्यवाद का विद्रोह

आदेश्वर राव ने कहा है " यदि कोई देश अन्य देश को जीत लेता है और वहाँ की जनता पर अपना शासन चलाता है तो उस देश को साम्राज्यवादी देश तथा उस प्रक्रिया को साम्राज्यवाद कहा जाता है। विश्व के शक्तिशाली राज्यों की साम्राज्यवादी लिप्सा बीसवीं शती के प्रारम्भिक वर्षों में काफी बढ़ गयी, जो भी देश शक्तिशाली थे। वे साम्राज्यवादी लिप्सा के शिकार थे और अधिक से अधिक कमजोर देशों पर अपना शासन स्थापित करना चाहते थे। प्रथम महायुद्ध भी साम्राज्यवादी देशों की टकराहट का ही नतीजा था, युद्ध के बाद भी शक्तिशाली देशों की लिप्सा शान्त न हुयी। वह धीरे छोटे छोटे देशों को बरबाद कर देने पर तुले थे।

1· दिनकर प्रो· शिव बालक राय

2· दिनकर वैचारिक क्रान्ति के परिवेश में आदेश्वर राय

दलित हुये निर्बल सबलो पर
मिटे राष्ट्र उजड़े दरिद्र जन
आह सभ्यता आज कर रहा
असहायो का शोणित शोषण ।

वास्तव मे साम्राज्यवादी हुकूमत मे जनता के नैतिक मूल्यो का पतन तो होता ही है साथ ही साथ उनमे कुछ करने की क्षमता भी छिन जाती है । उसका अपना व्यक्तित्व कही दब कर रह जाता है । इन दोनो कवियो ने जब लिखना शुरू किया तब देश पर अंग्रेजो का शासन था देश की लाचार और मजबूर जनता अपने शासक का हर हुक्म मानने पर मजबूर थी , अंग्रेज हमारे ही देश मे रहकर हम पर शासन कर रहे थे । वैसे भी साम्राज्यवाद की नीव अन्याय पर खड़ी है और अन्याय मनुष्य कब तक सहन कर सकता है उस समय अन्याय एव शोषण केवल अंग्रेजो द्वारा नहीं हो रहा था बल्कि गरीब जनता का शोषण साहूकारो, जमीदारो एवं पूंजीपतियो द्वारा भी हो रहा था । दूसरी बात यह कि जब हमारे देश की यह स्थिति थी रूस मे मजदूरो का क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हो चुका था , इससे भी हमारे देशवासियो एवं कवियो को प्रोत्साहन मिला । इसे लिये इस अन्याय और शोषण के विरूद्ध आवाज हमारे दोनो ही कवियो की कविताओ मे सुनाई देती है । दिनकर जी तो स्वंय साम्राज्यवाद [illegible] के विरूद्ध क्रान्ति को पुकारते है । कहते है वह पीड़ित जनता की कराहो से बाहर आ रही है ।

जब हुयी हुकूमत आँखो पर जनमी चुपके मै आहो मे
कोड़े की खाकर मार पली पीड़ित की बदी कराहो मे
सोने-सी निखर जवान हुयी तब कड़े दमन की दाहो मे
ले जान हथेली पर निकली मै मर मिटने की चाहो मे
मेरे चरणो मे खेल रहे भयकम्पित तीनों लोक शरण
झन झन झन झन..............

1· रेणुका - दिनकर - 2।
2· रश्मिलोक - हुकार - पृ· सं· 52·

अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित अपने देशवासियों को देखकर दिनकर जी का मन क्रोधित हो जाता है वह चीख उठते है । आखिर हम कहाँ तक हम अत्याचार सहेंगे ।

युगों से हम अनयका भार ढोते,जा रहे है ।
न बोलो तू मगर हम रोज मिटते जा रहे है ।
पिलाने को कहाँ से रक्त लाये दानवों को
नहीं क्या स्वत्त्व है प्रतिशोध का हम मानवों को ।

इसी प्रकार विदेशी शासकों के विरुद्ध क्रान्ति लाने के लिये कवि दिनकर जी सामान्य जनता को उनको वास्तविकता एवं शक्ति का अहसास दिलाने के लिये कभी उन्हे अतीत मैं ले जाते है और अतीत की क्रान्ति द्वारा पिसती हुयी जनता के मन मैं क्रान्तिकारी भावना जगाने का प्रयत्न करते है कहते है [1]

मन खेतो यो बेखबरो मैं
जन समुद्र यह नहीं सिन्धु है, कई अमोघ वस्तु का
जिससे पड़कर बड़े बड़े कंगूरे पिघल चुके है
लील चुका है यह समुद्र जाने कितने देशों को
राजाओ के मुकुट और अपने नेताओ के भी
सावधान । जन्मभूमि किसी का चारागाह नहीं है
घास यहाँ की पहुंच पेट मैं काँटा बन जाता है । [2]

एक अन्य जगह दिनकर जी साम्राज्यवाद का विरोध करते हुये दिखायी देते है । वह नहीं चाहते कि भारत वासी किसी का दास होकर जिये । वे चाहते है प्रत्येक भारत वासी को स्वतंत्रता पूर्वक सुख चैन से जीने का अधिकार मिले । वह अपनी इच्छानुसार जो चाहे कर सके । दिनकर जी का तो यहाँ तक कहना है हम यानी भारत वासी स्वतंत्रता का जीवन व्यतीत करना चाहते है । हम यह भी नहीं चाहते कि हमारा देश किसी दूसरे देश के अधीन हो हम यह भी नहीं

1· हुंकार - दिगम्बरी - पृ· सं· 123

2· नीम के पत्ते - दिनकर - पृ· सं· 5

चाहते की कोई देश हमारे देश के अधीन हो --

> नहीं चाहते किसी देश को हम निज दास बनाना
> पर स्वदेश का एक मनुज भी दास न कहीं रहे
> हम चाहते सन्धि, पर विग्रह कोई बढ़ाता
> उत्तर देगा उसे मगध का महा खड्ग बलशाली।[1]

कहीं कहीं तो साम्राज्यवाद के विरुद्ध कवि की वाणी में भयंकर तेज दिखायी देने लगता है। कवि का कहना है कि परतंत्रता एक ऐसा भयंकर विष है जो देशवासियों की सारी क्षमता को दबा कर देती है। ऐसे में साम्राज्यवाद का विरुद्ध आवाज उठाना अपने अधिकारों की माँग करना परम आवश्यक हो जाता है। कहते है --

> रुधिर देश का पीने वालों
> मानवता कहता तू जिसको
> उसे दबाकर जानेवाली
> यह पहाड़ के नीचे पिसता
> हुआ मनुज क्या प्रेम नहीं है
> इसका मुक्ति प्रयास स्वयं ही
> क्या उज्ज्वलतम श्रेय नहीं है।[2]

कवि का कहना है कि साम्राज्यवाद में शासक क्रूर होते है और न्याय दे ही नहीं सकते और जहाँ एक दूसरे को अपना अधिकार नहीं मिलेगा वहाँ शान्ति कैसे हो सकती है। कहते है --

> न्यायोचित सुख सुलभ नहीं जब तक मानव मानव को
> चैन कहाँ धरती पर तब तक शान्ति कहाँ इस मन को।[3]

---

1. दिनकर -- इतिहास के आँसू -- पृ. सं. 3
2. दिनकर -- सामधनी -- पृ. सं. 62
3. दिनकर -- कुरुक्षेत्र -- पृ. सं. 141

कवि का कहना है कि इन क्रूर शासकों ने धन की लालच में सामान्य जनता को अपने अधीन रखने के लिये उन्हे मन मानी करने से रोकने के लिये खड्ग का सहारा लिया है ।

हायरे धन लुब्ध - जीव कठोर,
हायरे दारूण मुकुट धर-यूव लोलुप चोर ।
साज कर इतना बड़ा सामान ।
स्वत्व निज सर्वत्र अपना मान ।
खड्ग बल का ले भुजा आधार
छिनता फिरता मनुष्य के प्राकृतिक अधिकार ।[1]

दिनकर जी का कहना है अन्यायी सत्ताधारी अनीति पद्धति पर चलते हुये समाज के सूत्र धार बन जाते है, जहाँ यह शासन का बागडोर खड्ग के बल बूते संभालते है । ऐसे अन्यायियों के विरुद्ध ऊपर से शान्त दिखायी देने वाला जनता के मन में क्रान्ति की अग्नि सुलगने लगती है ।

जहाँ पालते हो अनीति पद्धति को सत्ताधारी
जहाँ सूत्रधार हो समाज के अन्यायी अविचारी
जहाँ खड्ग बल एक मात्र आधार बने शासन का
दबे क्रोध से भड़क रहा हो हृदय जहाँ जन जन का ।[2]

सहते सहते अन्य जहाँ मर रहा मनुज का मन हो
समझ कापुरूष अपने को धिक्कार रहा जन जन हो
अहंकार के साथ घृणा का जहाँ द्वन्द्व हो जारी
ऊपर शान्ति तलातल में हो छिद्र रही चिंगारी

इसी प्रकार क्रूर शासकों के ऐश्वर्यमय जीवन को देखकर कवि क्रोध से जलने लगता है । उसकी आवाज़ में क्रान्ति के बीज अंकुरित होने लगते है ।

---

1. दिनकर - इतिहास के आँसू -- 44
2. प्राप्त दिनकर के काव्य में कवि क्रान्तिमय मन चेतना - पृ.स. 103
   आवेश्वर राय

रस्सी से कसे जवान पाप प्रतिकार न जब कर पाते है
बहनो की लुटती लाज देख कॉप कॉप रह जाते है
पी अपमानो के गरल घुट शासित जब होट चबाते है
जिस दिन रह जाता क्रोध मौन-मेरा वह भीषण जन्म लगन ।

कवि का कहना है कि एक ही समाज के रहने वाले दो वर्गो के बीच कितना गहरी खाई है । एक वर्ग क कुत्ते भी दूध पाते है तो दूसरे वर्ग के बच्चे भी दूध के लिये तरसते है :-

श्वानो को मिलते दूध वस्त्र भूखे बालक अकुलाते है
मॉ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ो की रात बिताते है
युवती की लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाये जाते है
मालिक जब तेल कुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है
पापी महलों का अहंकार देता मुझ को तब आमंत्रण

दिनकर की ही तरह डॉ. इक़बाल ने भी होश संभाला तो अपने देशवासियो को गुलामी की जंजीरो में जकड़ा हुआ पाया जिसमें उनका अपना व्यक्तित्व घुट-घुट कर दम तोड़ रहा था । डॉ. इक़बाल अपनी शायरी में जहॉ तहॉ साम्राज्यवाद और ब्रिटिश शासको के विरुद्ध आवाज उठाते हुये दिखायी देते है । वैसे भी डॉ. इक़बाल पर कार्ल मार्क्स के समाजदर्शन का प्रभाव बहुत अधिक दिखायी देता है आर इसी प्रभाव से इन्होने "ख़िज़रेराह" जैसी लम्बी नज़म लिखी जिसकी तुलना की नजम न केवल उर्दू शायरी में बल्कि भारत की किसी अन्य भाषा से भी मिलना कठिन है । इसके अतिरिक्त भी बाले जिबरील, जरबे कलीम, आदि संकलनो में भी कई नज़में ऐसी मिल जाएगी जिसमें इकबाल साम्राज्यवाद और ब्रिटिश शासको के विरुद्ध आवाज़ उठाते हुये दिखायी देते है । उनका कहना है कि अब साम्राज्यवादी तमाशा दिखा चुके । अब जमाना बदल चुका है । मज़दूर किसान अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न स्वंय कर रहे है ।

---

1. रगुका - दिनकर - पृ. स.
2. हुकार - विपगाध - पृ. सं. 5।

ज़माने के अन्दाज बदले गये
नया राग है साज बदले गये,
हुआ इस तरह काश राजे फिरंग
कि हैरत में है शोशा बाज़े फरंग
पुरानी सियासत गरी ख्वार है
जमी मीरा सुलता से बेज़ार है
गया दौर सरमायादारी गया
तमाशा दिखाकर मदारी गया
गरा ख्वाब चीनी समलने लगे
हिमालय के चश्मे उबलने लगे ।

दिनकर जी की तरह इक़बाल इन साम्राज्यवादियो के चुंगल से अपने देश वासियो को निकालने के लिये बेचैन नजर आते है । दिनकर जी की ही तरह उनका भी यही कहना है यी साम्राज्यवादी शासक हमारा खून चूस रहे है । मेहनत हमारी मासूम जनता करती है, और वह बहुत होशियारी दिखाकर ऐश आराम का जीवन व्यतीत करते है और केवल शासक ही नहीं सर्वहारा वर्ग भी, गरीब, किसान, मज़दूरों पर अत्याचार करते है । इकबाल का कहना है यह लोग किसान मजदूर से दिन भर मेहनत लेते है और मज़दूरी इस तरह देते है जैसे एहसान कर रहे हो । उन्हे मेहनत का फल नहीं ज़कात दे रहे हो । हाँ इतना अवश्य है कि दिनकर की आवाज़ सामान्य जनता की आवाज है लेकिन इक़बाल अधिकतर मज़दूरो में क्रान्तिकारी भावना जगाते हुये दिखायी देते है, कहते है -

ऐ कि तुझ को खा गया सरमायादारे हीलागर
शाखे आहू पर रही सदयो तलक तेरी बरात
दस्ते दौलत आफरी को मुज्द यू मिलती रही
अहले सरवत जैसे देते है गरीबो को जकात ।

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ. सं. 415
2. कुलयाते इक़बाल - पृ. स. 264

इकबाल कहीं कहीं दिनकर से अलग अवाज उठाते दिखायी देते है । उनका कहना है इस तरह हुकूमत करने वालो को कभी संतुष्टि नहीं मिलती । वह एक के बाद एक सारी दुनिया को जीत कर अपना गुलाम बना . लेने की लालच रखते है । इकबाल का तो कहना है कि साम्राज्यवादी यह जानते है कि उनके शासन की दीवार अन्याय एवं अत्याचार पर खड़ी है । लेकिन फिर भी वह अपनी हवस के आगे मजबूर है और सारी दुनिया पर हुकूमत करने का स्वप्न देखते रहते है । इकबाल सिकन्दर महान के उदाहरण द्वारा यह बात समझाते है ।

अगरचः स्कन्दर रहा महरूमें आबे जिन्दगी
फ़ितरते स्कन्दरी अब तक है गरमें नाओ नोश ।

अर्थात, यद्यपि सिकन्दर को अमृत न मिल सका जो उसे अमर बना देगा फिर भी : आज भी सिकन्दर जैसे शासक सुखी जीवन व्यतीत कर रहे है ।

दिनकर जी की तरह इकबाल कहते है जहाँ साम्राज्यवादी, हुकूमत होगी मनुष्य उन्नति कर ही नहीं सकता । वह इन्सान को इन्सान का गुलाम देखकर उबल पड़ते है वह बहुत रंज और दुख के साथ कहते है :-

अभी तक आदमी सैदे ज़बूने शहर यारी है
कयामत है कि इन्साँ नौये इनसाँ का शिकारी है
नज़र को खीरा करती है चमक तहज़ीब हाज़िर की
यह सन्नाई मगर झूठे नगो की रेज़ाकारी है ।

वह हिकमत नाज था जिसपर खिरद मन्दाने मगरिब को
हवस के पंजाये खूनी में तेगे कारजारी है ।
तदब्बुर की फसूं कारी से मेहकम हो नहीं सकता
जहाँ में जिस तमद्दुन की बिना सरमाया दारी है ।[2]

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृ. सं. 257
2. कुलयाते इक़बाल - पृ.सं. 274

जरबे कलीम की एक नज्म "सियासते अफरंग में" साम्राज्य-वादियों को शैतान बताते हुये इकबाल कहते है खुदा ने एक ही इबलीस पैदा किया परन्तु इन साम्राज्यवादी शासको ने अनगिनत शैतान इस संसार की मिट्टी से अपनी ताक्त के भरोसे पैदा कर दिये है जो गरीबो का खून चूस रहे है उन्हे बिन मौत मार रहे हैं। हर वक्त उन्हे लालच का नशा देकर बहकाते दिखायी देते है।

तेरी हरीफ है या रब सियासते अफरंग
मगर है इनके पुजारी फ्कत अमीरो रईस
बनाया एक ही इबलीस आग से तूने
बनाये खाक से इसने दो सद हजार इबलीस। [1]

इकबाल मजदूरो में क्रान्ति भावना जाग्रत करते हुए कहते है कि जमाना बदल चुका है अब साम्राज्यवादी हूकूमत का जमाना जा रहा है उठ और अपनी शक्ति दिखा संसार में हर तरफ तेरा स्वागत होगा, अब सामन्तवादी हूकूमत का जो धोखे से तुम पर हूकुमत कर रही है उसका तख्ता पलट दो।

मक्र की चालो से बाजी ले गया सरमायादार
इन्तेहाये सादगी से खा गया मजदूर मात
उठ की अब बज़्मे जहाँ का और ही अन्दाज है
मशरिक व मगरिब मे तेरे दौर का आगाज है। [2]

इकबाल कहते है कि हिम्मत रखनेवाले साहसी पुरूष को तो दरया अर्थात बहुत अधिक वस्तुये प्राप्त होने पर भी सुतुष्ट नहीं होती और तू कब तक एक बूंद अर्थात थोड़ी सी मजदूरी लेकर बैठ जायेगा। उठ विद्राह कर। अब साम्राज्यवादी शासको का जमाना जा रहा है। समाजवाद का जमाना आ रहा है। मजदूरो का जमाना आ रहा है।

---

1. कुलायते इक़बाल - पृ. सं. 604
2. कुलायते इक़बाल - पृ. सं. 263

धरती की कोख से नया सूरज जन्म ले रहा है उठो उसका स्वागत करो एक कीड़े की तरह शमा के इर्दगिर्द न जाओ बल्कि अपनी शक्ति को दिखाओ ।

हिम्मत आली तो दरया भी नहीं करते कबूल
गुन्चासा गाफिल तेरे दामन में शबनम कब तलक
नग़महे बेदारीये जमहूर है समाने ऐश
किस्सा ख्वाब आवरे स्कन्दरो जम कब तलक ।

आगे कहते है पृथ्वी की गोद से नया सूरज निकल रहा है उसका स्वागत करो ।

आफताबे ताज़ा पैदा बतने गेती से हुआ
आसमां डूबे हुये तारों का मातम कब तलक
..	..	..
किरम के नादां तवाफे शमा से आज़ाद हो
अपनी फ़ितरत के तजल्ली ज़ार में आबाद हो । [2]

प्यासे मशरिक इक़बाल की फारसी नजमों का संकलन है इसमें इकबाल की एक नज्म किस्मत नामा सरमायादार व मजदूर में इकबाल पहले मजदूरों की दशा का वर्णन करते हैं फिर वह मजदूरी की होजबान से कहलाते है तमाम दुनिया के मजदूर एक हो जाओ अब साम्राज्यवादियों का जमाना गया समाजवाद का जमाना आ रहा है । " हमें इसका स्वागत करना चाहिये ताकि हमें हमारे अधिकार मिल सके इसके लिये साम्राज्यवाद और सामन्तवाद दोनों को समाप्त करना होगा कहते हैं ।

बया कि ताज़ह नवामीतरावद अज़ रगेसाज़
मये कि शिशा गुदाज़द व सागर आन्दाज़ेम
मुग़ानो देरे मुग़ांरा निज़ामे ताज़ा दहेम

---

1. कुलायते इकबाल - पृ. सं. 263

2. कुलायते इकबाल - पृ. सं. 263

बिनाये मैकदाहाये कुहन बरनदाज़ेम
ज़ेरह ज़माने चमन इन्तेकामे लाला क्शेम
ब बज़्मे गुवओ गुल तरहे दीगर अन्दाज़ेम
ब्तोफे शमा व परवाना ज़ीस्तन ताके
जखेश ईहमा बेगाना ज़ीस्तन ताके

किसानों, मजदूरों में नयी जागृति पैदा करना :

इस संबंध में इकबाल और दिनकर दोनों का अध्ययन करते समय हमें इस बात को नहीं भुलाना चाहिये जब यह लोग पिसती हुयी जनता को जागृति का संदेश दे रहे थे वह युग अंग्रेजी उत्कर्ष का युग था प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के दरमियान हालात तेजी से करवट बदल रहे थे । पूंजीवादी लोकतंत्र का स्वरूप धारण कर दुनिया भर की कमजोर जनता को अपना गुलाम बना रहे थे । और इसके साथ ही पाश्चात्य पूंजीवादी राष्ट्रपिता जातीयता के विरूद्ध कार्ल मार्क्स की आर्थिक क्रान्ति रूस में कामयाब हो रही थी । इस बात का प्रमाण दोनों कवियों पर दिखायी देती है । दोनों ने इस बात का जोरदार समर्थन किया कि अंग्रेजी साम्राज्य का जादू का पर्दा फाश हो चुका है ।

और इन दोनों कवियों ने मासूम पिसती जनता किसानों, मजदूरों को सोते से जगाया उन्हें नवजागरण का संदेश दिया । बताया कि हमें अपनी सामाजिक संरचना को बदलना है । यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम किस तरह का समाज बनाये यह तो स्पष्ट है कि साहित्य और समाज का एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध होता है । एक क्रिया रूप है तो दूसरा प्रक्रिया । और इस प्रकार समाज में होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया, हमें दोनों कवियों के यहां

---

1. प्राप्त इकबाल जादूगरे हिन्दी निजाम - पृ. सं. 109
अतीक सिद्दीकी

दिखायी देती है क्योंकि समाज के परिवर्तन लाने का माध्यम साहित्य से बड़ा कोई नहीं हो सकता और समाज का संबन्ध मानव से है । मानव का उत्थान पतन समाज का उत्थान पतन है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब किसी जाति की सभ्यता में ऐसा परिवर्तन आया कि उसने उस जाति की सम्पूर्ण दशा बदल दी, तो उसमें साहित्य का ही हाथ है । इसलिए इन दोनों कवियों ने मानव के उत्थान के लिये देश के किसानों मजदूरों में नयी जागृति पैदा करने के लिये साहित्य रूपी तलवार का सहारा लिया ।

अब हम दिनकर जी के काव्य पर दृष्टि डालते है तो डा· सावित्री सिन्हा लिखती है --

" वास्तव में दिनकर जी जनता में अत्याचार शोषण और सामाजिक वैषम्य के प्रति जो विद्रोह की भावना व्यक्त हुयी है उसकी प्रेरणा के बीज सिमिरिया की शोषित, पीडित, निर्धन जनता के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं में विद्यमान है ।"[1]

कवि की पुकार समाज की पुकार होती है । कवि नई चेतना का उद्बोधन करता है । समाज को बदलने में कवि का हाथ किसी शस्त्रधारी से कम नहीं होता किसी कवि की तलवार उसकी कलम होती है उसी के सहारे वह परिवर्तन लाता है । दिनकर जी का कहना है बहुत अत्यचार हो चुका अब हम नये समाज का निर्माण करेंगे जहां प्रत्येक मनुष्य को बराबर से जीने का अधिकार मिलेगा ।

श्रेय होगा मनुज का समता विधायक ज्ञान
स्नेह सिंचित न्याय पर नव विश्व निर्माण ।

कवि का कहना है कि अब रात समाप्त हो रही है । प्रकाश कहीं जगमगा रहा है अर्थात अब नये समाज के स्थापना करना है जिसमें भेद भाव न हो ।

1· दिनकर - सावित्री सिन्हा

2· कुरूक्षेत्र - पृ· सं· 88

हटो तभी वरो कि हो चुकी समाप्त रात
कुहेलिका के पार जगमगा रहा प्रभात है
लपेट में समेटता रूकावटो को तोड़ कर
प्रकाश का प्रवाह आ रहा दिगन्त फोड़ कर । [1]

कवि का कहना है जब तक आदर्श समाज की स्थापना नहीं होगी जब तक सब को न्याय उपलब्ध नहीं होगा हम सुख चैन से कैसे बैठ सकते है ।

न्योचित सुख सुलभ नहीं मानव मन को
चैन कहाँ धरती पर तब तक शान्ति कहाँ इस मन को । - 2

कवि उन लोगो को नये जागरण का संदेश देता है जो अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध धुटने टेक देते है ।

सहता प्रहार कोई विवश कदर्य जीव
जिसकी नसो में नहीं पोरूष की धार है
करूणा क्षमा है क्लीव के जाति के कलंक धोर
क्षमता क्षमा की शुर वीरो का सिंगार है । [3]

कवि समाज में परिवर्तन लाने के लिये किस प्रकार के पुरूष की कल्पना करते है देखिये :-

एक हाथ में परसु एक में कुश है
आ रहा नये भारत का भाग्य पुरूष है । [4]

दिनकर जी समाज में परिवर्तन लाने के लिये एक ओर परशुराम को कल्पना करते है तो दुसरा और कर्ण की कहते है :-

जग में जो भी निर्दलित प्रताड़ित जन है
जो दीन हीन निन्दित है निर्धन है

---

1. रश्मिलोक
2. कुरूक्षेत्र - पृ. सं. 117
3. कुरूक्षेत्र - पृ.स. 38
4. परशुराम की प्रतिज्ञा - पृ. स. 15

यह कर्ण उन्ही का सखा बन्धु सहचर है
विधि के विरुद्ध ही इसका रहा समर है । [1]

दिनकर जी भीषण विद्रोह जगाना चाहते हैं ।

स्वर को कराल हुंकार बना देता हूँ
जीवन को भीषण ज्वार बना देता हूँ
शूरों को अंगार बना देता हूँ
हिम्मत को ही तलवार बना देता हूँ
लोहू में देता हूँ वह तेज खानी
जूझते पहाड़ों से ही अभय जवानी । [2]

कवि समाज में परिवर्तन लाने के लिये अपनी तरह से क्रान्ति को आवाज देता है । कहते है -

हटो मेघ पंथ से
स्वर्ग लुटने हम आते हैं
दुध दुध जो वत्स तुम्हारा
दुध खोजने हम जाते हैं ।

कवि पुरानी रीति परम्परा से आज के नवयुवकों को आजाद कर उनमें नयी चेतना फूकना चाहता है ।

छिलके उठते जा रहे
अंकुर मुख दिखलाने को है
यह जीर्ण तनावा सिमट रहा
आकाश नया आने को है ।

1· दिनकर - रश्मिरथी - पृ· स· 100
2· दिनकर - रश्मिरथी - पृ· सं· 31
3· हुंकार - पृ· स· 28

सामधेनु की एक कविता में दिनकर जी कह रहे है अब हमारे दु:ख के बादल छटने वाले है, सुख का सूरज दूर कहीं दिखाई दे रहा है :-

हटो तमीचये कि हो चुकी समाप्त रात
कुहलिका के पार जगमगा रहा प्रकाश
उठो उठो कुरीतियो की राह तुम भी रोक दो
बढ़ो बढ़ो की आग में गुलामियो को झोक दो ।[1]

इकबाल ने अपने व्यक्तित्व को दो भाग कर रखे थे एक का सम्बन्ध विचार से था तो दूसरे का कर्म से, कर्म की दुनिया में वह जितने बंधे हुये थे विचारो की दुनिया मे उतने आजाद थे और वह जो समाज में परिवर्तन लाना चाहते थे वह उनके विचारो का ही कमाल है ।

इकबाल एक ऐसे महान शायर थे जो मनुष्य को बहुत अधिक ऊँचाई पर देखना चाहते थे । इकबाल को पूरी तरह यह अनुभव था कि पूंजीवादी व्यवस्था लोकतंत्र का लिबास पहन कर मासूम लोगो को लूट रही है । दूसरी तरफ इकबाल को कार्ल मार्क्स की क्रान्ति ने पूरी तरह प्रभावित किया था जो बीसवीं शताब्दी की ही नहीं मानव जाति के इतिहास की महत्व पूर्ण घटना है । इसने रूस के महान शासन को समाप्त कर पहली बार मेहनत करने वालो का राज्य स्थापित किया था और पूंजीवादी व्यवस्था की चालो का पर्दा तोड़ डाला था । इकबाल ने तो कार्ल मार्क्स के प्रभाव से एक लम्बी नज़्म खिजर राह लिखी जो बहुत पसन्द की गई । इसमें इकबाल खिज़ से कई प्रश्न पूछते है । उसमें से एक यह भी है कि यह पूंजीपतियो और मजदूरो में

---

1. रश्मि लोक - दिनकर

इकबाल ने इस विषय पर (खिज़रेराह (दागेदारा) के अतिरिक्त "बालेजिबरील", "ज़रबे कलीम" कि कुछ नजमों मे विचार करते दिखायी दे रहे है " बाले जिबरील" की नज़्म (लेनिन) " खुदा के हजुर " मे और "फ़रिश्तो का गीत" और "फरमाने खुदा" मे अकबाल अपने पक्ष की बारिकियो को छूते नजर आते है । उन्होने इन नजमों मे अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से सामने रखा है । वह पुजीवादी व्यवस्था का अन्त कर एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते है जहाँ प्रत्येक मनुष्य चैन से रह सके । इकबाल का विचार था पश्चिम मे पुजीवादी लोकतंत्र का चोला पहन कर जनता के अधिकारो का खुन कर रहे है । इकबाल ने लेनिन की जबानी खुदा के हजुर मे यह बात कहलवायी है जो खुद उनके अपने विचार थे ।

कहते है --

यह इल्म यह हिकमत यह तदब्बुर यह हकूमत
पीते है लहु देते है तालीमे मसावात
बेकारी वउरयानी व मे ख्वारी व इफलास
क्या कम है फिरंगी मदनियम के फतुहात
वह कौम कि फैजाने समावी से हो महरूम
हद उसके कमालात की है बरको बुखारात
है दिल के लिये मौत मशीनो की हकूमत
एह सासे मुरव्वत को कुचल देते है आलात ।[1]

एक अन्य जगह फरिश्तो के नाम फरमाने खुदा नज़्म मे वह कहते है कि हमे गरीबो को जगा देना है । इन पुजीवादी व्यवस्था के कारण उसकी प्रतिभा जो दब गई है उसे उजागार करना है । इकबाल तो ऐसा राज्य बनाना चाहते है जहाँ सब बराबर से रहे उनका कहना है कि ऐसे खेतो को तो जला देना चाहिये जिसे गरीबो को दो वक्त की रोटी न मिल पाय ।

---

1. कुल्याते इकबाल - पृ. स. 399

उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो
काख़े उमरा के दरो दिवार हिला दो
गरमाओ गुलामों का लहू सोज़े यकीं से
कुंजश्के फिरोमाया को शाहीं से लड़ा दो
सुलतानिये जम्हूर का आता है ज़माना
जो नक्शे कुहन तुमको नज़र आये मिटा दो
जिस खेत से दहकाँ को मुयस्सर नहो रोज़ी
उस खेत के हर खोशये गँदुम को जला दो
तहजीबे नवी कारगहे शीशा गरां है
आदाबे जुनूँ शायरे मशरिक को सिखा दो ।[1]

इकबाल का कहना है कि मजदूर एवं निर्धन वर्ग परिश्रम करते है फिर क्यों धनी वर्ग उसका लाभ उठाते है । किसान परिश्रम करके अन्न उपजाता है फिर उसे खाने को रोटी भी नहीं मिलती । शायर ऐसी व्यवस्था के प्रति क्रोध उबलते जहाँ तहाँ दिखाई देते हैं और समाजवाद का स्वागत करना चाहते हैं । वह ऐसे खेत को जला देना चाहते हैं जिससे किसानों को रोटी न मिल सके ।

वास्तविकता यही है कि इकबाल ने अमीरी गरीबी के रोग को सच्चे दिल से महसूस किया था और इनका विचार था अमीरों द्वारा जनता हर तरह सतायी जाती है । यह कही लोकतंत्र, कही समाजवाद कही राजवाद का लिबास पहन लेते है और गरीबी का खून चूसते है । इकबाल का कहना है कि यह अमीर लोग गरीब जनता से रोने, सिसकने की ताकत भी छीन लेते है । इकबाल इन हैवानों के हाथों को समाप्त कर एक ऐसा राज्य की स्थापना चाहते हैं जिसमें सबको जीने का समान अधिकार देता हो । इकबाल हर समस्या का हल कुरान में ढूढते है । उन्होने इस समस्या का हल भी कुरान से ढूढ निकाला उन्होने अपनी नज़्म

---

1. कुल्याते इकबाल - पृ. सं.401

"इशतेराकियत में " बताया है कि जिन के पास अधिक धन हो उन्हे उसे बाँट देना चाहिये । कहते है --

कोमो की रविश से मुझे होता है यह मालूम
बे सुद नहीं रूस की यह गरमिये गुफ्तार
अनदेशा हुआ शोखये अफकार पे मजबूर
फरसुदा तरीको से जमाना हुआ बेजार ।
इन्सान की हवस से जिन्हे रखा था छिपाकर

खुलते नजर आते है बतदरीज असरार
कुरान में हो गोता जुन ऐ मर्द मुसलमा
अल्लाह करे तुझ को अदा जिद्दते किरदार
जो हरपे " कुलल अफ" में पोशीदा है अब तक
इस दौर में शायद वह अब हक्कीकत हो नमुदार । - 1

इस पूरी नज़्म में मनुष्य को उसकी ताकत का एहसास दिलाया गया है । इकबाल गरीब जनता को ऊपर उठने का सन्देश दे रहे है ।

यहाँ इकबाल कुरानपाक की आयत की सहारा लेते है वही ऊपर की नज़्म का अर्थ बताती है ।

शायर "कुलल अफ़ " का अर्थ खुदा से पुछते है जिस का अर्थ है खुदा की राह में हम क्या खर्च करे । उत्तर है " जो कुछ तुम्हारी आवश्यकता से अधिक हो । अर्थात् मनुष्य को अपनी आवश्यकता पर खर्च कर बाकी धन को गरीबो में बाँटना चाहिये ।

यहाँ कबीर दास जी का एक दोहा याद आ रहा है --
साँयी इतना दीजिये जामे कुटुम्ब साये
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय ।

1• कुलयात इकबाल पृ• स• 598

कबीरदास तो चाहते ही नहा थे कि अधिक धन आये लेकिन इकबाल का यह कहना है कि मनुष्य के पास आवश्यकता से अधिक जो कुछ है उस पर गरीबों का अधिकार है। उस अधिकार को तुमउसे दो यही मनुष्य का धर्म है यही खुदा का संदेश है और यही इसलाम की नीव है।

इकबाल अपनी नज्म " कार्ले मार्क्स " की आवाज में कहते है कि अब नुमाइश और दिखाये का जमाना गया अब नया जमाना आ रहा है।

यह इलमो हिकमत कि मुहरा बाजी
यह बहसो तकरार की नुमाइश
नहीं है दुनिया को अब गवारा
पुराने अफकार की नुमाईश
तेरी किताओं में ऐ हकीमें मआश रखा ही क्या है आखिर
खुतेते खमदार की नुमाइश बे रेजो कजदार की नुमाइश
जहाने में मगरिब के बुतकदों में कलीसियाओं में मदरसों में
हवस की खु रेजिया छिपाती है अक्ल अयुयार की नुमाइश ।

इकबाल कहते है नया जमाना आ गया वह क्रान्ति की आवाज देते है।

नएश्या में न यारोब में सोजो साजे हयात
खुदी की मौत है यह और वह जमीर की मौत
दिलों में बल बले इन्केलाब है पैदा
करीब आ गई शायद जहाने पीर की मौत । 2

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 599
2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 599

अर्थात जीवन की तपन न ऐशिया वालो मे पायी जाती है न योरोप वालो मे ऐशिया वालो का अहं गिर चुका है और योरोप वालो का अन्तर्-आत्मा मर चुकी है ऐसा लग रहा है अब क्रान्ति आने वाली है ।

इकबाल अमीरो की चाल से अच्छीतरह परिचित है । जानते थे कि अमीर लोग थोडा सा धन देकर गरीबो को खरीद लेते है और उनसे अपनी मनमानी करवाते है । इकबाल का कहना है कि हमारा कर्तव्य है गरीबी का उद्धार करना गिरतो को पकड़ लेना, न कि लोगो का नशा दे कर गिरा देना ।

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है
मजा तो जब है कि गिरतो को थाम ले साकी ।
इकबाल कहते है --

बाग के हर जर्रे जर्रे मे तुम कुछ करने की इच्छा पैदा कर,
ऐ खुदा तू मनुष्य के अन्दर इच्छाओ को समाप्त न कर
शायद इकबाल इसलिये ऐसा चाहते है यही इच्छाये मनुष्य से कर्म करवाती है ।

अमीर लाला मे रोशन चिरागे आरजू कर दे
चमन के जर्रे जर्रे मे शहीदे जुस्तजू कर दे । [2]

इकबाल के हृदय पर उस समय क्रान्ति अथवा परिवर्तन का पागलपन इतना तारी था कि उन्होने जफर अली खा के अखबार का नाम ही "इन्केलाब" रख डाला जब पहला परचा निकला तो उसमे उन्होने जो नज़्म लिखी वह न केवल पूंजीवाद और सामतवाद के खिलाफ थी बल्कि उसमे धर्म के ठेकेदारी के खिलाफ भी एहतेजात किया है । कहते है --

ख्वाजा अज़ खूनेरगे मज़दूर साज़द लालेनाब
अज़ जफाये देह खुदाया किश्ते दहकानाँ खराब
इन्केलाब, इन्केलाब ए इन्केलाब ।

1,2. कुलयाते इकबाल - पृ· स· 208 एवं 268
3· इकबाल जादूगरेहिन्दी नजाद पृ· 109 अतीक सिद्दीकी

इकबाल का कहना है कि समाज को बदलने के लिये तरीका है मुहब्बत और एकता हम एक होकर हालात का मुकाबला करे तो क्या नहीं कर सकते, कहते है --

यही मकसूदे फितरत है यही रमज़े मुसलमानी
अखुवत की जहा गीरी मुहब्बत की फरावानी
बुताने रंगो बू को तोड़ कर मिल्लत मे गुम होजा
न तूरानी रहे बाकी न इरानी न अफ़गानी [1]

इसी नज़्म में आगे इकबाल मजदूरो को सम्बोधित करते हुए कहते है --

मियाने शाख़ सारॉ सोहबते मुर्गे चमन कब तक
तेरे बाजू में है परवाज़े शाही ने कोहिस्तानी । [2]

अर्थात तेरे बाजुओ में तो इतना साहस है कि तू पहाड़ तक उड़ सकती है कि यू यह चिड़ियों के साथ चमन में कब तक अपना जीवन गुज़ारेगा अर्थात ऐ मजदूर अपनी ताकत पहचान इकबाल कहते है :-

उकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
नज़र आती उनको अपनी मंज़िल आसमानों में
न हो नौमीद नौमीदी ज़वाले इल्मो इरफॉं है
उम्मीदे मर्दे मोमिन है खुदा के राज़ दानों में
नहीं तेरा नशेमन कसरे सुलतानी के गुम्बद पर
तू शाही है बसेरा कर पहाड़ों की चटानों में । [3]

ऊपर की पंक्तियो में इकबाल ने मनुष्य को शाही चिड़िया से उपमा दी है जो पहाडो की चट्टानो पर बसेरा करती है इकबाल मनुष्य को शहनशाहियत के नरम बिस्तर पर सोता नहीं देखना चाहते ।

1· कुलयाते इकबाल - पृ· 270
2· - वहीं
3· - वहीं - पृ· 412

वह उसे पहाडो के चट्टानो पर बसेरा करने सख्त मेहनत करते देखना चाहते है ।

यहाँ यह बात भी लिखने योग्य है कि ऊपर की पंक्तियो का शायद शाब्दिक अनुवाद दिनकर जी ने रश्मि रथी मे प्रस्तुत किया है । अर्थात वह भी मनुष्य को इतनी ऊचाई पर देखना पसन्द करते थे । जितनी शायद इकबाल दिनकर जी ने अपने काव्य रश्मि रथी मे कवि कृष्ण संवाद मे बिलकुल यही इसका अनुवाद कर्ण की जबानी कहलवाया है, जब कृष्ण कर्ण से कहते है कि तुम दुर्योधन का साथ छोड दो और अपने भाइयो का साथ दो तब कर्ण जवाब देते है मै ऐसे नहीं कर सकता । मै वीर पुरुष हू । मुझे राजपाठ धन का लालच नहीं । मै तो गरूड की भाँति जीना चाहता हू कबूतर की भाँति नहीं ।

प्रसादो के कन काम शिखर
होते कबूतरो के ही घर
महलो मे गरूड न होता है
कंचन पर कभी न सोता है ।

बसता वह कहीं पहाडो मे
शैलो की फटी दरारो मे ।[1]

इकबाल का कहना है कि अगर मनुष्य मे कुछ करने की लगन हो तो वह क्या नहीं कर सकता, पहाड खोद कर नहर निकाल सकता है फिर मनुष्य तो समाज का प्राणी है, समाज को बदलना तो उसके लिये कुछ नहीं, कहते है देख नया सूरज निकल रहा है, तू इसका स्वागत कर

हिम्मते आली तो दरया भी नहीं करती कबूल
गुन्चा साँ गाफ़िल तेरे दामन मे शबनम कब तलक ?
आफताबे ताज़ा पैदा बतने गेती से हुआ
आसमाँ डूबे हुये तारों का मातम कब तलक ?।[2]

---

1. रश्मिलोक - दिनकर - पृ. स. 186
2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 263

तू पहले ऊँचाई के शिखर पर था से भूल उन अतीत के अहंकार को भूल जा, और भविष्य के आने वाले कल को संवार क्योंकि यही कल तेरी दुनिया बदल सकता है। अतीत का अहंकार नहीं।

आदेश्वर राव कहते है " मानव और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। दोनो की प्रगति हो या विगति सदा एक दूसरे पर आधारित रहते है। मानव का उत्थान या पतन समाज के उत्थान या पतन पर आश्रित रहता है"[1] उस समय हमारा समाज जैसा कि पहले ही कहा गया, दो मार्गों में विभाजित था एक पूँजीवादी और सर्वहारा दो दूसरा शोषित वर्ग, गरीब जनता की शोषण कई प्रकार से हो रहा था। पूँजीपतियों द्वारा मिल मालिकों और जमींदारो द्वारा। इकबाल और दिनकर दोनो ही ने शोषित जनता का चित्रण किया है लेकिन शोषित जनता का जीता जागता रूप जितना दिनकर जी ने प्रस्तुत किया उतना इकबाल के यहाँ नहीं मिलता है। पिछली जनता किसान, मजदूरों की दशा का जितना यथार्थ चित्र दिनकर के यहाँ मिलता है उतना अगर कहीं मिलेगा तो वह प्रेमचन्द के यहाँ वरना शोषित जनता को अभाव ग्रस्तता का चित्रण दिनकर की महान देन है।

हुंकार में दिनकर किसानों की दीन हीन दशा पर आहु बहाते नजर आते है। कहते हैं :-

जेठ हो की पूस हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं है।
मुख में जीभ शक्ति भुज में जीवन में सुख का नाम नहीं है।
वसन कहाँ सूखी रोटी भी मिलती दोनो शाम नहीं है।

---

1. दिनकर वैचारिक क्रान्ति के परिवेश - आदेश्वर राव - पृ. स. 7।

बैलों के ये बन्धु वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं
बधी जीभ आँखे विष्कृष्णगम खा शायद आंसू पीते हैं । 1

और यहाँ पर प्रगतिवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । वास्तविकता भी यही है उस समय किसानों की यह दशा थी कि उनके पास ग़म के अलावा और खाने के लिये था क्या ? । उनकी पत्नियाँ, माँ रहते हुए भी अपनी बच्चे को दुध नहीं पिला सकते । जब वह खुद कुछ न खा पायेगी तो बच्चों को दुध कहाँ से देगी । वह अपने बच्चों को चुपचाप मुख से बिलखता देखती पर करती क्या,

पर शिशु का क्या हाल सीख पाया न अभी आँसू पीना
चुस चुस सुखा स्तन माँ का सो जाता है रो विलप नगीना
विवश देखती माँ आँचल से नहीं जान तड़प उड़ जाता
अपना रक्त पिला देती यदि धरती आज वज्र की छाती । 2

इसी कविता में आगे गरीब बच्चों की दयनीय दशा का वर्णन कवि इस प्रकार करते है कि मनुष्यता चीख उठे - कठोर से कठोर मन दहल जाये ।

कब्र कब्र में अबुध बालकों की भूखी हड्डी रोता है
दुध दुध की कदम कदम पर सारी रात सदा होती है
दुध दुध तारे बोलो इन बच्चे के भगवान कहाँ है
दुध दुध हे देव गगन के कुछ बुंद टपका अम्बर से । 3

यह दयनीय स्थिति थी उस समय हमारे समाज की यही नहीं शायद आज भी हमारे समाज की यही स्थिति है । पैसेवाले लोकतंत्र का लिबादा पहने मजदुर किसानों पर आज भी अत्याचार कर रहे है । नन्हे नन्हे मासुम बच्चे जिनके खेलने खाने के दिन होते है आज भी मेहनत मजदुरी करते नजर आते है ।

---

1. हुंकार दिनकर - पृ. स. 83
2. हुंकार दिनकर - पृ. सं. 83

दिनकर जी ने केवल किसानों की दशा का चित्रण नहीं किया वरन मजदूरों की भी दयनीय दशा का चित्रण दिनकर जी करते है । कहते है

चढ़ती बूट पर पालिश किसी की खुन की
गरीब मजदूर हर प्रकार से सताये जाते है
विदयुत की इस चका चौंध से देख दीप की लौ रोती है
अरे हृदय को थाम महल के लिये झोपडी बिल होता है ।।

उपर की पंक्तियों में धनिकों द्वारा किये गये शोषण को समझने के लिय कवि ने प्रतिकों का सहारा लिया है ।

कही कही किसानों की
दयनीय दशा का वर्णन कवि इस प्रकार करते है कि आंखों में आसु आ जाए । देखिये -

सुखी रोटी खायेगा जब कृषक खेत में धरकर हल
तब दुंगी मैं तृप्ति उसे बनकर लोटे में गंगा जल
ऋण शोधन के लिये दुध घी बेच बेच धन जोडेंगे
मैं फाडुंगी हृदय लाज से आंख नहीं रो पायेगी ।

इतने पर भी धनपतियां की पडती उन पर नजर
तब मै बरसुंगी वन बेबस के आसु सुकुमार ।[2]

उस समय हमारे देश में अछुतों का बुरा हाल था । वे समाज का अंश होते हुये भी समाज से ठुकराये जाते थे । उन्हे मंदिरों में भी घुसने और भागवान की पुजा करने का अधिकार नहीं था । नीची जात या गरीब वर्ग से लाभ केवल, अमीर लोग नहीं उठा रहे थे, मंदिरों में भी इन्ही गरीबों का मेहनत से कमाया धन जाता था । मनुष्य मनुष्य यह अन्तर देख कवि का मन

---

1. रश्मि लोक
2. रश्मि लोक - रेणुका - पु स. 10

कराह उठता है अपनी कविता बुद्धदेव मे दिनकर अछूतो और गरीबो का हाल दिखाये हुये क्रान्तिको पुकारते है, अस्पर्शता का यह ालन कवि के लिये असह्य हो जाता है ।

आज दीनता को प्रभु की पूजा का अधिकार नहीं
देव बना था क्या दुखियो के लिये निठुर संसार नहीं
धन पिशाच को विजय धर्म की पावन ज्योति अदृश्य हुयी ।
दोडो बोधिसत्य । भारत मै मानवता अस्पर्श हुयी ।

आगे कहते है कि इन धनपतियो ने भगवान को भी कठघरे मे बन्द कर रखा है जहा अछूतो की पहुंच नहीं ।

पर गुलाब के जल मे गरीब के अश्रु राम क्या पायेगा
बिना नहाये इस जल मे क्या नारायण कहलायेगा ।
मनुज मेध के पोषक दानव आज निपट निर्द्वन्द हुये
कैसे बचे दीन ? प्रभु भी धनियो के गृह मे बन्द हुये
अनाचार की तीव्र आग मे अपमानित अकुलाते है ।
जागो बोधिसत्व भारत के हरिजन तुम्हे बुलाते है । [2]

कवि गरीबी की दयनीय दशा का चित्रण कर उनकी हालत मे परिवर्तन के लिए क्रान्ति को आवाज देते है ।

धन के विलास का बोझ दुःखी दुर्बल दरिद्र जब ढोता है
दुनिया को भूखो मार जब सुखी महल मे सोता है
सहती सब कुछ मन मार प्रजा कस मस करता मेरा यौवन । [3]

---

1. रश्मि लोक - रेणुक - पृ. स. 11
2. रश्मि लोक - रेणुक - पृ. सं. 12
3. रश्मि लोक - हुंकार - पृ. स. 5।

दिनकर जी जातिवाद के विरूद्ध अपने खड काव्य रश्मि रथी में जहाँ जहाँ आवाज उठाते दिखायी देते है उनका कहना है मनुष्य की उंच नीच की पहचान कर्म के आधार पर होनी चाहिये न कि जाति के आधार पर यहाँ न केवल इकबाल और दिनकर के विचार मिलते है बल्कि इस तरह से कर्म की प्रतिष्ठा में दिनकर जी के विचार में पर इकबाल का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है ।

मस्तक उंचा किये जाति का नाम लिये चलते हो
मगर असल में शोषण के सुख से पलते हो
अधम जातियों से थर थर कापते तुम्हारे हाथ
छल से माग लिया करते हो अगूठे का दान ।[1]

कवि का कहना है वंश से कुछ नहीं होता मनुष्य अपने कर्मों द्वारा बड़ा छोटा बनता है ।

बड़े वंश से क्या होता है खोटे हो यदि काम
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है नहीं वंश धनधाम ।[2]

इसीलिये दिनकर जी ने जो अपनी इच्छा के अनुरूप कर्ण का चरित्र गढा है जो नीति जात के लोगों न केवल आसु पोछता है, बल्कि उनका प्रतिष्ठा को बढाने में भी सहायक होता है ।

जग में जो भी निर्दलित प्रताडित जन है
जो श्री विहीन है निन्दित है निर्धन है
यह कर्ण उन्हीं का सखा बन्धु सहार है
विधि के विरूद्ध ही उसका रहा समर है ।[3]

1· रश्मिरथी - 4
2· रश्मिरथी - 7
3· रश्मिरथी - 100

दिनकर जी का ध्यान न केवल किसानो मजदूरो और अछूतो के शोषण की ओर गया बल्कि उन्होने नारी शोषण पर भी लेखनी उठायी जबकि डा० इकबाल के यहाँ नारी शोषण पर शायद ही एक भी पंक्ति मिले । दिनकर जी ने अपने काव्य में नारी के हर रूप बाला, प्रेयसी, पत्नी, पतिता गृहणी का चित्रण किया है । परन्तु इकबाल के यहाँ काव्य में नारी को स्थान शायद मिला ही है ।

दिनकर जी का कहना है नारी समाज की जननी है । वह एक माँ है एक पत्नी है फिर भी समाज में उसे कोई स्थान नहीं मिला हुआ है । उसकी तकदीर मे आँसू ही आँसू है । समाज की सतायी नारी को तो अपने वंश तक का त्याग करना पड़ता है । नारी की विवशता की कहानी कवि कुन्ती के माध्यम से इस प्रकार कहलवाते है ।

बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी
अबला होती सचमुच शोषिता कुमारी
है कठिन बन्द करना समाज के मुख का
सिर उठा न पर सकती पतिता निज सुख को ।

समाज में नारी अबला मानी गई है वह आत्मनिर्भर नहीं है - वह पति पर निर्भर है । विधवा नारी समाज में कोई स्थान ही नहीं है । नारी की इस दीन हीन दशा का वर्णन दिनकर जी ने जगह जगह किया है कहते है -

पति के सिवा योषिता का कोई आधार नहीं
अब तक है यह दशा नारी अन्यथा
आसु छिपा हसेगी और हसते हसते रोये ।

1· रश्मि रथी - पृ· स· 80
2· उर्वशी - पृ· स· 40

उर्वशी दिनकर जी का महाकाव्य है इसी काव्य पर दिनकर जी की 1973 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था । इस काव्य का उद्देश्य जो भी है परन्तु इसमें नारी की मर्म वेदना जहाँ वहा दिखायी गयी है । हालांकि इकबाल के काव्य में किसानो मजदूरो के शोषण का उतना यथार्थ चित्रण नहीं मिलता, जितना दिनकर जी के काव्य मे फिर भी कही कही शोषण का ऐसा चित्रण इकबाल प्रस्तुत करते है कि मनुष्य की आखे रो पड़े । वह अपनी नज़्म "खिजर राह" में जो बागेदरा संकलित है हसरत खिज से मजदूरो की दशा का चित्रण इस प्रकार करवाते है ।

ए कि तुझ को खा गय सरमायादारे हीलागर
शाखे आहू पर रहे सदयों तलक तेरी बरात
दस्ते दौलत आफरों को मुज़्द यूँ मिलती रही
अहले सरवत जैसे देते हैं गरीबों को ज़कात । 1

इकबाल का कहना है मजदूर मेहनत करते है परन्तु उन्हे उन्ही की मेहनत की मजदूरी नहीं के बराबर मिलती है । उनका कहना है यह पैसे वाले लोग गरीबो को सादगी का फायदा उठाकर उन्हे बेवकूफ बनाते है कहते है -

मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार
इन्तेहाये सादगी से खा गया मजदूर मात । 2

प्याये मशरिक इकबाल का फारसी नजमो का संकलन है इसकी एक नजम अमीर गरीब पर व्यंग्य करते हुय कहता है कि दुनिया में आराम की जितनी वस्तुये है वह मेरी है और जितनी वस्तुओ सिर्फ भावनाओ के स्तर पर उपलब्ध है वह तेरी है अमीर कहता है धरती और धरती के अन्दर की वस्तुये जिनमें सोना-चाँदी हीरे जवाहरात शामिल है वह मेरी है । पेड़ चाहे उसे काट देना पड़े मेरे हैं ।

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. स 262
2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 455

मंदिरो के अन्दर की मीठी आवाज तेरे लिए है कड़वी शराब जिससे नशा हो मेरे लिये है । जन्नत की शराब तेरे लिये है । मुर्ग, कबूतर, लज्जत की चीज़ें मेरे लिये हैं, ख्वाब की चिड़ियाँ जैसे हुमा (हुमा जिसके सर पर बैठ जाय कहा जाता है वह राजा बनता है) तेरे लिये हैं, ज़मीन के ऊपर की वस्तुएँ, स्वर्ग भी जिनमें है, वह तेरी हैं।

इन आशारों में इकबाल बहुत रूचिकर एवं अच्छे अंदाज में गरीबों की हालत हमारे सामने रखते है जो कुछ पैसा है वास्तविकता है उनपर अमीरों का कब्जा होता है । गरीब बेचारों की किस्मत में कुछ नहीं आता । " किस्मत नामा सरमायादार व मजदूर में इकबाल मजदूरों की दर्दनाक कहानी सुनाते है । मजदूरों की दशा का वर्णन करते हुये इकबाल इस नज्म को अपने विचारों को अमीरों के माध्यम से कहलवाते है ।

गोगाये कारखानये आहँगरी ज़ेमन
गुलबाँगे अरग़नूने कलीसा अज़ाने तो
नख़्ले कि 1ह ख़िराज बरॉ मिनेहद ज़ेमन
बागे बहिश्तो सिदरहो तूबा अज़ाने तो
तलखाबये कि दरदेसर आरद अज़ानेमन
सहबाये पाके आदमो हव्वा अज़ाने तो
मुरगाबियो तदर वो कबूतर अज़ाने मन
ज़िल्ले हुमाओ शहपरे उनका अज़ाने तो
ईं ख़ाको आंचे दर शिकमे उ अज़ानेमन
वज़ख़ाक ताबा अरशे मुअल्ला अज़ाने तो ।

प्यामे पशरिक की ही एक और नज्म मे इकबाल पहले मजदूरों की हालत का वर्णन मजदूर ही की जबानी करवाते है । फिर उन्हें समाजवाद की तरफ ले जाते है

---

1. प्यामे माशरिक - प्रो. युसुफ सलीम चिश्ती - पृ. स. 567
2. प्यामे पशरिक मैशुर - प्रो. युसुफ सलीम चिश्ती - पृ. स. 656

मजदूर कहते है मै मेहनत करके मिलो में काम करके सारी वस्तुए बनाता हू । मै टाट पहनता हू और यह सर्वहरा को ऐसे आराम का जीवन व्यतीत करते है मैं तिनके से कान खोदता हू और अमीर लोग हमारे ही हाथ की बनी सोने चाँदी की वस्तुए पहनते है, मेरे आँसुओ पर इनकी ऊँची ऊँची इमारते तामीर होती है कहते है - संसार मैं सारी रोनक हम मजदूरो के दम से है ।

ये गुजदे बन्दये किरपास पोशिव मेहनत करा
वसोबे खाज्ये न करदाकार रखते हरीर
जेबु पिशानिये मन लाले खातमें वाली
जे अश्के कोदके मन गौहरे सिताने अमीर
जखूने मन चुजेलु कर बही कलीसारा
बजोरे बाजूये मन दस्ते सल्तनम हमागीर
खराबा रश्के गुलिस्ता ज गिरयसे सहरम
शबाबे लालओ गुल अज तरावते जिगरम ।[1]

[2] कुलायते इक्बाल में जगह जगह इक्बाल कहते है कि यह पूंजीवादी व्यवस्था में सब कुछ बस पैसे वालो के हाथ मैं होता है, यह लोग खुदा के हुक्म को भूल गये है और गरीब पर अत्याचार करते है । धार्मिक ग्रन्थो मे जीवन व्यतीत करने के जो मार्ग बताये गये है हमारे देश वासी उस मार्ग सभटक गये है ।

जानता हू कि मे यह उम्मत हामिले करा नहीं
है वहीं सरमाया दारी अन्दसे मोमिन का दी

आर्थिक समानता की माग :-

आर्थिक समानता की माँग दोनों ही कवियों के यहाँ मिल जाती है दोनो ही पूंजीवादी व्यवस्था का अन्त कर सबको समान अधिकार दिलाने के उत्सुक है । यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि

1· प्यामे मशरिक मैशुर - प्रो· युसुफ सलीम चिश्ती - पृ· स· 657
2· कुलायते इक्बाल - पृ· स· 654

दोनो कवियो पर काल मार्क्स के समाजवाद का काफी प्रभाव था और इसी से प्रभावित होकर दोनो ही कवि समाजवाद की स्थापना करना चाहते है जिससे संसार के प्रत्येक व्यक्ति को सुख चैन से जीने का अधिकार प्राप्त हो इकबाल तो कुरान का सहारा लेते हुये कहते है इस्लाम मे है , न कोई छोटा है न बड़ा जमीन पर जो है सबका बराबर का अधिकार है वह किसी की अपनी जाती पूंजी नहीं, दिनकर जी भी समाज के लोगो की मनो बल बढाने के लिये कहते है --

जिस मिट्टी ने लहू दिया वह फल खिलायेगी ही
और अधिक ले जा देवता इतना क्रूर नहीं है
थक कर बैठ गये क्या भाई मंजिर दूर नही है

कवि ऐसे समाज की स्थापना करना चाहता है जहाँ पर मनुष्य को उसके परिश्रम का फल मिले प्रत्येक मनुष्य को स्वतंत्रता से जीने का अधिकार मिले कोई किसी का राजा न हो कोई किसी का दास नहीं कहते है ।

धर्म राज यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी
है जनमा समान परस्पर इसके सभी निवासी
है सबको अधिकार मुक्ति का पोषण रस पीने का
विविध अभावो मे अशक होकर जग मे जीने का ।

कवि का कहना है धरती पर जो कुछ है उस पर सबका बराबर अधिकार है ।

जो कुछ नयस्त प्रकृति मे है वह मनुज मात का धन है
धर्म राज इसके कण कण पर अधिकारी जन जन है ।

1· कुरूक्षेत्र - पृ· स· 120

2· कुरूक्षेत्र पृ· स· 120

नीम के पत्ते में रोटी और स्वाधीनता नामक कविता में भी दिनकर जी इसी तरह की बात कहते है ।

रोटी उसकी जिसका अनाज जिसकी जमीन जिसका श्रम है
आजादी है अधिकार परिश्रम का पुनीत फलपाने का ।[1]

दिनकर जी पुंजीवाद का नाश कर ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते है जहाँ सब को हर प्रकार की सुख सुविधा की वस्तुये उपलब्ध हो ताकि यह धरती स्वर्ग बन जाये ।

शान्ति नहीं तब जब तक
सुख भाग न नर का सम हो
नहीं किसी को बहुत अधिक हो किसी को कम हो ।[2]
किसी का कहना है कि इस समाज में न कोई भिखारी है
न दाता है मनुष्य अपनी शक्ति के बल पर अपना अधिकार पाता है ।
और कौन है भिक्षु यहाँ पर और कौन दाता है
अपना ही अधिकार मनुष्य नाना विधि से पाता है ।[3]

इकबाल ने भी जहाँ तहाँ आर्थिक समानता का माग करते दिखायी देते है । उनका कहना है कि यह जमीन खुदा की है उस पर हर बन्दे का बराबर का अधिकार है कहते है :-

देह खुदाया यह ज़मीं तेरी नहीं मेरी नहीं
तेरे आबा की नहीं तेरी नहीं मेरी नहीं ।[4]

जावेद नामा में यह बात इकबाल ने कहा है जमींदारो को सम्बोधित करके कि खुदा कहता है तू यह न समझ यह जमीन तेरी है, यह जमीन मेरी मिल्कियत है मैंने इसे मुफ्त में सब को दिया । कमाई देता है उससे रोजी हासिल कर इस पर अधिकार मत कर ।

---

1. नीम के पत्ते रोटी और स्वाधीनता पृष्ट - 6
इकबाल जाहगीर हिन्दी नजाद अतीकादुदीक
2. कुरुक्षेत्र - दिकर पृ. स. ।   3. कुरुक्षेत्र - पृ. स. 24.
4. कुलयाते इक़बाल - पृ. स. 411

हक़ ज़मींरा जुज़ मताये मा न गुफ़्त
ईं मताये बे बहा मुफ़्त अस्त मुफ़्त
देह ख़ुदाया नुक्तये अज़ मन पिज़ीर
रिज़्क़ो गोर अज़वये बिगीर ओरा मबिगीर ।

प्यामे मशरिक की एक नज़म " नवाये मजदूरे " मे इकबाल मजदूरों को संदेश देते हैं कि नये ज़माने के साथ जो बदल और अपने पुराने सामाजिक ढांचे को बदल डाल तू कब तक शमा के गिर्द चक्कर लगाकर कीड़े की तरह जीवन गुज़ारेगा, उठ और अपनी शक्ति को पहचान पुराना साकी और मैखाने का ढांचे को बदल डाल अर्थात अपनी शक्ति की ब बदौलत तू ऐसा सामाजिक ढांचा बना जहाँ सब को समान जीने का अधिकार मिले । इस तरह तू साम्राज्यवादी हकूमत से अपना बदला भी ले सकता है ।

पयामे मशरिक की नज़म " नवाये मज़दूर " मे इकबाल कहते हैं --
बिया कि ताज़ा नवामी तरावद अज़ रगे साज़
मये कि शिशा गुदाज़द ब साग़र अन्दाज़ेम
मुग़ानो दैरे मुग़ांरा निज़ामे ताज़ा दहेम
बिनाये मैकदहाये कुहन बरनदाज़ेम
ज़ेरह ज़नाने चमन इन्तेक़ामे लाला कोम
बबज़मे गुन्चओ गुल तरहे दीगर अन्दाज़ेम
ब तौफ़े शम्मा चु परवाना ज़िस्तन ताके
ज़रवेश ईं हमा बेगाना ज़िस्तन ताके - 2

प्यामे मशरिक कि एक और नज्म मे इकबाल, रूस को कहानी बयान करते है कि वहां पूंजीवाद और साम्राज्यवाद का अन्त हो चुका है रूस मे लेनिन को जिलावतन से आजाद कर उन्हे देश के सरबराहे नेता बना दिया गया है तो ऐ मजदूरो तुम भी इस दौड़ मे साथ चलो नहीं तो पीछे रह जाओगे ।

- -

2 - इक़बाल जादूगरे हिन्दी नज़ाद - अतीक़ सिद्दीकी - पृ. सं. 109

कहते हैं --

अफ़सरे बादशाही रफ़्तो बयग़मायी रफ़्त
नये इस्कन्दरीयो नग़मये दारायी रफ़्त
कोहकन तीशाबदस्त आमदो परवेज़ी ख्वास्त
इशरते ख़ाजगीओ मेहनते लालाई रफ़्त
युसुफी राज़े असीरी ब अज़ीज़ी बुरदन्द
हमा अफ़सानओ अफ़सूने ज़ुलेख़ायी रफ़्त
राज़हाये कि निहाँबूद बबाज़ार उफ़्ताद
आँसुख़न साज़ियो आँ अन्जुमन आराई रफ़्त
चश्म बुकशाये अगर चश्मे तो साहब नज़र अस्त
ज़िन्दगी दरपये तामीरे जहाने दिगर अस्त ।[1]

इकबाल के एक ख़त से पता चलता है कि वह समाजवादी व्यवस्था का कितना समर्थन करते थे । लाहौर के एक अख़बार " सिविल मिलिट्री गज़ट " की 30 जुलाई, 1931 के अख़बार में डा. इकबाल लिखते हैं :

सोसलिज़्म में ख़ुदा का तसव्वुर अगर दाखिल कर दिया जाये तो वह बडी हदतक इस्लाम के ममासिल हो जायेगा।मुझे हैरत न होगी अगर आगे चलकर इस्लाम रूस पर या रूस इस्लाम पर छा जाये ।[2]

इकबाल मजदूरो से कहते है अब तेरा जमाना आ गया है, उठो और सारी दुनिया को और अपनी ताकत दिखा ।

उठ कि अब बज़्मे जहाँ का और ही अंदाज़ है
मशरिको मग़रिब में तेरे दौर का आग़ाज़ है ।[3]

---

1. प्यामे मशरिक - मौसूम - युसुफ सलीम - पृ. स. 22
2. प्राप्त इकबाल जादूगरे हिन्दी नज़ाद - पृ. स. 112
3. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 263

एक और जगह इकबाल कहते है " ऐ मनुष्य जब तक तू कच्चा है अर्थात नासमज है मिट्टी का एक ढेर है और जब तू पूर्ण हो जाये अर्थात संघर्षमय जीवन जीना सीख ले तो तू ऐसी तलवार बन जायेगा जिसे कोई काट नहीं सकता ।

खाम है जब तक तो है मिट्टी का एक अम्बार तू
पुख्ता हो जाये तो तो है शमशीरे बेज़नहार तू । 1

कर्मवाद की स्थापना और भाग्यवाद का खंडन :

धार्मिक विचार धारा मे भी दोनो कवियो ने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किया, मनुष्य यहा कुछ भी हो जाय उसका जिम्मेदार भाग्य को ठहरा देता है पर दिनकर जी और इकबाल दोनो ही भाग्य की अपेक्षा कर्म पर भरोसा करते है । निष्काम भाव से कर्म करो फल अवश्य मिलेगा । दिनकर जी का कहना है भाग्यवाद तो केवल धोखा देना है अत्याचारी अपना अत्याचार भी भाग्य रूपी हथियार हाथ मे लेकर करते है । अत्याचार सहनेवाले इसे भाग्य का ही फल कहते है, इसलिए कवि भाग्यवाद की इस विडम्बना का वर्णन इस प्रकार करते है ।

एक मनुज संचित करता है अर्थ पाप के बलसे
और भोगता उसे दूसरा भाग्यवाद के छल से । 2

कवि जगह जगह कहता है मनुष्य को भाग्य का सहारा नहीं लेना चाहिये बल्कि उसे अपने कर्मों पर भरोसा करना चाहिए ।

भाग्यलेख होता न मनुज का होता कर्मठ भुज है । 3

रश्मिरथी मे दिनकर जी कई जगह कर्ण से यह कहलवाते है कि मै तो केवल अपने बाहु बल पर ही विश्वास करता हूं वास्तव मे यह लेखक के अपने विचार है । कहते है :-

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 259
2. कुरूक्षेत्र - पृ. स. 99
3. कुरूक्षेत्र - पृ. स. 54

विधि ने था क्या लिखा भाग्य में खूब जानता हू मै
बाहो को पर कही भाग्य से बली मानता हू मै ।

कुरूक्षेत्र में जहाँ तहाँ कर्म भुमि का महत्त्व बताया है कवि का कहना है जो कर्म पर भरोसा करता है भाग्य उसका दाल हो जाता है । एक जगह कर्म भुमि का महत्त्व बताते हुये दिनकर जी कहते है --

कर्मभुमि है निखिल महीतल जब तक नर की काया
जब तक है जीवन के कणकण में कर्तव्य समाया
कर्म रहेगा साथ भाग वह जहाँ कहीं जायेगा ।

दिनकर जी पर गीता के निष्काम भाव से कर्म किये जाओ दर्शनिक प्रभाव काफी था कवि जानता है निष्काम भाव से किये गये कर्म से कितनी से सतुष्टि मिलती है ।

बुला रहा निष्काम कर्म वह
बुला रही है गीता
बुला रही है तुम्हे अंत हो
यही समर संगीता ।

परशुराम के उपदेश मे परशुराम कवि की वाणी बनते है, कर्म का सदेश देते है --

वैराग्य छोड़ बाहो की विभा समालो
चट्टानो की छाती से दुध निकालो
है रूकी जहाँ भी धार शिलाये तोडो
पीयूष चन्दमाओ को पकड निचोडे ।
चढ़ तुंग शैल शिखर पर सोम पियोजी जियोजी
योगियो नहीं विजयी के सदृश्य ।

1· रश्मिरथी - पृ· स· 36
2· कुरूक्षेत्र - पृ· स· 115
3· कुरूक्षेत्र - पृ· स· 126
4· रश्मिलोक - परशुराम का उपदेश - पृ· स· 203

दिनकर जी का कहना है कि भाग्य की अपेक्षा कर्म को अधिक महत्व देना चाहिये । कहते है --

भाग्यवाद आवरण पाप का और शस्त्र शोषण का
जिसमें रखता दबा एक जन भाग दूसरे जन का ।[1]

कवि एक अन्य जगह कहते है ।

श्रम से बिमुख नहीं है जो दुख से नहीं डरेंगे
सुख के लिये पाप से जो नर संधि न कभी करेंगे
कर्ण धर्म होगा धरती पर बलि से नहीं मुकरना
जीना जिस अतिम तेज से उसी शान से मरना

इकबाल तो अपने फिलसफे कर्म के लिये प्रसिद्ध है । वह तो सदैव मनुष्य को निष्काम भाव से कर्म करते हुये देखना चाहते है । उनका भी कहना है भाग्य से कुछ नहीं होता कर्म से जिन्दगी बनती है । कहते है ।

अमल से जिन्दगी बनती है जन्न भी जहन्नुम भी
यह खाकी अपनी फितरत है वे नूरी है न नारी है ।[2]

दिनकर जी की ही तरह इकबाल कहते है इनसान का भाग्य का बन्धन काटकर फल की चिन्ता किये बगैर कम किये जाना चाहिए, कहते :-

तू शाही है परवाज है काम तेरा
तेरे सामने आसमा और भी है ।[3]

- -

1· कुरूक्षेत्र पृ· स· 98

2· कुलयाते इकबाल पृ· स·

3· कुलयाते इकबाल पृ· स·

इकबाल ने अपनी कुलयात में जहां तहां शाही चिड़िया को मानव जाति का प्रतीक माना है जिस तरह शाही पहाड़ों पर रहती है मगर घोंसला नहीं बनाती उसी तरह मनुष्य को भाग्य का सहारा ले कर रूकना नहीं चाहिये हमेशा शाही की तरह उड़ान भरते रहना चाहिये यहां एक बात और स्पष्ट कर देना चाहूंगी कि शाही को लेकर जो विचार इकबाल ने प्रस्तुत किया है दिनकर जी के यहां वैसा का वैसा विचार मिल जाता है। इन अन्य जगह इकबाल कीड़े को सम्बोधित करते हुये कहते है कि एक नादान कीड़े तू इसे अपना भाग्य न समझ कि कीड़े की किस्मत में शमा की रोशनी में जलना लिखा है, तू उधार की रोशनी में न जल बल्कि तेरे अन्दर जो रोशनी है उसे बाहर ला अर्थात इकबाल गरीब किसान मजदूर से कहते है कि तू अत्याचार को अपना भाग्य समझ न सहन कर तू अपने अन्दर छुपी प्रतिभा को बाहर ला जिससे संसार चमक उठे कहते है :-

किरमके नादां तवाफ़े शमा से आज़ाद हो
अपनी फ़ितरत के तजल्लीज़ार में आबाद हो।[1]

इकबाल तो अपने व्यक्तित्त्व को इतना ऊंचा उठाने चाहते है कि खुद खुदा से कहते है

बागे बहिश्त से मुझे हुक्मे सफ़र दिया था क्यों
कारे जहां दराज़ है अब मेरा इन्तेज़ार कर।[2]

अर्थात तूने तो मुझे जन्नत से निकाल दिया अब यह जहान बहुत बड़ा है यहां मुझे कुछ करना है तू मेरा अभी इन्तेजार कर अर्थात् मनुष्य को सब कुछ भूल कर हमेशा कर्म की फिक्र रहनी चाहिये।

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 263
2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 299

इकबाल " जावेदनामा " में स्वर्ग में भरतृहरि से मिलते है और उनकी जबान से अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त करते है कि बेकार की धार्मिक वस्तुओं में अपना समय न बरबाद करो जीवन का राजकर्म है पूजापाठ इत्यादि कुछ नहीं ।

सजदा बे ज़ौके अमल खुश्क बजाये नरसद
जिन्दगानी हमा किरदार चेज़ेबा व चेज़िश्त [1]

अपने एक नजम " शोवाय उम्मीद " में इकबाल कहते है, मजहब के ठेकेदार समय के साथ न चलकर, हम कर्म की तरफ से हट रहे है, हमें चाहिये कि हम, निरन्तर संघर्ष करे क्योंकि हर रात की सुबह होने है ।

बुतखाने के दरवाज़े पे सोता है ब्रह्मन
तकदीर को रोता है मुसलमाँ तहे मेहराब
मशरिक से हो बेज़ार न मग़रिबसे हज़र कर
फ़ितरत का तकाज़ा है कि हर शब को सहर कर । [2]

मानवता वाद की स्थापना- दिनकर जी अपनी रचनाओं धर्म के भेद भाव को भूल कर एक ऐसे धर्म की स्थापना करना चाहते है जिसका नाम है मानवतावादी धर्म :-

वह महात्मा बुद्ध को मानवता वादी, क्रान्ति का प्रतीक मानते है -
अनाचार की तीव्र आँच में
अपमानित अकुलाते है
जागो बोधिसत्त्व भारत के
हरिजन तुम्हे बुलाते है
जागो विप्लव के वाकदमियों
जागो जागो तप विधान
दलित की हाहाकारो रे । [3]

- -

1. इकबाल जद्दगरेहिन्दी नाद - अतिकअहमद पृ. स. 9

2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 104

3. रेणका -

माध महिमा में भी दिनकर के मानवतावादी धारणाओ का चिन्तन देखने को मिलता है।

छिन्न भिन्न है शक्ति भारत की बिखर गयी है
हम तो केवल चाह रहे है उसको एक बनाना
मृद विवेक से बुद्धि विनय से स्नेहमयी वाणी है
अगर नहीं तो धनुष बाण से पौरुष से बल से।

दिनकर जी मानवतावादी धर्म की स्थापना करना चाहते है अगर वह सीधे से न स्थापित हो तो दिनकर जी शस्त्र का भी सहारा लेने के लिये तैयार है। अगर मानवता की रक्षा के लिये युद्ध भी करना पडे तो दिनकर जी बुरा नहीं समझते। यही नहीं दिनकर जी भारत में ही रहे दंगो से भी परेशान दिखायी देते। वह चाहते थे कि दंगो समाप्त कर लोग प्रेम भाव से रहे वह सच्ची मानवता स्थापित करने के सपने देखते है --

आदर्श मागता मुक्त पंथ
आदर्श मांगता शीतल जल
ओ एक राष्ट्र के विश्वासो
आदर्श मागता मात्र अंचल।

वे कहते है - दिनकर जी चाहते है समाज में कहीं अंधेरा न रहे हर तरफ सुख रहे दुर्बल दीन को भी है भगवान तु इतनी शक्ति दे वह अपने अंधेरे को दूर कर सके।

जहां जहां धन तिमिर में
भर दो वहां विभाग प्यारी
दुर्बल प्राणों के नस नस में
देव फुकदो चिंगारी।

---

1. सामधेनु - पृ. स. 40
2. रश्मिलोक - पृ. स. 43
3. रश्मिलोक

मानवतावादी धर्म क्या है एक. दूसरे से प्रेम करना और इकबाल प्रेम को सब से बड़ा दर्जा देते है उनकी दृष्टि में - मनुष्य की सब से बड़ी विशेषता मानवता ही है ।

मुहब्बत से ही पायी है शफा बीमार कौमों ने
किया है अपने बख्ते खुफ्ता को बेदार कौमों ने
बयाबाने मुहब्बत दश्ते गुरबत भी वतन भी है
यह वीराना क़फ़स भी आश्याना भी चमन भी है
मुहब्बत ही वह मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा भी
जरस भी कारवाँ भी राहबर भी राहज़न भी है ।[1]

इकबाल एक अन्य जगह मनुष्य को सम्बोधित करते हुये कहते है :-

किताबे मिल्लते बैजा की फिर शीराजाबन्दी है,

इकबाल यह अहद निश्चय करते दिखायी देते है कि वह अपने देश के एक एक मनुष्य के दिल में प्रेम की चिन्गारी जलाके रहेंगे उनका अटूट आत्मविश्वास उन्ही के शब्दो में सुनिए :-

हुवैदा आज अपने ज़ख्मे पिन्हाँ करके छोडूंगा
लहू रो रो के महफिल को गुलिस्ताँ कर के छोडूंगा
जलाना है मुझे हर शमए दिल को सोज़ेपिन्हाँ से
तेरी तारीक रातों मे चिरागाँ करके छोडूंगा ।[2]

इकबाल का कहना है कि मुहब्बत वह आग है जिससे दिल मे नूर पैदा होता है अगर मनुष्य मे मुहब्बत और लगन हो तो वह क्या नहीं कर सकता । कहते है :-

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 75
2. कुलयाते इकबाल - पृ. स. 71

मुहब्बत के शरर से दिल सरापा नूर होता है
ज़रा से बीज से पैदा रियाज़े तूर होता है । [1]

यहाँ हसरत मूसा ने खुदा का जलवा अपनी लगन और मुहब्बत के कारण पर्वत तूर पर देखा था उसकी तरफ इशारा है कि प्रेम की लगन से तो मनुष्य क्या नहीं कर सकता ।

इकबाल कहीं कहीं तो खुदा से दुआ माँगते दिखायी देते है कि हर मनुष्य के दिल में मुहब्बत का दिया जला दे ।

इस दौर की जुलमत से हर कल्बे परेशाँ को
वह दागे मुहब्बत दे जो चाँद को शरमा दे । [2]

इकबाल एक जगह संदेश देते है कि इन्सान अपना सब कुछ भूल कर मिल्लत में गुम हो जाये तभी वह अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है ।

यही मकसूदे फितरत है यही रम्ज़े मुसलमानी
अखुव्वत की जहाँगीरी मुहब्बत की फरावानी
बुताने रंगो बू को तोड़ कर मिल्लत में गुम हो जा
न तूरानी रहे बाकी न इरानी न अफगानी । [3]

इकबाल मनुष्य को कर्म और सच्चाई और प्रेम के रास्ते पर चलने का पाठ सिखाते है क्योंकि यही वह रास्ता है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को उभारता है ।

यह नुकता सर गुज़िश्ते मिल्लते बैज़ा से है पैदा
कि अक़वामे ज़मीने एशिया का पासबाँ तु है
सबक़ फिर पढ़ सदाकत का अदालत का शुजाअत का
लिया जायेगा तुझ से काम दुनिया की इमामत का । [4]

1· कुलयाते इक़बाल – पृ· स· 74
2 कुलयाते इक़बाल – पृ· स· 212
3· कुलयाते इक़बाल – पृ· स· 270
4· कुलयाते इक़बाल – पृ· स· 270

इकबाल का कहना है कि इन्सान लालच के कारण टुकड़े टुकड़े हो रहा है उसे जो कुछ मिलता है उससे वह संतुष्ट नहीं होता और पाने की जिज्ञासा उसमें सदैव विद्यमान रहती । । इन धन के लालची लोगों के लिये इकबाल संदेश देते है लालच के कारण तुम टुकड़े न हो क्योंकि एकता में बड़ी शक्ति है एक कतरा की हैसियत कुछ नहीं होती परन्तु समुन्दर में मिलकर वह अथाह समुन्दर हो जाता है ।

तू राज़े कुन फिकाँ है अपनी आंखों पर अयाँ होजा
खुदी का राज़दाँ होजा खुदा का तरजुमाँ होजा
हवस ने टुकड़े टुकड़े कर दिया है नोये इन्साँ को
अखुवत का बयाँ होजा मुहब्बत कीज़बाँ होजा
यह हिन्दी वह खुरासीना यह अफ़गानी वह तुरानी
तू ऐ शरमिन्दये साहिल उछल कर बेकराँ होजा । [1]

शायर का कहना है तेरी मुहब्बत और कर्म का अन्त नहीं है और इसी के सहारे तू नही मानवता की स्थापना कर सकता है और इस जगत में मनुष्य से बढ़ कर कोई वस्तु नहीं है ।

तेरे इल्मो मुहब्बत की नहीं है इन्तेहा कोई
नहीं है तुझसे बढ़ कर साज़े फितरत में नवा कोई । [2]

इकबाल की दृष्टि में मनुष्य की सब से बडा पूजा एक दूसरे से प्रेम करना है, नया शिवाला में कहते है ।

हर सुबह उठ के गायें मन्तर वह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मै प्रीत की पिलादें
शक्ति भी शान्ति भी भक्तों के गीत मे है ।
धरती के बासियों की मुक्ति प्रीत मे है । [3]

1· कुलयाते इकबाल – पृ· स· 273
2· कुलयाते इकबाल – पृ· स· 274
3· कुलयाते इकबाल – पृ· स· 88

इस प्रकार दोनो कवियो का अध्ययन करते हुये यह कहा जा सकता है जहाँ तक क्रान्तिकारी भावना का स्वर है वह दोनो ही कवियो के यहाँ पायी जाती है। दिनकर जी तो क्रान्ति कारी कवि कहे ही जाते है उनका स्थान तो वैसे भी प्रगतिवादी धारा मे है। हाँ इतना है दिनकर जी की प्रगतिवादी धारा जितनी राष्ट्रीय धारा से जुड़ती नजर आती है उतनी इक्बाल की नहीं इक्बाल पहले दौर मे केवल राष्ट्रीय कवि थे परन्तु उनकी क्रान्तिमय धारा मे राष्ट्रीयता का समावेश होते हुये भी उनका संदेश संसार के सभी पिसती हुयी जनता और मजदूरो के लिये था। यह संदेश किस विशेष देश या काल मे बधा नहीं था। दिनकर जी और इक्बाल दोनो ही ने साम्राज्यावद जमींदारी ब्रिटिश शासको के विरूद्ध आवाज उठायी है। यह आवाज इतनी तेज है कि आसमान को हिला कर रख दे। शासको के शासन को डगमगा दे। अब जहाँ तक वर्तमान दुर्दशा के चित्रण इक्बाल के काव्य मे कम मिलता है जितना अधिक दिनकर मे के काव्य मे है वह शोषित जनता का जीता जागता चित्रण ऐसा प्रस्तुत करते है कि मनुष्य रो दे दूसरी बात यह कि नारी शोषण पर तो इक्बाल ने लेखनी उठायी ही नहीं। अब जहाँ तक प्रश्न मजदूरो, किसानो मे क्रान्ति पैदा करने और आर्थिक समानता की माग करने का है इस क्षेत्र मे दोनो कवियो के विचार ऊंचे है। दोनो ही मजदूरो किसानो को उनका स्थान दिलाने के लिये बेचैन दिखायी देते है। दोनो ही समाज वाद को स्वीकार करते दिखायी देते है। दोनो ही कहते दिखायी देते है कि धरती पर किसी का निजी अधिकार नहीं वह सबकी है। और जहाँ तक भाग्यवाद का खंडन करते हुये मानवतावाद और कर्मवाद की स्थापना का प्रश्न है इस संबन्ध मे स्वंय दिनकर जी यह मानते है कि विषय मे इक्बाल ने स्वंय उन्हे प्रभावित किया है।

xxxxxxxx

अध्याय चार - रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ. इकबाल के काव्य में ब्रह्म जगत एवं मनुष्य सम्बन्धी दृष्टिकोण

1 - ईश्वर के बारे में जानने की जिज्ञासा

2 - दिनकर जी के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप

3 - इकबाल के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप

4 - दिनकर जी के काव्य में ब्रह्म सम्बन्धी रहस्यवादी दृष्टिकोण

5 - डॉ. इकबाल के काव्य में ब्रह्म सम्बन्धी दृष्टिकोण

6 - आत्मा का परमात्मा में विलय 1-दिनकर जी के काव्य में

2-इकबाल के काव्य में

क. दिनकर जी और अल्लामा इकबाल के काव्य में जगत सम्बन्धी दृष्टिकोण

1 - दिनकर जी के काव्य में जगत और उसके क्षणभंगुरवादी दृष्टिकोण

2 - डॉ. इकबाल के काव्य में जगत और उसकी क्षणभंगुरवादी दृष्टिकोण

ख. डॉ. इकबाल और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धि दृष्टिकोण

1 - इकबाल के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धी दृष्टिकोण

2 - दिनकर जी के काव्य में मानव और उसकी महानता सम्बन्धी दृष्टिकोण

0 अध्याय - चार 0

रामधारी सिंह दिनकर एवं डा0 इक़बाल के काव्य में ब्रह्म जगत एवं मनुष्य सम्बन्धी दृष्टिकोण

1. ईश्वर के बारे में जानने की जिज्ञासा

मनुष्य में जिज्ञासा की भावना बचपन से ही पायी जाती है, मनुष्य में जब कुछ समझने की क्षमता पैदा होती है तब तरह-तरह के प्रश्न उसके मन में उठने लगते हैं । धीरे-धीरे उसकी दृष्टि स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाती है । वह यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि यह संसार जिसमें वह जीवन व्यतीत कर रहा है, क्या है ? इस संसार का स्रष्टा कौन है ? मनुष्य का अपना स्थान इस संसार में क्या है ? इस प्रकार मनुष्य के मन में शाश्वत सत्य को जानने की जिज्ञासा हमेशा रहती है । मनुष्य सोचता है इस संसार में भाग्य का क्या महत्व है ? क्या केवल भाग्य के सहारे संसार चलता है, प्रकृति क्या है ?, जीवन-मृत्यु क्या है ? किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनुष्य ने संसार में जन्म लिया है ? जैसे-जैसे विज्ञान उन्नति करता जा रहा है, ये प्रश्न मानव मन को व्याकुल करते जा रहे हैं, क्योंकि इतनी उन्नति करने पर भी बहुत सी वस्तुएं विज्ञान की पहुंच के बाहर हैं, परन्तु कवि की अनुभूति के अन्दर । यह

संसार रहस्यमयी वस्तुओं से भरा हुआ है और इन वस्तुओं और उनके मानव-जीवन के संबंध को कवि तरह-तरह से व्यक्त करता है । वह प्राकृतिक नियमों का पाबन्द है । मनुष्य का मन विशेषकर,कवि इस संसार के रहस्य के साथ-साथ दूसरे संसार के रहस्य की भी कल्पना कर लेता है । वह यह भी जानना चाहता है कि इस संसार में उसके अस्तित्व का उद्देश्य क्या है ।

मनुष्य के मन में ऐसी वस्तु के बारे में जानने की अथाह जिज्ञासा पायी जाती है, जिनका बहुत विस्तार है, जिसका कोई अंत नहीं जो मनुष्य के जीवन को प्रेरणा देती रहती है और उसको उसके अस्तित्व का एहसास दिलाती है जिसके कारण वह कर्म मार्ग की ओर अग्रसर होता है । वह स्वयं अपने-आप को समझना चाहता है । मनुष्य बार-बार यह सोचता है कि प्रकृति की रंगीनी, कल-कल बहती नदियाँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, लहलहाती हुई हरियाली खिलते हुए फूल, चहचहाती हुई चिड़ियाँ, यह सब क्या है ? मनुष्य से इनका संबंध क्या है ? क्या मनुष्य से इनका संबंध केवल संयोगवश है या यह मनुष्य को प्रेरित करने के लिए है । इस तरह के विचार मनुष्य के मन में आना स्वाभाविक सी बात है । चाँद क्यों निकलता है, सूरज क्यों निकलता है, हर दिन के बाद रात क्यों आती है, आज विज्ञान के युग में इन सवालों के जवाब मिलते हैं परन्तु इन पर अधिकार किसका है ? किस शक्ति द्वारा यह संचालित है, मानव के लिये यह इतने महत्वपूर्ण क्यों है, क्या यह मनुष्य को कुछ सन्देश नहीं देते ? उसको उसके अस्तित्व का एहसास नहीं दिलाते ? उसको कर्म मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित नहीं करते । मानव मन, विशेषकर कवि मन, क्योंकि वह औरों के मुकाबले अधिक संवेदनशील होता है, इन प्रश्नों से हमेशा जूझता रहता है । वह अपने काव्य के द्वारा केवल मानव मन का मनोरंजन ही नहीं करता, केवल उसकी उदात्त भावनाओं को ही नहीं व्यक्त करता, बल्कि वह अपने काव्य में इस आध्यात्मिक सत्य को उजागर करने का प्रयत्न करता है । वह उस शाश्वत सत्य को व्यक्त करने का प्रयत्न करता है जो रूपात्मक जगत में क्षणिक और परिवर्तनशील है । इस प्रकार दार्शनिक सामान्य मनुष्य और

कवि सभी शाश्वत सत्य को जानने की जिज्ञासा रखते हैं। मनुष्य सोचता है अगर इन सब को पैदा करनेवाला भगवान कोई है तो उसी ने मनुष्य को भी पैदा किया है। इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य का गहरा संबंध है। प्रकृति के ही द्वारा मनुष्य स्वयं की पूर्ति करता है।

केवल प्रकृति के रहस्य को समझ लेने से जीवन की वास्तविकता सामने नहीं आ जाती। वह बुद्धि, तर्क और अनुभूति के द्वारा सारी सृष्टि को समझना चाहता है। यह सृष्टि रहस्यमयी है। अब प्रश्न यह है कि रहस्यवाद है क्या ? डॉ० सुशीला मिश्र कहती है -- "जब मनुष्य अपने भीतर प्रवेश कर अपनी आत्मा को पहचानने, उसका परिष्कार और विस्तार करने तथा ब्रह्म के साथ उस एकाग्रता की अनुभूति करने का प्रयास करता है तो रहस्यवाद का जन्म होता है।"[1]

अर्थात यह तो जाहिर हो गया कि बुद्धि को परे रखकर अनुभूति की तीव्रता के द्वारा परमसत्ता और उसकी अद्भुत देन की अनुभूति ही हमें रहस्यवाद तक ले जाती है। मनुष्य अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का विकास कर, सम्पूर्ण सत्ता के साथ संबंध स्थापित करे, इस हालत में मनुष्य जाति काल से ऊपर उठ जाता है। ज्ञान की प्राप्ति रहस्यवाद के उद्घाटन के रूप में होती है इसलिये रहस्यवादी जगत को स्वीकार करते हैं परन्तु वास्तविक सत्ता जिसके द्वारा जगत का निर्माण हुआ उसको अधिक महत्व देते हैं।

0 दिनकर के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप

हिंदू धर्म बल्कि अन्य भारतीय धर्म में भी ईश्वर के सर्वव्यापक रूप को स्वीकार किया गया है और पृथ्वी के प्रत्येक कण में ईश्वर के अस्तित्व

---

1. दिनकर सृष्टि और दृष्टि - डॉ० सुशीला मिश्र।

को स्वीकार किया गया है, और ब्रह्म की इच्छा के परिणामस्वरूप न केवल जगत के सभी प्राणियों का जन्म हुआ है बल्कि उसी की इच्छा का परिणाम आकाश, पृथ्वी और पाताल है। आसमान में तारे उसी की इच्छानुसार घूमते हैं, स्त्री और पुरूष के दो रूप भी उसी की देन है, क्योंकि इसी से सृष्टि का निर्माण होता है।

दिनकर जी भी यह मानते हैं --

"जिसकी इच्छा का प्रसार भूतल पाताल गगन है
दौड़ रहे नभ में अनन्त कन्दुक जिसकी लीला के
अनगिनत सविता सोम अपरिमित ग्रह उडु मंडल
नारी बन जो स्वयं पुरूष को उद्वेलित करता है
और बेधता पुरूष क्रान्ति बन हृदय पुष्प नारी का
विधि में जलवन में हरीतिमा जिसका धनवरण है।"[1]

ईश्वर को दिनकर सृष्टि के कण-कण में देखते हैं --

"किरणों के दिल चीर देख
सब में दिन मणि की लाली रे
चाहे जितने भी फूल खिले
पर एक सभी का माली है।"[2]

दिनकर जी ब्रह्म के बारे में कहते हैं -- "उसे हम देख नहीं सकते पर उसके अस्तित्व को अनुभव के सहारे समझ सकते हैं।"

"देखें तुझे किधर से आकार
नहीं पंथ का ज्ञान हमे
बजती रहो बाँसुरी तेरी
बस इतना ही भान मुझे।"[3]

---

1. उर्वशी, पृ. 69
2. द्वंद्वगीत - पृ.
3. द्वंद्वगीत - दिनकर, पृ. 38

कवि कभी-कभी ब्रह्म के रूप को जानने के लिये बहुत बेचैन दिखायी देता है --

"छिपकर किसी पर्ण झुरमुट में
कभी कभी कुछ बोलो तो
कब से रहे पुकार सत्य के
पथ पर आकुल ज्ञान तुम्हें ।"[1]

कवि ब्रह्म को हर जगह पाता है --

"सृष्टि सारी एक राज,
देखने को बिम्ब अनेक
किन्तु दृश्याधार दर्पण एक ।"[2]

0 इकबाल के काव्य में ब्रह्म का स्वरूप

इकबाल को धर्म से बहुत लगाव था । वह हर मसले का हल कुरआन में तलाश करते हैं । फिर वे ब्रह्म के अस्तित्व से कैसे इन्कार कर सकते हैं । लेकिन वह मनुष्य के अस्तित्व को कम नहीं समझते । वह यह मानते हैं कि संसार को खुदा ने बनाया, लेकिन इस संसार की सारी रंगीनी मनुष्य के दम से है । अगर मनुष्य न होता तो प्रकृति की सारी रंगीनी बेकार होती । लोहा खुदा ने बनाया है तो लोहे से भिन्न-भिन्न वस्तुएं इन्सान ने बनायी है । अगर पेड़ खुदा की देन है तो उसकी लकड़ियों से तरह-तरह की वस्तुएं मनुष्य ने बनायी है । फूल खुदा की देन है, उसकी सुगन्ध को मनुष्य ने समेटा है । हालांकि खुदा के अस्तित्व को तो दिनकर जी की तरह इकबाल भी मानते हैं लेकिन वह मनुष्य के अस्तित्व को भी किसी तरह कम नहीं समझते ।

अल्लमा इकबाल खुदा को सारे संसार में समाया मानते हैं । परन्तु वह हर वस्तु में खुदा को नहीं देखते ।

- -

1. द्वंद्वगीत - दिनकर - पृ.
2. रश्मिलोक - पृ. 93

अल्लमा इकबाल ने डा॰ निकलसन की फरमाइश पर "असरारे खुदी" की तशरीह अथवा अर्थ बताते हुए कहा है -- "हर अस्तित्व रखनेवाली वस्तु में विशिष्टता पायी जाती है । जीवन पूर्णत: व्यक्तिक रूप रखता है । ईश्वर स्वयं एक व्यक्ति है, संपूर्ण व्यक्ति ।" [1]

इकबाल यह बात जानते हैं कि सूफी खुदा के व्यक्तित्व से इन्कार नहीं करते लेकिन वह संसार की हर वस्तु में खुदा को देखते हैं ।

सूफियों के ईश्वर संबंधी भावना के बारे में इकबाल कहते हैं --

"लेकिन एक सूफी जो ईश्वर के व्यक्तित्व में डूबा हुआ है और अपने समय के धर्मशास्त्रिय वाद-विवादों से अपने आप को अलग रखता है, वह अस्तित्व के दोनों रूपों को मानता है, इनपर आत्मिक रंग चढ़ाता है और संसार को ईश्वर का ही रूप मानता है । यह एक ऐसी महान भावना है जो उपर्युक्त भावनाओं को विपरीत दिशाओं को मिला देती है ।"[2]

इतना सब होते भी-जबकि इकबाल खुदा के फ़िक्र में व्यक्तित्व को मानते हैं कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि वह सारे संसार की वस्तुओं में भी खुदा को फैला मानते हैं --

"मजु मुतलक दरीं देरे मुकाफ़ात
कि मुतलक नीस्त जुज़ नूरूस समावात ।"[3]

इसके अतिरिक्त इकबाल कहीं-कहीं सूफियों की तरह खुदा का तसव्वुर पेश करते हैं --

"मैंने नितान्त सत्य को एक अहं कहा है, यहीं यह बात बढ़ा देनी आवश्यक है कि नितान्त अहं से केवल अहं ही प्रकट हो सकते हैं । नितान्त अहं की सृजनीय शक्ति जिसमें कि कार्य और विचार एक ही अर्थ

---

1. प्राप्त - नकदे इकबाल, मैकश अकबराबादी, पृ॰ 130
2. वही, पृ॰ 31 " " पृ. 130,131
3. वही, पृ॰ 131

रखते हैं, व्यक्तिगत अहं के रूप में कार्य करती है । यह जगत् अपने तमाम रूपों में उस वस्तु की मिकानिकी शक्ति से लेकर जिसे हम अणु कहते हैं, मानवी अहं की भावना की अत्यन्त स्वतंत्र गति तक महान अहं का स्वयं को प्रकट करना है । ईश्वरीय शक्ति का हर कण चाहे उसका अस्तित्व कितना ही तुच्छ हो एक अहं है, लेकिन इस अहंमवाद के प्रकटता की कई श्रृंखलाये हैं । अस्तित्व की विकास यात्रा में यह अहंवाद धीरे-धीरे विकसित होता है यहाँ तक की मनुष्य के रूप में पहुँच कर पूर्णता प्राप्त कर लेता है ।"[1]

जैसा कि पहले भी कहा गया है इकबाल ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं लेकिन मनुष्य को किसी प्रकार कम नहीं समझते । वह खुदा और खुदी द्वारा दी हुयी वस्तुओं से संतुष्ट भी नहीं दिखायी देते । वह तो शिकायत ही करते हैं कि -- "जहाँ तो तेरा बनाया है, फिर मनुष्य इसकी चिन्ता क्यों करें, यह तो मनुष्य का बड़प्पन है कि तेरे बनाये संसार को वह रोशनी दिये हुए है --

"अगर कजरव हैं अन्जुमन आसमाँ तेरा है या मेरा
मुझे फ़िक्रे जहाँ क्यों हो जहाँ तेरा है या मेरा ।
अगर हंगामा हाये शौक से है लामकाँ ख़ाली
खता किसकी है या रब लामकाँ तेरा है या मेरा
मुहम्मद भी तेरा, जिबरील भी, कुरआन भी तेरा
मगर यह हरफेशीरीं तरजुमाँ तेरा है या मेरा
इसी कौकब की ताबानी से है तेरा जहाँ रोशन
ज़वाले आदमे ख़ाकी ज़ियाँ तेरा है या मेरा ।"[2]

वह ईश्वर को समुन्दर मानते हैं इसलिये अपने वजूद को लेकर शिकायत भी करते हैं । ईश्वर को कंजूस कहते हैं । क्योंकि मनुष्य जिस हसियत का हकदार है वह उसे मिली नहीं ।

- -

1. ईश्वर की भावना और पूजा के अर्थ ‹ इकबाल के भाषणों से प्राप्त ›
2. कुल्याते इकबाल - पृ. 298

"तेरे शीशे में मय बाकी नहीं है
बता क्या तू मेरा साकी नहीं है
समुन्दर से मिले प्यासे को शबनम
बखीली है यह रज्जाकी नहीं है ।"[1]

वह ईश्वर के व्यक्तित्व से इन्कार नहीं करते लेकिन उससे अपने भेद को स्पष्ट करने को कहते हैं । इकबाल मनुष्य के छोटे मस्तिष्क को स्वीकार नहीं करना चाहते । वह मनुष्य को फैला देखना चाहते हैं । वह कहते हैं यह सब संसार ईश्वर की ही रचना है --

"इश्क भी हो हिजाब में, हुस्न भी हो हिजाब में
या तो खुद आशकार हो या मुझे आशकार कर
तू है मुहितेबेकराँ मैं हूं ज़रा सी आबजू
या मुझे हम कनार कर या मुझे बे कनार कर
मैं हूं सदफ तो तेरे हाथ मेरे गुहर की आबरू
मैं हूं खज़फ़ तो तू मुझे गौहरे शाहवार कर
नगमये नौ बहार अगर मेरे नसीब में नहीं
इस दमे नीम सोज़ को तायरके बहार कर ।"[2]

अर्थात् इकबाल किसी हालत में अपने व्यक्तित्व को छोटा नहीं बना देखना चाहते । उनका कहना है, वह कतरे को विशाल रूप देना चाहते हैं । अगर वह मोती बने तो वह मोती नायाब मोती हो । वह खुदा से कहते हैं, अपने आपको जाहिर कर या मनुष्य के अस्तित्व का कारण क्या है यह बता ।

- -

1. कुलयाने इकबाल - पृ. 298
2. - वही - पृ. 299

० दिनकर जी के काव्य में ब्रह्म संबंधी रहस्यवादी दृष्टिकोण

रहस्यवाद के सिलसिले में दिनकर जी कहते हैं "धर्म और रहस्यवाद की भावना मनुष्य से छीनी नहीं जा सकती । आदमी ज्ञान के रास्ते पर चले या विज्ञान के रास्ते पर, वह अन्त में एक ऐसी जगह पहुंच जाता है जहाँ बुद्धि काम नहीं करती, जहाँ की अनुभूतियों को हमारी भाषा आसानी से उठा नहीं पाती ।"[1]

यद्यपि विज्ञान उन्नति करता जा रहा है परन्तु भगवान की रहस्यमय सृष्टि को उन्हें भी स्वीकार करना पड़ता है क्योंकि यह बात तो तय है कि सृष्टि का समस्त रहस्य मानव बुद्धि से परे है, इसलिये सभी कवि अनादिकाल से मानव संसार के रहस्य को जानने के लिये बेचैन दिखायी देते हैं, वह बार-बार यह सोचता है कि इस संसार का रचयिता कौन है ? यह सारी सृष्टि माया है । दिनकर के द्वंद्व गीत में जहाँ-तहाँ भगवान के रहस्यमयी रूप के बारे में प्रश्न किया गया है ।

"भेजा किसने क्यों ? कहाँ
भेद अब तक न यह क्षुद्र जान सका
युग युग का मैं पथिक श्रान्त
अपने को अब तक जान न सका
यह अगम सिन्धु की राह और
दिन ढला हाय फिर शाम हुयी
किस कूल लगाऊँ नाव मगर
अपना न अभी पहचान सका ।"[2]

दिनकर जी सृष्टि के कण कण में ईश्वर की तलाश करते हैं उनके काव्य में कहीं-कहीं समर्पण की भावना पायी जाती है । यद्यपि वह भी

---

1. की खोज, शुद्ध कविता, पृ० 247
2. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ० 65

इकबाल की तरह अधिक महत्व कर्म को देते हैं फिर भी इनके यहाँ भगवान के प्रति समर्पण की भावना पायी जाती है । उनके नेत्र ईश्वर के दर्शन के लिए व्याकुल दिखायी देते हैं --

"सुनना श्रवण चाहते अब तक
भेद हृदय जो जान चुका है
बुद्धि खोजती उन्हें जिन्हें जीवन
निज को कर दान चुका है
जो रहे उनका पथ दृग
जिनकी पहचान व्यथा चिन्तन ।"[1]

दिनकर जी ईश्वर को सब कुछ समर्पित कर स्वयं निश्चिंत हो जाना चाहते हैं ।

"मैं चढ़ा चुका निज अहंकार चरणों पर
ले छिपा कहीं कुछ और उसे भी ले लो
चाहो मुझको लो पिरो कहीं माला में
चाहो कन्दुक बना पाँव से खेलो ।"[2]

द्वन्द्वगीत के कुछ प्रसंगों में जीवन और ब्रह्म के बारे में द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है --

"हेर थका यू भेद गगन पर
क्यों उड़ राशि चमकती है
देख रहा मैं खड़ा मग्न
आँखों की तृषा न छकती है ।
मैं प्रेमी तू ज्ञान विशारद
मुझ में तुझ में भेद नहीं

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ. 55
2. - वही - पृ. 56

हृदय देखता उसे तर्क से
बुद्धि न जिसे समझती है ।"[1]

कवि के मन में बार-बार यह प्रश्न आता है कि यदि जगत मिथ्या है तो पाप-पुण्य का बन्धन क्यों ? पूजा उपासना क्यों ?

"जो सृजन असत तो पुण्य-पाप
का श्वेत मोल बंधन क्यों है
स्वप्नों के मिथ्या तन्तु बीच
आबद्ध सत्य जीवन क्यों है
हम स्वयं नित्य निर्लिप्त अरे
तो क्यों शुभ का उपदेश हमें
किस चिन्तन रूप का अन्वेषण
यह आराधना पूजन क्यों है ।"[2]

दिनकर जी ने सृष्टि के कण कण में अजब ढंग से ईश्वर को देखा है ।

"किरणों के दिल चीर देख
सबमें दिनमणि की लाली रे
चाहे जितने भी फूल खिले
पर एक सभी का माली रे ।"[3]

दिनकर जी "हारे को हारे को हरिनाम" में संपूर्ण जगत के समस्त क्रियाकलाप में ईश्वर के दर्शन करते हैं । सुबह-सुबह चिड़ियों का चहचहाना ईश्वर का ही प्रसाद है, कवि उसी ईश्वर में रम जाना चाहता है --

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ. 50
2. - वही - पृ. 62
3. - वही - पृ. 66

"तिल तिल कर हम जल चुके
विरह की तीव्र आग कुछ मंद करो
सहने की अब सामर्थ्य नहीं
लीला प्रसार यह बन्द करो
विन्तित भ्रम जाल समेट धरो
हम खेल खेलते हार चुके
निर्वापित करो प्रदीप शून्य में
एक तुम्हीं आनन्द करो ।"[1]

यही नहीं कवि प्रकृति की हर वस्तु में भगवान के दर्शन करता हुआ कभी परेशा सा हो जाता है कि वह इस हरी भरी धरती का सुख अधिक दिन नहीं भोग पायेगा । उसे रहस्मय संसार से वापस जाना है --

"प्रभु के दिये हुये सुख इतने
है वीकार्ण धरती पर
भोग सके जो इन्हें जगत में
कहीं अभी नर इतने ।"[2]

जैसा कि पहले ही कहा है कि दिनकर जी ब्रह्म के सर्वव्यापक रूप को स्वीकार करते हैं वह पृथ्वी के प्रत्येक कण प्रत्येक प्राणी में ब्रह्म का ही रूप देखते हैं केवल इतना ही नहीं दिनकर जी प्रत्येक भव्य पुरूष, प्रत्येक सुंदर नारी में भी ब्रह्म की काया देखते हैं, कहते हैं --

"जो भी कोई हेलन
शकुन्तला या रूपमती आती है
अपने रूप और माधुर्य से
ईश्वरीय विभूति की झलक दिखाती है ।

- -

1. इन्द्रगीत - दिनकर, पृ. 16
2. उर्वशी - दिनकर, पृ.

जो भी कोई पुरुष निष्पाप है, निष्कलंक है, निडर है
उसे प्रणाम करो ।
क्योंकि वह छोटा-मोटा ईश्वर है ।"[1]

जबकि इकबाल मनुष्य और ईश्वर में भेद करते दिखायी देते हैं और भगवान की देन से संतुष्ट भी नहीं, वह दिनकर की तरह यह नहीं कहते कि भगवान ने मनुष्य को धरती पर बहुत सुख दे रखा है ।

0 इक़बाल के काव्य में ब्रह्म संबंधी रहस्यवादी दृष्टिकोण

इकबाल खुदा के अस्तित्व से इन्कार नहीं करते । प्रकृति की रहस्यमयी वस्तुओं को देखकर इकबाल के मन में बार-बार यह ख़याल आता है कि प्रकृति के सुंदर दृश्य किसके द्वारा संचालित है, इकबाल तो यह भी मानते हैं कि अगर मनुष्य को प्रकृति जैसी वस्तु न मिलती तो उसकी अपनी सारी क्षमता धरी की धरी रह जाती । मनुष्य प्रकृति से बहुत कुछ सीखता है । प्रकृति को देखकर खुदा के प्रति रहस्यमय दृष्टिकोण इक़बाल के यहाँ इस प्रकार पाया जाता है --

"पालता है बीज को मिट्टी की तारीकी में कौन
कौन दरयाओं की मौजों से उठाता है सहाब
कौन लाया खोज कर पश्चिम से बादेसाज़गार ।
खाक यह किस की है किस का है यह नूरे आफ़ताब
किस ने भर दी मोतियों से खोशाये गन्दुम की जेब
मौसमों को किस ने सिखलायी है खुये इन्कलाब ।"[2]

दिनकर जी की तरह इकबाल भी प्रकृति के रहस्य और उससे ब्रह्म के संबंध को जानने के लिये बेचैन दिखायी देते हैं वह भी बार-बार सोचते हैं प्रकृति की रंगीनी क्या है । संसार क्यों बना । इसमें मनुष्य का अस्तित्व

- -

1. उर्वशी - दिनकर, पृ.
2. रूहे इक़बाल - डॉ० यूसुफ हुसैनखान, पृ. 248

क्या है ? शायर शबनम से पूछता है गुलशन में चिड़ियों की चहचहाहट का उद्देश्य क्या है, सुबह की ठंडी हवा कौन चला रहा है । मनुष्य की आंखें किस की तलाश में भटक रही है ।

"गुल गुफ़्त कि ईंहगामये मुरग़ाने चमन चीस्त ?
ईं अन्जुमन आरास्ता बालाये शजर चीस्त ?
ईं ग़ीरो ज़बर चीस्त ?
पायाने नज़र चीस्त ?
ख़ारे गुलेतर चीस्त ?
तू कीस्तियो मन कियम ईं सोहबते मा चीस्त ?
बर शाख़े मन ईं तायरके नग़मा सरा चीस्त ?
मक़सूदे नवा चीस्त ?
मतलूबे सबा चीस्त ?
ईं कोहना सरा चीस्त ?।"[1]

अर्थात् गुलाब ने कहा कि बाग की चिड़ियां क्यों चहचहा रही है, पेड़ पर यह कैसी सभा सजी है, यह ऊंच-नीच कैसी है, दृष्टि का अन्त कहाँ तक है सुंदर गुलाब का कांटा क्या चीज़ है, तू कौन है और मैं कौन हूं । हमारी बात-चीत कैसी है । मेरी डाली पर गाना गाती हुयी चिड़ियां कैसी है गाने का उद्देश्य क्या है, और सुबह की ठंडी हवा का लक्ष्य क्या है और यह पुरानी धर्मशाला क्या है । अर्थात् यह संसार क्या है ।"[2]

प्रकृति और संसार दिशाओं और कारणों का रहस्य है । मनुष्य कायनात के बारे में जिज्ञासा रखते हुये उस हकीकत की खोज में बेचैन रहता है जिसके कारण मनुष्य का अस्तित्व है । मनुष्य प्रकृति के विभिन्न रहस्यों को जानने की जिज्ञासा रखता है जिनका कोई अन्त नहीं और

- -

1. रूहे इकबाल - डॉ० यूसुफ़ हुसैन खान, पृ० 261

जिनमें वह समस्त गुण मौजूद है जो मनुष्य अपने अन्दर पैदा करना चाहता है। इकबाल भी यही सोचते हैं कि, यह प्रकृति का रंगा-रंगी, बहते दरिया, लहलहाती हरियाली, सबज़ा सब किस के चमत्कार का फल है। अगर कोई है तो उसकी जीत हम सब से ऊपर है, मनुष्य की यह फितरत (गुण) महान है और उसमें प्रकृति को देखकर जो सलाहियते आते हैं कहीं दूर से आती है। इकबाल कहते हैं --

"ज़िन्दगी अज़ लज़्ज़ते गैबो हुजूर
बस्त नक्शे ईं जहाने निज़द व दूर ।"[1]

अर्थात् जीवन की सौन्दर्यमयी-चीजे कहीं अनजानी जगह से हमें मिलती हैं।

इकबाल का कहना है विज्ञान द्वारा यह पता चलता है कि -- एनरजी (ऊर्जा) अनन्त है उसके प्रभाव द्वारा ही उसका पता लगा सकते हैं। यह संसार भौतिक है, संसार में जो कुछ हो रहा है अगर वह बेमकसद है तो उसे देखकर मानव मन में शऊर (समझने की शक्ति) कैसे पैदा हो गयी। अर्थात् प्रकृति से मनुष्य का गहरा संबंध है। इकबाल ईश्वर के रहस्यमय रूप को इस प्रकार व्यक्त करते हैं --

"आलमे आबो खाको व बाद
सिर्रे अयाँ है तू कि मैं ?
वह जो नज़र से है निहाँ उसका
जहाँ है तू कि मैं ?
वह शबे दर्दो सोज़ो ग़म कहते हैं
ज़िन्दगी जिसे ।
इसकी सहर है तू कि मैं इसकी अज़ाँ है तू कि मैं ?
किस की नमूद के लिए शामो सहर है गर्मे सैर
शान्ये रोज़गार पर बारे गरां है तू कि मैं?।"[2]

---

1. रूहे इकबाल - पृ. 262
2. कुल्याते इकबाल, पृ.

प्रकृति को मनुष्य अपने अनुसार ढाल लेता है । यहाँ मनुष्य की महानता है लेकिन इसकी एक हद होती है जिसके आगे मनुष्य कार्य नहीं करते । फिर कौन है जो प्रकृति का संचालन करता है । इकबाल परब्रह्म को ही जगत का संचालन करता मानते हैं और प्रकृति में उसके प्रभावों को देख सकता है । इकबाल प्रकृति की रंगीनी में उलझ कर नहीं रहना चाहते । उन्हें लगता है अभी कायनात (सृष्टि) में बहुत कुछ बाकी है ।

"यह कायनात अभी नातमाम है शायद
कि आ रही है दमादम सदाये कुन फ़यकूं ।"[1]

इकबाल भी सुबह के मन्जर में डूब जाते हैं, वह सोचते हैं कि मन्जर चाँद अपनी कुर्बानी देता है तब सूरज निकलता है, अर्थात इसके पीछे किस रहस्यमयी शक्ति का हाथ है --

"सुबह खुरशीदे दरखशाँ को जो देखा मैंने
बज़्मे मामूरये हस्ती से यह पूछा मैंने
परतवे मेहर के दम से है उजाला तेरा
सीमे सय्याल है पानी तेरे दरयाओं का
मेहर ने नूर का ज़ेवर तुझे पहनाया है ।
तेरी महफ़िल को इसी शमा ने चमकाया है ।"

..   ..

सुर्ख़ पोशाक है फूलों की दरख़्तों की हरी
तेरी महफ़िल में कोई सब्ज़ कोई लाल परी
क्या भली लगती है आँखों को शफ़क़ की लाली
मये गुलरंग ख़ुमे शाम में तूने डाली ।"[2]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ.
2. - वही - पृ. 54-55

अर्थात् दिनकर की तरह इकबाल भगवान के रहस्य को प्रकृति के द्वारा व्यक्त करते हैं। अर्थात् प्रकृति का रचयिता कौन है ? अन्तर यह है कि दिनकर इस प्रकृति सौन्दर्य में खो जाना चाहते हैं, वह वापस संसार में नहीं जाना चाहते, लेकिन इकबाल प्रकृति रूप से बलिदान की भावना पा रहे हैं।

o आत्मा का परमात्मा में विलय

अगर हम समग्र हिन्दी साहित्य का अध्ययन करें और हिन्दू धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त करें तो हम देखते हैं कि हिन्दू धर्म में मनुष्य की आत्मा हमेशा अपने परमात्मा से मिलने के लिए व्याकुल दिखायी देती है। हिन्दू धर्म में आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हैं यह भावना हमें आदिकाल के साहित्य से लेकर आज तक दिखाई देती है। हम कबीर के यहाँ देखें या रैदास के यहाँ, सूर के यहाँ देखें अथवा तुलसी दास के यहाँ हर कवि यह बात मानते हैं। निर्गुण कवि कबीरदास जी भी जो एक ईश्वरवाद को मानते थे वे आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हैं।

"जल में कुंभ, कुंभ में जल बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जल ही समाना इहि तथ कहत ज्ञानी।"

दिनकर जी के काव्य में यह बात उतनी प्रौढ रूप से तो नहीं है क्योंकि वह मनुष्य के अपने अस्तित्व को अधिक महत्व देते हैं। फिर भी दिनकर जी के काव्य में आत्मा (जीव) अपने पैदा करनेवाले परमात्मा से मिलने के लिए व्याकुल दिखायी देती है वह भी कहीं-कहीं शरीर को महत्व नहीं देते हैं।

इसलिए दिनकर जी यह मानते हैं कि मृत्यु के उपरान्त आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है ।

"जिन्दगी न जन्म के साथ पैदा होती है
न मृत्यु के साथ मरती है
जन्म लेकर वह जिसे खोजती है
मरकर भी उसी की तलाश करती है ।"[1]

कवि सोचता है मृत्यु ही एक सत्य है । संसार तो क्षणिक है, मृत्यु ही मनुष्य को समस्त दुःखों से छुटकारा दिला सकती है क्योंकि मृत्यु के उपरान्त मनुष्य समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाता है ।

"बँध काट , बोला,यों धीरे मुक्ति-दूत जीवन का
विहग खोलकर पंख आज उड़जा निर्बन्ध गगन में
आज कहाँ की लाज बावली?खोल चीर-पट तन से
रहे न टुक व्यवधान, नग्न घुल-मिल जा कनक-किरण में ।"[2]

कवि शरीर को दीपक मानते हैं जब तक दीपक में तेल है, दीपक जलेगा इसी तरह इस शरीर रूपी दीपक में जब तक आत्मा है, शरीर रहेगा । लेकिन आत्मा के शरीर से निकलते ही मनुष्य के सभी दुःखों का अन्त हो जायेगा । कवि विरह की भावना को भी हंस कर झेलना चाहता है --

"जीवन का यह दर्द मधुर है
तू न व्यर्थ उपचार कर
किसी तरह से ऊषा का हिमटिप
जलने दे दीपक मेरा ।"[3]

- -

1. हरि को हरि राम, दिनकर - पृ. 55
2. रसवन्ती - दिनकर, पृ. 67
3. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ. 34

दिनकर की आत्मा केवल परमात्मा में विलीन नहीं होना चाहती बल्कि आत्म-समर्पण का भाव भी पाया जाता है ।

"मैं चढ़ा चुका अहंकार चरणों पर
हो छुपा कहीं कुछ और उसे भी ले लो
चाहो मुझको लो पिरो कहीं माला में
चाहो तो कन्दूक बना पाव से खेलो ।"[1]

कवि का मन हमेशा भगवान की ओर जाने के लिए बेचैन दिखायी देता है ।

"उछल उछल कर बह रहा अगम की
ओर अभय इन प्राणों का ।"[2]

"संस्कृत के चार अध्याय" में दिनकर जी कहते हैं --

'भक्ति पहले व्यक्ति के भीतर जन्म लेती है मनुष्य का हृदय किसी पर न्योछावर होना चाहता है । आदमी किसी का पाँव पकड़ निश्चिंत हो जाना चाहता है यही भावना जब ईश्वर उन्मुख हो जाती है तब भक्ति बन जाती है ।"[3]

आत्म समर्पण के लिये बेचैन कवि संसार से परेशान दिखायी देता है ।

"दिल जले देहियों को केवल
लीला कहकर संतोष नहीं
ओ रचनेवाले बता हमें
आखिर क्यों यह जंजाल रचा ।"[4]

---

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ. 34
2. रसवन्ती - दिनकर, पृ. 91
3. संस्कृति के चार अध्याय, दिनकर, पृ. 167
4. द्वन्द्वगीत, पृ. 29

0 इकबाल के यहाँ आत्मा परमात्मा की स्थिति

उर्दू शायरी में जहाँ तहाँ आत्मा के परमात्मा में विलीन होने की स्थिति पायी जाती है । मशहूर उर्दू शायर गालिब कहते हैं --

"इशरते कतरा है दरया में फ़ना हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना ।"

लेकिन इकबाल आत्मा को परमात्मा में विलीन नहीं करना चाहते । इकबाल तो कहते हैं --

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है ।"[1]

ऐसा शायर अपनी खुदी को कैसे मिटा सकता है । इकबाल आत्मा के अस्तित्व को बनाये रखना चाहते हैं । वह दिनकर जी की तरह यह नहीं कहते कि इस संसार में इतने सुख हैं कि जिन्हें मनुष्य भोग नहीं सकता ।

बल्कि वह तो खुदा के सामने खड़े उससे शिकायत करते दिखायी देते हैं --

"तेरे शीशे में मय बाकी नहीं है, बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है ।
समुंदर से मिले प्यासे को शबनम, बखीली है यह रज़्ज़ाकी नहीं है ।"[2]

इकबाल स्वयं को बहुत महत्त्व देते हैं और सभी की तरह वह भी यही मानते हैं कि अगर लोहे को आग में दहकाया जाए तो लोहे में आग के सभी गुण आ जायेंगे परन्तु लोहा लोहा रहेगा । इकबाल कतरे के अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहते हैं उसे वह दरया में मिला देना नहीं चाहते बल्कि उस कतरे को विशाल बनाकर उसके अस्तित्व को महत्त्व देते हैं । इस प्रकार इकबाल अपने व्यक्तित्व के विकास में प्रसन्न हैं ।

"तू है मूहिते बेकराँ मैं हूं ज़रा सी आब जू
या मुझे हम कनार कर या मुझे बे कनार कर ।"[3]

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ. 347   2. कुलयाते इकबाल - पृ. 298
3. कुलयाते इकबाल - पृ. 299

वह अपने आप को किसी हालत में कम नहीं समझते । इकबाल का कहना है तूने मुझे संसार में अपना इच्छा से भेजा अब मैं यहां कुछ करना चाहूंगा । यह संसार क्रियाशील और विशाल है अब मैं यहां से तुरन्त ही वापस नहीं आना चाहता तुझे मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी अर्थात् जिस प्रकार दिनकर जी के काव्य में समर्पण की भावना पायी जाती है इकबाल के यहां नहीं । वह अपने आप को खुदा के हवाले नहीं करना चाहते --

"बागे बहिश्त से मुझे हुक्मे सफ़र दिया था क्यों
कारे जहां दराज़ है अब मेरा इन्तेज़ार कर
रोज़े हिसाब जब मेरा पेश हो दफ़्तरे अमल
आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर ।"[1]

इकबाल तो मनुष्य को महान व्यक्तित्व समझते हैं । वह खुदा से कहते हैं मैं कसूरवार हूं लेकिन फिर भी कहूंगा कि मनुष्य बुरा है फिर भी तेरे बनाये संसार को आबाद किये हुए है, तेरे संसार को फरिश्तों ने तो आबाद नहीं किया यही नहीं खुदा ने जो कुछ मनुष्य को दिया है उससे इकबाल प्रसन्न भी नहीं दिखायी देते --

"यह मुश्ते खाक यह सर सर यह वुसअते अफ़लाक
करम है या कि सितम तेरी लज़्ज़ते ईजाद
कसूरवार गरीबुद दयार हूं लेकिन
तेरा ख़राबा फ़रिश्ते न कर सके आबाद
मक़ामे शौक़ तेरे क़ुदसियों के बस का नहीं
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हैं ज़्याद ।"[2]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 299
2. कुल्यात इकबाल, पृ. 300

तात्पर्य यह है कि कहीं-कहीं इकबाल खुदा की जात में अपने आप से मिला देना चाहते हैं लेकिन अधिकतर शायरी में वह अपने अस्तित्व को अलग बनाये रखना चाहते हैं और भगवान की बनायी गयी सभी जीव जन्तुओं में इकबाल मनुष्य को सर्वोत्तम कृति समझते हैं ।

0 दिनकर जी और अल्लमा इकबाल के काव्य में जगत संबंधी दृष्टिकोण

दिनकर जी के काव्य में जगत के क्षणभंगुरतावादी दृष्टिकोण --

इकबाल ने कहा है --

"यह घड़ी महशर की है तू अरशये महशर में है ।"[1]

अर्थात् जगत् का निर्माण शायद मनुष्य के लिये ही किया गया है इसके अलावा भारत के अधिकतर धर्मों में ब्रह्म को सत्य और जगत को मिथ्या बताया गया है । दिनकर जी ने भी कहीं-कहीं जगत के क्षणभंगुरता संबंधी गीत गाये हैं ।

रेणुका में दिनकर जी संसार के प्रसाद को देखकर डर जाते हैं --

"देख क्षण में सहमता हूँ अरे देख
व्यापिनी निस्सारता संसार की
एक पल ठहरे जहाँ जग हो अभय
खोज करता हूँ उसी आधार के ।"[2]

दिनकर जी ने अपने शुरू के काव्य में जगत की अनित्यता तथा क्षणभंगुरता का प्रतिपादन करते हैं --

"आदमी मरता नहीं,
लौटकर अपने घर जाता है
कौन कहता है कि वह
अनिस्तत्व में खो जाता है ।"[3]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 260
2. रेणुका, दिनकर, पृ. 85
3. हारे को हरिराम, पृ. 33

दिनकर जी कहीं-कहीं जगत की नश्वरता से बहुत व्याकुल दिखायी देते हैं। उन्हें लगता है प्रकृति की यह सारी रंगीनी क्षणिक है संसार नश्वर है।

"न खिलता उपवन में सुकुमार
सुमन कोई अक्षय छविमान
क्षणिक निशि का ही एक श्रृंगार
उषा की क्षणभंगुर मुस्कान।"[1]

वह नश्वरता के भय से मुक्त होना चाहते हैं। वह ऐसी वस्तु की तलाश करना चाहते हैं जो उन्हें इस भय से मुक्ति दिला सके।

"देख क्षण-क्षण में सहमता हूं अरे
व्यापिनी निस्सारता संसार की
एक पल ठहरे जहाँ जग हो अभय
खोज करता हूं उसी आधार की।"[2]

कवि इस बात पर विश्वास प्रकट करते दिखायी देते हैं कि मनुष्य को यह संसार छोड़कर जाना है लेकिन दिनकर जी का यह भी विश्वास है कि मनुष्य दूसरा जन्म लेकर फिर इसी संसार में वापस आयेगा जबकि इकबाल पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करते वह इस्लाम के अनुसार यह मानते हैं कि मनुष्य का जन्म एक बार होता है --

"मैं स्वयं चिता रथ पर चढ़
निज देश चला जाऊंगा
सपनों की नगरी में इस
जाने फिर कब आऊंगा।"[3]

---

1. रेणुका - दिनकर, पृ. 164
2. - वही - पृ. 85
3. - वही - पृ. 119

इस प्रकार के भाव दूसरी जगह दिनकर जी इस प्रकार व्यक्त करते हैं --

"जीवन ही कल मृत्यु बनेगा
और मृत्यु ही नव जीवन
जीवन मृत्यु बीच तब क्यों
द्वन्द्वों का उत्थान पतन ।"[1]

कवि यह मानते हैं कि जगत् नश्वर है उसका शरीर नश्वर है । वह कुछ दिन के लिए यहां आया है । वह इस जगत में रहकर, वह यहाँ की सुंदर-सुंदर वस्तुओं में रम जाना चाहता है, उनका भलिभांति उपभोग करना चाहता है । मृत्यु का भय पूरी तरह भुला कर वह सुंदर वस्तुओं में लीन हो जाना चाहता है ताकि वह संसार से संतुष्ट जा सके ।

"यात्री हूं मैं दूर देश का पल भर यहाँ ठहर जाऊं
थका हुआ हूं सुंदरता के साथ बैठ मन बहलाऊं
एक घूंट बस हाये ममता छोड़ चलूं कैसे
दूर देश जाना है लेकिन यह सुख रोज कहाँ पाऊं ।"[2]

कवि को इस बात का दुःख है कि वह संसार का सुख ज्यादा नहीं भोग सकता उसे जगत् सुंदर दिखायी देता है । इस संसार की रंगीनी उसे अपनी ओर आकर्षित करती है परन्तु वह यहाँ एक यात्री के समान आया यह बात भी दिनकर जी मानते हैं --

"कलिके मैं चाहता तुम्हें जितना यह भ्रमर नहीं
अरी तटी की धूप मधुर तू उतनी जितना अधर नहीं
किसलय तू भी मधुर चन्द्रवदना निशि तू मादक रानी
दुःख है केवल इस आनन्द कुंज में मैं ही केवल अमर नहीं ।"[3]

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर, पृ. 36
2. - वही - पृ. 30
3. रेणुका - दिनकर, पृ.

प्रकृति के सभी उपकरण क्षणभंगुर होते हैं । कवि को प्रकृति की हर तरफ विनाश की झलक दिखायी देती है --

"न खिलता उपवन में सुकुमार
सुमन कोई अक्षय छविमान
क्षणिक निशिका हारक श्रृंगार
उषा की क्षणभंगुर मुस्कान ।"[1]

जगत की सुंदरता का वर्णन भी दिनकर जी ने जहाँ तहाँ किया है । वह सोचते हैं कि जब मनुष्य को मरना ही है, तो वह जीवन का पूर्णतया आनन्द उठाकर क्यों न मरे । स्वर्ग में क्या इससे ज्यादा सुख मिलेगा इतनी सुंदर परियाँ मिलेगी ।

"फूलों का यह देश मनोरम, कितना सुंदर हैरानी
इससे मधुर स्वर्ग, परियाँ तुझसे भी क्या सुंदर कल्याणिनी
अरे मरूँगा कल तो फिर आज नहीं रसधार बहे
फूल फूल पर फिरे न क्यों कविता तितली सी दीवानी ।"[2]

कवि चाहता है मानव जीवन का कोई अन्त न हो ।

"आह चाहता मैं क्यों जाये जग से कभी वसन्त नहीं
आशा भरे स्वर्ण जीवन का किसी रोज हो अन्त नहीं ।"[3]

किन्तु संसार या शरीर की नश्वरता से कवि अपने बाद के काव्य में आक्रान्त नहीं दिखायी देता । रश्मि रथी और कुरूक्षेत्र में मृत्यु का डर मानव मन में नहीं रहता ।

"इतना भेद अवश्य युधिष्ठिर दोनों में होता है
हंसता एक मृत्यु पर, नभ में एक खड़ा रोता है ।"

---

1. रेणुका - दिनकर, पृ.
2. - वही - पृ. 104
3. कुरूक्षेत्र, दिनकर, पृ.

0 इकबाल की शायरी में जगत और उसका क्षणभंगुरता संबंधी दृष्टिकोण

खुदा की बनायी गयी वस्तुओं में जगत भी है जो शायद मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति के लिए है। दिनकर जी जगत और उसकी रंगीनी को बहुत महत्व देते हैं जबकि इकबाल मनुष्य को क्योंकि संसार की सारी रंगीनी मनुष्य के बगैर अपूर्ण रहता है। इकबाल का यह कहना है कि कायनात की हर चीज उस वक्त तक पूर्ण नहीं कही जाएगी जब तक मनुष्य उसे अपने ढाँचे में ढाल न लें।

"यह कायनात अभी नातमाम है शायद
कि आ रही है दमा दम सदाये कुन फयकू।"[1]

दिनकर जी यह मानते हैं कि इस जगत में मनुष्य बार-बार जन्म लेता है लेकिन इकबाल यह मानते हैं कि संसार में मनुष्य एक बार जन्म लेता है और उसी एक जन्म में उसे अपने आप को अमर बना लेना चाहिए। उसे इस जगत में कुछ काम करना चाहिए।

लेकिन इकबाल दिनकर ही की तरह जगत को बहुत सुंदर मानते हैं और क्षणभंगुर भी। उनका भी यही कहना है इस जगत में जिधर नजर उठाओ सुंदरता ही सुंदरता दिखायी देती है और अगर वह इस सुंदरता में भटक गया तो उसे चैन ईश्वर को याद करने में ही मिलता है।

"निगह उलझी हुयी है रंगोबू में
खिरद खोयी गयी है चार सू में
न छोड़ ऐ दिल फुगाने सुबह गाही
अमाँ शायद मिले अल्लाह हू में।"[2]

---

1. कुल्याते इकबाल - पृ. 320
2. - वही - पृ. 375

इकबाल संसार की विशालता को स्वीकार करते हैं और यह भी मानते हैं कि खुदा ने मनुष्य को जन्म दिया है। जगत की पूर्ति के लिये मनुष्य को चाहिये कि वह इस संसार में कर्म करें --

इकबाल जगत को रंगीनियों में खोना नहीं चाहते बल्कि उससे प्रेरित होकर कर्म में लीन होना चाहते हैं। वह खुदा से कहते हैं --

"बागे बहिश्त से मुझे हुक्मे सफर दिया था क्यों
कारे जहाँ दराज़ है अब मेरा इन्तेज़ार कर।"[1]

इकबाल जगत के बारे में सोचते, मौत से परेशान नहीं होते मौत भी एक हकीकत है वह यह मानते हैं --

"नज़र अल्लाह पे रखता है मुसलमां हर दम
मौत क्या है फ़क़त आलमे फ़ानी का सफ़र।"[2]

हाँ वह जगत की क्षणभंगुरता पर विश्वास करते हैं और कयामत पर भी जिस दिन सारे संसार का विनाश हो जाएगा इसी लिए कहते हैं कि कयामत के दिन मनुष्य को शर्मसार न होना पड़े, इसलिए वह हमेशा अच्छे कर्म को --

"रोज़े हिसाब जब मेरा पेश हो दफ़्तरे अमल
आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर।"[3]

इकबाल चमन की रंगीनियों का वर्णन करते हैं लेकिन साथ ही यह भी कहते हैं कि ये रंगीनी तब ही पूर्ण कहलाने योग्य है जब वह मनुष्य के अन्दर गर्मी पैदा कर सके।

---

1. कुल्यात इकबाल, पृ. 299
2. - वही - पृ.
3. - वही - पृ. 299

"चमन में रखते गुल शबनम से तर है
सब्ज़ है सबजा है बादे सहर है
मगर हंगामा हो सकता नहीं गर्म
यहाँ का लाला बे सोज़े जिगर है ।"[1]

दिनकर जी की तरह इकबाल भी जगत के बारे में बताते हुए सुबह का वर्णन करता है ।

"उजाला जब हुआ रुख़सत जबीं ने शब की अफ़शाँ का
नसीमें जिन्दगी पैगाम लायी सुबह खन्दा का
जगाया बुल बुले रंगीं नवा को आशयाने ने
किनारे खेत के शाना हिलाया इसने दहकाँ कर ।"[2]

इकबाल भी दिनकर जी की ही तरह फितरत की रंगीनियों में खो जाना चाहते हैं । कहीं-कहीं तो इकबाल भी खुदा बनकर जगह जगत में देखने लग जाते हैं --

"चश्मये कोह को दी शोरिशे कुल ज़ुम मैंने
और परिन्दों को किया महवे तरन्नुम मैंने
सर पें सबज़े के खड़े होके कहा कुम मैंने
गुन्चये गुल को दिया जोके तबस्सुम मैंने ।"[3]

अर्थात् प्रकृति की सारी रंगीनी खुदा के दम से है परिन्दे को चहचहाने की आरज़ू उसी की दी है, फूलों को खिलने की शक्ति उसी की दी हुयी है हालाँकि यह बात वह पर्वत से कहलवाते हैं परन्तु पर्वत में भी उसी की परछायी दिखायी देता है --

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 377
2. - वही - पृ. 6
3. - वही - पृ. 28

इस प्रकार जगत को इकबाल नश्वर मानते हैं लेकिन उसकी रंगीनी में वह खो जाना चाहते हैं परन्तु वह जगत के सामने मनुष्य को अधिक महत्व देते हैं क्योंकि जगत की सारी रंगीनी मनुष्य के बगैर बेकार है ।

o डॉ० इकबाल और रामधारी सिंह "दिनकर" के काव्य में मानव एवं उसकी महानता संबंधी दृष्टिकोण

इकबाल की शायरी विशिष्टता लिए हुए दिखायी देती है । यूं तो इकबाल एक दार्शनिक कहे जाते हैं लेकिन मूलतः उन्हें इन्सान और इन्सान की दोस्ती का शायर अथवा कवि कहा जा सकता है । मनुष्य के बारे में उसकी समस्याओं के बारे में तरह-तरह के विचार उनकी शायरी के विशेष अंग है । कहा जाता है कि इकबाल खुदा का शायर है उनके खुदा संबंधी जो विचार मिलते हैं उनके महामानव संबंधी जो विचार मिलते हैं उन सबकी जड़ है इकबाल का मनुष्य से गहरा लगाव और मनुष्यता की तरफ इकबाल का झुकाव और यही कारण है कि इकबाल जीवन और सारी कायनात अथवा सृष्टि में मनुष्य को उसके महत्व का एहसास दिलाते हुए उसे अपने पैरों पर खड़े रहना और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ना सिखाते हैं । वह हर तरह से मनुष्य को उसकी निजी और सामाजिक जिन्दगी का एहसास दिलाते हैं । इकबाल सृष्टि की समस्त देन में मनुष्य को सबसे महान बताते हैं इसलिए इकबाल का मनुष्य निज अपने लिए नये रास्ते तलाश करता है । वह ऊंचा से ऊंची उड़ान को अपने जीवन का आदर्श बनाता है ।

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि इकबाल सृष्टि की देन में मानव को सबसे महान मानते हैं और इस बात का जिक्र इकबाल की शायरी में बहुत रंगीनी और लुभावने अंदाज में आया है । इकबाल की शायरी में मनुष्य की महानता का जो जिक्र किया गया है उसका

पृष्ठभूमि में कुरआन की वे आयत है जिसमें आदम अर्थात मनुष्य के सृजन और खुदा की तरफ से इसे इस धरती पर आदम को अपने प्रतिनिधि बनाने का विवरण है और इसी विवरण के साथ आदम के ज्ञान की महानता और इस महानता के कारण फरिश्तों के सिज़दे और शैतान का सिजदे से अस्वीकार करने का विवरण और दूसरी वह आयते हैं जिनमें इसको सृष्टि को ईश्वर की सृष्टि के अनुसार बताया गया है । कहीं इसके सृजन के बारे में यह कहा गया है कि सबसे अच्छे ढंग से हुआ है कहीं उस जिम्मेदारी का विवरण है जिसका बोझ धरती और आकाश न उठा सके परन्तु उस जिम्मेदारी को मनुष्य ने उठा लिया और कहीं मानव के कर्म को पाप और पुण्य की नींव मानकर इस सत्य को दर्शाया है कि मनुष्य के सर्जनीय कर्म में वातावरण को अपने उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनाने और उसे अपने अनुरूप ढाल लेने की क्षमता है ।

यूं तो इकबाल के यहाँ मनुष्य और उसकी महानता के विचार जगह-जगह मिल जाते हैं लेकिन उनकी एक प्रसिद्ध नज़्म में इन विचारों का निचोड़ मौजूद है इसका शीर्षक है 'फरिश्ते आदम को बशारत से रुखसत करते हैं :--

"अता हुयी है तुझे रोज़ो शब की बेताबी
खबर नहीं कि तू खाकी है या कि सीमाबी
सुना है खाक से तेरी नामूद है लेकिन
तेरी सरिश्त में है कौकबो व महताबी
जमाल अपना अगर ख्वाब में भी तू देखे
हज़ार होश से खुश्तर तेरी शकर ख्वाबी
गिराँ बहा है तेरा गिरय्ये सहर गाही
इसी से है तेरे नख़ले कुहन की शादाबी
तेरी नवा से है बेपर्दा ज़िन्दगी का ज़मीर
कि तेरे साज़ कि फितरत ने की मिज़राबी ।"[1]

---

1. कुल्याते इक़बाल, पृ. 423

इस नज्म से मनुष्य क्या है ? कितना महान है पता चलता है । जबकि फरिश्ते स्वयं मनुष्य में दिन रात ज्ञान एवं कर्म का तड़प देखते हैं और जिसकी वाणी से स्वयं उनको जीवन का रहस्य उद्घाटित होता दिखायी देता है --

ऊपर की कहानी में मनुष्य की कहानी का वह अध्याय है जिसमें फरिश्ते मनुष्य को जन्नत अर्थात् स्वर्ग से बिदा करते हुए स्वयं उसको ज्ञान और उसका कर्म भूमि का मार्ग बताते हैं लेकिन इस कहानी का दूसरा अध्याय है जो इस प्रकार प्रारंभ होता है कि धरती मनुष्य का स्वागत करती है और जिस परिस्थितियों का उसे सामना करना पड़ता है उसका विवरण भी इकबाल बहुत ही अच्छे अंदाज में इस प्रकार करते हैं ।

"खोल आँख ज़मीं देख, फलक देख, फिज़ा देख
मशरिक से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख
उस जलवये बेपर्दा को पर्दों में छिपा दे
अय्यामे जुदायी के सितम देख जफा देख
बेताब न हो मारकये बीमो रिजा देख ।

हैं तेरे तसर्रुफ में यह बादल यह घटायें
यह गुम्बदे अफ़लाक, यह खामोश फ़िज़ायें
यह कोह, यह सहरा, यह समुन्दर, यह हवायें
थीं पेशे नज़र कल तो फ़रिश्तों की अदायें
आइनयेअय्याम में आज अपनी अदा देख ।

समझेगा ज़माना तेरी आँखों के इशारे
देखेंगे तुझे दूर से गर्दूं के सितारे

नापैद तेरे बहरे तख़य्युल के किनारे
पहुँचेंगे फ़लक तक तेरी आहों के शरारे
तमीरे ख़ुदी कर असरे आहे रसा देख।
ख़ुर्शीदे जहाँ ताब की ज़ौ तेरे शरर में
आबाद है एक ताज़ा जहाँ तेरे हुनर में
जचते नहीं बख़्शे हुये फिरदौस नज़र में
जन्नत तेरी पिन्हाँ है तेरे ख़ूने जिगर में
अय पैकरे गिल काविशे पैहम की जज़ा देख।"[1]

यहाँ इकबाल के कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य को भिक्षा में मिला स्वर्ग बेकार है। उसे अपने बाहु बल एवं कर्म से एक जन्नत बनाना चाहिए। इकबाल मानते हैं कि मनुष्य में वह सारे गुण हैं कि वह संसार को स्वर्ग बना सकता है। उसे अपने उद्देश्य के अनुरूप ढाल सकता है जब कि ख़ुदा की बनायी दूसरी सारी वस्तुओं में यह गुण विद्यमान नहीं है।

इकबाल के विचार में जैसा कि नज़म से स्पष्ट है मनुष्य का जीवन सुंदर और मन-मोहक होने के अतिरिक्त संघर्ष से भरा हुआ है। वह निर्माण की भावना से प्रभावित होकर इस कर्म भूमि में कूद पड़ता है और प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने के लिए संघर्ष करता है इसके फलस्वरूप प्रकृति के समस्त रूप उसके सामने झुक जाते हैं और जीवन उसके इशारे पर चलता है। यही मनुष्य की आत्मा अथवा ख़ुदी का कमाल है और यही इकबाल के विचार में मानव की महानता का लक्ष्य है।

इकबाल का मर्दे मोमिन भी वही मनुष्य है जो मानवता और मानवीय मूल्यों का झंडा अपने हाथ में उठाये हुए है और इस धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है जिसके बाहु बल का अनुमान कोई नहीं

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 425

लगा सकता जिस की दृष्टि से भाग्य पलट जाता है । वह प्रेम पर भरोसा करता है, संघर्ष उसके आदर्श है, इकबाल की दृष्टि से मनुष्य का आदर्श वह समाज है जिसकी नींव भाईचारे, प्रेम, सबका बराबरी का दर्जा, सामाजिक न्याय पर खड़ी है । जिसमें सच बोलने की क्षमता है और जिसका हर मनुष्य आत्मसम्मान की पूंजी से माला-माल होकर मनुष्य की उन्नति के कार्य को पूर्ण करने के बराबर का साझेदार है । वह खुले आकाश में विचरण करता है । उसकी कमंद (फंदा) सितारों पर पड़ती है । वह सितारों के आगे के जगत में कार्यशील रहता है और इस परिस्थिति में उसे अपने आस-पास यह गीत सुनाई देता है ।

ऊरूजे आदमे खाकी से अंजुम सहमे जाते हैं
कि यह टूटा हुआ तारा महेकामिल न बन जाये ।"[1]

अर्थात आकाश में मनुष्य की ऊंची उड़ान से सितारे सहमे जा रहे हैं कि यह टूटा हुआ तारा कहीं पूर्ण मासिकी चाँद न बन जाय ।

इस प्रकार इकबाल का मनुष्य एक संघर्षशील मनुष्य है जो अपने प्रयोगों और संघर्ष द्वारा अपना सिक्का संसार के कोने-कोने में फैला सके ।

इकबाल की दृष्टि में वही समाज उन्नति कर सकता है जिसके मनुष्य अपने अन्दर प्रकृति को जीतने का भाव पैदा करते हैं और ऐसे मनुष्य के उद्देश्य की पूर्ति में कोई रूकावट नहीं है । तकदीर का सारा राज उसके सामने खुल जाता है ।

"राज़ है राज़ है तकदीरे जहाने तगो ताज़
जोशे किरदार से खुल जाते हैं तक़दीर के राज़
जोशे किरदार से शमशीरे सिकन्दर का तुलु ।"[2]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ०
2. प्राप्त रूह इकबाल - डा० यूसुफ हुसैन, पृ० 174

इस प्रकार इकबाल मनुष्य को कामयाबी की ऊंचाइयों तक देखना चाहते हैं । इकबाल का मनुष्य प्रकृति की रंगीनियों को अपने अनुरूप ढालता है । इकबाल अपने मनुष्य को जगह-जगह आगे बढ़ने की शिक्षा देता है । उनका कहना है कि बुद्धि अगर मनुष्य के राह में रूकावट बने तो उसकी बात मनुष्य को नहीं माननी चाहिये । मनुष्य का इश्क की लगन से आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि बुद्धि तो रास्ता बताती है वह मनुष्य को लक्ष्य तक नहीं पहुंचाते ।

"तेरे सीने में दम है दिल नहीं है
तेरा दम गर्मिये महफिल नहीं है
गुज़र जा अक्ल से आगे कि यह नूर
चिरागे राह है मंज़िल नहीं है ।" [1]

इकबाल की एक नज़म "बज़मे कुदरत" जिसमें शायर प्रकृति को देखकर हैरान हो रहा होता है । सुबह के नजारे उसे अपना तरफ खींच रहे हैं इस नज्म में शायर सोचता है कि यह सब किस के दम से है तो उसे कहीं दूर से जवाब मिलता है तेरा अस्तित्व तो इन सबसे बढ़ कर है ।

"मैं यह कहता था कि आवाज़ कहीं से आयी
बामे गर्दू से व या सहने ज़मीं से आयी
है तेरे नूर से वाबस्ता मेरा बूदो नबूद
बाग़बां है तेरी हस्ती पेए गुलज़ारे वजूद
अंजुमन हुस्न की है तू, तेरी तस्वीर हूं मैं
इश्क़ का तू है सहीफा तेरी तफसीर हूं मैं ।
मेरे बिगड़े हुये कामों को बनाया तूने ।
बार जो मुझसे न उठा वह उठाया तूने । [2]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ० 376
2. - वही - पृ० 55

इसके अलावा इकबाल ने कई जगह अपने काव्य में अपने आदर्श पुरूष का भी चित्रण पेश किया है । एक सच्चे हिन्दुस्तानी होने के नाते इकबाल राम के प्रति श्रद्धा की भावना रखते थे । राम का जिक्र उन्होंने "बागों दरा" में इस प्रकार किया है --

"लबरेज़ है शराबे हक़ीक़त से जामे हिन्द,
सब फलसफी हैं खित्तये मग़रिब के रामे हिन्द
ये हिन्दयों के फिक्रे फलकरस का है असर
रफ़त में आसमां से भी ऊंचा है बामे हिन्द
इस देश में हुये है हज़ारों मलक सरिश्त
मशहुर जिनके दम से है दुनिया में नामे हिन्द.
है राम के वजूद पे हिन्दुस्तान को नाज
अहले नजर समझते है इसको इमामे हिन्द
इजाज़ इस चिरागे हिदायत का है यही
रोशन तर अज़ सहर है ज़माने में शामे हिन्द
तलवार का धनी था शुजाअत में फ़र्द था
पाकीज़गी में जोशे मोहब्बत में फ़र्द था ।"[1]

इस प्रकार शायर कहना चाहता है कि हिन्दुस्तान में ऐसे ऐसे महापुरूषों ने जन्म लिया इसलिए हिन्दुस्तान के भाग्य में आगे उजाला है राम इकबाल के महा मानव में से एक है दूसरी तरफ नानक और गौतम बुद्ध जैसे महान इंसान के द्वारा इकबाल सबको समान जीने का अधिकार दिलाते हैं ।

"नानक"

"कौम ने पैग़ामे गौतम की ज़रा परवाह न की
कद्र पहचानी न अपने गौहरे यकदाना की

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ० 177

आह बदक़िस्मत रहे आवाज़े हक़ से बेख़बर
ग़ाफ़िल अपने फल की शीरीनी से होता है शजर
आश्कार उसने किया जो ज़िन्दगी का राज़ था
हिन्द को लेकिन ख़याली फ़लसफ़े पर नाज़ था
शमे हक़ से जो मुनव्वर हो यह वह महफ़िल न थी
बारिशे रहमत हुयी लेकिन ज़मीं क़ाबिल न थी
आह शुद्र के लिए हिन्दुस्तां ग़मख़ाना है
दर्दे इन्सानी से इस बस्ती का दिल बेगाना है।
बरहमन सरशार है अब तक मये पिनदार में
शमे गौतम जल रही है महफ़िले अग़यार में
बुतकदा फिर बाद मुद्दत के मगर रौशन हुआ
नूरे इब्राहिम से आज़र का घर रौशन हुआ
फिर उठी आख़िर सदा तौहीद की पंजाब से
हिन्द को एक मर्दे कामिल ने जगाया ख्वाब से।"[1]

o दिनकर के काव्य में मनुष्य और उसकी महानता की स्थिति

इकबाल की ही तरह दिनकर के काव्य में भी मनुष्य को महान बताया गया है और उसको संघर्ष करते हुए कवि देखना चाहते हैं। इकबाल ही की तरह दिनकर भी मनुष्य को उसके बाहुबल के द्वारा निर्माण की गयी दुनिया को सराहना करना चाहते हैं। अन्तर यह है कि इकबाल और दिनकर दोनों को ही अपने धर्म से लगाव बहुत था इसलिए इकबाल ने मानव की महानता को बताने के लिए कुरआन की आयतों का सहारा लिया है तो दिनकर ने मानव की महानता को सिद्ध करने के लिए हिन्दू धर्म की पौराणिक कहानियों का सहारा लिया है।

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 239-240

सबसे पहले कुरूक्षेत्र को देखें तो पता चलता है इसमें केवल दिनकर का युद्ध दर्शन नहीं है इस काव्य में युद्ध दिनकर का प्रतिपाद्य नहीं बल्कि मानव को यह ग्रन्थ संघर्ष करने दूसरे को साथ लेकर चलने और उद्देश्य पूर्ण जीवन व्यतित करने का संदेश देता है ।

"हृदय प्रेम को चढ़ा कर्म का
भुजा समर्पित कर के
मैं आया था कुरूक्षेत्र में
तोष हृदय में भर के ।"[1]

कुरूक्षेत्र में ही भीष्म युधिष्ठिर को एक जगह कायर पुरूष और संघर्षशील पुरूष की पहचान बताते हैं --

"एक सजाता है धरती को,
अंचल फूल कमल से
भरता भूतल में समृद्धि से सुषमा
अपने भुजबल से ।"[2]

इकबाल ही की तरह दिनकर उसी मानव समाज को महान बताते है जहाँ मनुष्य कर्म करें लेकिन इस कर्म करने और आगे बढ़ने को अधिकार सबको बराबर मिले वह भीष्म की ज़बानी यह बात कहलवाते हैं ।

"धर्मराज यह भूमि किसी की
नहीं क्रीत है दासी
है जन्मता समान परस्पर
इसके सभी निवासी ।"[3]

- -

1· कुरूक्षेत्र, पृ· 57

2· कुरूक्षेत्र, दिनकर, पृ· 120

3· - वही - पृ· 94

दिनकर जी मनुष्य की भुजाओं के बल को ही महत्व देते हैं --

"राजा प्रजा नहीं कुछ होता
होते मात्र मनुज है
भाग्य लेख होता न मनुज का
होता कर्मठ भुज ही ।"[1]

"रश्मि रथी" में यही बात कर्ण कहते हैं -- जब उनकी गोत्र पूछी जाती है --

"पूछो मेरी जाति शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से
रवि समान दीप्त ललाट से मेरे कवच कुण्डल से
पढ़ो उसे जो झलक रहा है मुझ में तेज प्रकाश
मेरे रोम रोम में अंकित है मेरा इतिहास ।"[2]

इस प्रकार दिनकर और इकबाल के विचार काफी मिलते हैं। दोनों मनुष्य को उसके बाहु बल का विश्वास दिलाते हैं। दोनों मनुष्य को कर्म के लिए संघर्ष करते देखना चाहते हैं लेकिन इकबाल का मनुष्य ईश्वर की बनायी गयी सभी वस्तुओं में अपने को सबसे महान मानता है। वह प्रकृति को अपने अनुरूप ढालता है वह खुदा से सीधे कहता है कि हमें तुम्हारा स्वर्ग नहीं चाहिये हमें वो स्वर्ग अपनी भुजाओं के बल से बनाना है लेकिन दिनकर का मनुष्य इस संसार का प्रकृति में खो जाता है। कुरूक्षेत्र में वे लिखते हैं --

"प्रभु के दिये हुए सुख इतने
है विकीर्ण धरती पर
भोग सके जो इन्हें जगत में
कहाँ अभी इतने नर ।"[3]

---

1. कुरूक्षेत्र - दिनकर, पृ. 98
2, रश्मिरथी - दिनकर, पृ. 4

3. कुरूक्षेत्र - दिनकर, पृ. 96

इसके अतिरिक्त इकबाल मनुष्य के आत्मिक गुणों को महत्व देते हैं लेकिन दिनकर को मनुष्य केवल आत्मिक गुण से ही मुक्त नहीं होना चाहिये बल्कि उसमें शारीरिक गुण भी होना चाहिए। वह देखने में भी सुंदर होना चाहिये। दिनकर की उर्वशी का नायक पुरूरवा है इसमें सभी गुण हैं वह शूर-वीर है सुंदर वह दानवों पर विजय पाता है, वह देवताओं से भी अपने आप को ऊपर समझता है वह इतना सुंदर है कि उर्वशी जैसे अप्सरा उस पर रीझ गयी। उर्वशी के तृतीय सर्ग में पुरूरवा उर्वशी से कहता है --

"मैं मनुष्य कामना वायु मेरे भीतर बहती है
कभी मन्दगति से प्राणों में सिहरन पुलक जगाकर
कभी डालियों को मरोड झंझा की दारूण गति से
मन का दीपक बुझा बनाकर तिमिराच्छन्न हृदय को
किन्तु पुरूष क्या कभी मानता है तम के शासन को
फिर होता संघर्ष तिमिर में दीपक फिर जलते हैं।"[1]

इकबाल की तरह दिनकर मनुष्य को देवताओं से भी ऊपर मानते हैं। हाँ, कहने का अन्तर है, इकबाल कहते हैं --

"तेरा जहान फरिश्ते न कर सके आबाद।"[2]

और दिनकर कहते हैं --

"मर्त्य नर को देवता कहना मृषा है
देवता शीतल मनुज अंगार है
देवताओं की नदी में ताप की लहरें न उठती
किन्तु नर के रक्त में ज्वालामुखी हुंकारता है।"[3]

---

1. उर्वशी, दिनकर, पृ. 34   2. कुल्लियाते इकबाल, पृ. 300
2. - वही - पृ. 41

इस प्रकार दिनकर जी के मानव की महानता केवल उसके अन्दर के गुणों द्वारा ही नहीं है । वह इतना सुंदर है कि प्रकृति भी शरमा जाये ।

यहाँ एक बात और बता देना चाहूँगी लोग कुरूक्षेत्र को केवल युद्ध का काव्य मानते हैं जबकि दिनकर ने रश्मि लोक की भूमिका में स्वयं कहा है --

"कुरूक्षेत्र" उन सभी भावनाओं का परिपाक है जो मुझे आरंभ से ही आन्दोलित करती आ रही थी । जो विचार मैंने अपनी स्फूट कविताओं में बिखेरे थे, "कुरूक्षेत्र" में उनका समन्वित दार्शनिक रूप प्रकट हुआ है । विश्व-शान्ति की स्थापना की चिन्ता मुझे "कुरूक्षेत्र" में कम थी । अपने देशवासियों की विचार-दिशा बदलने की भावना से आन्दोलित होकर ही मैंने इस काव्य की रचना की ।[1]

यही नहीं इकबाल की तरह दिनकर के पास भारत के महापुरूषों जैसे राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, अशोक, अकबर इत्यादि का चित्रण बड़ी श्रद्धा के साथ किया गया है ।

"राम तुम्हारा नाम कंठ में रहे
हृदय जो कुछ भेजे वह सहे
दु:ख से त्राण नहीं मांगू
मांगू केवल शक्ति दु:ख सहने की
दुर्दिन को भी मान तुम्हारी दया
अकातर ध्यानमग्न रहने को
देख तुम्हारे मृत्यु दूत को डरूं नहीं
न्यौछावर होने में दुविधा करूं नहीं
तुम चाहो दो वही कृपण प्राण नहीं मांगू ।"[1]

---

1. रश्मि लोक - दिनकर, पृ.

इन्होंने राम को ईश्वर के रूप में देखा है लेकिन इकबाल ने राम को एक ऐसे मानव के रूप में माना है जिस पर हिन्दुस्तान के लोग सदा गर्व करें ।

इसके अतिरिक्त कुरूक्षेत्र और रश्मिरथी में कृष्ण की चर्चा भी दिनकर गर्व के साथ करते हैं ।

भगवान बुद्ध तो दिनकर के एक आदर्श पुरुष है ही क्योंकि वह समता का दीप लेकर भारत में आये उन्होंने देशवासियों को जागरण का संदेश दिया उनको उनकी शक्ति का एहसास दिलाया जो दोनों ही कवियों के काव्य का उद्देश्य है ।

"अनाचार की तीव्र आंच में अपमानित अकुलाते हैं ।
जागो बोधिसत्व भारत के हरि जन तुम्हें बुलाते हैं ।"

.. ..

"जागो गौतम जागो महान
जागो अतीत के क्रांतिगान
जागो जगती के धर्म तत्व
जागो हे जागो बोधिसत्व ।"[1]

इस प्रकार दिनकर का मनुष्य इकबाल ने जैसा कहा "सितारों के आगे जहां और भी है ।" कि तरह आगे बढ़ने की क्षमता रखता है उसकी पहचान है ।

"मैं न वह जो स्वप्न पर केवल सही करते
आग में उसको गला लोहा बनाती हूं
और उसपर नींव रखती हूं नये घर की
इस तरह दीवार फौलादी उठाती हूं ।"

- -

1. रश्मिलोक - दिनकर , पृ.

"मनु नहीं मनु पुत्र है यह सामने जिसकी
कल्पना की जीभ में भी धार होती है
वाण ही होते विचारों के नहीं केवल
कल्पना के भी हाथ में तलवार होती है ।"[1]

यह है दिनकर का मानव । इस प्रकार देखा जाए तो दोनों कवियों डॉ० इकबाल और रामधारी सिंह दिनकर के यहाँ ब्रह्म, जगत् और मनुष्य संबंधी विचार मिल जाते हैं । यह तो जाहिर सी बात है । इकबाल तो दार्शनिक है ही और दार्शनिक के काव्य में इस तरह के विचार मिलने ही चाहिए लेकिन प्रत्येक कवि का जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण होता है जिसे उसका दर्शन कहा जा सकता और दिनकर एक पूर्ण कवि है इसलिए उनके यहां भी जीवन के बारे में दार्शनिक विचार मिल जाते हैं ।

ईश्वर के बारे में जानने की जिज्ञासा और उसके रहस्यमयी रूप का चिन्तन हमें दोनों कवियों के कविताओं में मिलते हैं । अन्तर यह है कि इकबाल प्रकृति को देखकर भगवान के रहस्यमयी रूप को कहीं-कहीं समझना चाहते हैं लेकिन वह प्रकृति और मनुष्य दोनों को भगवान की देन मानकर अपने को प्रकृति से ऊंचा मानकर प्रकृति के रहस्यों को जानने और उसको अपने अनुरूप ढालना चाहते हैं । वह यह मानते हैं कि प्रकृति की सारी रंगा रंगी मनुष्य के दम से है मनुष्य न हो तो यह प्रकृति निष्प्राण है इसका अस्तित्व बेकार सा रहेगा । इकबाल का मनुष्य और उसकी जिज्ञासा जिसने प्रकृति को रौनक बख्शी है प्रकृति के गुणों को ग्रहण कर वह अपने लिये रास्ता बनाता आगे ही आगे मंजिल की तरफ बढ़ता जाता है ।

परन्तु दिनकर प्रकृति को रहस्यमयी मानते हैं वह प्रकृति में खो जाना चाहते हैं । वह प्रकृति सुख भोगना चाहते हैं लेकिन कहीं कहीं वह भी मनुष्य को सब जीवों यहाँ तक की देवताओं से महान मानते हैं ।

---

1. रश्मि लोक - दिनकर, पृ. 225

दूसरी बात यह है कि दोनों कवियों पर अपने अपने धर्म का काफी प्रभाव था । दिनकर जी के काव्य में आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है और यह आत्मा अपने परमात्मा से मिलने को बेचैन दिखायी देती है । लेकिन कहीं-कहीं दिनकर के काव्य में आत्मा संसार में कर्म करने के लिये अधिक बेचैन दिखायी देती है । इकबाल के पास सूफियों के प्रभाव से कहीं इस तरह के विचार मिल जाते हैं परन्तु उनके काव्य में आत्मा परमात्मा में लीन नहीं होना चाहती । शायर अपनी खुदी को बुलन्द रखना चाहते हैं वह अपने अस्तित्व को अलग से स्वीकार करते हैं वह अपने अस्तित्व को खुदी के अस्तित्व में नहीं मिलना चाहते बल्कि वह यह मानते हैं मनुष्य संसार में कर्म करने के लिये आया है । उसे कर्म में लगे रहना चाहिए । इकबाल का कतरा अपने अस्तित्व को फैलाना चाहता है । वह दरिया से नहीं मिलना चाहता । जगत के बारे में दोनों के विचारों में बहुत समता है । दोनों ही जगत को क्षणभंगुर मानते हैं । दिनकर जगत में खो जाना चाहते हैं जगत की एक एक वस्तु उन्हें अपनी तरफ आकर्षित करती है । वह मानते हैं कि उसे संसार से जाना है वह यहाँ यात्री की तरह आये हैं लेकिन इकबाल की तरह वह यह मानते हैं कि मनुष्य जगत में कुछ करने के लिए आया है । इकबाल जगत को क्षणभंगुर अवश्य मानते हैं लेकिन वह जगत को अपने अनुरूप ढालने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन उनका जगत विशाल है जो अपने अन्दर आकाश को भी समा लेते हैं । वह मानते हैं कि इस जगत में वास्तव में मनुष्य को परीक्षा के लिए भेजा गया है । कुछ करने और अपनी क्षमता को दिखाने के लिए भेजा गया है । अब जहाँ तक मनुष्य का प्रश्न है दोनों ही मनुष्य को महान बताते हैं । दोनों का मनुष्य तभी पूर्ण होता है जब वह कर्म की दिशा की तरफ अग्रसर हो ।

वह किसी एक मंजिल पर न रूके । वह निरन्तर चलता रहे । उसे अगर एक संसार मिल जाये तो उसे दूसरे संसार की तलाश करनी चाहिए । उसका ज्ञान केवल आकाश तक सीमित नहीं होना चाहिए । आकाश से आगे भी कोई संसार है उसकी उसे तलाश करनी चाहिए । इकबाल मनुष्य के केवल अन्दर के गुणों को महत्व देते हैं । उसके इरादों को महत्व देते हैं लेकिन दिनकर का मानव शारीरिक बल से भी युक्त दिखाया देता है । यह युद्ध के मैदान में भी अपने कौशल दिखा सकता है । वह सुंदरता के मैदान में भी सबको पीछे छोड़ सकता है ।

अध्याय - पाँच

रामधारी सिंह दिनकर जी और डॉ0 इकबाल का

जीवन दर्शन - एक तुलनात्मक अध्ययन।

1. जीवन की परिभाषा
2. फिलसफे खुदी (आत्मदर्शन)
3. निश्चित उद्देश्य
4. संघर्ष-शीलता
5. संघर्ष शीलता का प्रतीक शाही
6. कर्मवाद की स्थापना
7. सम्पूर्ण मानव
8. मानवतावादी जीवन दर्शन
9. व्यक्तिगत और समष्टिगत विचार
10. यथार्थवादी जीवन दर्शन

अध्याय- पाँच

रामधारी सिंह दिनकर और इकबाल का जीवन दर्शन - तुलनात्मक अध्ययन

काव्य और दर्शन का घनिष्ठ संबंध होता है । दार्शनिक चिंतन करता है और कवि उस दर्शन की अनुभूति करता है । प्रत्येक कवि का जीवन दर्शन अलग होता है । सीधे साधे शब्दों में देखा जाय तो जीवन दर्शन का तात्पर्य होता है जीवन संबंधी विचार अथवा भावनाएं । दार्शनिक चिंतन करता है उसके यहाँ विचार की प्रधानता रहती है । प्रत्येक वस्तु की सही कीमत आँकना दार्शनिक का कार्य है । इससे हटकर काव्य भावना का क्षेत्र है कवि भावुक होते हैं । समाज में होनेवाले प्रत्येक परिवर्तन का प्रभाव कवि पर पड़ता है । कवि के जीवन दर्शन का संबंध कवि की अपनी मान्यताओं और अपनी धारणा से होता है ।

काव्य में जीवन दर्शन का असंदिग्ध है । जीवन दर्शन के बिना कोई काव्य अधूरा रह जाता है । वह प्राचीन सा लगता है ? कवि को कोई न कोई जीवन दर्शन जरूर होता है जो अनायास उसके काव्य में आजाता है । एक तो यह निश्चित है कि मनुष्य के मन में चिरंजन सत्य को जानने की ~~विशय~~ जिज्ञासा पायी जाती जैसे मनुष्य, चाँद, सूरज, सितारे कहाँ से आये कवि हमेशा इस सत्य से जूझता रहता है और इस बारे में वह अपने जो विचार व्यक्त करता है वही कवि का जीवन दर्शन कहलाता है । अर्थात् यह तो कहा ही जा सकता है कवि और दार्शनिक का उद्देश्य एक होता है - शाश्वत सत्य को खोजना दोनों सत्य तक पहुँचते है परन्तु भिन्न रास्तों से ।

किसी कवि के जीवन दर्शन पर परिस्थितियों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है और यह परिस्थितियाँ मनुष्य के जीवन दर्शन को प्रभावित करती है । अब हम दोनों कवियों की जीवन दृष्टि पर नज़र डालेंगे ।

इक़बाल के यहाँ जीवन की परिभाषा

यह दुनियाँ बहुत वसीह है यहाँ मनुष्य का अपना अस्तित्व बहुत छोटा है । पृथ्वी तो एक धुरी पर घूमती रहती है यह भौतिक नियमों की पाबन्द है । इक़बाल उसी जीवन को सार्थक मानते हैं । जिसे वे दुनिया को किसी स्केल से नापने का प्रयत्न न करते हुये अपनी शक्ति को पहचाने का प्रयत्न किया जाय । इकबाल का कहना है ज़िन्दगी को आज और कल के पैमाने पर नापा नहीं जा सकता । ज़िन्दगी तो चलती रहती है । वही मनुष्य वास्तव में मनुष्य है, उसी मनुष्य का जीवन सार्थक कहा जायगा जो ऐसे काम करने में सफल हो जो कोई न कर पाये ज़िन्दगी तो लाभ और हानि की दुनिया से बहुत ऊपर की चीज़ है ।

बरतरज़ अंदेशये सूदो जियाँ है जिंदगी
है कभी जाँ और कमी तस्लीमे जाँ है जिंदगी
तू इसे पैमानये इमरोज़ो फर्दा से न नाप
जावदाँ पैहम खाँ हरदम जवाँ है ज़िंदगी
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर जिंदों में है
सिर्रे आदम है ज़मीरे कुन फ़िकाँ है जिंदगी ।
आशकारा है यह अपनी कूवते तसखीर से
गरचः एक मिट्टी के पैकर में निहाँ है ज़िंदगी
बंदगी में घट के रह जाता है एक जूए कम आब
और आज़ादी में बहरे बे कराँ है ज़िंदगी ।[1]

ज़ाहिर बात है जिंदगी एक आजमाईश है और इस आजमाइश में जो जितना खरा उतरा वास्तव में उसी का जीवन जीवन है वरना कितने मनुष्य संसार में पैदा होते हैं और फिर मर जाते हैं, वह कुछ अनोखा कार्य नहीं करते हैं । इक़बाल उददेश्यपूर्ण जिंदगी के समर्थक है -

बताउं तुझ को मुसलमाँ की ज़िंदगी क्या है
यह है निहायते अंदेशह व कमाले जुनूँ
.. .. ..
हकायके अबदी पर असास है इसकी
यह ज़िंदगी है नहीं है तिलिस्मे अफ्लातूँ
अनासिर इसके हैं रूहुलकुदुस का ज़ौके जमाल
अजम का हुस्नेतबीयत अरब का सोज़े दुरूँ ।[2]

---

1) कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 258
2) " - " 510-11

दिनकर जी की जीवन की परिभाषा इक़बाल से अलग दिखायी देती है । इकबाल उस मनुष्य के जीवन को जीवन मानते है जो संघर्षमय जीवन व्यतीत करते हुये अपने वजूद §अस्तित्व§ का विकास कर सके, परंतु दिनकर जी कही कही निवृत्ति मार्ग को महत्व देते हुए दिखायी देते हैं । इसके अतिरिक्त वह धर्म के रास्ते पर चलने वालों के जीवन को ही जीवन मानते हैं ।

सत्य नहीं पातक की ज्वाला
मैं मनुष्य का जलना
सच है बल समेट कर उसका
फिर आगे को चलना
.. .. ..
फूलों पर आंसू के मोती
और अश्रु में आशा
मिट्टी के जीवन की छोटी
नयी तुला परिभाषा ।[1]

दिनकर जी कहते हैं जीवन चिरंतन सत्य है यह कभी समाप्त नहीं होगा । मनुष्य विभिन्न रूपों में बार-बार जन्म लेता है ।

झर जाते हैं कुसुम जीर्ण दल
नये फूल खिलते हैं
रुक जाते कुछ दल में फिर
कुछ नये पथिक मिलते हैं ।[2]

---

1. कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ 129
2§ -वही- " , 119

दिनकर जी का कहना है, उसी मनुष्य का जीवन सार्थक है जो कठिनाइयों से जूझता रहे और उस पर विजय प्राप्त करें, न कि कठिनाइयों से घबरा कर निवृत्त मार्ग चुनने वाले का जीवन-

जना कीर्ण जग से व्याकुल हो
निकल भागता वन में
धर्मराज है घोर पराजय
नर की जीवन रण में ।[1]

दिनकर जी स्वार्थी मनुष्यों के जीवन को सार्थक जीवन नहीं मानते वह तो उसी मनुष्य के जीवन को सार्थक मानते हैं जो दूसरे के सुख-दुःख का ध्यान रखे यही नहीं कि केवल अपने हित के लिए जीवन व्यतीत करे ।

एक पथ है छोड़ जगत को
अपने में रम जाओ
खोजो अपनी मुक्ति और
निज को ही सुखी बनाओ
अमर पंथ है औरों को भी
निज विवेक बल देकर
पहुँचो स्वर्ग लोक में जग से
साथ बहुत को लेकर । 2

कुरुक्षेत्र में एक जगह भीष्म युधिष्ठिर को जीवन की परिभाषा समझा रहे हैं ।

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर,
2) -वही- , पृ- 148

जीवन उसका नहीं युधिष्ठिर
जो उससे डरते हैं
वह उसका जो चरण रोंध
निर्भय होकर लड़ते हैं
यह प्योधि सबका मुख करता
विरत लवण कटु जल से
देता सुधा उन्हें जो मथते
इसे मंदराचल से ।[1]

रश्मिरथी का कर्ण में हमारे सामने एक संघर्षरत मानव के रूप आता है । वह एक पूर्ण जीवन व्यतीत करता है ।

मगर यह कर्ण की जीवन कथा है
नियति की भाग्य की इंगित वृथा है
मुसीबत को नहीं जो झेल सकता
निराशा से नहीं जो खेल सकता
पुरुष क्या श्रृंखला को तोड़ करके
चले आगे नहीं जो जोर करके ।

दिनकर जी एवं डॉ॰ इक़बाल के काव्य में फिलसफे खुदी {आत्मदर्शन}

इकबाल की खुदी से कई लोग कई तरह का अर्थ लेते हैं । वैसे तो खुदी का अर्थ आत्मा ही हो सकता है दिनकर जी स्वयं कहते हैं -

---

1} कुरुक्षेत्र, पृष्ठ 109
2} रश्मिरथी, दिनकर, पृष्ठ

"खुदी से कुछ लोग आत्मा या रूह का अर्थ लेते है । अब तक सभी धर्मों ने आत्मा का गुण विनय और निर्मलता बताया था किंतु लोग यह देखकर विस्मित रह गये की इकबाल इसका प्रयोग अबाध वीरता और अहंकार के रूप में करते है ।[1]

इकबाल की समस्त विचारधाराओं में खुदी का सर्वोत्तम स्थान है । इकबाल तो हमेशा कहते हैं वही मनुष्य मनुष्य है जो अपनी खुदी को पहचाने खुदी इनफेरादियत (व्यक्तित्व) से अलग होती है पत्थर और पेड़ में व्यक्तित्व होता है परंतु वह खुदी अर्थात आत्मा के गुणा से वंचित रहते हैं । खुदी आत्मिक भाव है जिसका निर्माण प्रयत्न और संघर्ष के बगैर असंभव है । संघर्ष का परिणाम कभी-कभी दु:ख होता है जो खुदी अथवा आत्मबल को और ठोस आधार प्रदान करता है ।

यूं तो दिनकर स्वयं इकबाल को खुदी से प्रभावित थे परंतु खुदी के बारे में उनकी अपनी अलग विचारधारा भी मिल जाती है । खुदी का सही अर्थ है मनुष्य अपनी क्षमता को पहचाने फिर सही रास्ते पर चले जो मनुष्य अपनी खुदी को नहीं पहचान सकता वह जीवन का ठीक रास्ता नहीं चुन सकता । दिनकर जी एक जगह कहते है अगर खुदी बुलंद होतो मनुष्य मिटटी में विलीन नहीं होता । मिटटी उसमें विलीन हो जाती है ।

भोगो तुम इस भांति मृत्यु को
दाग नहीं लग पाये

---

1) संस्कृत के चार अध्याय, दिनकर,

मिट्टी में तुम नहीं वही
तुम में विलीन हो जाए
और सिखाओ भोगवाद को
यही रीति जन जन की
करे विलीन देह को मन में
नहीं देह में मन को ।[1]

दिनकर जी एक जगह जन की अपेक्षा आत्मा अर्थात् खुदी को अधिक महत्व देते है ।

दो में कौन पुनीत शिखा है
आत्मा की या मन की
शमित तेज व्य की गतिशिव
या गति उच्छल यौवन की ।[2]

जब मनुष्य अपनी खुदी को बुलंद कर लेते हैं तो वह आगे ही बढ़ता जाता है ।

बुझा बुद्धि का दीप वीर वर
आख मूंद चलते हैं
उछल वेदिका पर चढ़ जाते
और स्वयं जलते हैं ।[3]

अल्लामा इकबाल और दिनकर जी दोनों यह बात मानते हैं जिस इन्सान की खुदी बुलंद होती है वह आगे बढता जाता है और वह सब के काम आता है ।

- -

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ 128
2) -वही- " " 55
3) -वही-

त्याग तप करुणा क्षमा से भीग कर
व्यक्ति का मन तो बली होता मगर
हिंस्त्र पशु जब घेर लेते हैं उसे
काम आता है बलिष्ठ शरीर ही
और तू कहता मनोबल है जिसे
रास्ता हो सकता नहीं वह देह का
क्षेत्र उसका वह मनोमय भूमि है
नर जहाँ लड़ता ज्वलंत विकार से ।

इकबाल के यहाँ फिलसफे खुदी (आत्मा)

खुदी इकबाल के तमाम विचारों का केंद्र है और इकबाल की तमाम शायरी का पसंजीदह विषय । इकबाल का कहना है जीवन गतिशील है और मनुष्य आधुनिकता पसंद मनुष्य नये-नये प्रयोग करके निज मनुष्य नयी-नयी इच्छाओं की पूर्ति करता है और तब मनुष्य की खुदी को कर्म और संघर्ष की जीवन कहते हैं । इकबाल यह मानते है खुदी की राह में सब से बड़ी रुकावट प्रकृति है अर्थात मनुष्य को अपनी खुदी को पूरी तरह निखारना है । तो प्रकृति पर उसे अख्तियार हासिल करना है ।

कहते हैं -
खुदी क्या है? राज़े दुरूने हयात
खुदी क्या है बेदारये कायनात
अजल इसके पीछे अबद सामने
न हद इसके पीछे न हद सामने ।[2]

---

1. कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ
2. कुल्याते इक़बाल, " 419

ज़माने के दरया में बहती हुयी
सितम उसकी मोजो के सहती हुयी
तजस्सुस की राहें बदलती हुयी
दमादम निगाहें बदलती हुयी
सुबुक उसके हाथों में संगे गिरां
पहाड़ उसकी ज़रबत से रेगेरवां
सफ़र उसका अनजामो आग़ाज़ है
यही इसकी तक़्वीम का राज़ है
किरन चांद में है शरर संग में
यह बेरंग है डूब कर रंग में
इसे वास्ता क्या कमोबेश से
नशेबो फ़राज़ो पसो पेश से ।
अज़ल से है यह कशमाकश में असीर
हुयी ख़ाके आदम में सूरत पज़ीर ।[1]

जो भाव ख़ुदी को पूर्ण करता है वह मनुष्य के अंदर के भाव है जो पूरी तरह निखर जाये तो शोला अर्थात् चिंगारी बन जाते हैं । इस्लाम आख़रत (परलोक) के जीवन को मानता है । उसका आखरत (परलोक) का जीवन भी सांसारिक जीवन की परछायी बनकर सामने आ जाता है अर्थात् इकबाल यह कहते हैं कि मनुष्य अच्छे कर्म करे ताकि उसे अपने जीवन का उद्देश्य मिल जाये । ख़ुदी मनुष्य को आधुनिकता की तरफ ले जाने में सहायक है इक़बाल का ख़ुदी के बारे में यह शेर तो बच्चा जानता है । वह कहते हैं अपनी ख़ुदी को तू इतना ऊँचा कर ले कि तेरा भाग्य निश्चित करने के पहले तुझसे ख़ुदा तेरी इच्छा पूछ ले ।

- -

1. कुलयाते इक़बाल - 419

खुदी को कर बुलंद इतना
की हर तक़दीर से पहले
खुदा बंदे से खुदे पूछे
बता तेरी रज़ा क्या है ।[1]

इकबाल का कहना है खुदी के कारण मनुष्य जीवन के हर संघर्ष को झेल जाता है । एक तरह से देखा जाए तो मनुष्य समाज का एक छोटा सा अंग है जिसको कोई विशेष अस्तित्व नहीं परंतु अगर कर्म को ध्यान में रखे तो इन्सान पहाड़ की चोटी तक पहुँच सकता है । उसकी इस उद्देश्य की पूर्ति , खुदी करती है । इकबाल मानते है कि खुदी के ही द्वारा मनुष्य को अपने उद्देश्यपूर्ण जीवन का अनुभव होता है, खुदी में सृजन करने का शक्ति होती है । इक़बाल का कहना है मनुष्य को अपनी खुदी को पहचानना चाहिए न कि खुदी से उसे गफिल होना चाहिए कहते है -

गाफिल न हो खुदी से कर अपनी पासबानी
शायद किसी हरम का तू भी है आस्तानी ।[2]

इक़बाल ने खुदी के फैलाव और प्रभाव को अपने जीवनदर्शन का महत्वपूर्ण अंग माना है । वह यह मानते है कि जीवन के सभी नैतिक मूल्यों को पुष्टि मनुष्य के खुदी के भाव के द्वारा ही होती है जीवंन की आवश्यकता भावनाएं मनुष्य की लगन के द्वारा सामने आती है ।

---

1) कुलयाते इक़बाल - 347

2) -वहीं-

इक़बाल यह मानते है जिसे मनुष्य के अंदर ख़ुदी का भाव जितना अधिक होगा उसका जीवन उतना पूर्ण रहेगा । ख़ुदी तो ख़ुदा तक पहुँचने का माध्यम है । "ख़ुदी की जिंदगी" नज़्म में वह कहते हैं -

ख़ुदी हो ज़िंदा तो है फ़क्र भी शहनशाही
नहीं है संजर व तोग़रल से कम शिकोहे फ़क़ीर
ख़ुदी हो ज़िंदा तो दरयाये बेकरां पायाब
ख़ुदी हो ज़िंदा तो कुहसार परनियाँ व हरीर
नेहंगे ज़िंदा है अपने मुहीत में आज़ाद
नेहंगे मुर्दा को मौजे सराब भी ज़ंजीर ।[1]

एक नज़्म "पीरोमुरीद" में इक़बाल मौलानी रूमी से प्रश्न करते हैं ख़ुदी क्या है तो वह उत्तर देते हैं : ख़ुदी तो वह शक्ति है जो मनुष्य को आकाश तक उड़ाले जाती है । ख़ुदी तो चांद और सूरज को भी बस में कर लेती है । कहते हैं -

आसमां में राह करती है ख़ुदी
सैदे मेहरो माह करती है ख़ुदी
बे हुज़ूरो बेफ़रोगो बेफ़राग़
अपने नख्ची---रों के हाथों दाग़ दाग़ ।[2]

इकबाल का कहना है मनुष्य जीवन के नये-नये प्रयोगों द्वारा ख़ुदी को संपूर्ण बना सकता है । वह किसी भी मंज़िल पर अपने यात्रा को समाप्त न करे आगे ही आगे बढ़ता जाये । वह एक जगह जरा रुक कर नयी मंज़िल की खोज में निकल पड़े । इस तरह

- -

1) कुलयाते इक़बाल 538

2) -वही-

नयी मंज़िल का शौक व इच्छा मनुष्य की ख़ुदी को पूर्ण करती है । वह स्वयं ही कहते हैं -

हर लहज़ा नया नूर नयी बरक़े तजल्ली
अल्लाह करे मरहलये शोक न हो ते ।[1]

इस तरह कोई मकाम इकबाल के लिए अंतिम मकाम को नहीं होता ख़ुदी परस्त मनुष्य को बेनयाजी का यह हाल होता है कि उसके हम नशी लैला भी हो तो वह उसे अस्वीकार कर देता है ।

तू रह नवरेद शौक़ है मंज़िल न कर क़ुबूल
लैला भी हम नशीं हो तो महमिल न कर कबूल
ऐ जूये आब बढ़ के हो दरयाये तुंदो तेज़
साहिल तुझे अता हो तो साहिल न कर कबूल।[2]

इकबाल मानते हैं मनुष्य अपने व्यक्तित्व को पूर्ण करने के लिए नित नये-नये उद्देश्य को प्राप्त करें इससे ख़ुदी का विस्तार भी होता है और जीवन में आधुनिकता भी आती है । मनुष्य चाहता है अपने वजूद (अस्तित्व) से वह स्वयं ऐसी दुनिया पैदा करें जिसका सृजन मनुष्य के ही हाथों से हो और उस दुनिया में मनुष्य अपनी आशाओं और अपेक्षाओं को पूरा होता देखें । जीवन में गतिशीलता उद्देश्यों के द्वारा ही आती है । और उद्देश्य के ही कारण मनुष्य अपनी शक्ति को सही राह पर लगाता है । जो जीवन के अंधेरे चश्मे में उबाल देती है । अगर जीवन उद्देश्यहीन

- -

(1) कुलयाते इक़बाल

(2) -वही-

हो तो ख़ुदी पनप नहीं चढ़ सकती । उद्देश्य और वास्तविकता की दुनिया में ख़ुदी पहली सीढ़ी है ।

ख़ुदी की यह है मंज़िले अव्वलीं
मुसाफ़िर यह तेरा नशेमन नहीं
तेरी आग इस ख़ाकदां से नहीं
जहां तुझ से है तू जहां से नहीं
बढ़े जा यह कोहे गिरां तोड़ कर
तिलिस्मे ज़मानो मकां तोड़ कर
हर एक मुंतज़िर तेरी यलगार का
तेरी शोख़ये फ़िक्रो किरदार का ।

निश्चित उद्देश्य की पूर्ति

हर मनुष्य का यह कर्तव्य होगा चाहिए कि अपने आपको समझे अपनी शक्ति को पहचाने और अपने जीवन का एक निश्चित उद्देश्य बनाये क्योंकि मंज़िल तक पहुंचने के लिए उद्देश्य का ज्ञान जरूरी है । मनुष्य निर उद्देश्य पहाड़ पर कठिन परिश्रम के साथ चढ़ता जा रहा है उसे पता ही नहीं कि वह पहाड़ पर आखिर चढ़ क्यों रहा है, तो चढ़ने से फायदा क्या उसे जरूर मालूम होना चाहिए कि किस रहस्य के उदघाटन के लिए वह पहाड़ पर चढ़ रहा है अगर हम किसी उद्देश्य को सामने रखकर भविष्य में झांककर देखेंगे तो भविष्य में हमें एक सुंदर दुनियां दिखायी देती है । आज का भौतिक जगत कल के किसी से सपनों के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में हमारे सामने है । हमें यह सोचकर आगे बढ़ना चाहिए

---

18 कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 420

कि हमारा ज्ञान आने वाली पीढ़ियों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है ।

मनुष्य के सामने निश्चित उद्देश्य हो तभी वह वास्तविकता की सोच कर सकता है । उद्देश्य को सामने रखकर मनुष्य कर्म की सही दिशा चुन सकता है । मनुष्य ने हज़ारों बरस अपनी जीवन का लक्ष्य संसार के भौतिक नियमों को जानने में लगा दिये, लेकिन आज मनुष्य उन्नति कर चुका है । उसका अपना व्यक्तित्व पूरी तरह उभर कर उसके सामने आ चुका है । आज का मानव शारीरिक तौर पर पूरी तरह से पूर्ण हो चुका है । आज उसके जीवन का उद्देश्य प्रकृति पर विजय नहीं है, क्योंकि प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने की कला वह सीख चुका है बल्कि वह जीवन को प्रकृति से संबंध रखते हुए उसे मनुष्य के लिए कितना सुलभ और ज्ञानवर्धक बना सकता है यह जान चुका है,आज आवश्यकता इसी बात की है कि मनुष्य नयी तरह से सोचे और अपनी शक्तियों का उपयोग सही दिशा में करें । आज के मानव में इतना शक्ति आ चुकी है कि वह जीवन की ऊंचाइयों तक जा सकता है । अपनी सही राह चुन सकता है । उसे निरुद्देश्य भटकने की आवश्यकता नहीं । वह प्रकृति को अपने अनुरूप ढाल सकता है । हाँ यह अवश्य है कि जिस मनुष्य की बौद्धिक जीवन जितना ऊंचा होगा उसके जीवन का उद्देश्य भी निश्चित ही उतना ऊंचा होगा ।

इकबाल के काव्य में जीवन का उद्देश्य

विकासवाद के अंतर्गत जो भी वस्तुयें आती है सब में सृजन करने की क्षमता नहीं होती । यह क्षमता तो केवल मनुष्य को मिली

हुयी है और सृजन शक्ति को क्षमता मनुष्य विकास के साथ-साथ पाता है जो मनुष्य के अंदर का भाव होता है ।

इकबाल की नज़र में मनुष्य अपने उद्देश्य को पूर्ण करने की क्षमता केवल आत्म बल के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है और यह क्षमता मनुष्य को अपनी आत्मा के सुधार के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है जो धर्म और कर्तव्य की नींव है इस प्रकार धर्म से इक़बाल ने एक गहरा संबंध स्थापित किया है । प्रकृति मनुष्य के चारों ओर फैली है संसार के इस भौतिक सिस्टम (व्यवस्था) में इकबाल ने मनुष्य को बेबस नहीं जाना है और इस तरह इकबाल ने मनुष्य की स्वाभाविक जिंदगी और प्रकृतिक जीवन के अलगाव को कम करने का प्रयत्न किया है और इसी परंपरा ने इस नियम को स्पष्ट कर दिया है । कि मनुष्य की आत्मिक जीवन और प्राकृतिक जीवन में मेल होना चाहिए । मनुष्य अपने स्वभाव की अंतिम मंज़िल तक नहीं पहुंच सकता जब तक उसका निगाह प्रकृति के जांतिक फिनामिना तक न पहुंच जाय जब तक मनुष्य के बौद्धिक और आत्मिक कर्मों का संबंध न जुड़ जाय तब तक जीवन को पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता । कर्म विकास के अंतर्गत आता है । परंतु अगर कर्म वातावरण के अनुसार अपने आपको ढाल लेने का नाम है तो मानव के इतने लंबे इतिहास में नित नये-नये प्रयोगों से उलझने को कोशिश न की होती जिसके कारण आज सभ्यता और ज्ञान का विकास हो सका है मनुष्य की पहुंच आगे तक गयी तभी वह प्रकृति के राज को जान सका ।

उद्देश्य की पूर्ति के लिए इक़बाल ने इश्क पर ज़ोर दिया लेकिन इश्क से तात्पर्य इकबाल का मंज़िल तक पहुंचने की लगन है, इक़बाल का कहना है प्रेम के बगैर मनुष्य का अपना अस्तित्व कुछ न हो मनुष्य की खुदी को पूरा करने के लिए उसे संपूर्ण बनाने के लिए प्रेम का जज़्बा

आवश्यक है । इकबाल ने प्रेम का प्रयोग बड़े अर्थों में किया है । वह इसे बुद्धि के बराबर खड़ा कर देते हैं । उनका कहना है प्रेम और लगन द्वारा ही मनुष्य कर्म मार्ग की तरफ अग्रसर होता है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है । इकबाल ने इश्क अथवा प्रेम का प्रयोग मंज़िल तक पहुँचने की अथक लगन से किया है ।

अगर हो इश्क़ तो है कुफ़्र भी मुसलमानी
न हो तो मरदे मुसलमाँ भी काफ़िरो ज़िंदीक़ ।[1]

इक़बाल मनुष्य की आत्मा को विवश नहीं समझते । इक़बाल आदर्शवाद को केवल इस सीमा तक मानते हैं कि वह मनुष्य की बुद्धि और संभावनाओं पर विश्वास रखते हैं । लेकिन उनके नज़दीक कर्ता और कर्म एक ही सत्य के दो पहलू है और मनुष्य का अस्तित्व हमेशा से, एक कर्मक के रूप में है । इक़बाल मानते हैं अंतिम सत्य निश्चित नहीं । वह एक सर्जनीय कार्य है जो समय के रंगमंच पर खेला जा रहा है । वह उस अईडियलिज़्म {आदर्शवाद} को मानते हैं जो कर्ता और कर्म के संबंध को झुठलाता नहीं । इक़बाल का कहना है कि आज मनुष्य उन्नति कर रहा है तो उसके सोचने के ढंग में परिवर्तन आना चाहिए । यूनानी सभ्यता में हर वस्तु एक निश्चित सिद्धांत द्वारा चलती है । परंतु आज मनुष्य उन्नति करता जा रहा है जैसे-जैसे उसका क्षमता बढ़ेगी प्राकृतिक रहस्यों की जानकारी उसे भली-भांति मालूम हो जाएगी कहते हैं -

तेरी निगाह में है मोजज़ात की दुनिया
मेरी निगाह में है हादसात की दुनिया
तख़य्युलात की दुनिया ग़रीब है लेकिन

1} कुलयाते इक़बाल - पृ॰सं॰ 327

ग़रीबतर है हयातो ममात की दुनिया
अजब नहीं की बदल दे इसे निगाह तेरी
बुला रही है तुझे मुमकिनात की दुनिया ।[1]

अर्थात् यह कहा जा सकता इक़बाल के जीवन का उद्‌देश्य ऊंचे से ऊंचे स्थान पाना है और दूसरों को भी उसकी क्षमता और उसके गुणों का विश्वास दिलाता है । इसके अतिरिक्त संघर्ष की जिंदगी जीना आराम की जिंदगी को त्यागना है ।

दिनकर जी भी इक़बाल की तरह उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए व्यतीत किये गये जीवन को सार्थक मान लेते हैं । दिनकर जो यह मानते है कि काव्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होना चाहिए वह केवल पाठक कि अनुभूतियों को जागृत करने वाला नहीं होना चाहिए । बल्कि काव्य में कवि को अध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करना चाहिए । इक़बाल ही की तरह दिनकर जी सामंजस पर बल देते हैं जिस प्रकार दार्शनिक जगत के विभिन्न पदार्थों में सामंजस देखता है । इसी तरह दिनकर जी भी प्रकृति के बाहय रूपों और उपादानों की तरफ आकर्षित होकर प्रकृति के रहस्य को जानने का प्रयत्न करते हैं । वास्तव में मानव जीवन का उद्‌देश्य शाश्वत जगत की विभिन्न चीज़ों के बारे में जानने की जिज्ञासा होना चाहिए । इक़बाल ही की तरह दिनकर जी उसी जीवन को सार्थक मानते है जिसका एक निश्चित उद्‌देश्य हो । इक़बाल ने मंज़िल तक पहुंचने के लिए प्रेम को महत्त्व दिया । प्रेम अर्थात् मंज़िल तक पहुंचने का प्रेम, मनुष्य का अपनी मंज़िल से अथाह प्रेम लेकिन दिनकर मंज़िल तक पहुंचने के लिए संसारिक प्रेम जिसके शायद नारी का भी प्रेम आ जाता है को महत्त्व देते हैं । केवल इतना नहीं उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए दिनकर जी युद्ध की अनिवार्यता को

- -

1) कुल्याते इक़बाल - पृ॰सं॰ 495

भी मानते हैं जबकि इक़बाल के काव्य में युद्ध कहीं नहीं आया है । हाँ एकता के द्वारा वह समस्या का समाधान ढूँढते हैं । दिनकर जी भी इक़बाल ही की तरह गुत्थियों को सुलझाने के लिए धर्म का सहारा लेते हैं । दिनकर जी का स्वर्ग का कहना है उद्देश्य प्राप्ति के लिए संघर्षरत हुए मनुष्य के सामने तो स्वर्ग को भी झुकना पड़ता है ।

मैं उनका आदर्श जो तनिक न घबराएँगे
निज चरित्र बल से समाज में पद विशिष्ट्य पायेंगे
सिंहासन ही नहीं स्वर्ग भी जिन्हें देखना होगा
धर्म हेतु धन धाम लुटा देना ही जिन का व्रत होगा ।

दिनकर जी मानव मन को उच्चतम प्रवृत्तियों से संचालित देखना चाहते हैं । दिनकर जी यह मानते है जो मनुष्य निरंतर प्रयत्नशील रहे उसे अपने उद्देश्य की प्राप्ति अवश्य होगी कहते हैं -

अनायास अनुकूल लक्ष्य को
        मानव पा सकता है
निज विकास की चरम भूमि तक
        निर्भय जा सकता है ।[1]

संघर्ष

मनुष्य जीवन दो प्रकार से गुजार सकता है । एक तो उसे जो कुछ मिला है उससे संतुष्ट हो और भाग्य पर सब कुछ छोड़ दे । दूसरे यह की वह संघर्षमय जीवन व्यतीत करें दोनों ही कवियों ने संघर्ष को महत्त्व दिया । लेकिन दिनकर का संघर्ष मानव को उसका स्थान

---

1 रश्मिरथी - दिनकर
28 कुरुक्षेत्र दिनकर

दिलाने का है । उनका संघर्ष किसी न किसी अच्छे कार्य में लगे रहना है । जबकि इक़बाल का संघर्ष शाश्वत जगत को जानने के लिए प्रकृति के उपयोगी बनाते हुए मंज़िल की ऊंचाइयों तक पहुंचने का संघर्ष है ।

सितारों के आगे जहां और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तेहाँ और भी है
क़नाअत न कर आलमे रंगो बू पर
चमन और भी आशयां और भी हैं ।[1]

इसी रोज़ो शब में उलझ कर न रह जा
कि तेरे ज़मानो मकां और भी हैं
तू शाहीं है परवाज़ है काम तेरा
तेरे सामने आसमां और भी हैं ।[2]

अर्थात् वह मनुष्य को रुका हुआ नहीं देखना चाहते । दिनकर जी उसी मनुष्य के जीवन को सार्थक मानते है जो मेहनत करके कुछ हासिल करें न कि बगैर मेहनत के वह कुरुक्षेत्र में कहते हैं -

बिना चढ़े फुनगी पर जो
चाहता सुधा फल पीना
पीना रस प्यूस किंतु
यह मंदर नहीं उठाना

खारा कह जीवन समुद्र को
वहीं छोड़ देता है

---

1) कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 353

2) -वही-

सुधा सुरा मणि रत्न कोष से
पीठ फेर लेता है ।

अर्थात संघर्ष से भाग कर सन्यास ले लेने वाले मानव से दिनकर जी संतुष्ट नहीं । वास्तव में मनुष्य तो वही है जो कठिनाइयों से जूझता रहे तब मंज़िल तक पहुँचे दिनकर जी तो कहते है कि मनुष्य संघर्ष केवल अपने लिए नहीं करें बल्कि दूसरे के लिए भी करें, दूसरों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए दूसरों को उनका हक़ दिलाने के लिए कुरुक्षेत्र में कहते है -

जिस तप से तुम चाह रहे
पाना केवल निज सुख को
कर सकता है दूर वही तप
अमित नरों के दु:ख को ।[1]

यही नहीं दिनकर जी कहते है कि जिस समाज के मनुष्यों में संघर्ष करने की भावना जितनी अधिक होगी वह समाज उतना ही अधिक सुखी होगा । उनका यह भी कहना है कि अगर मनुष्य को समान जीने का अधिकार दिया जाए तो संघर्ष की भावना अधिक होगी ।

श्रम होता सबसे अमूल्य धन
सब जन खूब कमाये
सब अशंक रहते अभाव से
सब इच्छित सुख पाते ।[3]

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर 112
2) -वही-
3) -वही- " 100

कहीं-कहीं दिनकर जी भी इकबाल ही की तरह प्रकृति के रहस्यों का जानने के लिए संघर्ष करते है ।

छिपा दिये सब तत्त्व आवरण
के नीचे ईश्वर ने
संघर्ष से खोज निकाला
उन्हें उदयमी नर ने ।[1]

और मनुष्य के इस संघर्ष के सामने प्रकृति को झुकना ही पड़ता है ।

प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से
सदा हारती वह मनुष्य के
उदयम से श्रम बल से ।[2]

दिनकर का कहना है मनुष्य को सब मनुष्यों को बराबर अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष करते रहना चाहिए । अगरच यह उतना आसान नहीं लेकिन मेहनत करने वालों को ही मंज़िल मिलती है ।

न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव मानव को
चैन कहाँ धरती पर तब तक
शांति कहा इस मन को
जब तक मनुज मनुज का यह
सुख भाग नहीं सम होगा

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर 97
2) -वही-

शमित न होना कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा ।[1]

दिनकर जी का कहना है कि संघर्षरत मनुष्य तो हर कठिनाइयों को झेलता आगे बढ़ता जाता है । कहते हैं -

उठता गिरता शिखर गर्त दोनों से पूरित पथ पर
कभी विरथ चलता मिट्टी पर कभी पूर्ण के रथ पर
कतरा हुआ विकट रण तम से पापी पश्चात्तापी
किरण देश की ओर चला रहा मनुष्य प्रतापी ।[2]

इक़बाल के यहाँ संघर्ष की भावना

इक़बाल तो बिना संघर्ष के जीवन को बेकार मानते थे । यही नहीं इक़बाल के इस फिलसेफ (दर्शन) का स्पष्ट प्रभाव दिनकर जी पर दिखायी देता है, इकबाल का तो, कहना है इन्सान को किसी एक मंज़िल पर रुकना नहीं चाहिए । निरंतर संघर्ष ही मनुष्य के जीवन का उद्‌देश्य होना चाहिए ।

इकबाल स्वयं ही कहते हैं मनुष्य में हमेशा कुछ करने का भाव होना चाहिए और उसे हमेशा कठिनाइयों और ख़तरों से लड़ते रहना चाहिए इक़बाल अराम की जिंदगी नहीं चाहते । उनका कहना है वह बाग मुझे पसंद है जहाँ कि चिड़ियों को पकड़ने के लिए शिकारी पीछे नहीं पड़ा हो । इक़बाल यह भी कहते हैं इस तरह के भाव मनुष्य के अंदर है । फरिश्तों के अंदर नहीं ।

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर पृष्ठ 95
2) -वही- 91

खतर पसंद तबीयत को साजगार नहीं
वह गुलसितां की जहां घात में न हो सैयाद
मकामे शौक तेरे कुदसियों के बस का नहीं
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हो जयाद ।[1]

एक अन्य जगह इकबाल मनुष्य को नसीहत देते है तेरी मंज़िल तय नहीं तो बस यात्रा करता रह अर्थात् संघर्ष कर आगे बढ़ता जा यही तेरी जिंदगी है ।

हर एक मकाम से आगे मकाम है तेरा
हयात जौके सफर के सिवा कुछ और नहीं ।[2]

एक और जगह इकबाल यही बात कहते हैं जिंदगी का भेद क्या है बस उड़ान भरते रहना यानी संघर्ष करते रहना ।

समझता है तू राज है जिंदगी
फकत जौके परवाज है जिंदगी
बहुत उसने देखें हैं पस्तो बुलंद
सफर उसको मंज़िल से बढ़कर पसंद ।[3]

अपनी एक ग़ज़ल में इकबाल बताते है कि इश्क अर्थात् मार्ग तक पहुंचने की लगन के कारण मनुष्य की मिट्टी में भी उड़ने की क्षमता आ जाती है । इस मिट्टी को ईश्वर ने जो आंसू दिये हैं उनकी चमक सितारों को भी शर्मिंदा करती है ।

---

1) कुलयाते इक़बाल – पृ॰सं॰ 51
2) " – " 339
3) " – " 318

फ़ितरत ने न बख़्शा मुझे अंदेश ये चालाक
रख़ती है मगर ताक़ते परवाज़ मेरी ख़ाक
वह ख़ाक कि है जिसका जुनूँ सैक़ले इदराक
वह ख़ाक कि जिबरील की है जिससे क़बा चाक
वह ख़ाक कि परवाये नशेमन नहीं रखती
चुनती नहीं पहनाये चमन से ख़सोख़ाशाक
इस ख़ाक को अल्लाह ने बख्शे हैं वह आँसू
करती है चमक जिन की सितारों को अरक़नाक।[1]

संघर्ष शीलता का प्रतीक शाहीं

इक़बाल ने शाहीं चिड़िया को संघर्ष का प्रतीक माना है जिस तरह शाही कहीं घोंसला नहीं बनाती कहीं नहीं रखती उसी तरह इक़बाल इंसान को भी देखना चाहते हैं। यहाँ यह भी कहना गलत न होगा कि इक़बाल के फ़लसफ़े शाहीं का दिनकर पर बहुत प्रभाव पड़ा है और उन्होंने कुरुक्षेत्र और रश्मि रथी दोनों में कई जगह शाही अर्थात् बाज पक्षी को संघर्ष का प्रतीक माना है। इक़बाल चाहते हैं उनका मनुष्य यों सदैव ऊँची उड़ान भरता रहे नित नयी खोज करता रहे, उसकी खोज किसी एक संसार तक सीमित न हो। कहते हैं -

सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तेहाँ और भी हैं
तू शाहीं है परवाज़ है काम तेरा
तेरे सामने आसमाँ और भी हैं।[2]

---

1) कुल्याते इक़बाल - पृष्ठ सं0 361
2) " - " 353

इकबाल ने अपनी नज़्म "एक नौजवान के नाम' में इन्होंने नौजवानों को ऊँचाई तक पहुँचने की शिक्षा दी है उनका कहना है -

ओक़ाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
नज़र आती है उसको अपनी मंज़िल आसमानों में
न हो नौमीद नौमीदी ज़वाले इलमो इरफाँ है
उम्मीदे मर्दे मोमिन है खुदा के राज़दानों में ।

नहीं तेरा नेशमन क़सरे सुलतानी के गुंबद पर
तू शाहीं है बसेरा कर पहाड़ों की चट्टानों में ।[1]

इकबाल ने एक पूरी नज़्म "शाहीं" लिखी है जिसमें इन्होंने ने बताया शाहीं आरम की जिंदगी नहीं पसंद करता । इसको तो न बहार पसंद है, न प्रेम के गीत पसंद है, उसे पसंद है झपटना पलटना अर्थात् संघर्ष करते रहता । कहते है -

किया मैंने उस खाकदां से किनारा
जहां रिज़क का नाम है आबो दाना
बियावां की खिलवत खुश आती है मुझ को
अजल से है फित्तरत मेरी राहेबाना
न बादे बहारी न गुलजीं न बुलबुल
न बीमारिये नग़मये आशिक़ाना ।
.. .. ..
ख़्याबानियों से है परहेज़ लाज़िम
अदायें हैं इनकी बुहुत दिल बराना
हुमामो कबूतर का भूखा नहीं मैं
कि है जिंदगी बाज को ज़ाहिदाना

---

1. कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 412

झपटना पलटना पलटकर झपटना
लहू गर्म रखने का है एक बहाना
यह पूरब यह पश्चिम चकारों की दुनिया
मेरा नीलगूं आसमां बेकराना ।
परिंदों की दुनिया का दरवेश हूं मैं
कि शाहीं बनाता नहीं आशयाना ।

यहां यह कह देना ठीक होगा कि बहुत से लोगों ने इन अशार से यह अर्थ लिया है कमजोरों पर अत्याचार करना शक्तिशाली लोगों का अधिकार है लेकिन इक़बाल कहीं यह कहना नहीं चाहते वह कर्महीनता और दुर्बला को सबसे बड़ी लानत बताते हैं । वह कमजोरों को भी अत्याचारी मानते है क्योंकि वह अपने आप पर शक्तिशाली लोगों को अत्याचार करने का अवसर क्यों देते हैं । इकबाल चाहते हैं सभी मनुष्य अपना शक्ति को पहचाने और शक्तिशाली बने ताकि दूसरे उस पर अत्याचार कर ही न सके । वह अत्याचार करने वाले को जितना गुनहगार समझते हैं उतना अत्याचार सहने वाले को भी ।

जैसे कि पहले हो कहा जा चुका है इक़बाल के इन विचारों का दिनकर पर स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता और वह भी बाज पक्षी की जहां तहां संघर्ष और शक्ति के प्रतीक के रूप में देखते हैं । रश्मि रथी में जब शिव दधीचि कर्ण से उसका कवच और कुंडल मांगते हैं तो कर्ण कहते हैं बाज से उसके पर ले लिए जाये अर्थात् उसके उड़ने की विशिष्टता ही उससे छीन ली जाये तो वह कैसे जीवित रह सकता है ।

तनिक सोचिए वीरों का यह योग्य समर क्या होगा

- -

1§ कुलयाते इक़बाल, पृष्ठ सं0 457

इस प्रकार से मुझे मार पार्थ अमर क्या होगा
एक बाज का पंथ पंग तोड़ कर करना अभय अमर को
सुर को सोभे भले, नीति यह वही सोभती नर की ।[1]

रश्मिरथी में दिनकर एक अन्य जगह बाज पक्षी की संघर्ष का प्रतीक मानते हुए बिलकुल इक़बाल के ही आशार का अनुवाद जैसे लिखते हैं -

प्रसादों के कनकाम शिखर
होते कबूतरों के ही घर
महलों में गरुड़ न होता है
कंचन पर कभी न सोता है ।

बसता वह कहीं पहाड़ों में
शैलों की फटी दरारों में ।[2]

कर्म और स्वभाव

जिंदगी का एक बुलंद उद्देश्य और उसके प्राप्त करने के लिए किये गये संघर्ष के साथ ही मनुष्य अगर अच्छे कर्म करें तो जीवन का एक उत्कृष्ट रूप सामने आता है । इक़बाल के यहां कर्म की दिशा में चलने के शिक्षा कदम-कदम पर मिलती है जिंदगी का उद्देश्य चाहे कितना ऊंचा क्यों न हो कर्म के बगैर अर्थ हीन हो जाता है जीवन की सारी संभावनाएं कर्म के आगे खुल जाती है । कर्म एक ऐसा भाव है जिसका संबंध मनुष्य के अंदर के मन से होता है मनुष्य के बाह्य कर्म से संसार में परिवर्तन होता है और मानव के मन के भीतर जो कर्म भाव

---

1. रश्मिरथि, दिनकर, पृष्ठ सं० 39
2. रश्मिलोक ,, 186

पैदा होता है उससे मनुष्य के स्वभाव को दिशा मिलती है, मनुष्य आसमान और जमीन दोनों को कर्म के द्वारा अपनी इच्छानुसार ढाल सकता है ।

गीता में जो निष्काम भाव से कर्म करते रहने की शिक्षा दी गयी है, उसका प्रभाव दिनकर जी और इक़बाल दोनों पर स्पष्ट दिखायी देता है । दोनों का ही यह कहना है फल की चिंता किये बगैर कर्म किये जाओ इक़बाल कहते है -

अमल से जिंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है । 1

मनुष्य का व्यक्तित्व कर्म के ही द्वारा बनता है । मनुष्य एक मशीन है जो जितना ही चलेगी उतना ही उससे निखार आयेगा जिस तरह प्रकृति भौतिक नियमों को पाबंद है उसी तरह मनुष्य का व्यक्तित्व भी कुछ नियमों का पालन करते हुए निखर सकता है । मनुष्य के व्यक्तित्व में निखार जोखमो से खेलने से आता है जोखमें से खेलने से मनुष्य का भाग्य बदल सकता है ।

राज़ है राज़ है तक़दीरे जहाने तगो ताज़
जोशे किरदार से खुल जाते हैं तक्दीर के राज़ ।

अच्छे उद्देश्य को प्राप्ति के लिए दिमाग अपनी सारी शक्तियों को समेट कर पक्के इरादे सारे शरीर को आगे की तरफ ले जाता है । कर्म के ही द्वारा मनुष्य-मनुष्य खुदी को ऊपर उठा सकता है कर्म के द्वारा घटनाओं में बदलाव लाया जा सकता है । इकबाल कहते हैं कि कर्म की तरफ बढ़ने के लिए जरूरी है कि मन में इच्छायें

- -

1. कुलयाते इक़बाल - पृ॰ सं॰ 274

और उमंगे हों, इक़बाल यह मानते हैं जब बादल पानी को सहन नहीं कर पाता है तो बारिश होती है । उसी तरह उद्देश्य-पूर्ण जिंदगी का प्रभाव कर्म के रूप में हमारे सामने आता है ।

मनुष्य वास्तविकता को कर्म के द्वारा जीती जागती शक्ल में देख सकता है । वह वास्तविकता जो केवल ज्ञान तक सीमित है बेकार है और अनिश्चित है । जब तक वह कर्म की धार के द्वार चारों तरफ न फैल जाए बेकार है, वह वास्तविक नहीं सकती है । यदि किसी मनुष्य का जीवन ज्ञान एकत्रित करने में गुजर गया और उसने कर्म नहीं किया तो उसका जीवन बेकार है और उसके पास ज्ञान होने के बावजूद वह अधूरी जिंदगी जीता रहता है और उसका ज्ञान भी अधूरा रहेगा । मनुष्य ज्ञान के अनुसार कर्म करता है । जैसे मनुष्य के पास ज्ञान होगा वह वैसे ही कर्म करेगा । हमारे कर्म यानी मूल्यों के सृजन का सिलसिला जारी रहना चाहिए नहीं तो हमारी सभ्यता विकास नहीं कर पायेगी वह ठहर जाएगी एक जगह, कर्म निर्भर होता है निर्णय पर और निर्णय मनुष्य के चरित्र का चमत्कार है । मनुष्य वास्तव में जैसा होगा वैसा ही कर्म के द्वारा होगा ।

अच्छे काम करना और दूसरों का ध्यान रखना यह मनुष्य के अच्छे व्यवहार का प्रतीक है । जो कर्म के द्वारा ही प्रदर्शित हुए हैं, अच्छे कामों के लिए कोई मनुष्य यह नहीं कह सकता कि यह इसका अंतिम चरण है दूसरों की फिक्र (चिंता) करने से मनुष्य का कर्म, व्यवहार अच्छा होता है जीवन स्वयं में ही एक अनंत कर्म का नाम है जो किसी न किसी रूप में किसी न किसी भेष में हमारे सामने आता है, एक पेड़ के बीज के द्वारा अनंत बीजों का जन्म होता है । अर्थात् एक बीज के अंदर इतनी शक्ति है कि अनगिनत पेड़ों को जन्म देता है, इसी प्रकार मनुष्य का एक अच्छा कर्म उसे दूसरे कर्मों की तरफ प्रोत्साहित करता है । इस तरह

मनुष्य के कर्मों का विस्तार होता है । इक़बाल हमेशा मनुष्य को कर्म में लगे हुये देखना चाहते हैं ।

फित्तरत को खिरद के रू बरू कर
तसख़ीरे मुक़ामे रंगो बू कर
तू अपनी ख़ुदी को खो चुका है ।
खोयी हुयी शै की जुस्तजु कर
तारों की फिज़ा है बेकराना
तू भी यह मक़ाम आरज़ू कर
बे ज़ौक़ नहीं अगरचः फित्तरत
जो उस से न हो सका वह तू कर ।[1]

इकबाल मनुष्य को निरंतर कर्म करने के प्रेरणा देते हैं ।

हर एक मकाम से आगे मकाम है तेरा
हयात ज़ौके सफर के सिवा कुछ और नहीं ।[2]

इकबाल का कहना है कि मनुष्य का जन्म ही कर्म करने के लिए है वह ख़ुदा से कहते है "तूने मुझे दुनिया में क्यों भेजा है मैं अब यहां कर्म करूंगा, तुझे मेरा इंतेज़ार करना पड़ेगा ।

बागे वहिश्त से मुझे हुक्मे सफ़र दिया था क्यों
कारे जहां दराज़ है अब मेरा इंतेज़ार कर ।[3]

इक़बाल कहते हैं मनुष्य को शाहीं चिड़िया की तरह परवाज़ भरते रहना चाहिए किसी मंज़िल को अंतिम मंज़िल नहीं मानना चाहिए ।

तेरे सीने में दम है दिल नहीं है
तेरा दम गर्मिये महफ़िल नहीं है

---

1. कुलयाते इकबाल - पृष्ठ सं0
2. -वही-
3. -वही- - " 299

गुज़र जा अक़्ल से आगे कि यह नूर
चिराग़े राह है मंज़िल नहीं है ।[1]

इकबाल तो ऐसे कर्म का महत्व देते हैं जिससे जोखिम उठाना पड़े और यहाँ इकबाल का कहना है जो मंज़िल तक पहुँचने का सुख पाना चाहते हैं वह मनुष्य ही है, मनुष्य के ही दम से संसार बसा हुआ है । फरिश्तों को कर्म करने की क्षमता दान नहीं की गयी है ।

ख़तरपसंद तबीयत को साज़गार नहीं
वह गुलसिताँ कि जहाँ घात में न हो सैयाद
मकामे शौक तेरे कुदसियों के बसका नहीं
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हैं ज़्याद ।[2]

जावेद नामा में इक़बाल भरतहरि का ध्यान उन भारतवासियों की तरफ आकर्षित करना चाहते हैं जो आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं । इस पर भरतहरि एक नजम पढ़ते हैं ।

सिजदा बे ज़ोक़ व अमल ख़ुश्क बजाये नरसद
ज़िंदगानी हमा किरदार वः ज़ेबा व चः ज़िश्त ।[3]

अर्थात बेमन के सिजदे और रूखा कर्म मनुष्य को किसी लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकते ,जीवन पूर्ण कर्म है चाहे च्छा हो या बुरा

अंत में वह कहते हैं -
ईं जहाने कि तू बीनी असरे यज़दाँ नीस्त
चरख़ा अज़तुस्त हमाँ रिश्ता कि बरदूके तूरिश्त ।[4]

---

1) कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं॰ 298
2) -वही-
3) इकबाल और कौमो यक तहती मुजफ्फर हुसैन बरनी पृष्ठ 40
4) -वही-

'अर्थात् यह दुनिया जो तुम देख रखे हो ईश्वर की परछायी नहीं है । चरखा तुम्हारा है और जो कुछ उस तुम ने काता है वह भी तुम्हारा है ।'

इकबाल की तरह दिनकर भी कर्म का महत्व देते है बल्कि वह तो इकबाल के कर्म वादी जीवन दर्शन से प्रभावित भी थे ।

वह कहते हैं भाग्य कुछ नहीं होता मनुष्य की भुजाओं का बल ही सब कुछ है वह नियतिवाद का विरोध करते दिखायी देते है ।

नर समाज का भाग्य एक है
वह श्रम वह भुज बल है
जिसके सम्मुख झुकी हुयी
पृथ्वी विनीत नभ तल है । [1]

रश्मि रथी का कर्ण आज के मानव का प्रतीक है । वह केवल कर्म पर विश्वास करता हुआ दिखायी देता है ।

दिनकर जी तो यह भी मानते है, मनुष्य कर्म द्वारा अपना भाग्य परिवर्तित कर सकता है ।

रश्मिरथी में कर्ण केवल भुजाओं के बल पर आगे बढ़ने का संदेश देता है ।

विधि ने क्या था लिखा भाग्य में खूब जानता हूँ मैं
बाहों को पर कहीं भाग्य से बली मानता हूँ मैं ।[2]

---

1) कुरुक्षेत्र, पृष्ठ सं० 91

2) रश्मिरथी - दिनकर - पृ 36

इकबाल की ही तरह दिनकर जी पर भी भगवत गीता का प्रभाव पड़ा था । निष्काम भाव से कर्म करो फल की चिंता किये बगैर दिनकर ने कर्म को जीवन के लिए अनिवार्य माना है । कर्म न हो तो यह सारा संसार नष्ट हो जायेगा मनुष्य को अपनी शक्ति के सही उपयोग के लिए कर्म की सही दिशा चुननी चाहिए । मनुष्य का जन्म तो कर्म करने के लिए ही है ।

कुरुक्षेत्र में भीष्म युधिष्ठर से कहते है -

पोछो अश्रु उठो दुत जाओ
वन में नहीं भुवन में
हो आ खड़े असंख्य नरों की
आशा बन जीवन का
बुला रहा निष्काम कर्म वह
बुला रही है गीता
बुला रही है तुम्हें आर्त हो
यही समर संभीता ।[1]

इकबाल ही की तरह दिनकर जी भी मनुष्य को कर्म पग पर आगे बढते रहने की प्रेरणा देते है ।

सत्य नहीं घातक की ज्वाला
में मनुष्य का जलना
सच है बल समेट कर उसका
फिर आगे को चल ना ।[2]

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ सं0 126

2) -वही-

यही नहीं इकबाल की के तरह दिनकर भी यह मानते ह ाक मनुष्य स्वयं इस संसार में नहीं आया बल्कि उसे कर्म करने के लिए यहां भेजा गया है ।

धर्मराज क्या दोष हमारा
धरती यदि नश्वर है
भेजा गया यहां पर आया
स्वयं न कोई नर है ।[1]

और इस संसार की चिंता में ही मनुष्य कर्म मार्ग की तरफ अग्रसर होता है । संसार क्या वह जानने के इच्छा कर्म की प्रेरणा है । युधिष्ठर कहते हैं -

यह तृष्णा यह भूख न देती
सोने कभी मनुज की
मन को चिंतित और कर्म की
ओर भेजती भुज को ।[2]

दिनकर जी कहते है कि प्रकृति फूलों से धरती को सजाती है तो मनुष्य कर्म के माध्यम से धरती की शोभा बढ़ाता है ।

एक सजाता है धरती को
आंचल पुष्प कमल से
भरता भूतल में समृद्धि सुषमा
अपने भुज बल से ।[3]

---

1) कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ सं0 122
2) -वही- 122
3) -वही- " 120

दिनकर जी कर्तव्य को महान मानते हैं और कर्तव्य की भावना मनुष्य को कर्म मार्ग को तरफ अग्रसर करती है ।

कर्म भूमि है निखिल महीतला
जब तक है नर की काया
जब तक है जीवन के अणु-अणु
में कर्तव्य समाया
क्रिया-धर्म को छोड़ मनुज
कैसे निज सुख पायेगा
कर्म रहेगा साथ भाग वह
जहाँ कहीं जायेगी ।[1]

दिनकर जी का कहना है भाग्य कुछ नहीं होता बल भुजाओं का बल ही सब कुछ होता है ।

राजा प्रजा नहीं कुछ होता
होते मात्र मनुज ही
भाग्य लेख होता न मनुज का
होता कर्म भुज ही ।[2]

एक और जगह भुजाओं के बल को महिमा गाते हुए दिनकर जी कहते हैं -

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है
अपना सुख उसने अपने
भुज बल से ही पाया है ।[3]

---

1. कुरुक्षेत्र, दिनकर, पृष्ठ सं0 115
2. -वही- " " " 100
3. -वही- " " " 97

इक़बाल एवं दिनकर के यहां संपूर्ण मानव की पहचान

भगवान ने इस संसार की रचना की है इस संसार की छोटी सी छोटी वस्तुओं से लेकर बड़ी सी बड़ी वस्तुयें सब भगवान की बनायी हुयी है । इस संसार में पेड़ पौधों जानवर चिड़िया सब उसी भगवान की बनाई हुयी है । "लेकिन इस सब में सब से बुलंद दर्जा मनुष्य का है । क्योंकि भगवान ने मनुष्य को सोचने समझने वाला मस्तिष्क भी दिया है । पेड़ पौधों सभी जीव जंतु में खुदी होती है । लेकिन उनमें इनफिरादिय {व्यक्तित्व} नहीं होती । यह सब से बड़ा अंतर है, मनुष्य और पेड़-पौधों में भगवान ने मनुष्य को एक सोचने समझने वाला जहेन दिया है । वह अंगारे को छू कर हाथ जलने के पहले सोचेगा कि क्या अंगारे से हाथ जल सकता है जबकि दूसरी जीवित वस्तुओं में यह गुण नहीं पाये जाते हैं । मनुष्य ने इस संसार को जानने समझने की शक्ति पायी है । बल्कि उसके अंदर अपनी शक्ति को, अपने आप को, समझने का भाव भी पाया जाता है । और इसी भाव के कारण वह समाज में परिवर्तन लाता है, क्रांति लाता है, सुधार लाता है । इकबाल और दिनकर दोनों के यहां संपूर्ण मानव की एक सी स्थिति पायी जाती है जो हर प्रकार की क्षमता और गुणों से युक्त हो जो अपनी शक्ति को पहचान कर उनका उपयोग कर सके । हां दिनकर के यहां संपूर्ण मानव गुण की ही नहीं रूप की भी खान है लेकिन इकबाल ने रूप को कोई महत्व नहीं दिया है ।

> यह ज्योतिर्मय रूप ? प्रकृति ने किसी कनक-पर्वत से
> काट पुरुष-प्रतिमा विराट निज मन के आकारों की,
> महाप्राण से भर उसको, फिर भू पर गिरा दिया है;
> स्यात्, स्वर्ग की सुन्दरियों, परियों को ललचाने को,
> स्यात्, दिखाने को, धरती जब महावीर जनती है.
> असुरों से वह बली, सुरों से भी मनोज्ञ होता है।

उर्वशी - दिनकर - पृ. 59

दिनकर जी यह मानते है कि मनुष्य ने संसार में जन्म लिया है अपने अंदर कुछ जन्मजात शक्तियाँ लेकर संपूर्ण मानव वही है जो इन शक्तियों को पहचान कर संसार में कुछ कर्म करें दि-नकर जी मनुष्य की आचार विचार की शुद्धता पर बल देते हैं । दिनकर जी उसे सही अर्थों में मनुष्य मानते हैं जो ज्ञान अर्जित कर सके और उसका सही प्रयोग कर सके । वह इकबाल की तरह मानते है कि मनुष्य का जीवन कर्म के बिना अस्तित्व हीन है ।

इकबाल ने कई जगह यह कहा है कि मर्दे मोमिन की बाह को खुदा की बाँह का सहारा मिल जाता है । दिनकर जी भी यही मानते है वह मानते हैं वही सच्चा मनुष्य है जो सारे समाज के लिए जीवन व्यतीत करे न कि अपने लिए और ऐसे मनुष्य के सामने पृथ्वी ही नहीं आकाश भी झुक जाता है । कहते हैं -

नर समाज का भाग्य एक है
व श्रम वह भुज बल है
जिसके सम्मुख झुकी हुयी है
पृथ्वी विनीत नभ तल है ।

यही बात दिनकर ने कुरुक्षेत्र में कई जगह कही है -

था पंथ सहज अतीत सम्मिलित
हो समग्र सुख पाना

- -

18 दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृष्ठ सं0 17

केवल अपने लिए नहीं
कोई सुख भाग चुराना ।[1]

दिनकर जी इकबाल की तरह उसी मनुष्य को मनुष्य मानते हैं जो आत्याचार न सहे इतनी शक्ति हो कि वह अत्याचार का मुकाबला कर सके नहीं तो वह व्यक्ति पौरुष हीन कहलाएगा कहते हैं -

अत्याचार सहन करने का
कुफल यही होता है ।

पौरुष का आतंक मनुज
कोमल होकर खोता है
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दंतहीन
विष रहित विनीत सरल हो ।[2]

- -

1) दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृष्ठ सं0
2) -वही- " 32

दिनकर जी उस मनुष्य को मनुष्य मानते हैं जो न केवल स्वयं ज्ञानी हो बल्कि वह दूसरों के बीच भी ज्ञान का दीप जलाता चले न केवल वह अपने चरित्र को ऊँचा रखे बल्कि दूसरों के चरित्र से भी वह बुराइयों को दूर कर सके और उनमें अच्छाइयाँ भरने का प्रयत्न करें । अपने लिये तो सभी जीते हैं सार्थक जीवन तो उसी मनुष्य का है जो दूसरों के लिये जिये ।

खोजना इसे तो जलाओ शुभ ज्ञान दीप
आगे बढ़ो वीर कुरुक्षेत्र के श्मशान में
नर को दिखाओ पंथ त्याग बलिदान से
दलित मनुष्य में मनुष्यता के भाव भरो
दर्प की दुराग्नि करो दूर बलवान से
हिम शीत भावना में आग अनुभूति की दो
छीन लो हलाहल उदग्र अभिमान से ।[1]

दिनकर जी की दृष्टि में वही मनुष्य सच्चा मनुष्य है भय से न त्रस्त हो जो निर्भीक भाव से कठिनाइयों का सामना कर आगे बढ़ सके । कुरुक्षेत्र में वह भीष्म पितामह के मुख से यह कहलाते हैं -

मही नहीं जीवित है मिट्टी से डरने वालों से
जीवित है वह उसे फूक सोना करने वालों से
ज्वलित देख पंचाग्नि जगत से निकल भागता योगी
धुनी बनाकर उसे तापता अनासक्त रसभोगी ।[2]

दिनकर जी कही सम्पूर्ण मानव के रूप में कर्ण को प्रस्तुत करते हैं तो कहीं परशुराम को रश्मिरथी में एक जगत वह कर्ण के मुख से कहलवाते हैं जो उनके सम्पूर्ण मानव का प्रतीक है ।

---

1. दिनकर - कुरुक्षेत्र - पृ सं0 93
2. दिनकर - कुरुक्षेत्र - पृ सं0 69

जग में जो भी निर्दलित प्रताड़ित जन है
जो भी दीन हीन निन्दित है निर्धन है
यह कर्ण उन्हीं का सखा बंधु सहचर है
विधि के विरुद्ध ही उसका रहा समर है ।[1]

कुरुक्षेत्र में दिनकर जी लिखते हैं कि सन्यास तो कायर पुरुष ढूंढते हैं । सच्चा मनुष्य तो कठिनाइयों से लड़ता रहा है ।

धर्मराज सन्यास खोजना
कायरता है मन की
है सच्चा मनुजत्व ग्रन्थियाँ
सुलझाना जीवन की ।[2]

दिनकर एक अन्य जगह कुरुक्षेत्र में महामानव की पहचान बताते हैं -

वह देख वहाँ ऊपर अनन्त अम्बर में
जा रहा दूर उड़ता वह किसी लहर में
लाने धरती के लिए सुधा की सरिता
समता प्रवाहनी शुभ्र स्नेह जल भरिता ।[3]

दिनकर जी तो मनुष्य को देवता से भी ऊपर उठता हुआ देखना चाहते हैं । यही बात इकबाल ने भी खुदा से कही है मैं कुटिल हूँ खतावार हूँ लेकिन फरिश्तों से तेरा संसार नहीं बसा है । यह हम जैसे इन्सानों से ही बसा हुआ है -

कसूरवार ग़रीबुददयार हूँ लेकिन
तेरा ख़राबा फरिश्ते न कर सके आबाद ।[4]

---

1. दिनकर - रश्मि रथी - पृ सं0
2. दिनकर-कुरुक्षेत्र - पृ सं0 108
3. दिनकर-कुरुक्षेत्र - पृ सं0 68
4. कुलयाते इकबाल 360

दिनकर जी कुरुक्षेत्र में लिखते हैं बल्कि इन्द्र की ज़ुबानी वह पंक्तियाँ कहलाते हैं -

तू दानी मैं कुटिल प्रवंचक तू पवित्र मैं पापी
तू देकर भी सुखी और मैं लेकर भी परितापी
तू पहुँचा है कर्ण जहाँ देवन्त न जा सकता है
इस महान पद को कोई मानव ही पा सकता है ।[1]

वह यह भी कहते हैं कि विपत्ती तो मनुष्य के लिए परीक्षा की घडी है । सच्चा मनुष्य तो वही है जो विपत्ती में जरा भी नहीं घबराए ।

सच है विपत्ती जब आती है
कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते
विघ्नों को गले लगाते हैं
काटों में राह बनाते हैं ।[2]

इकबाल का सम्पूर्ण मानव अर्थात् मर्दे मोमिन :

इस्लाम ने मनुष्य के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए उसे सृष्टि की सर्वोत्तम देन माना है । मनुष्य अन्तरिक्ष और संसार दोनों में सबसे महत्वपूर्ण हस्ती है, इसलिए उस की जिम्मेदारी भी बड़ी है । और इसी बात पर इकबाल का मर्दे मोमिन का सिद्वान्त निर्भर करता है । मनुष्य की हस्ती के बगैर परमात्मा और प्रकृति में सम्बन्ध नहीं हो सकता मनुष्य ही परमात्मा और प्रकृति को मिलाने की भूमिका अदा करता है । उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष संसार की सृष्टि का मुख्य उद्देश्य है । मनुष्य के द्वारा परमात्मा स्वयं अपने मूल रूप को देखता है -

1• दिनकर - रश्मिरथी - पृ सं0 43 2• दिनकर - रश्मिरथी- पृ सं0 18

इसलिए की मनुष्य के अतिरिक्त संसार के अन्य किसी जीव में इतने गुण नहीं है जो ईश्वर के अस्तित्व को अनुभव कर और उसकी विचित्र रचना को विस्तार दे सके ।

जीवन के नैतिक मूल्यों का विकास अगर रुक जाये तो मानव सभ्यता का विकास नहीं हो सकता । इसलिए इक़बाल उसी को मनुष्य मानते हैं जो अपने नैतिक मूल्यों को ऊपर उठा सके और ऐसा न हो सृष्टि का विकास रुक जायगा ।

इक़बाल खुदा को मनुष्य से अलग रखते हैं लेकिन वह यह भी मानते हैं कि अगर मनुष्य खुदा के बताये गये रास्ते पर चले तो वह प्रकृति के सारे राज़ जान जायेगा उसके समक्ष जीवन के सभी रहस्य खुल जायेंगे । वह जीवन का उद्देश्य पा जायेगा उसका जीवन ईश्वर का जीवन बन जायगा । उसकी वाणी ईश्वर की वाणी बन जायगी वह कहते हैं वही मानव सम्पूर्ण मानव है जो स्वयं को समझे आगे बढ़े प्रकृति का समस्त रहस्यों और उसके उद्देश्य को समझ सके ।

हाथ है अल्लाह का बन्दये मोमिन का हाथ
गालिबो कार आफ़रीं कार कुशा कार साज़
ख़ाकी व नूरी निहाद बन्दये मौला सिफ़ात
हर दो जहां से ग़नी इसका दिले बेनियाज़ ।[1]

इक़बाल का कहना है सम्पूर्ण मानव वही है जो भाग्य के सामने झुके नहीं बल्कि उसे परिणित कर सकने की क्षमता रखे ।

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरेबाज़ू का ?
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें ।[2]

इक़बाल का मर्दे मोमिन एक आदर्श मनुष्य का जीती जागती मिसाल है वह अपने अन्दर ऊँचे गुण उत्पन्न करता है वह कमज़ोर पर शक्ति

1. कुलयाते इक़बाल 2. कुलयाते इक़बाल

का उपयोग नहीं करना चाहता । वह प्रकृति की रंगीनी पर काबू पाना चाहता है, इक़बाल का मनुष्य मनुष्य की शारीरिक शक्ति को महत्व नहीं देता । उसका उपयोग इक़बाल का मर्दे मोमिन नहीं कर सकता । वह मनुष्य की आत्मिक बल को महत्व देते हैं । बिल्कुल यही बात हम दिनकर के सम्पूर्ण मानव में देखते हैं । वह भी दुर्बलों पर हाथ नहीं उठाता वह तो दुर्बल में साहस भरना चाहता है । इक़बाल का मर्दे मोमिन चट्टाने तोड़ने की शक्ति रखता है । अर्थात् वह हर मुसीबत से टकरा सकता है । वह रेगिस्तानों में जाना चाहता है । इक़बाल लिखते हैं -

मसाफ़े ज़िन्दगी में सीरते फौलाद पैदा कर
शबिस्ताने मुहब्बत में हरीरो परनियाँ होजा
गुज़र जा बन के सैले तुन्दरवकोहो बियाबाँ से
गुलिस्ताँ राह में आये तो जूये नग़मा खाँ हो जा ।[1]

एक अन्य जगह कहते हैं

हो हलक़ये याराँ तो बरेशम की तरह नर्म
रज़्मे हक़ो बातिल हो तो फ़ौलाद है मोमिन
अफलाक से है इसकी हरीफ़ाना कशाकश
ख़ाकी है मगर खाक से आज़ाद है मोमिन ।
जचते नहीं कुंजश्को हुमाम उसकी नज़र में
जिबरीलो सराफील का सैयाद है मोमिन ।[2]

... बाले जिबरील की एक नजम "मर्दे मुसलमान" में मोमिन के बारे में बताते हुये कहते हैं कि वह तो हर गुणों से युक्त है सितारों का आगे उसके झुकना पड़ता है ।

1· कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 157

2· कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 507

हर लहज़ा है मोमिन को नयी शान नई आन
गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान
क़हारी व गफ़्फ़ारी व कुद्दूसी व जबरूत
यह चार अनासिर हों तो बनता है मुसलमान
हमसायये जिबरीले अमीं बन्दये खाकी
है इसका नशेमन न बुख़ारा न बदख़शान
यह राज़ किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में है कुरान
कुदरत के मकासिद का अयार इसके इरादे
दुनिया में भी मीज़ान क़यामत में भी मिज़ान
जिस से जिगरे लाला में ठंडक हो वह शबनम
दरयाओं के दिल जिससे दहल जायें वह तूफ़ान
फ़ितरत का सरूदे अज़ली इसके शबो रोज़
आहँग में यकता सिफते सूरये रहमान ।[1]

इक़बाल के सम्पूर्ण मानव के लिये सितारे शताब्दियों तक अपनी आँखे बिछाये इन्तेजार करते है । तब कहीं वह प्रकट होता है -

तू किस्ती ज़ेकुजायी के आसमाने कबूद
हज़ार दीदा बराहे तू अज़ सितारा कुशूद ।[2]

इक़बाल का कहना है कि वास्तविकता में सम्पूर्ण मानव संसार में है ही कितने ? हज़ारों साल में कुछ ही लोग ऐसे पैदा होते है जो सम्पूर्ण मानव की क्षमता रखते हो ।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ।"[3]

1· कुलयाते इक़बाल - पृ सं० 522 2· प्राप्त "रुहे इक़बाल" डॉ० यूसुफ हुसैन खान - पृ सं० 155

3· प्राप्त "रुहे इक़बाल" डॉ० यूसुफ हुसैन खान - पृ सं० 155

इस तरह से देखा जाय तो दिनकर जी और इक़बाल दोनों के यहाँ सम्पूर्ण मानव की एक सी स्थिति है अर्थात् वह तो सम्पूर्ण गुणों से युक्त हो और जो दुर्बलों का हाथ बन सके अन्तर इतना है कि इक़बाल व्यक्ति को महत्त्व नहीं देते केवल व्यक्तित्त्व को महत्त्व देते हैं लेकिन दिनकर व्यक्ति को भी महत्त्व देते हैं उनका सम्पूर्ण मानव सुन्दरता में भी अद्वितीय होने चाहिये और उसमें शारीरिक बल भी होना चाहिये ।

दिनकर जी और डॉ० इक़बाल के काव्य में समिष्टिगत जीवन दर्शन

जिस तरह एक बूँद की क्षमता महान तभी है जब वह मोती बन जाय उसी प्रकार मनुष्य अपने अन्दर पूरी तरह आत्म शक्ति संचार तभी कर सकता है जब वह व्यक्ति केवल व्यक्ति न बन सके बल्कि वह समाज के साथ उभर कर सामने आये । इक़बाल और दिनकर दोनों ही कवियों ने व्यष्टि के साथ समिष्टि को भी महत्त्व दिया है । अक्सर दार्शनिक जैसे नीश्ते वरगसू इत्यादि व्यक्ति को अधिक महत्त्व देते हैं उनके विचार में समाजी जिन्दगी व्यक्ति के विचार फैलाने में मदद करती है । लेकिन ज़ाहिर सी बात है, मनुष्य जब तक सामाजिक जीवन से जुड़कर आगे न बढ़े उसका जीवन पूर्ण नहीं कहा जा सकता । मनुष्य के कुछ कर्तव्य होते हैं । उसके बग़ैर उसका जीवन पूर्ण नहीं कहा जा सकता, जिस समाज में वह अर्थात् मनुष्य पैदा होता है अँगुली पकड़ कर जो समाज उसे चलना सिखाता है उसे अच्छाइयों, बुराइयों को पहचान कराता है, फिर मनुष्य के माता-पिता जिनके बग़ैर मनुष्य का अस्तित्व कुछ महत्त्व नहीं रखता । उनके लिये मनुष्य के कर्तव्य द्वारा जीवन पूर्ण होता है । मनुष्य के भीतर क्षमता दूसरे मनुष्यों और प्रकृति से संबंध रखने में ही पैदा हो सकती है । मनुष्य अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये भी जिस सीढ़ी का प्रयोग करता है वह समाज है ।

यूँ तो चींटियों और शहद की मक्खियों में समष्टि की भावना मनुष्य से अधिक रहती है । वह दलों के साथ चलती है । लेकिन उनके अन्दर खुदी अर्थात् आत्मभावना, बल की भावना

नहीं होती, अर्थात् मनुष्य के लिये आवश्यक है कि वह अपनी शक्ति को पहचाने और समाज को भी साथ ले कर चले किसी शायर ने कहा है -

हयात ले के चलो कायनात ले के चलो ।
चलो तो सारे ज़माने को साथ ले के चलो ।

मनुष्य जब मेल मिलाप के जीवन को अपनाता है और दूसरों के सुखों के लिये स्वयं दुःख उठाने को तैयार हो जाता दूसरों की सेवा करने के लिये स्वयं को तैयार कर लेता है । तो ऐसा मनुष्य अपने आप को ऊँचाइयों तक पहुंचा देता है । वह मनुष्य जो केवल अपना ध्यान कर सके स्वार्थी कहलाता है मनुष्य तो वही है जो अपने साथ साथ दूसरों के सुख और दूसरों की भलाई का ख्याल रख सके और ऐसा ही मनुष्य उत्तम स्वभाव का मनुष्य कहलाएगा । कोई भी मनुष्य चाहते हुये भी अपने आप को समाज से अलग नहीं कर सकता । जिस तरह एक वृक्ष की जड़े पृथ्वी के अन्दर जड़ी रहती है जड़ काट देने से वृक्ष गिर जायगा । उसी प्रकार मनुष्य के जीवन की जड़े समाज से जुड़ी होती है और वह समाज से भोजन प्राप्त करती रहती हुये अपने आपको सुदृढ़ बनाती है ।

व्यक्ति को पूर्ति इसी में है कि वह समाज से अच्छा सम्बन्ध रखे नहीं तो उस वृक्ष की तरह वह होगा जिसकी जड़े उखड़ गयी हो ।

अर्थात् यह तो तय हो गया कि व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर आश्रित है । व्यक्ति में एक व्यक्ति के हित की बात होती है जब कि समिष्टि में पूरे समाज के हित की लेकिन दोनों की शोभायें, मर्यादायें अलग होती है और मनुष्य को उन का पालन करना ही होता है ।

कवि दिनकर और इकबाल दोनों ने ही समिष्टवादी जीवन को महत्व दिया है । लेकिन व्यष्टि को नष्ट करके नहीं दोनों ही कहते है मनुष्य अपने व्यष्टि अर्थात् खुदी को बरकरार रखते हुये व्यष्टि

के नैतिक मूल्यों का पालन करते हुये समिष्टि की तरफ जाय अर्थात् दोनों का जीवन दर्शन समिष्टिवादी भी है व्यष्टिवादी भी । दोनों ने व्यष्टि को समिष्टि हित के लिये प्रेरणा दी है । क्योंकि मानवजीवन तभी पूर्ण हो सकता है ।

दिनकर जी मानते हैं कि मनुष्य के अन्दर उच्च विचार और उच्च भाव तभी पैदा हो सकते हैं जब वह समिष्टि की हित के बात सोचते हैं ।

झुक समिष्ट के सम्मुख जिस दिन व्यष्टि दान देता है
तभी व्यष्टि के भीतर करुण विनय जन्म लेती है ।[1]

कुरुक्षेत्र में दिनकर जी कई जगह व्यक्ति सुख को महत्त्व न देते हुये सन्यासी जीवन के सामने वह गृहस्थ जीवन जो मनुष्य को कर्म की दिशा में चला सके को महत्त्व दिया है । वह लिखते हैं -

निज तप रखो बुरा निज हित
बोलो क्या न्याय यही है
क्या समिष्टि हित मोक्ष दान का
उचित उपाय नहीं है ।[2]

कुरुक्षेत्र में भीष्म पितामह भी युद्धिष्ठिर से कहते हैं व्यक्ति से बीच वह समिष्टि की तरफ कदम बढ़ाये ।

कवि ने वैयक्तिक भोगवाद को सारी दुनिया के लिये हानिकारक माना है इसलिये कई जगह व्यक्ति के भोगवाद को दिनकर जी खंडन करते हैं ।

---

1. कुरुक्षेत्र - पृष्ठ सं0 107
2. कुरुक्षेत्र - पृष्ठ सं0 109

इन व्यक्तित्व भोगवाद से
फूटी विष की धारा
तड़प रहा जिसमें पड़का
मानव समाज यह सारा ।[1]

दिनकर जी तो समिष्टि सुख के लिये व्यष्टि सुख को बलिदान करने की बात करते हैं । परन्तु इक़बाल समिष्टि के लिये व्यष्टि की कुरबानी नहीं चाहते । दिनकर जी कहते हैं -

जाओ, शमित करो निज तप से नर के रागानल को,
बरसाओ पीयूष, करो आभाषक्त दग्ध भूतल को । 2

दिनकर जी समिष्टि की रक्षा के लिये समिष्टि के हित का ध्यान रखने के लिये व्यष्टि के बलिदान को महत्व देते हैं वह कहते हैं सैनिक किस प्रकार समाज की रक्षा के लिये युद्ध की आग में कूद पडता है दिनकर जी व्यष्टिगत और समिष्टिगत समाज के सम्बन्ध को इस प्रकार देखना चाहते हैं । जैसा कि पुराने समाज में था ।

सब से बद्ध समिष्टि सुन्न में
कोई छिन्न नहीं था
किसी मनुज का सुख समाज के
सुख से भिन्न नहीं था ।
चिन्ता न थी किसी को कुछ
निज हित संचय करने का ।[3]

दिनकर जी यह मानते हैं कि जिस समाज का मनुष्य केवल अपने हित की परवाह करें स्वयं हर प्रकार के सुख उपलब्ध करना चाहे । उसका मन आत्म कर्तव्य की भावना से परिपूर्ण हो तो ऐसे समाज का अस्तित्व हमेशा नहीं हो सकता । वह जल्द ही नष्ट हो जाता । इसके

1• कुरुक्षेत्र - पृष्ठ सं0 95
2• " " 125
3• - हुंकार 60

अतिरिक्त मनुष्य का एक दूसरे से प्रेम करने का भाव भी समाज ही के द्वारा आता है। दिनकर जी के यह भी कहते हैं कि आज का मनुष्य खुद गरज {स्वार्थी} होता जा रहा है। वह दूसरों के हित के लिए अपनी हित का बलिदान नहीं कर सकता और ऐसा समाज उन्नति नहीं कर सकता। उस समाज का अन्त निश्चित है।

तज समिष्टि को व्यष्टि चली थी
निज को सुखी बनाने
गिरी गहन दासत्व गर्त के
बीच स्वयं अन्जाने।[1]

वह यह भी मानते हैं समाज के विकास के लिये प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न न करें तो वह समाज टूट कर बिखर जाता है। दिनकर जी के दृष्टि में व्यक्ति की समिष्टि के बिना कोई सत्ता ही नहीं होती

व्यष्टि समिष्टि विवाद व्यर्थ है झगड़ा मन माना है
हे समिष्टि की हार व्यक्ति तो मोती का दाना है
बूंदि जब गिरती समुंदर में व्यथा का कौन पाता है
सागर में मिलकर अगाध सागर ही बनती है
आते सारे भाव व्यक्तियों के समाज से छन कर
पुन: लौट जाते समिष्टि में वे गायन बन कर
जैसे मेघ धरा से उठ कर अम्बर पर घिरता है
और वारि बन फिर वसुधा के ही तन पर गिरता है।[2]

हिन्दू धर्म में सन्यास को काफी महत्त्व दिया गया है। इसलिये अगर मनुष्य कठिनाइयों से परेशान हो तो सन्यास का रास्ता अपना सकता है इससे उसे आत्म संतोष मिलेगा लेकिन जीवन गुजारने का दूसरा मार्ग कर्म का है। आप ऐसे कर्म कीजिये जो दूसरों के लिये पथ-

---

1. कुरुक्षेत्र - 141 2. नीलकुसुम पृ सं० 119

प्रदर्शन का कार्य कर सके, और इस के लिये मनुष्य को शौर्य, बल और विवेक की आवश्यकता होती है । दिनकर जी दूसरे मार्ग को मानव के लिये श्रेष्ठ समझते हैं कुरुक्षेत्र में यह भीष्म के द्वारा इस प्रकार के विचार व्यक्त करते हैं । भीष्म युद्धिष्ठिर से व्यष्टि का त्याग कर समिष्टि की स्थापना करने को कहते हैं -

दुर्लभ नहीं मनुज के लियेहित
निज व्यक्ति सुख पाना
किन्तु कठिन है कोटि कोटि
मनुजों को सुखी बनएना ।[1]

भीष्म कठिनाइयों से भागने वाले पुरुष को कायर समझते हैं -

जनाकीर्ण जग से व्याकुल हो
निकल भागना वन में
धर्म राज है घोर पराजय
नर की जीवन रण में ।[2]

कवि का विचार है सन्यास ग्रहण कर लेने से समस्त मानव मन की विकलता तो दूर नहीं हो सकती । केवल स्वयं को संतोष प्राप्त होगा । मनुष्य को तो ऐसा कार्य करना चाहिये जिससे सभी को संतोष प्राप्त हो । कुरुक्षेत्र में भीष्म युद्धिष्ठिर से व्यंग्य भरी भाषा में कहते हैं-

यदि सन्यास शोध है इसका
तो मत युक्ति छिपाओ
सब है विकल सभी को अपना
मोक्ष मंत्र सिखलाओ ।[3]

---

1. कुरुक्षेत्र - दिनकर - पृ सं0 148
2. कुरुक्षेत्र - दिनकर - पृ सं0 154
3. कुरुक्षेत्र - दिनकर - पृ सं0 173

कुरुक्षेत्र के भीष्म दिनकर के आदर्श मानव है । वह समिष्टि-वादी जीवन को महत्त्व देता है । मनुष्य समाज में पलता, बढ़ता है, ज़ाहिर सी बात है । समाज के लिए उसका कर्तव्य कुछ होता है । समाज के ही द्वारा मनुष्य अनुशासित जीवन गुजारता है । यदि मनुष्य समाज का त्याग करें तो वह सुखी नहीं रह सकता । इसलिए दिनकर जी कहते हैं जहाँ व्यष्टि का शासन हो वहाँ नाश की घड़ियाँ अवश्य आयेंगे ।

जहाँ व्यष्टि स्वाधीन अधिक हो
नाश वहाँ छायेगा
अनुशासन के बिना व्यक्ति
कुछ प्राप्त न कर पायेगा ।"1

दिनकर जी की तरह इक़बाल भी समिष्टिवादी जीवन को महत्त्व देते हैं लेकिन दोनों की राहे अलग है, दिनकर जी ने संयास को भी लेकर यह प्रश्न जहाँ वहाँ उठाया है लेकिन क्योंकि इक़बाल इस्लाम को मानते थे जिसमें सन्यास का कोई महत्त्व नहीं इसलिये इक़बाल की नज़्मों में व्यष्टि को कहीं सन्यास नहीं माना गया । बल्कि मनुष्य केवल अपनी खुदी को पहचाने और अपने लिये आगे बढ़े यह माना गया है । इक़बाल इस तरह के जीवन को जीवन नहीं मानते वह यह मानते हैं कि व्यष्टि का विकास तभी संभव है जब वह समिष्टि के साथ हो । इक़बाल आत्म शक्ति के साथ साथ समाज को भी महत्त्व देते हैं । उनका कहना है मनुष्य के अन्दर जो गुण है कुछ करने की अवाध क्षमता जो है उसका पूरी तरह विकास तभी हो सकता है जब वह समाज को साथ लेकर चले । हर मनुष्य के सुख दुख का ध्यान रखे । कोई मनुष्य के अन्दर जो विभिन्न भाव पाये जाते हैं उनके पहला भाव कर्तव्य का है । कर्तव्य का एहसास ही मनुष्य को ऊँचाईयों तक पहुँचा सकता है, और यह

---

1. नीलकुसुम-दिनकर - पृष्ठ सं० 119

एहसास [भाव] समिष्टिवादी जीवन गुजारने से ही आ सकता है, यह सच है कि इक़बाल खुदी [आत्मा] का शायर है लेकिन वह समाज के महत्व को भी स्वीकार करता है।

वजूद अफ़राद का मजाज़ी है हस्तिये क़ौम है हक़ीक़ी,
फ़िदा हो मिल्लत पे यानी आतिश ज़ने तिलिस्मे मजाज़ होजा

इकबाल के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व का निखार तभी हो सकता है जबकि वह समाज के प्रति वफ़ादार रहे, अगर वह ऐसा नहीं करता है तो उसके व्यक्तित्व में जो जोहर है वह दबे के दबे रह जायेंगे क्योंकि मनुष्य जिस वातावरण में पलता बढ़ता है इससे उसको खुदी [आत्मा] का विस्तार होता है, अर्थात्, मनुष्य को बनाने बिगाड़ने में समाज का हाथ होता है, मनुष्य का अलग अस्तित्व कुछ नहीं इक़बाल कहते हैं, उस डाली का कोई महत्व नहीं जो पेड़ से टूट कर गिर गयी। वह पुन: हरी नहीं हो सकती उसका सूखना निश्चित है।

डाली गयी जो फ़सले खज़ां में शजर से टूट
मुमकिन नहीं हरी हो सहाबे बहार से
है लाज़वाल अहदे ख़ज़ां उसके वास्ते
कुछ वास्ता नहीं है इसे बरगो बार से
है तेरे गुलसितां में भी फसले ख़िज़ां का दौर
ख़ाली है जेबेगुल ज़रे कामिल अयार से
जो नग़मा ज़न थे ख़लवते औराक़ में तुयूर
रुख़सत हुये तेरे शजरेसायादार से
शाखे बुरीदा: से सबक़ अन्दोज़ हो कि तू
ना आशना है क़ायदये रोज़गार से
मिल्लत के साथ राबतये उस्तवार रख
पेवस्ता रह शजर से उम्मीद बहार रख।[2]

1· रूहे इक़बाल - युसुफ हुसैन खान - पृ सं0 157
2· -वही- 158

ऊपर की नज़्म से साफ पता चलता है इक़बाल कहना चाहते हैं अगर मनुष्य खुशी की जीवन व्यतीत करना चाहता है तो उसे समाज से जुड़कर ही चलना पड़ेगा ।

मनुष्य का जीवन नश्वर है । लेकिन जब वह समिष्टिवादी जीवन दर्शन को अपनाता है तो आगे वाली पीढ़ियों के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करता है । इक़बाल का यह कहना है कि मनुष्य का यह कर्तव्य होना चाहिए । वह समाज को उसकी हक़ दिलवाने के लिये संघर्ष करता रहे । तभी मनुष्य अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है और कर्म की सही दिशा चुन सकता है, और वह अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है । इक़बाल के समिष्टिवादी जीवन दर्शन का निचोड़ हैं मनुष्य समाज में मेल मुहब्बत का भाव पैदा करते हुये ऐसे कर्म करके उत्तम उद्देश्य की प्राप्ति करें जिससे उसकी खुदी को भी संतोष मिले, और ऐसे काम के लिये वह अपनी जीवन को खो दे तो भी परवाह नहीं जिससे सारे समाज का भला हो और ऐसे मनुष्य का जीवन सम्पूर्ण कहा जायगा, जो व्यष्टि और समिष्टि दोनों भावों को सही अर्थों में समझ सके । ऐसे मनुष्य का इस तरह का स्वभाव समाज के द्वारा ही बनता है ।

फ़र्द रा रबते जमाअत रहमत अस्त
जौहरे ऊरा कमाल अज़ मिल्लत अस्त
ता तवानी बा जमाअत यार बाश
रौनक़े हंगामये अहरार बाश
फर्द मी गीरद ज़े मिल्लत एहतेराम
मिल्लत अज़ अफराद मी याबद निज़ाम ।[1]

अगर हम इतिहास में झाँक कर देखें तो किसी जाति की उन्नति का राज है समिष्टिवादी जीवन दर्शन है, जिस जाति के मनुष्य

1· रुहे इक़बाल - डॉ0 यूसुफ हुसैन खान - पृष्ठ सं0 160

स्वार्थी रहे वह जाति उन्नति न कर सकी । वह जाति उन्नति कर सकी जिसके समाज के लोगों में प्रेम भावना अधिक हो ।

मनुष्यों और दूसरे जीव जन्तुओं में अन्तर होता है । मनुष्य एक अच्छा वातावरण पैदा करना चाहता है, जबकि दूसरे जीवजन्तु ऐसा नहीं करना चाहते और वह वातावरण समाज के द्वारा ही मुमकिन है । एक मनुष्य के व्यक्तित्व का निखार तभी सम्भव है जब वह दूसरे मनुष्यों के प्रति अपने कर्तव्य को समझे ।

मनुष्य आधुनिकता पसन्द है यही भाव उसे चींटियों और मक्खियों से अलग करता है, क्योंकि चींटियों और मक्खियों में जैसा की पहले कहा गया सामाजिकता का भाव मनुष्य से अधिक होता है लेकिन उनमें अहं का भाव नहीं होता और न ही वह आधुनिकता के मार्ग पर चलना जानता है । कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के अकेले जीवन का कोई महत्व नहीं क्योंकि उसके शरीर और आत्मा दोनों के विकास में समाज का योगदान है ।

फर्द कायम रबतेमिल्लत से है तनहा कुछ नहीं
मौज है दरया में और बेरूने दरया कुछ नहीं ।"1

जिस तरह एक अकेले मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता उसी तरह समाज का भी मनुष्य के बगैर कोई महत्व नहीं मनुष्य और समाज एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं कभी कभी मनुष्य और समाज के विचारों से एकता पैदा करना कठिन सा लगता है लेकिन इकबाल अपने जीवन दर्शन में मनुष्य और समाज के सम्बन्ध को बहुत खूबी से निभाता है । कहा जाता है व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक नियमों में टकराव रहता है । लेकिन इन्होंने बुद्धि और क्षमता के द्वारा दोनों को एक जगह खड़ा कर दिया है । टकराव दूर किया है ।

---

1. कुलयाते इकबाल

दर जमाअत फर्द रा बीनेम मा
अज़चमन ऊरा चु गुल चीनेम मा
फितरतश वारिफ़्तये यकताई अस्त
हिफ़्ज़े ऊ अज़ अन्जुमन आराई अस्त ।[1]

इक़बाल यह मानते हैं मनुष्य की आत्मा (खुदी) तभी पूर्ण हो सकती है तब वह दूसरे पर निर्भर हो । वह कहते हैं बिजली जो केवल अपने पर बेज व ताव खाती है गिरती नहीं बल्कि बादलों में मिट जाती है लेकिन वही बिजली गिरती है जो दूसरों से रिश्ता जोड़े ।

बर किश्तो ख़याबां पेच बरकोहो बियाबां पेच
बरक़े कि बखुद पेचद मीरद ब सहाब अन्दर ।[2]

इक़बाल का कहना है कि वही व्यक्ति जीवन की ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है जो प्रेम का सही अर्थ में प्रयोग करें वह समाज के एक एक फर्द से प्रेम करें और उसके प्रति अपने कर्तव्य को समझे । चाहे वह माँ, बाप हो या भाई, बहन या पड़ोसी या उसके आगे देश वाले या फिर सभी मनुष्य ।

अगर देखा जाय तो इक़बाल ने नये जीवन दर्शन की नींव रखी भौतिक शास्त्र भी यही कहता है कि परमाणु अणु से बनता है । इक़बाल का यह भी कहना कि समाज का भी यह कर्तव्य है कि वह अच्छा इन्सान पैदा करें । इक़बाल यह कहते हैं कि अगर शरीर का एक हिस्सा बीमार हो जाय तो उसका प्रभाव दूसरे हिस्से पर अवश्य पड़ेगा । उसी प्रकार अगर समाज का एक भी व्यक्ति गलत रास्ते पर जाये या दुःखी हो तो उसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है । इस प्रकार विचारों में अन्तर होते हुये भी दिनकर और इक़बाल दोनों ही समष्टिवादी जीवन दर्शन को अपनाते हुये दिखायी देते हैं, वैसे भी समष्टिवादी जीवन दर्शन

---

1. रुहे इक़बाल - डॉ० युसूफ हुसैन खान - पृष्ठ सं० 165
2. -वही- 165

हर धर्म की नींव है विशेषकर इस्लाम की, लेकिन दिनकर के जीवन दर्शन में संतोष प्राप्त करने का जो सन्यासी मार्ग है कहीं उसको भी अपनाया गया है ।

दिनकर और इकबाल के यहाँ मानवता वादी जीवन दर्शन

इकबाल और दिनकर दोनों के काव्य में मानवता वादी जीवन दर्शन पाया जाता है । दिनकर जी का तो मुख्य दर्शन ही है मानवतावाद । मनुष्य इस संसार में पैदा हुआ है अपने अन्दर कुछ भाव कुछ शक्तियाँ लेकर मानवतावादी जीवन दर्शन हमें एक दूसरे से प्रेम करना सिखाता है । इसका मुख्य भाव प्रेम है । मानवतावादी जीवन दर्शन में, कर्तव्य की भावना समायी रहती है । इसके साथ ही साथ हर मनुष्य के अधिकारों की रक्षा मानवतावादी जीवन में आती है ।

दिकनर जी तो मानवता के कवि है । उनके कुरुक्षेत्र और रश्मिरथी दोनों काव्यों में हम मानवतावाद की झलक देख सकते हैं ।

कुरुक्षेत्र में दिनकर जी कहते हैं मनुष्य के साथ मिलजुल कर प्रेम से रहने में कितना सुख मिलता है दिनकर का मनुष्य दीन-दुखियों का सहारा बनना चाहता है ।

वह सुख जो मिलता असंख्य
मनुजों को अपना होकर
हर्ष कर उनके साथ हर्ष में
और दुःख में रोकर
वह जो मिलता भुज पंगु की
और बढ़ा देने से
कन्धों पर दुर्बल दरिद्र का
बोझ उठा लेने से ।[1]

---

1. कुरुक्षेत्र - दिनकर - पृ सं0 124

दिनकर जी यह मानते हैं हार जीत से कुछ नहीं होता मनुष्य को चाहिये कि परस्पर प्रेम से रहे । एक दूसरे के हित का ध्यान रखे तो यह धरती स्वर्ग बन जायगी ।

हार से मनुष्य की न महिमा घटेगी और
तेज़ न बढ़ेगा किसी मानव की जीत से
स्नेह बलिदान होंगे माप नरता के एक
धरती मनुष्य की बनेगी स्वर्ग प्रति से ।[1]

दिनकर जी कहते हैं तपस्या करो तो उसमें तुम्हारे स्वार्थ के साथ दूसरों का सुख भी छुपा हो ।

जिस तप से तुम चाह रहे
पाना केवल निज सुख को
कर सकता है दूर वही तप
अमित नरो के दुख को ।[2]

दिनकर जी कहते हैं सभी मनुष्य मनुष्य है । सभी को जीने का समान अधिकार प्राप्त है । चाहे वह निर्धन हो या धनवान या किसी जाति का हो । भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं -

ऊँचा देखो तो किरीट राज धन तप
जप योग [illegible] से मनुष्यता महान है
धर्म सिद्ध रूप नहीं भेद भिन्नता का यहाँ
कोई भी मनुष्य किसी अन्य के समान है ।[3]

कवि मानवतावाद की स्थापना के लिये परेशान दिखायी देते हैं -

जिये मनुष्य किस भाँति परस्पर
होकर भाई....भाई
कैसे रुके प्रदाह क्रोध का ।
कैसे रुके लड़ाई
....
बहे प्रेम की धार मनुज की
वह अनवरत भिगोये ।

1,2,3 कुरुक्षेत्र - पृ सं0 - 109

एक दूसरे के उर में नर
बीज प्रेम के बोये ।

कुरुक्षेत्र में ही दिनकर जी एक अन्य जगह मिलजुल कर रहने की शिक्षा देते हैं -

जन समाज सन्तुष्ट रहे हिलमिल आपस में प्रेम बढ़ाकर
धर्म भिन्नता हो न कभी, सभी जन शैल तटी में हिल मिल जायें
उषा के स्वर्णिम प्रकाश में भावुक भक्ति मुग्ध मन गाय ।[1]

युद्ध अभिशाप है । दिनकर दो महायुद्धों के परिणाम देख चुके थे । इसलिये रश्मिरथी और कुरुक्षेत्र में दिनकर जी ने युधिष्ठिर के द्वारा अपने हृदय का बेचैनी को व्यक्त किया है । वह ईर्ष्या, द्वेष से निकल जाना चाहते थे ।

नर जहाँ राग से रहित विचरता
मानव मानव से नहीं परस्पर डरता
जीवन समता की छाँव तले पलता है
घर घर पियूष प्रदीप जहाँ जलता है ।

दिनकर जी तो विश्व बंधुत्व का संदेश देते हैं ।

देखेगा विश्ववाद हमारा
एकता अनेकता में अपने को खोजेगी
रंग बिरंगे छोटे छोटे देश
बोलते हुये अपनी अपनी भाषायें
पहने हुये अपने अपने वेश
एक ही महफिल में बैठेंगे होकर स्वाधीन
कोई नहीं किसी की ओ के अधीन ।[2]

---

1. रेणुका - दिनकर - पृष्ठ सं0 35
2. आत्मा की आँखे - पृष्ठ सं0 71

दिनकर जी चाहते हैं हर मनुष्य बराबर हो वह मनुष्य मनुष्य में अन्तर देख कर कराह उठते हैं ।

अनाचार की तीव्र आय में अपमानित अकुलाते हैं
जागो बोधिसत्त्व भारत के हरिजन तुम्हें बुलाते हैं
जागो विप्लव के वाक दम्मियों के इन अत्याचारों से
जागो है जागो तप निधान दलितों के हाहाकारों से ।[1]

इसी प्रकार नारी की स्थिति से भी दिनकर चिन्तित दिखायी देते हैं ।

बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी
अबला होती सचमुच योषिता कुमारी
है कठिन बन्द करना समाज के मुख का ।
सिर उठा न पाती पतिता निज सुख का ।[2]

इन सब के बावजूद दिनकर जी प्रेम का सुधा रस सब को पिला देना चाहते हैं । उन्हें विश्वास है कि एक न एक दिन संसार में हर तरफ सुख ही सुख होगा ।

लोहे के पेड हरे होंगे तू गान प्रेम का गाता चल
नम होगी यह मिट्टी जरूर आँसू के कण बरसाता चल ।

वह तो भगवान से प्रार्थना करते हैं

जहाँ जहाँ धन विमिर में
भर दो वहाँ विभा प्यारी
दुर्बल प्राणों के नसनस में
देव एक दो चिंगारी । [3]

दिनकर की तरह इकबाल मानवता के कवि है, और मानवता पर अत्याचार होता देखकर वह कराह उठते हैं । इकबाल एक ऐसे शिवाला की स्थापना करना चाहते हैं जहाँ -

---

1· रश्मि लोक - दिनकर - पृष्ठ सं0   2· रश्मि लोक-दिनकर - पृ -102
3· नील कुसुम - दिनकर - पृ सं0 102

"हर सुबह उठ के गायें मन्तर वह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मैं प्रीत की पिलादें
शक्ति थी शान्ति थी भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है ।"[1]

इकबाल मनुष्य को जाति और काल से ऊपर उठा देखना चाहते हैं । उनका कहना है मनुष्य पहले मनुष्य है बाद में कुछ और है, वह हिन्दी, तूरानी, ईरानी होने से पहले मनुष्य है ।

यही मकसूदे फ़ितरत है यही रमज़े मुसलमानी
अख़ूवत की जहाँगीरी मुहब्बत की फ़रावानी
बुताने रंगो बू को तोड़ कर मिल्लत में गुम हो जा
न तूरानी रहे बाक़ी न इरानी न अफ़ग़ानी ।[2]

एक अन्य जगह यही बात कहते हैं । इच्छाओं के कारण मनुष्य टुकड़े-टुकडे हो रहा है ।

हवस ने टुकड़े टुकड़े कर दिया है नोये इन्साँ की
अख़ूवत का बयाँ हो जा मुहब्बत की ज़बाँ हो जा ।
यह हिन्दी वह ख़ुरासानी यह अफ़गानी वह तूरानी
तू ऐ शरमिन्दये साहिल उछल कर बेकराँ हो जा ।[3]

शायर कहता है न दिल्ली में न समर कन्द में मैं तो बस धरती पर प्रेम बाँटता फ़िरता हूँ इंसान को प्राकृतिक तौर पर प्रेम करने का भाव मिला हुआ है ।

फितरत ने मुझे बख्शे हैं जौहर मलकूती
ख़ाकी हूं मगर ख़ाक से रखता नहीं पेवंद
दरवेशे ख़ुदामस्त न शरकी हूँ न गरबी
घर मेरा न दिल्ली न सफ़ाहाँ न समर क़न्द ।[3]

1• कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 88 2• कुलयाते इक़बाल - पृष्ठ सं0 270
3• -वही- 273

इक़बाल मानते हैं कि मनुष्य कर्म के द्वारा मानवतावाद की स्थापना कर सकता है । इकबाल का कहना है कि रोगी . . जातियों की चिकित्सा प्रेम है अर्थात् प्रेम रूपी दवा ही किसी जाति को ऊँचाई के शिखर पर ले जा सकती है

"मुहब्बत ही से पायी है शफा बीमार कौमों ने
किया है अपने बख़्ते ख़ुफ़ता को बेदार कौमों ने ।"[1]

मुहब्बत रूपी आग से ही मनुष्य के मन में कुछ करने की शक्ति पैदा होती है ।

मुहब्बत के शरर से दिल सरापा नूर होता है
ज़रा से बीज़ से पैदा रियाज़े तूर होता है ।[2]

यहाँ पर उस हादसे का जिक्र है जब हज़रत मोसा ने मुहब्बत और लगन से खुदा का जलवा कोहतूर पर्वत पर देखा ।

यकीं अफ़राद का सरमायये तामीरे मिल्लत है
यही कूवत है जो सूरत गरे तक़दीरे मिल्लत है
तू राज़े कुन फिकाँ है अपनी आंखों पर अयाँ हो जा
खुदी का राज़दाँ हो जा खुदा का तर्जुमां होजा ।[3]

दिनकर और इक़बाल के यहाँ यथार्थवादी जीवन दर्शन

जब दोनों कवियों ने लिखना शुरू किया हमारा देश गुलामी के बेड़ियों में जकड़ा हुआ था । अंग्रेज़ भारत वासियों पर तरह तरह से अत्याचार करते मजदूर मेहनत करते थे । उन्हें मजदूरी ठीक से नहीं मिलती । किसान ऋणों से ग्रस्त थे किसानों मजदूरी और हमारे समाज के अन्य वर्गों की दीन हीन दशा का चित्रण दोनों कवियों ने करके समाज को जागृत करना चाहा दिनकर जी के काव्य में यथार्थवादी चित्रण बहुत अधिक मिलता है ।

1. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 7
2. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 74
3. कुलयाते इक़बाल - पृ सं0 273

ऐसा मिलता है कि मानवता कराह उठे लेकिन इक़बाल ने मजदूरों और किसानों की दीन हीन दशा का चित्रण बहुत कम किया है । उन्होंने उनमें केवल क्रान्तिकारी भावना जगाने का प्रयत्न किया है । लेकिन दिनकर जी के काव्य में यथार्थवादी चित्रण ऐसा है कि हिन्दी साहित्य में शायद ही किसी और कवि की कविताओं में मिले । कवि जमींदारी द्वारा कृषकों के शोषण पर आक्रोश प्रकट करते हुये कहते हैं -

रेशमी कलम से भाग्य लेख लिखनेवालो
तुम भी अभाव से कभी ग्रस्त राए हो,
बिमार किसी बच्चे को दवा जुटाने में
तू घर भर क्या पेट बाँध कर सोये हो ?[1]

अपनी प्रसिद्ध कविता (हाहाकार) में कवि किसानों की दयनीय दशा का चित्रण करते हुये कहते हैं कि इसी देश में कुछ लोग तो ऐसे हैं जिनके कुत्तों को भी खूब दूध मिलता है लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी है जो दूध दूध करते हुये मर जाते हैं ।

वे भी यहाँ दूध से जो अपने श्वानों को नहलाते हैं
वे बच्चे भी यहीं कब्र में दूध दूध जो चिल्लाते हैं ।

दिनकर यथार्थवादी कवि थे किसानों की दीन हीन दशा का ऐसा चित्रण दिनकर ने प्रस्तुत किया है कि मानवता कराह उठे । उस समय किसान कितना असहाय थे । और शायद आज भी किसानों की दशा कुछ अच्छी नहीं जिसके कारण उन्हें दो वक्त की रोटी मिलती है । वह भूखा सोता है । कवि जानता था किसानों को तन ढकने के लिये वस्त्र नहीं मिलता । जमींदारी और विदेशीशासन के कारण किसान ऋणग्रस्त है । कितनों की यथार्थदशा का चित्रण कवि इस प्रकार करता है ।

1· दिल्ली - दिनकर - पृ० सं० 33
2· रश्मिलोक - दिनकर -

"ऋण शोधन के लिए दूध घी बेच बेच धन जोड़ेंगे
बूंद-बूंद बेचेंगे अपने लिए नहीं कुछ छोड़ेंगे
शिशु मचलेंगे दूध देख जननी उनको बहलायेगी
मैं फाड़ूंगी हृदय लाज से आंख नहीं रो पायेगी ।
इतने पर भी धन पतियों पड़ती उन पर मार
तब मैं बरसूंगी बन बेबस के आंसू सुकुमार ।"[1]

कृषक जीवन की इससे अधिक और दयनीय दशा और क्या होगी कि उनका जीवन हमेशा अभावग्रस्त रहता है । वह दिन रात मेहनत करता है । परन्तु उसका लाभ किसान को चूस चूस-चूस कर जमींदार उठा रहे हैं और जमींदारों से अगर कुछ बच भी गया तो वह महाजनों के हाथ में जाता है । कवि ने जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण को कृषक मेध की संज्ञा देते हुए उनकी यथार्थ अवस्था का चित्रण इस प्रकार किया है --

"धन पिशाच के कृषक मेध में
नाच रही पशुता मतवाली
आगन्तुक पाते जाते हैं
दोनों के शोषित प्याले ।"[2]

किसानों का ही नहीं गरीब दीन दरिद्र मजदूरों के भी शोषण का चित्रण दिनकर ने मार्मिक ढंग से किया है । इस समय श्रमिक और किसान कितने असहाय थे --

"आहें उठीं दीन कृषकों की
मजदूरों की तड़प पुकारें
अरे गरीबों के लहू पर
खड़ी हुयी तेरी दीवारें ।"

- -

1. रश्मिलोक - दिनकर - पृ. 8   2. रेणुका - दिनकर - पृ. 16
3. हुंकार - दिनकर - पृ. 47

एक अन्य स्थान पर कवि किसानों की एवं मजदूरों की दयनीय दशा का चित्रण करते हुए वे क्रान्ति को आह्वान करते हैं "विपथगा" कविता में कवि ने वर्ग वैषम्य का अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है ।

"धन विलास का बोझ दुखी दुर्बल दरिद्र जब ढोता है
दुनिया को भूखो मार भूप जब सुखी महल में सोता है
सहती सब कुछ मन मार प्रजा कसमस करता मेरा यौवन
श्वानों को मिलता दूध वस्त्र भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं
युवती की लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाये जाते हैं
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण ।"[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद किसानों, मज़दूरों की दशा में कोई परिवर्तन नहीं आया । कवि का मन उच्च वर्ग के लोगों से प्रश्न करने लगा --

"रेशमी कलम से भाग्य लेख लिखनेवाला
तुम भी अभाव से कभी ग्रस्त हो गये हो
बीमार किसी बच्चे को दवा जुटाने
तुम भी घर पर क्या पेट बाँध कर सोये हो ।"[2]

जातिगत भेद भाव छुआ छूत एक ऐसी बीमारी है जो कैन्सर की तरह लोगों को खोखला कर देती है । दिनकर जी जब लिखना शुरू किया उस समय यह रोग हमारे समाज में बहुत अधिक फैला हुआ था । अछूतों को समाज में बराबर के अधिकार नहीं प्राप्त थे । उनके साथ जानवरों का सा बर्ताव किया जाता था । प्रेमचन्द की कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण मिलता है । "ठाकुरों के कुयें से अछूतों को पानी

- -

1. हुंकार - दिनकर - पृ. 73
2. रश्मिलोक - दिनकर - पृ. 33

पीने का अधिकार नहीं था । उस समय महात्मा गांधी अछूत उद्धार में लगे हुए थे । उनका प्रभाव भी दिनकर पर बहुत पड़ा था । इसलिए दिनकर के काव्य में अछूतों और गरीबों की दीन हीन दशा का चित्रण मिलता है और काव्य के द्वारा दिनकर ने इस बीमारी को समाज से निकाल देने का प्रयत्न किया है । दिनकर की बोधिसत्व कविता अछूतों की दशा से प्रभावित होकर लिखी गई कविता है ।

"आज सभ्यता के प्रांगण में अरज गरल वर्षण कैसा
घृणा सिखा निर्वाण दिलानेवाला यह दर्शन कैसा
स्मृतियों का अंधेरे शास्त्र का दंभ तर्क का छल कैसा
दीन दुखी असहाय जनों पर अत्याचार प्रबल कैसा ।"

.. ..

आज दीनता को प्रभु की पूजा का अधिकार नहीं
देव बना था क्या दुखियों के लिये निठुर संसार नहीं
धन पिशाच की विजय धर्म की पावन ज्योति मलीन हुई
दौड़ो बोधिसत्व भारत में मानवता अस्पृश्य हुयी
धूप दीप आरती कुसुम ले भक्त प्रेमवश आते हैं
मंदिर का पट बन्द देख जय कह निराश फिर जाते हैं ।"

.. ..

मनुज मेध के पोषक दानव आज निपट निर्द्वन्द्व हुए
कैसे बचे दीन प्रभु भी धनियों के गृह में बन्द हुए
अनाचार की तीव्र आंच में अपमानित अकुलाते हैं
जागो बोधिसत्व भारत के हरिजन तुम्हें बुलाते हैं ।"

और इसी जाति से परेशान होकर दिनकर रश्मिरथी में लिखते हैं बल्कि कर्ण की जबानी कहलवाते हैं --

---

1. रश्मि लोक - दिनकर - पृ. 12

मस्तक ऊंचा किये जाति का नाम लिये चलते हो
पर अधर्ममय शोषण के बल से पलते हो
अधम जातियों से थर थर कांपते तुम्हारे प्राण
छल से मांग लिया करते हो अगूठे का दान । 1

कवि जाति के जवाब में कह उठता है --

"जाति हाय री जाति, कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला
कुंपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला
जाति जाति रटते जिनकी पूजा केवल पाखंड
मैं क्या जानू जाति ? जाति है ये मेरे भुजदंड ।" 2

हमारे समाज में केवल किसानों मजदूरों और अछूतों पर ही अत्याचार नहीं होते । अत्याचार होते हैं नारी पर भी उस समय की अपन्ढ नारी तो अत्याचार सहती ही थी आज की दशा भी हम देखें तो आज जब कि देश इतनी उन्नति कर चुका है नारी पर अब भी अत्याचार हो रहा है । वह आज भी जलायी जा रही । विधवा नारी की दुर्गति आज भी हमारे समाज में हो रही है और उस समय जब दिनकर लिख रहे तो नारी की दशा से दयनीय थी उसका विवाह बचपन में कर दिया जाता था । विधवा समाज में जाने के अधिकार छीन लिए जाते थे । रश्मि रथी में नारी की दशा का चित्रण कवि इस प्रकार करते हैं --

रश्मिरथी में कुंति कर्ण से कहती है --

"पर मैं कुमारिका थी जब तू आया था
अनमोल लाल मैंने असमय पाया था
अतएव हाय अपने दुध मुहे तनय से
भागना पड़ा मुझको समाज के भय से ।"

1.2 रश्मि रथी - दिनकर - पृ.2 3
3. - वही - पृ. 47

बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी
अबला होगा सचमुच शोषिता कुमारी
है कठिन बन्द करना समाज के मुख को
सिर उठा न पा सकता पतित निज सुख को ।"[1]

नारी का इससे बड़ा विवशता और क्या होगा कि वह पुत्र को पुत्र न कर पाये । उस समय अंग्रेजों ने स्वाधीनता संग्राम को कमजोर बनाने के लिए हिन्दू-मुसलमानों में जो फूट के बीज बोये थे उसका चित्रण बड़े हो मार्मिक ढंग से दोनों कवियों ने किया है । 1938 में मुस्लिम लीग और कांग्रेस का बात-चीत असफल होने पर जगह-जगह दंगे हुए । उसका चित्र दिनकर इस प्रकार खींचते हैं :-

"खूं बहाया जा रहा इंसान का
सींगवाले जानवर के प्यार में
कौम की तकदीर फोड़ी जा रही
मस्जिदों की ईंट की दीवार से ।"[2]

दिनकर चाहते थे कि किसी तरह हिन्दू मुस्लिम एकता हो । आज भी यह आवश्यक है । आज भी दिनकर और इकबाल जैसे कवि की आवश्यकता है । वह राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधना चाहते थे --

"ताब था किसको कि बांधे कौम को
एक होकर हम कहीं मुंह खोलते
बोलना आता कहीं तकदीर को
हिंदवाले आसमां पर बोलते ।"[3]

1• रश्मिरथी - दिनकर - पृ• 49
2• सामधेनु - दिनकर - पृ• 28
3• - वही - पृ• 29

० इकबाल के काव्य में यथार्थवादी जीवन दर्शन :

इकबाल इंसान को ऊंचाईयों तक उड़ते देखना चाहते थे। उन्होंने दिनकर की तरह, किसानों, मज़दूरों की अभावग्रस्त अवस्था का चित्रण कहीं नहीं किया है लेकिन उनको उनके अस्तित्व का एहसास दिलाया है। साम्प्रदायिक दंगों से परेशान इकबाल भी दिखायी देते हैं। हिन्दू और मुसलमानों को लड़ता देख वह आंसू बहाते दिखायी देते हैं। कहीं-कहीं इकबाल ने मजदूरों की दयनीय दशा का भी चित्रण किया है। कार्ल मार्क्स से प्रभावित होकर इकबाल ने एक पूरी नज़्म "खिज़रे राह" लिखा है जिसमे शायर मज़दूरों और उनकी दशा का एहसास दिलाते हुए क्रान्ति पर बल देते हैं। इकबाल का कहना है मज़दूर मेहनत करते हैं और उन्हें मज़दूरी ढंग से नहीं मिलता और पूंजीपति जो मजदूरों को मजदूरी देते भी हैं वह एहसान जता कर जैसे जकात दे रहे हों।

"ऐ कि तुझ को खा गया सरमायेदारे हीलागर
शाखे आहू पर रही सदयों तलक तेरी बरात
दस्ते दौलत आफरीं को मुज़्द यूं मिलती रही
अहले सरवर जैसे देते हैं गरीबों को ज़कात
साहिरे एलमूत ने तुझको दिया बरगे हशीश
और तू ऐ बेख़बर समझा इसे शाखे नबात
नस्ल कौमियत कलीसा सलतनत तहज़ीब रंग
खाजगी ने खूब चुन-चुन कर बनाये मुस्किरात
मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार
इन्तेहाये सादगी से खा गया मज़दूर मात
उठ कि अब बज़्मे जहां का और ही अन्दाज़ है
मशरिको मग़रिब में तेरे दौर का आगाज है।"[1]

---

1. कुलयाते इकबाल - पृ० 262

अर्थात यह सरमायादार बहुत चालाकी से मज़दूरों को अपने बस में कर लेते हैं और उनसे कम ज़ुदरी पर काम कराते हैं । लेकिन अन्त में इकबाल कहते हैं अब साम्राज्यवाद का जमाना गया अब मज़दूरों का राज आ रहा है । मज़दूरों को उनकी क्षमता का एहसास होना चाहिए । इकबाल अपनी नज़्म "फरिश्तों का गीत" में कहते हैं कि उस खेत को जला देना चाहिए जिस खेत से किसानों को रोटी न मिल सके --

"उठो मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो
काख़े उमरा के दरो दीवार हिला दो
गरमओ ग़ुलामों का लहू सोज़े यक़ीं से
कुन्जश्के फ़िरोमाया को शाहीं से लड़ा दो
सुलतानिये जमहूर का आता है ज़माना
जो नक्शे कुहन तुम को नज़र आये मिटा दो
जिस खेत से दहक़ाँ को मुयस्सर न हो रोज़ी
उस खेत के हर ख़ोशये गन्दुम को जला दो ।"[1]

नारी की दीन-हीन दशा का चित्रण इकबाल का नहीं मिलता है । दिनकर को ही उस समय होनेवाले दंगों से इकबाल परेशान थे वह भी दिनकर की तरह एकत्व पर बल देते हुए दिखायी देते हैं । अपनी मशहूर नज़्म "तसवीर", "दर्द" में इकबाल हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ते देखकर परेशान तो होते ही हैं साथ ही वह यह भी कहते हैं अगर इन दोनों को मिलाने का काम मुश्किल है तो मैं यह मुश्किल काम भी कर के छोड़ूँगा ।

1· कुलयाते इकबाल - पृ· 401

होवैदा आज अपने ज़ख्मे पिन्हाँ करके छोड़ूँगा
लहू रो रो के महफ़िल को गुलिस्ताँ करके छोड़ूँगा
जलाना है मुझे हर शमये दिल को सोज़े पिन्हाँ से
तेरी तारीक रातों में चिरागाँ करके छोड़ूँगा ।"

मगर गुन्जों की सूरत हों दिले दर्द आशना पैदा
चमन में मुश्ते ख़ाक अपनी परेशाँ करके छोड़ूँगा ।
पिरोना एक ही तसवीह में इन बिखरे दानों को
जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसाँ करके छोड़ूँगा ।"[1]

इकबाल का कहना है साम्प्रदायिक भेद भाव इंसान को खोखला बना देता है । उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देता और समाज को कमजोर बना देता है ।

"शजर है फिरका आराई तास्सुब है समर इसका
यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को ।"[2]

उनका कहना है खुदा तो वही है । उसे किसी भी नाम से पुकारो --

वही एक हुस्न है लेकिन नज़र आता हर शै में
यह शीरीं भी है गोया बेसुतूँ भी कोहकन भी है
उजाड़ा है तमीज़े मिल्लतो आयीं ने क़ौमों को
मेरे अहले वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे वतन भी है ?।"

अपनी नज़्म "सदाये दर्द" में इक़बाल हिन्दू-मुस्लिम झगड़े का चित्र खींचते हुए भाई-भाई को लड़ता देखकर रोते हुए दिखायी देते हैं --

- -

1. कुल्याते इकबाल - पृ. 72
2. - वही - पृ. 74
3. - वही - पृ. 76

"जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे
हाँ डुबो दे ऐ मुहिते आबे गंगा तू मुझे
सर-ज़मीं अपनी क़यामत की निफ़ाक़ अंगेज़ है
वस्ल कैसा याँ तो एक क़ुर्बे फ़िराक़ अंगेज़ है
बदले एक-रंगी के यह नाआशनाई है ग़ज़ब
एक ही ख़िरमन के दानों में जुदायी है ग़ज़ब
जिसके फूलों में अख़ूवत की हवा आयी नहीं
इस चमन में कोई लुत्फ़े नग़मा पैराई नहीं
लज़्ज़ते क़ुरबे हक़ीक़ी पर मिटा जाता हूँ मैं
इख़्तेलाते मौजओ साहिल से घबराता हूँ मैं ।"[1]

इस प्रकार हम डा० इकबाल और दिनकर जी के जीवन दर्शन का जब अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि दोनों के जीवन दर्शन में काफी हद तक समानता है और यहही नहीं इकबाल के जीवन दर्शन से दिनकर स्वयं भी प्रभावित दिखायी देते हैं । वे स्वयं लिखते हैं --

"अपने निर्माण के दिनों में प्रत्येक नये कवि को उस एक महाकवि का पता लगाना पड़ता है जिसके समान वह बनना चाहता है । मेरा दुर्भाग्य या सौभाग्य यह रहा कि मैंने एक के बदले ऐसे दो महाकवियों का पता लगा लिया जिनके समान बनने की मुझमें उमंग थी । उनमें से एक थे रवीन्द्रनाथ ठाकुर जिनके नाम की सारे संसार में धूम थी और जिनके प्रभाव में भारत की कई भाषाओंमें छोटे-छोटे रवीन्द्रनाथ पैदा हो गये थे । दूसरे थे सर मुहम्मद इकबाल जिन्हें नोबेल पुरस्कार तो नहीं मिला था मगर जिनकी कविताएं पाठकों के रुधिर से आग की तरंगें उठाती थीं । मन के भीतर चिन्तन का द्वार खोल देती थीं ।"

---

1. कुल्याते इकबाल - इकबाल - पृ० 42
2. रश्मिलोक की भूमिका - दिनकर - पृ० 8

दोनों ही जीवन की परिभाषा देते हुए वे कहते हैं कि -- वास्तव में जीवन वही है जो कर्म के लिये हो इकबाल मनुष्य के जीवन को सबसे मूल्यवान मानते हैं। मनुष्य को प्रकृति और जीवों में सबसे महान मानते हैं। वह प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने का नाम जीवन कहते हैं जब कि दिनकर प्रकृति में खो जाना चाहते हैं। वह प्रकृति के माध्यम से ब्रह्म और जीवन के रहस्य को जानना चाहते हैं। इकबाल खुदी का शायर है और इकबाल की खुदी का दिनकर पर कभी प्रभाव पड़ा था। कुरूक्षेत्र एवं रश्मिरथी गहन अध्ययन से इस बात की पुष्टि हो जाती है। वास्तव में देखा जाय तो इकबाल की खुदी है अपनी क्षमता को समझकर उसका सही प्रयोग करना और दिनकर के काव्य में भी यह विचार जगह-जगह आये हैं। कुरूक्षेत्र में भीष्म जगह जगह युधिष्ठिर को उसकी क्षमता का एहसास दिलाते हैं। खुदी की भावना तो हर इंसान और जीव में होती है। लेकिन उसका सही प्रयोग ही मर्दे मोमिन की पहचान है। वास्तव में इकबाल की खुदी को व्यक्तित्व का निखार भी कहा जा सकता है।

इकबाल और दिनकर दोनों ही उद्देश्य पूर्ण जिन्दगी को सार्थक मानते हैं। दोनों ही यह बात कहते हैं कि मनुष्य को किसी महान मकसद अथवा उद्देश्य को सामने रखकर आगे बढ़ना चाहिये और मनुष्य के उद्देश्य के मार्ग में जितनी कठिनाइयाँ आये मनुष्य को उससे लड़ते हुए आगे बढ़ना चाहिए। दोनों ही उद्देश्य पूर्ण जिन्दगी के साथ-साथ संघर्ष को महत्व देते हैं, मनुष्य अगर आराम का जीवन बिता रहा है उसका जीवन निरर्थक है। दोनों के यहाँ निरंतर संघर्ष की शिक्षा मिलती है। दोनों ही आगे को बढ़ते जाने को जिन्दगी कहते हैं। इकबाल के संघर्ष का प्रतीक शाही चिड़िया है। जो कहीं घोसला नहीं बनाती जिसे आराम का जीवन पसन्द नहीं और इकबाल

हीके प्रभाव से दिनकर के यहाँ भी कहीं कहीं शाही चिड़िया को संघर्ष का प्रतीक माना गया है. यही नहीं इकबाल और दिनकर दोनों ने कर्म को महत्व दिया है और कर्म के संबंध में यह बात भी कहनी आवश्यक है कि इकबाल और दिनकर दोनों पर गीता के कर्म भाव का भी प्रभाव पड़ा था । दोनों ही कर्महीन जीवन को बेकार समझते हैं । इकबाल का सम्पूर्ण मानव दिनकर से भिन्न है । कुछ लोग इकबाल के मर्दे मोमिन से मुसलमान का अर्थ लेते हैं लेकिन मेरे विचार में इकबाल का मर्दे मोमिन वह है जो सम्पूर्ण गुणों से युक्त हो जिसे फरिश्ते भी सिजदे करें जिसके सामने आकाश भी झुक जाय ।

इकबाल के सम्पूर्ण मानव में व्यक्तित्व का निखार होना चाहिए वह समस्त गुणों से मुक्त होने के साथ-साथ अपनी क्षमता को पहचानते हुए उसका सही प्रयोग करनेवाला होना चाहिए । उसके राह में कितनी रूकावटे आये उसे वह आसानी से पार कर सकता है । लेकिन इकबाल ने शारीरिक बल को कहीं महत्व नहीं दिया । दिनकर का महापुरूष में व्यक्तित्व के साथ-साथ शारीरिक बल और शारीरिक सुंदरता भी होनी चाहिए । इकबाल और दिनकर दोनों ही ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया है । दोनों ने जगह-जगह लोगों को साथ मिलकर रहने की शिक्षा दी है । "इकबाल तो ऐसे संसार को पसंद करते हैं जहां मनुष्य को अपनी क्षमता दिखाने का समान अवसर मिले । इकबाल और दिनकर दोनों का कहना है वही जगत उन्नति कर सकता है जिसमें सब मिल जुलकर आपस में प्रेम से रहे, इकबाल और दिनकर दोनों ने व्यक्ति को महत्व देते हुए समष्टिवादी जीवन दर्शन का महत्व दिया है । इकबाल का कहना है जो डाली

पेड़ से टूटेगी वह सूखेगी जरूर अर्थात् दोनों ने व्यक्ति के साथ-साथ समाज को भी महत्व दिया है । अब जहाँ तक यथार्थवाद का प्रश्न है तो समाज को दीन-हीन दशा का जितना अच्छा चित्रण दिनकर जी ने किया है उतना तो शायद ही किसी कवि ने किया हो । हाँ इकबाल कहीं-कहीं वह पिसती हुयी जनता का यथार्थ चित्रण करते हुए वह उनमें क्रांति लाने का प्रयत्न करते हैं । अन्त में यही कहना ठीक होगा कि दोनों का जीवन दर्शन सब के लिये महत्वपूर्ण है और संदेशवर्धक भी ।

अध्याय 6:

1. प्रेम का अर्थ
2. दिनकरजी के काव्य में अध्यात्मिक प्रेम
3. इकबाल के काव्य में अध्यात्मिक प्रेम
4. बुद्धि और प्रेम - दिनकरजी के काव्य में
5. बुद्धि और प्रेम - इकबालजी के काव्य में
6. दिनकरजी और डॉ. इकबाल के काव्य में नारी सम्बन्धी प्रेम

   अ. दिनकरजी के काव्य में नारी सम्बन्धी प्रेम दृष्टिकोण

   मानव सृष्टि के विकास में नारी का योग दान,
   नारी का माता का रूप, नारी का पत्नी का रूप,
   नारी का प्रेमिका का रूप

   आ. इकबाल के काव्य में नारी सम्बन्धी विचार धारा

   मानव सृष्टि के विकास में नारी का योग दान,
   नारी माता का रूप, नारी का प्रेमिका का रूप।

रामधारी सिंह दिनकर एवं डॉ० इकबाल की प्रेम संबंधी भावना - तुलनात्मक अध्ययन

१. प्रेम का अर्थ :

प्रेम के बगैर मनुष्य का जीवन अर्थहीन है, प्रेम जीवन की सबसे व्यापक प्रवृत्ति है, अगर प्रेम का अर्थ देखा जाए तो, प्रेम का अर्थ है लगाव अथवा आकर्षण । किसी भी वस्तु के आकर्षण में मनुष्य को एक विशेष प्रकार की अनुभूति होती है, यही अनुभूति प्रेम है । उर्दू साहित्य और हिंदी साहित्य दोनों में ही प्रेम के दो अर्थ हैं । एक लौकिक प्रेम और दूसरा अलौकिक प्रेम, जिसे उर्दू में इश्क हकीकी और इश्क मजाज़ी कहा जाता है । प्रेम में समर्पण का भाव पाया जाता है । प्रेमी अपने प्रेमिका के लिये सब कुछ समर्पित करने के लिये तैयार रहता है । अलौकिक प्रेम भक्ति के निकट है । प्रेम का अर्थ अधिकतर नर-नारी के प्रेम से लिया जाता है । लेकिन प्रेम के अन्य कई सुंदर रूप भी हैं -- मातृ प्रेम, जिससे महान कोई प्रेम हो ही नहीं सकता, पुत्र प्रेम, भाई-बहन का प्यार, मानव से मानव का परस्पर एक-दूसरे से प्रेम दूसरे, प्रकृति से प्रेम अर्थात सुंदर-सुंदर पौधों, फूल, पत्ते, पहाड़,

झरने इत्यादि से प्रेम । मनुष्य का मनुष्य से प्रेम चाहे वह किसी भी रूप में हो बहुत सहज और स्वाभाविक होता है और प्राकृतिक तौर पर मनुष्य इसे वरदान में पाता है । इससे आत्मा को संतुष्टि मिलती है । कायिक प्रेम जो नर-नारी के बीच होता है उसमें वासना का भाव होता है । शरीर में जब तक सौन्दर्य रहता है यह प्रेम तभी तक कायम रहता है । उर्दू और हिन्दी दोनों साहित्य में प्रेम सबसे पुराना विषय है । उर्दू में ग़ज़ल बहुत पुरानी परम्परा है और ग़ज़ल का अर्थ ही होता है -- "औरत से बातें करना", लेकिन इसी लौकिक प्रेम से मनुष्य आध्यात्मिक प्रेम तक पहुंचता है । हिन्दी साहित्य में भक्ति काल में प्रेम के आध्यात्मिक रूप के दर्शन होते हैं किन्तु रीति काल में जिस प्रेम की अभिव्यंजना हुई है वह शुद्ध और लौकिक प्रेम है । फिर आधुनिक काल में प्रेम का और निखरा हुआ रूप सामने आता है । इस काल में प्रेम शब्द का अर्थ व्यापक दृष्टि से लिया गया । उर्दू शायरी में शायरी का मुख्य विषय प्रेम ही है, वह प्रेम लौकिक भी हो सकता है और अलौकिक भी । इकबाल का प्रेम के बारे में दृष्टिकोण अलग ही है, पहली बात तो यह कि इकबाल की शायरी में नारी संबंधी प्रेम नहीं के बराबर है, परन्तु इनकी शायरी में स्थान-स्थान पर आध्यात्मिक प्रेम की झलक पायी जाती है । इकबाल ने प्रेम को नया ही रूप दिया है, इनकी शायरी में प्रेम की परिभाषा है -- "अपनी मंजिल से प्रेम", अर्थात् अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की अथाह लगन ही इकबाल की प्रेम भावना का अर्थ है ।

o दिनकर जी के काव्य में आध्यात्मिक प्रेम :

दिनकर जी एक स्वच्छंदतावादी कवि हैं और स्वच्छंदतावादी कवि की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह अपनी दृष्टि में आध्यात्मिक होता है । उसकी आध्यात्मिकता का एक आयाम होता है कि वह आत्मा और परमात्मा के प्रेम संबंध को निरूपित करता है । स्वच्छंदतावाद की तलाश ससीम द्वारा असीम में एकाकार होने की तलाश है, यह तलाश उसकी आध्यात्मिक तलाश है । इसके मूल में यह दार्शनिक दृष्टि है कि केन्द्र परमात्मा है और जीवआत्मा इस केन्द्र से विचलन है जो बहुत दूर उससे हटकर परिधि के समीप पहुंच गयी है । जीवआत्मा जब बाहर के प्रपंचों से उलझती है और माया की शबल में फंस जाती है तब वह अपनी स्वयं से विलंब कर जाती है । हर आध्यात्मिक तृषा की परिणिती है अपने आप को पाने में आत्मस्त होना । परमात्मा ज्योतिस्वरूप माना गया है और आत्मा की आग में जलकर ही कोई साकार ज्योति में रूपान्तरित होना है । या नी जीवआत्मा परमात्मा में तल्लीनता प्राप्त कर सकता है । प्रत्येक रोमान्टिक कवि की तरह दिनकर जी भी इस अवस्था को प्राप्त करने में उन्मुख दिखायी देते हैं --

"बहुत चला तू केन्द्र छोड़कर
दूर स्वयं से जाने को
अब तो कुछ दिन पथ मोड
पंथी अपने को पाने को
जला आग कोई जिससे तू
स्वयं ज्योति साकार बने [1]

1. द्वन्द गीत - पृ 70

दर्द बसाना भी यह क्या
गीतों का ताप बढ़ाने को ।"[1]

इसलिए केन्द्र से भटकी हुई आत्मा परमात्मा की प्रतीक्षा प्रियतम के रूप में करती है । उसके आगमन के लिये जीवआत्मा अपने सारे जीवन को संजोकर उसके आगमन के लिये पथ को सजाती है, वह प्रियतम का इंतजार करती है, कवि का बेचैन मन कहता है कि एक दिन उसके गीतों को शीतल करने वह परम प्रियतम अवश्य आयेगा ।

"आयेगा वह कभी प्यासे
गीतों को शीतल करने
जीवन के सपने बिखेर कर
जिसका पंथ संजोता हूं ।"[2]

अस्पष्ट ही ससीम और असीम एक ही बिन्दु पर मिलते हैं । देखनेवाला कवि सृष्टि के परस्पर विरोधी अवयवों में एक समानता देखता है । क्योंकि ससीम और असीम तद्रूप हैं इसलिए तारों के प्रकाश और अंधकार परस्पर विरोधी नहीं हैं । उनमें एक गहन स्तर पर एकाकार होता है । कवि ने सृष्टि के परस्पर विरोधी तत्वों में दिखायी पड़नेवाले विरोधाभास में आंतरिक अनवृत्ति देखी है :--

"भू की झिलमिल रजत सरित में
घटा गगन की काली है
मेहदी के उर की लाली ही
पत्तों से हरियाली है

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर - पृ. 70
2. - वही - पृ. 5

जुगनु को लघु विभा विदा में
कलियों को मुस्कान हुयी
उडु को ज्योति उसी ने दी
जिससे निशि की अँधियाली है ।"[1]

कवि रचनेवाले की शक्ति के बारे में जानने को बेचैन रहता है, वह अपने अस्तित्व से संतोष नहीं कर पा रहा है ।

"चाँदनी बनायी धूप रची भूतम पर व्योम विशाल रचा
कहते हैं ऊपर स्वर्ग कहीं नीचे कोई पाताल रचा
दिल जले देहियों को केवल लीला कहकर संतोष नहीं
ओ रचनेवाले बता हाय आखिर क्यों यह जंजाल रचा ।"[2]

एक जीवात्मा के रूप में कवि को सहजबोध है । वह इस जगत में एक अनवरत यात्रा पर है । उसे जिस देश में वापस जाना है वह बहुत दूर है उसकी यहाँ की यात्रा अनवरत, प्रतिहित और सुदीर्घ है । सांसारिक सौन्दर्य का आकर्षण दूर देश के इस यात्री के लिए अपरिहार्य है । सुदीर्घ यात्रा में थके हुये प्राणा के लिये सुंदरता एक विश्राम स्थल है । मन बहलाने का एक साधन मात्र है । इस तरह कवि भौतिक सौन्दर्य के आकर्षण और अनन्त की यात्रा के बीच तालमेल बैठाता है --

"दूर देश ही ठीक याद है,
यह तो मेरा देश नहीं
इससे होकर चली यहीं तक
रूकने का आदेश नहीं

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर - पृ. 25
2. रश्मिलोक - दिनकर - पृ. 110

बजा शंख कारवां चला
साकी दे बिदा चलूंगा मैं
कभी कभी हम गिन पाते हैं,
प्रिये मीन या मेष नहीं ।"[1]

अथवा --

"यात्री हूं अति दूर देश का
पल भर यहीं ठहर जाऊं
थका हुआ हूं सुंदरता
के साथ बैठ मन बहलाउं ।"[2]

दूर देश का यह पथिक प्रकृति के हर पदार्थ में अद्वैत के दर्शन करता है । परमात्मा किसी एक फूल, किसी एक झरने, किसी एक पंछी या किसी एक व्यक्ति में नहीं रहता । जहां भी प्रकृति में सुन्दरता है जहां भी सृष्टि में कोई स्पंदन है वहीं वह निवास करता है । अतः समग्र अस्तित्व ही परमात्मा है ।

"किरणों का दिल चीर देख
सब में दिनमणि की लाली रे
चाहे जितने भी फूल खिले
पर एक सभी की माला रे
सांझ हुयी आ गयी अचानक
पूरब से भी अंधियाली
आती ऊषा फैल जाती
पश्चिम में भी उजियाली रे ।"[3]

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर - पृ. 30
2. - वही - पृ. 21
3. - वही - पृ. 38

सृष्टि के इस अद्वैत को समझने में बुद्धि थक जाती है लेकिन हृदय उसे सहज ही समझ जाता है । परमात्मा की राह बुद्धि की कड़ी चट्टान से होकर नहीं जाती लेकिन वह हृदय के श्रोत से होकर जाती है । ज्ञान की जिस परत को भेदने में बुद्धि समर्थ नहीं होती हृदय उस परत तक बहुत ही आसानी के साथ पहुंच जाता है । एक स्वच्छन्दतावादी कवि हृदय की आंख से सब कुछ देखता है --

"हेर थका तू भेद गगन पर
क्यों उडु राशि चमकती है
देख रहा मैं खड़ा मगन
आंखों को तृषा न छकती है
मैं प्रेमी तू ज्ञान विशारद
मुझमें तुझमें भेद यही,
हृदय देखता उसे तर्क से
बुद्धि न जिसे समझती है ।"[1]

कवि परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करता है और संसार को असत्य नहीं सत्य मानता है । वह संसार को मिथ्या नहीं मानता तथा शंकर के मायावाद में उसका विश्वास नहीं । जीवन सत्य है, सृष्टि सत्य है, आकर्षण भी सत्य है और स्वप्न भी सत्य है यही जीवन की महिमा है ।

"जो सृजन असत तो पुण्य पाप
का श्वेत नील बन्धन क्यों है ।
स्वप्नों के मिथ्या तन्तु बीच
आबद्ध सत्य जीवन क्यों है ।
हम स्वयं निर्लिप्त अरे,
तो क्यों शुभ का उपदेश हमें

---

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर - पृ. 50

किस चिन्त्य रूप का अन्वेषण,
यह आराधना पूजन क्यों है ।"[1]

क्योंकि जीवन सत्य है और सृष्टि भी सत्य है । इसलिये शून्य का संधान जीवन का परमलक्ष्य नहीं हो सकता जहाँ कहीं ठोस है, जहाँ कहीं रूप है वहीं शून्य और अरूप भी सहअस्तित्व रखता है । जीवन का यह स्वरूप द्वन्द्वात्मक है इसलिए अरूप की खोज करनेवाला वह है जो आत्मा रूप की तृषा से भी भरा होता है ।

"खोजते स्वप्न का रूप शून्य
में निरवलम्ब अविराम चलो ।
बल की बस इतनी बात पथिक
लेते अरूप का नाम चलो ।
जिनको न तटों से प्यार उन्हें
अम्बर में कब आधार मिला ।
यह कठिन साधना भूमि बन्धु
मिट्टी को किये प्रणाम चलो ।"[2]

इस प्रकार कवि रूप और अरूप के सहअस्तित्व में आत्मा और परमात्मा के अद्वैत रूप को प्रतिपादित करता है ।

कवि नारी के अद्वितीय लावण्य में भी परमात्मा के लावण्य की झाँकी देखता है । परमात्मा नूर ही नूर है उसी का कुछ अंश जब नारी देह पर बरसता है तब नारी अद्वितीय सुंदर हो जाती है । नारी का सौन्दर्य परमात्मा के सौन्दर्य का बहुत ही अनुपांश है --

- -

1. द्वन्द्वगीत - दिनकर - पृ. 20
2. ,, ,, 22

"तुम अशेष सुंदर हो पर हो कोर मात्र ही केवल
उस विराट छबि को जो जो धन के नीचे अभी दबी है
अतिक्रमण इसलिए को जलदो का पटल हटाकर
देख सकूं मधुकान्तिमान सार सौन्दर्य तुम्हारा ।"

नारी प्रकृति है । प्रकृति और परमात्मा में पुराना नैतिकता विरोध मानता आया है । कवि परमात्मा को अस्तित्व के रूप में देखता है इसलिये प्रकृति और परमेश्वर में वह किसी प्रकार का विरोध स्वीकार नहीं करता । नर, नारी को जान कर धर्मानुचित नहीं होता और न नारी नर के सान्निध्य में अपवित्र होती है । प्रकृति और ईश्वर का सहअस्तित्व होता है --

"किसने कहा तुमसे कि नारी नर को जात नहीं है
उसके लिये अलभ्य ज्ञान हो गया परम सत्ता का
और पुरूष जो आलिंगन में बांध चुका रमणी को
देश काल का भेद गगन में उसने जान लिया ।"

कवि ईश्वर को अस्तित्व का पर्याय मानते हैं । अस्तित्व पूण्य और पाप दोनों के ताने बाने में बुना हुआ है इसलिए अंधकार और प्रकाश पूण्य और पाप दोनों एक ही ताने-बाने में बुने हुए हैं । कर्तव्य और अकर्तव्य सबसे अस्तित्व का तानाबाना बुना जाता है जो जीवन है, जो अस्तित्व है वही परमात्मा है, परमात्मा कोई अलग चीज नहीं है । इसलिए दिनकर जी का अध्यात्म आज के अस्तित्व कवियों के दर्शन के बहुत ही करीब आ जाता है ।

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 49

"ईश्वरीय जग भिन्न नहीं है इस गोचर जगती से
इसी अपावन में अदृश्य यह पावन सना हुआ है,
माया कह क्यों मृषा मेटते हो अस्तित्व प्रकृति की
ये नदियाँ ये फूल वृक्ष ये और स्वयं हम तुम भी
शून्य मंच पर सत्वशील जीवित साकार खड़े हैं ।
और यहाँ जो कुछ करते उसकी गंध हवा में
उड़ते उड़ते दूर जन्म जन्मान्तर तक जाती है ।"[1]

क्योंकि प्रकृति और परमेश्वर एक है, यानि परमेश्वर है, अस्तित्व, इसलिए सहज जीवन काव्य है जीवन के सहज प्रवाह में अपने को बहते हुए छोड़ देना ही श्रेष्ठ है । प्रयत्न साध्य संघर्ष बेकार है, जिस रूप में जीवन है उसको उसी रूप में स्वीकार कर लेना ही काम्य है, सहज भाव से जीवन को बहते हुये छोड़ देना अस्तित्व का मार्ग है ।

"जाने क्यों तैराक चतुर तब भी प्रशान्त धारा में
चला चला कर हाथ पाँव विक्षोभ व्यर्थ भरते हैं ।
कौन सिद्धि है जो मिलती संतरण-दक्ष साधक को,
और नहीं मिलती अकाम जल में बहनेवाले को ?"[2]

अत: परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है । वह समग्र अस्तित्व है, लीला धारा में वह व्याप्त है कीचड़ में, कमल में, पानी के प्रवाह में शूल और फूल में परमात्मा का ही अस्तित्व कवि को बिखरा हुआ दिखायी देता है । अत: कवि अपना ईश्वर दर्शन करने का निरूपण करते हुए कहते हैं ।

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 60-61
2. - वही - पृ. 64

"उसे देखना हो तो आँखों को पहले समझा दे
श्वेत श्याम एक ही रंग की युगवत् संज्ञाएं हैं
और उसे छूना हो तो कह दे अपने हाथों से
भेद उठा दे शूल-फूल का, कमल और कर्दम का ।"[1]

इस प्रकार दिनकर जी सृष्टि के हर कण में ईश्वर की छबि देखते हैं । वह चाहे आकाश में चमकते तारे हो या कल-कल बहती नदी हो --

"जिसकी इच्छा का प्रसार भूतल पाताल गगन है
दौड रहे, नभ में अनन्त कन्दुक जिसकी लीला के
अगणित सविता-सोम अपरिमित ग्रह उडु मंडल बनकर
नारी बन जो स्वयं पुरूष उद्वेलित करता है
और बेधता पुरूष-कान्ति बन हृदय पुष्प नारी का ।"[2]

0 इकबाल की शायरी में आध्यात्मिक प्रेम :

अल्लमा इकबाल प्रेम की परिभाषा इस प्रकार देते हैं --

"मर्दे ख़ुदा का अमल इश्क़ से साहेब फ़रोग़
इश्क़ है अस्ले ह्यात मौत है इस पर हराम
इश्क़ दिले जिबरईल इश्क दिले मुस्तफ़ा
इश्क ख़ुदा का रसूल इश्क़ ख़ुदा का कलाम
इश्क के मिज़राब से नाम्ये तारे ह्यात
इश्क़ से नूरे ह्यात इश्क से नारे ह्यात ।"[3]

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 65
2. - वही - पृ. 56
3. कुल्याते इकबाल, पृ. 386

अर्थात् महामानव का कोई कार्य प्रेम के बगैर पूर्ण नहीं हो सकता । प्रेम ही जीवन का सत्य है, वह कभी मृत्यु की अवस्था को नहीं प्राप्त होता । जिबरील फरिश्ता जो खुदा का संदेश, रसूल तक पहुंचाता है, उसकी आवाज भी प्रेम का संदेश है और खुदा के रसूल का दिल भी इश्क है । स्वयं खुदा की वाणी भी प्रेम का ही संदेश है । जीवन के वाद्य से गीत प्रेम की वाद्य यष्टि द्वारा फूटता है ।

प्रेम का अर्थ होता है किसी वस्तु को प्राप्त करने की अथक इच्छा उर्दू शायरी में अधिकतर इश्क और मुहब्बत शब्द का प्रयोग एक ही अर्थों में किया गया है । कुरआन शरीफ में इश्क शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है परन्तु मुहब्बत शब्द का प्रयोग बार-बार किया गया है और आदिकाल की अरबी शायरी में भी मुहब्बत शब्द का प्रयोग मिल जाता है । इमाम गजाली ने मुहब्बत की परिभाषा इस प्रकार दी है -- "मुहब्बत उस लगाव का नाम है जो किसी वस्तु को उसके अच्छा मालूम होने के कारण से मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित करती है या स्वयं मनुष्य उसकी तरफ आकर्षित होता है । यह लगाव और दिलचस्पी मुहब्बत के बाद और भी दृढ होने पर प्रेम का स्वरूप धारण कर लेती है । इसी तरह बुरी मालूम होनेवाली चीज़ से घृणा होती है ।

इस्लामी तसव्वुफ पर जो विदेशी प्रभाव आये हैं उनमें युनान का इश्राकी दर्शन (ILLUMINISM) भी है ।

इस्लाम में तसव्वुफ का भाव सर्वप्रथम इसी धर्म के माननेवालों के द्वारा आया । इस दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक शहाबुद्दीन सुहरवर्दी ने लिखा है --

"हर बुलन्द नूर (ऊंचे प्रकाश) को नीचे के (नूर) प्रकाश, पर अधिकार प्राप्त है और नीचे का प्रकाश ऊपर के प्रकाश से प्रेम करता है और इसी दबाव व प्रेम से सांसारिक व्यवस्था का अस्तित्व जुड़ा हुआ है । जब बहुत से प्रकाश (नूर) इकट्ठा हो जाते हैं तब ऊपर का प्रकाश नीचे के प्रकाश पर अधिकार प्राप्त कर लेता है और नीचे के प्रकाश को ऊपर के प्रकाश से दबाव और प्रेम हो जाता है । इसलिये नूरूल अनवार (प्रकाशों का प्रकाश) अर्थात् खुदा को अपने अतिरिक्त संसार की समस्त वस्तुओं पर अधिकार है और वह स्वयं के अतिरिक्त किसी और से प्रेम नहीं करता । क्योंकि वह हर वस्तु से अधिक सुंदर और पूर्ण है और उसे स्वयं अपना गुण और पूर्णत: दिखायी देता है । इसलिए वह स्वयं प्रेमी भी है और प्रेमिका भी । क्योंकि खुदा से अधिक सुंदर और पूर्ण कोई दूसरी वस्तु नहीं है इसलिए किसी वस्तु या मनुष्य को दूसरी वस्तु या मनुष्य से प्रेम में वह आनन्द नहीं मिलता जो ईश्वर से प्रेम अर्थात् इश्क इलाही से होता है ।"[1]

इस प्रकार सांसारिक व्यवस्था का अस्तित्व प्रेम और दबाव से स्थित है । अकेले प्रकाश की जितनी अधिकता होगी और जितना उनमें कारण और प्रभावों का सिलसिला बढ़ता जाता है उतनी ही सांसारिक व्यवस्था सम्पूर्ण होती है । पूरा संसार मिलकर एक प्रकाश हो जाता है । इसलिऐ फारसी शायरी में और फिर उसके प्रभाव से उर्दू शायरी में प्रेमी नीचे से ऊपर को ओर दिखायी देता है । वह गली-गली मारा मारा फिरता है, आहे भरता है, शिकायते करता है, कपड़े फाड़कर जंगलों की खाक छानता फिरता है, तात्पर्य यह है कि इश्क उसको बिन मौत मार डालता है ।

---

1 - इक़बाल की फ़ारसी शायरी का तन्कीदी जायज़ा - अब्दुश्शकूर अहसन . पृ- 235, 236

मगर इकबाल के कलाम में प्रेम मृत्यु का कारण नहीं वह जीवन की पहचान है। यहाँ इकबाल की नज़्म "मुहब्बत" पर एक दृष्टि डालना रूचिकर होगा। इस नज़्म में इकबाल ने प्रेम को जीवन का कारण माना है। वह शुरू से ही यह बात मानते हैं कि, इश्क अथवा प्रेम को मृत्यु की अवस्था नहीं आती। वह जीव का पैगम्बर अथवा संदेशवाहक है। बागेदरा की एक और नज्म "इश्क और मौत" इन्होंने रूपक के द्वारा यह बात बताई है कि प्रेमी को देखकर मौत भी उससे दूर भागती है। मौत के फरिश्ते और प्रेम के फरिश्ते में बात-चीत होती है। इश्क का फरिश्ता मौत के फरिश्ते की बात सुनकर मुस्कुराता है और उसकी इस मुस्कुराहट की बिजली से मृत्यु स्वयं भस्म हो जाती है।

"सुनी इश्क ने गुफ्तगू जब कज़ा की
हंसी उसकेलब पर हुयी आश्कारा
गिरी इस तबस्सुम की बिजली अजल पर
अंधेरे का हो नूर में क्या गुज़ारा
बक़ा को जो देखा फ़ना हो गयी वह
कज़ा थी शिकारे कज़ा हो गयी वह।"[1]

इसलिये प्रेम मृत्यु का नहीं बल्कि जीवन का प्रतीक है। प्रेम से जो कार्य होगा वह मृत्यु की सीमाओं को पार करके अमर हो जाता है :--

"मर्दे ख़ुदा का अमल इश्क़ से साहब फ़रोग़,
इश्क है असले हयात मौत है इस पर हराम।"[2]

- -

1. कुलयात इकबाल - पृ. 58
2. - वही - पृ. 386

और मस्जिदे करतबा (स्पेस) भी प्रेम के ही कारण अस्तित्व में आयी । इसी कारण वह भी अमर बन गयी ।

"ऐ हरमे क़रतबा इश्क़ से तेरा वजूद
इश्क़ सरापा दवाम जिसमें नहीं रफ़्तोबूद ।"[1]

सूफी शायरों ने परम सत्य से एकता या मिलन को जीवन का लक्ष्य समझा है । इसी दर्शन ने वदहते वजूद (ब्रह्म) का रूप धारण कर लिया है जो अधिकतर सूफी शायरी का रूचिकर विषय है । अस्तित्व में आयी हुयी जो भी वस्तु हैं चाहे वह लघु हो या विशाल उसमें ईश्वर का प्रकाश दिखायी देता है । उदाहरण तौर पर --

"हर चन्द हर एक शय में तू है
पर तुझ सी तो कोई शय नहीं है ।"[2]

यही इशाराकी दर्शन थोड़े से बदलाव के बाद फारसी शायर रूमी के कलामें विकासवाद बन गया कि सब आत्मायें परमेश्वर से निकलती है और उनका मूल भी परमेश्वर है । इसलिये आत्मा जगत भी अजनित और अकाल है, ईश्वर से लेकर जड़ पदार्थ तक अस्तित्व की सीढ़ी सीढ़ी विकास होता है । हर आत्मा अपने परमात्मा से जुदा होकर पहले नीचे की तरफ गिरती है लेकिन अपने मूल अथवा परमात्मा की तरफ उसका आकर्षण और वापस होने की इच्छा बाकी रहती है । समस्त जगत इसलिए विकासशील है कि वह ईश्वर की तरफ लौटना चाहता है । यह शनैः शनैः विकास की भावना जो जगत के समस्त पदार्थों में एकता पैदा करती है इस भावना का नाम प्रेम है । समस्त जीव जन्तुओं और संसार के समस्त कणों का उद्देश्य उत्कर्ष है एवं

- -

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 387

2. - वही -

ईश्वर की तरफ वापसी है। दूसरे शब्दों में प्रेम का क्रम केवल मनुष्य तक सीमित नहीं बल्कि उसकी आत्मा जड़ पदार्थों, उद्यज्जी और जीव जन्तुओं में भी प्रवाहित है, यही प्रेम भावना कठिनाइयों की परवाह न करते हुए लक्ष्य की तरफ अग्रसर रहती है। प्रेम केवल सृजन और विकास की उत्तेजना नहीं देता बल्कि संसार के विभिन्न पदार्थों का आपसी तालमेल, आकर्षण और एकता की भावना भी इसी की आभारी है। यही सृजनीय भावना जिसके कारण कलियां खिलती हैं, फूल हंसते हैं, सितारों का कारवां रवां-दवां रहता है, और मनुष्य के भीतर संस्कृति जन्म लेती है। जीवन का कारवां नये-नये लक्ष्यों की खोज में निकलता है, जीवन सुंदर से अति सुंदर की खोज में लगा रहता है और पूरा जगत जीवन के उपद्रवों से गूंज उठता है। इकबालने प्रेम को एक ऐसी अमर और सर्वव्यापी शक्ति माना है जिससे जगत में सृजन और विकास का कार्य प्रवाहित है।

एक गज़ल में इकबाल ने प्रेम की सृजनीय और विकास शक्ति को इस प्रकार व्यक्त किया है।

"लालये ईं गुलसिता दागे तमन्नये नदाश्त
नरगिसे तुन्नाज़े ऊ चश्मे तमाशाये नदाश्त।"
खाकरा मौजे नफ़स बूदो दिले पैदा नबूद
ज़िन्दगानी कारवाने बूदो कालाये नदाश्त।" [1]

"अर्थात् यह सृष्टि प्रेम की सर्जनीय शक्ति और उपद्रव के बगैर एक ऐसी समा थी जहां केवल सन्नाटा ही सन्नाटा था"। इस के अहिपुष्प में आकांक्षा का दाग न था और न नरगिस में दर्शन की इच्छा न थी। संसार मिट्टी का ढेर था, जिसके पास इच्छायें रखनेवाला हृदय न था। जीवन एक ऐसा कारवां था जिसके पास व्यापार के लिये सामग्री न थी। प्रेम ही ने इस संसार में उथल पुथल

---

1. रूहे इक़बाल - यूसुफ़ हुसैन खान पृ. 47

उत्साह उन्माद और चाहत को जन्म दिया । इसी के कारण जीवन अन्जाने लोकों को तरफ यात्राजीन है । यह भावना आकाल है । इसी की आकर्षण शक्ति के द्वारा समस्त जगत की व्यवस्था चलती है, कणों में सूरज के निकट होने का प्रयत्न इसी भावना का प्रयास है और पारस्परिक आकर्षण का चमत्कार है । सितारों के चक्कर में तालमेल इसी का आभारी है और इसी भावना के कारण मनुष्य सृष्टि और अपने बीच संबंध स्थापित करता है ।"

इकबाल का एक और शेर है -----

"इश्क आइने हयाते आलम अस्त
इम्तेज़ाजे तालमाते आलम अस्त ।"[1]

अर्थात् प्रेम सृष्टि में सृजन और विकास के तालमेल का ही उद्‌गम नहीं बल्कि यह मनुष्य जो जीवन का सबसे बड़ा सत्य है को सृष्टि पर विजय प्राप्त करने के लिये भी उद्वेलित करता है ।" प्रेम मनुष्य के भीतर एक ऐसी अथाह शक्ति उत्पन्न कर देता है कि वह इसमें डूबकर विजय और पूर्ति के रास्ते पर आगे बढ़ता रहता है ।

उदाहरण के तौर पर एक शेर में ऐसी जाति के प्रति सम्मान प्रकट किया गया है जिसकी आत्मा प्रेम की जलन और ताप से व्याकुल है इसलिए कि यही जलन और व्याकुलता उसके लिये एक नये जीवन को जन्म दे रही है --

"ऐ खुशा कौमें कि जाने ऊ तपीद
अज़गिले खुदखेश रा बाज़ आफरीद ।"[2]

अर्थात वह जाति आदर के योग्य है जिसकी आत्मा प्रेम की आग में तपकर अपनी मिट्टी से अपने को पुनर्जन्म देती है ।

- -

1. इकबाल की फारसी शायरी का तनकीदी जायजा - अब्दुश शकुर अहसन, पृ. 239

2. - वही - पृ. 240

प्रेम की जलन की यही महानता है जिसको देखते हुए इकबाल उसे आदर्श जीवन का केन्द्र और धुरी मानते हैं। इकबाल के जीवन की इस दशा को एक मिसरे में यूं पेश किया है।

"सोज़म गिरयम तपम गुदाज़म।"

अर्थात् जलता हूं, रोता हूं, तपता हूं और पिघलता हूं।

क्योंकि तपन जीवन के भिन्न-भिन्न भागों की पूर्ति करती है और असंभव को संभव बना देती है। इसलिए इकबाल तपन और उन्माद की ऐसी दशा के इच्छुक है जिसका कोई अन्त न हो जो सदैव आनन्द हो, सदैव तपन से ही जीवन में उष्णता है। अगर व्याकुलता और खोज परेशानी है तो प्रेमी को इस परेशानी में भी स्वाद और आनन्द मिलता है, और इस पीड़ा का लाईलाज (असाध्य) होना ही हर दु:ख की दवा है। यह तपन वह दु:ख नहीं जो मनुष्य के लिये रोग बन जाये जो दूसरे तमाम दु:खों का अन्त कर देती है और मनुष्य की आत्मा को सदैव आनन्द की स्थिति में पहुंचा देती है।

मनुष्य प्रेम में डूबकर महानता की ऊंचाईयों तक पहुंच जाता है लेकिन इस शक्ति की उत्पत्ती के लिये आवश्यक है कि प्रेमी पूरा प्रयत्न करके अपने अन्दर उन गुणों को पैदा कर ले जो उसके महबूब में है अल्लमा इकबाल ने इस स्थान को तकलीद (अनुसरण) कहा है और इसे प्रेम के गुणों में से एक बताया है। महबूब के गुणों के इस प्रकार ग्रहण करने से आत्मा का गुण निखर आता है और मनुष्य में वह शक्ति आ जाती है कि वह उसे जजदा शिकार (खुदा का शिकार) करनेवाला बना देता है। इकबाल ने प्रेम की इस अथाह शक्ति को व्यक्त करने में बड़ी चंचलता और निडरता से काम लिया है।

"दरदस्ते जनूने मन जिबरील ज़ुबूँ सैदे
यज़दाँ ब कमन्द आवुर ऐ हिम्मते मर्दाना ।"

अर्थात् मेरे प्रेम के उन्माद के वन में जिबरील एक तु तुच्छ सा शिकार है, ऐ ऊंची हिम्मत रखनेवाले "तू ईश्वर की ओर अपनी कमन्द (फन्दा) फेंक ।

इकबाल की शायरी में इश्क हकीकी (ईश्वर प्रेम) का सबसे उत्कृष्ट रूप उनकी गज़ल में दिखायी देता है । गज़ल का अर्थ होता है ईश्वर से बातें करना जिस प्रकार अधिकतर यह यह शैली इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) को व्यक्त करने के लिये प्रयोग में आती रही है । लेकिन इकबाल योरोप जाने के पहले ही इस पारंपरिक और अनुसरणीय शायरी को त्याग चुके थे । जब इकबाल योरोप पहुँचे तो उनके लब पर यह सदा थी --

"गया है तकलीद का ज़माना
मजाज़ रख़्ते सफ़र उठाये
हुयी हकीक़त ही जब नुमायाँ
तो किस को यारा है गुफ़्तगू का ।"[1]

यह इकबाल की साहित्यिक यात्रा का वह मोड़ है, जहाँ सांसारिक प्रेम अपना बोरिया बिस्तर बांध चुका है और ईश्वर से परस्पर वार्तालाप का कठिन लक्ष्य सामने है । इकबाल अतिशीघ्र दूसरे ढंग से कहते हैं ।

"मैं ज़ुलमते शब्द में ले के निकलूँगा
अपने दरमादा कारवाँ को

---

1. कुल्याते इकबाल

शरर फ़िशाँ होगी आह मेरी
नफ़स मेरा शोला बार होगा ।"[1]

यह गजल इकबाल की आइन्दा शायरी का पथप्रदर्शक है इसलिए आगे चलकर जो भावनाएं इकबाल के विचारों का केन्द्र बिन्दु मानी गयी वह सब इसमें मौजूद हैं।

ग़ज़ल लिखनेवाले शायर शताब्दियों से सुंदरता, प्रेम, ब्रह्मवाद और दर्शन के ऐसे मूल्यों की पूजा में संलग्न रहे थे जो आधुनिक काल में घिस पिस चुकी थी। इकबाल ने उन्हें नये और क्रान्तिकारी अर्थ दिये उनकी शायरी में सुंदरता और प्रेम जगीरदाराना पद्धति के वातावरण और विचारों को बहुत पीछे छोड़कर उस स्थान पर आ पहुंचते हैं जहाँ प्रेम (जीवन) का लक्ष्य सुंदरता (महबूब) में डूबकर मिट जाना नहीं बल्कि सुंदरता (महबूब) अर्थात ईश्वर को सदैव और लगातार अपने में लीन करते रहना है।

प्रेम मृत्यु का नहीं जीवन का संदेश है, बिखरावट का नहीं दृढ़ता का नाम है एवं लगातार विकास का प्रतीक है। इकबाल स्वयं लिखते हैं।

"सितारों से आगे जहां और भी हैं।"[2]

परिणाम यह है कि धर्म और संसार वृद्धि और ब्रह्म ज्ञान के बीच की खाई पट जाती है, कर्महीन ब्रह्मवाद ने हमारे चारों तरफ जो धुन्ध फैला रखी थी वह छट जाती है। रास्ते की धूल अर्थात दुःखी और रौंदी हुयी मानवता में ईश्वर का रूप दिखायी देने लगता है। प्रेम की दृष्टि में मानवता प्रथम और अन्तिम वस्तु ठहरती है और इकबाल को इसी से संतुष्टि मिलती है।

"फिरमके नादीं तवाफ़े शमा से आज़ाद हो
अपनी फ़ितरत की तजल्ली जार में आबाद हो।"[3]

---

1. कुलयात इकबाल - पृ. 142 2. कुलयात इकबाल - 353
3. वही -

अर्थात मूर्ख पतंगा शमा (दिया) के चक्कर कब तक काटेगा अपनी सृष्टि के उज्ज्वल संसार में विराजमान हो ।

अब प्रश्न यह उठता है कि स्त्री प्रेम की प्रशंसा और परम्परागत प्रेम से निवृत्ति ले लेने के उपरान्त इकबाल जीवन दर्शन के नये फैलाव से जुड़ जाने के उपरान्त गज़ल, गज़ल रही या नज़्म बन गयी ?

उत्तर यह है कि नयी गजल मूलत: परम्परागत और पुरानी ही है । इस गज़ल की चंचलता, ताजगी, शक्ति, तपन (मैं) और (तू) के उस उत्साह की आभारी है जो सदा से गजल की आत्मा है ।

इकबाल जीवन और संसार, मानवी विकास और ईश्वर ज्ञान से संबंधित अपने क्रान्तिकारी विचारों को (मैं) और (तू) का रूप देकर इसमें परम्परागत गज़ल का सा आकर्षण पैदा कर दिया है । इकबाल की सदैव व्याकुलता के फलस्वरूप (मैं) और (तू) का अर्थ बदलता रहता है, (तू) कहीं मनुष्य है, कहीं सृष्टि और कहीं ईश्वर और (मैं) का तात्पर्य इकबाल का कभी अपने व्यक्तित्व से होता है और कभी मनुष्य से ।

"मैं नवाये सोख़्ता दर गुलू, तू परीदा रंग रमीदा बू
मैं हिकायते गमे आरज़ू तू हदीसे मातमे दिल बरी ।"[1]

यहाँ निराशा का गहरा रंग है, लेकिन (बाले जिबरील) तक पहुंचते पहुंचते न (मैं) हिकायते गमे आरजु (प्रेम दुख की कथा है) और न (तू) हदीसे दिलबरी (नायिकत्व की कथा है) इकबाल को अपने दर्शन और काव्य के प्रभाव पर गर्व है । अपने व्यक्तित्व की महानता पर गर्व है --

---

1. कुल्याते इकबाल - पृ. 252

"की हक़ से फरिश्तों ने इक़बाल की गममाज़ी
गुस्ताख़ है करता है, फ़ितरत की हिना बन्दी
खाकी है, मगर उसके अन्दाज़ हैं अफ़लाकी
रूमी है न शामी है, काशी न समरकन्दी
सिखलाई फ़रिश्तों को आदम की तड़प इसने
आदम को सिखाता है, आदाबे खुदावन्दी ।"

साथ ही इकबाल का ‹ तू › अर्थात् सामान्य मनुष्य भी परीदा रंग ‹ उड़ा उड़ा रंग › और रमीदा बू ‹ बिखरी हुयी सुगन्ध › नहीं बल्कि हर क्षण जीवन और सृष्टि को वशीभूत करने में संलग्न है ।

"तू मर्दे मैदां तू मीर लश्कर
नूरी हुज़ूरी तेरे सिपाही [1]
इसी रोजो शब में उलझकर न रह जा
कि तेरे ज़माने मकां और भी हैं ।"[2]

इकबाल की सृष्टि को वशीभूत करने की इच्छा से पल्लवित मनुष्य के तुच्छ होने का अनुभव भी है, अगर यह अनुभव वहीं प्रकट हुआ है जहाँ ‹ तू › का प्रयोग ईश्वर के अर्थ में किया गया है और ऐसे अवसरों पर उनकी वाणी में जो व्यंग्य की कड़ुवाहट उत्पन्न हो जाती है, उसमें एक दु:साहसी निश्चलता ने चंचल और विकसित बना दिया --

"इसी कौकब की ताबानी से है तेरा जहाँ रौशन
ज़वाले आदमे खाकी ज़ियाँ तेरा है या मेरा ?।" [3]

.. ..

"न खुदबीं ने खुदा बीं ने जहाँ बीं
यही शाहकार है तेरे हुनर का ?"[4]

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 345
2. - वही - पृ. 353
3. - वही - पृ. 298
4. - वही - पृ. 300

इसी चंचलता और विकसिकता का रहस्य उस विश्वास में है जो इकबाल को मनुष्य की हार्दिक मनोकामनाओं और लक्ष्यों के लगातार निर्धारण पर हैं ।

"मेरी जफ़ा तलबी को दुआयें देता है
वह दश्ते सादा वह तेरा जहाने बेबुनियाद
मकामे शौक़ तेरे क़ुदसियों के बस का न हो
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हैं ज़्याद ।"[1]

जब इकबाल ईश्वर से अपने व्यक्तित्व की पूर्ति की कामना करते हैं तो उनके कलाम में प्रफुल्लता अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है, कभी तो वह प्रार्थना के रूप में शिकायत करते हैं ।

"कर पहले मुझको जिन्दगीये जाविदां अता
फिर ज़ौक़ो शौक़ देख दिले बेक़रार का ।"[2]

.. ..

"तू है मुहिते बेकराँ में हूं ज़रासी आबजू
या मुझे हमकनार कर या मुझे बेकनार कर
नग़मये नौबहार अगर मेरे नसीब में न हो
इस दमे नीमसोज़ को तायरके बहार कर ।"[3]

और कभी उन्हें मनुष्य के अकेलेपन की विवशता का अनुभव सताता है । और उनकी आवाज में दुःख उन्मादता, प्रसन्नता पहुंच और दूरी के सारे सुर एकजुट हो जाते हैं ।

---

1. कुलयाते इकबाल, पृ. 298
2. - वही - पृ. 301
3. - वही - पृ. 299

"ठहर सका न हवाये चमन में खेमये गुल
यही है फ़स्ले बहारी यही है बादे मुराद?।"[1]

.. .. ..

"नहीं इस खुली फ़िज़ा में कोई गोशाये फ़रागत
ये जहाँ अजब जहाँ है,न क़फ़स न आशयाना ।"

.. .. ..

यह मुश्ते ख़ाक यह सरसर यह वुसअते अफ़लाक
करम है या कि सितम तेरी लज़्ज़ते ईजाद ।"[2]

इकबाल को सारा ब्रह्मांड यों एक-एक कारागार दिखाई देता है और इकबाल ईश्वर के अत्याचार को अनुभव करते हैं --

"तेरी खुदायी से है मेरे जुनूं को गिला
अपने लिये लामकाँ मेरे लिये चार सू ।"[3]

अर्थात् मैं ऐसा पागल हूं कि ईश्वर से यों मुझे शिकायत है कि ईश्वर ने अपने लिये तो स्थानहीनता चुना है और मुझे चार दिशाओं के कारागार में बन्दी बना कर रखा है । अत्याचार के इन अनुभवों से कामनाओं को जो तपन जन्म लेती है वह इकबाल के व्यक्तित्व और शायरी में एक अनोखे आकर्षण को जन्म देती है --

"मेरी नवाये शौक़ से शोर हरीमे ज़ात में
ग़ुल ग़ुला हाये अलअमाँ बुतकदये सिफ़ात में
अगर मक़सूदे कुल मैं हूं तो मुझ से मावरा क्या है ?
मेरे हंगमाये नौबनौ की इन्तेहा क्या है?।"[4]

1· कुलयाते इकबाल, पृ· 300
2· - वही - पृ· 307
3· - वही - पृ· 384
4· - वही - पृ· 257

0 बुद्धि और प्रेम- दिनकर जी के काव्य में

हमेशा से बुद्धि और प्रेम में टकराव चलता रहता है और प्रेम की राह में कवि बुद्धि को चट्टान की तरह अटल मानते हैं, मनुष्य प्रेम के रास्ते पर बेखबर चलता रहता है तो बुद्धि जगह-जगह अंकुश लगाती है । अत: भगवान को मनुष्य प्रेम के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है बुद्धि के द्वारा नहीं, सिर्फ प्रेम के द्वारा प्रेमी कठिन रास्तों, पथरीली भूमि पर भी चलता हुआ प्रेमिका तक पहुंच सकता है, जबकि बुद्धि उसे जगह-जगह कठिनाइयों से खबरदार करती रहती है ।

डॉ0 विजेन्द्र नारायण सिंह लिखते हैं -- "बुद्धि में रचना करने की कोई शक्ति है ही नहीं बुद्धि तो केवल दुहरा सकती है, स्मरण कर सकती है । नये शब्दों को गढ़ती और पुराने शब्दों की पुनर्व्यवस्था करती है और क्योंकि हममें से अधिकांश लोग दिमाग से ही अनुभव और महसूस करते हैं अत: हमें शब्दों की यांत्रिक आवृत्ति पर ही निर्भर रहना पड़ रहा है । बुद्धि प्रेम पर विमर्श कर सकती है इस पर पुस्तकें लिख सकती है लेकिन यह प्रेम को महसूस नहीं कर सकती ।"[1]

अत: यह तो तै बात है कि प्रेम ही वह भाव है जो सब भावों का सरताज है, प्रेम ही के द्वारा मनुष्य स्वयं को पहचानने की शक्ति पाता है । प्रेम के ही द्वारा वह ऊंची से ऊंची उड़ान भरता है, कल्पना की दुनिया में विचरण कर सकता है, वास्तविकता की दुनियां में साहस के साथ चल सकता है ।"

---

1. दिनकर पुर्नमूल्यांकन - डॉ0 विजेन्द्र नारायण सिंह, .

दिनकर जी भी बुद्धि की तुलना में प्रेम को महत्त्व देते हैं । उनका भी यही कहना है हृदय मानव मन की पीर को नहीं समझ सकता, हृदय परमात्मा के रूप को तर्क के आधार पर समझने में असमर्थ रहा है लेकिन प्रेम के द्वारा मनुष्य के सामने परमात्मा के सारे रहस्य उजागर हो जाते हैं । कोई ज्ञानीज्ञान के द्वारा जिस भेद को नहीं जान सकता प्रेमी प्रेम के द्वारा पा लेता है ।

"उसे पूछ विस्मृति का सुख क्या
लगा घाव गंभीर जिसे
जग से दूर हट ले बैठी
उर का प्यारी पीर जिसे
जागरूक ज्ञानी बनकर
जो भेद नहीं तू जान सका
पूछ बतायेगा फूलों की
बाँध चुका जंजीर जिसे ।"[1]

दिनकर जी का कहना बुद्धि जगह-जगह,कदम-कदम पर रोक लगाती है, सांसारिक रहस्यों में मनुष्य को उलझाये रखती है, लेकिन जिसने प्रेम का रस पिया वह ही सही अर्थों में जीवन का रस भोग पाया है ।

"वृथा यत्न पीछे क्या छूटा इस रहस्य को जान सके
वृथा यत्न जिस ओर चले हम उसे अभी पहचान सके
होगा कोई क्षण उसका भी अभी मोद से काम हमें
जीवन में क्या स्वाद अगर खुलकर हम दो पल गान सके ।

1· रश्मिलोक - दिनकर - पृ०, 103

उर्वशी में भी दिनकर जी स्थान-स्थान पर बुद्धि के महत्व को समझाते हैं, उनका यही कहना है कि बुद्धि केवल तर्क कर सकता है, लेकिन कोमलता का अनुभव तो प्रेम के ही द्वारा किया जा सकता है --

"बुद्धि बहुत करती बखान सागर तट की सिकता का
पर तरंग-चुम्बित सैकत में कितनी कोमलता है
इसे जानती सिहरित त्वचा नग्न चरणों का ।"[1]

दिनकर जी का कहना है बुद्धि लक्ष्य प्राप्ति में जगह-जगह रोड़ा अटकाती है लेकिन प्रेम के द्वारा मनुष्य सहज ही लक्ष्य प्राप्त कर लेता है ।

"रक्त बुद्धि से अधिक बली है और अधिक समर्थ भी तो --
निज उद्गम की ओर सहज हम लौट नहीं पाते हैं
पहुंच नहीं पाते उस अव्यय एक पूर्ण सविता तक,
खोये हुए अचेत माधवी किरणों के कलरव में ।"[2]

इसीलिए कवि कहता है, हृदय कभी धोखा नहीं दे सकता जबकि बुद्धि मनुष्य को हमेशा धोखा ही देती है ।

"पढ़ो रक्त की भाषा को, विश्वास करो उस लिपि का
यह भाषा, यह लिपि मानस को कभी न भरमायेगा ।"[3]
.. ..
क्या विश्वास करे कोई कल्पना मयी इस धी का
अमित बार देती यह छलना भेज तीर्थ पथिको को
उस मन्दिर की ओर कहीं जिसका अस्तित्व नहीं है ।"[4]

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 46
2. - वही - पृ. 47
3. - वही - पृ. 46

यद्यपि दिनकर जी यह मानते हैं कि बहुत सारी समस्यायें हमारे सामने बुद्धि के अतिचार के कारण आती है और वर्तमान युग में लोग बुद्धि का प्रयोग बहुत कर रहे हैं, मनुष्य की कोमल भावनाएं दम तोड़ रही है, फिर भी इकबाल की ही तरह दिनकर जी बुद्धि और हृदय के सामंजस्य बल बल देते है । उनका भी कहना है अगर ज्ञान और भावना का समन्वय हो जाए तो मनुष्य कठिन से कठिन राहों पर चलता हुआ अति शीघ्र लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और इसी के द्वारा सारे संसार का कल्याण हो सकता है --

"श्रेय वह नर बुद्धि शिव रूप आविष्कार
ढो सके जिससे प्रकृति सबके सुखों का भार
मनुज के श्रम के अपव्यय की प्रथा रूक जाय
सुख समृद्धि विधान में नर का प्रकृति झुक जाय ।"[1]

इस प्रकार कहीं-कहीं दिनकर जी सफल जीवन का रहस्य ज्ञान और भावना के सामंजस्य में मानते हैं ।

0 <u>इक़बाल के काव्य में बुद्धि और प्रेम :</u>

अल्लमा इकबाल के पिता एक सूफी बुज़ुर्ग थे, अत: इकबाल की शायरी में सूफी विचारधारा अर्थात् तसव्वुफ (ब्रह्मवाद) का प्रमाण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । तसव्वुफ जीवन की वह धारा है जिसके द्वारा खुदा और मनुष्य के बीच संबंध स्थापित होता है । अल्लमा इकबाल सूफी होने के साथ-साथ बहुत बड़े शायर भी थे । इसलिए इकबाल की शायरी में तसव्वुफ को जबान मिल गया । इन्होंने सूफी विचार

1. कुरूक्षेत्र - दिनकर - पृ. 57

धारा और इस्लामी विचारधारा को इतने निकट ला दिया कि दोनों एक ही शरीर के अंग दिखाई देने लगे ।

तसव्वुफ का एक बहुत बड़ा खंड इश्क अथवा प्रेम है । इस प्रेम को इश्क इलाही अर्थात् ईश्वर से प्रेम की संज्ञा दी जा सकती है । इकबाल इसतरह के प्रेम को पसन्द नहीं करते थे जो प्रेमी को घुला घुला कर उसे निराशा के दल-दल में डाल दे । इनकी दृष्टि में प्रेम संघर्ष और क्रान्ति का नाम है ।

प्रेम एक ऐसा भाव है जिसकी तुलना में सब भाव तुच्छ दिखायी देते हैं । अल्लमा इकबाल का कहना है प्रेम खुदा का दूसरा नाम है । यह खुदा को पूर्ण करने का रास्ता है और खुदा का पूर्णत: एक ऐसा कर्म है जो कभी समाप्त नहीं होता ।

"सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
अभी इश्क के इम्तेहाँ और भी हैं ।"[1]

तमाम सूफियों की तरह इकबाल का भी विचार है कि हम केवल बुद्धि के बल पर खुदा तक नहीं पहुंच सकते । खुदा तक पहुंचने के लिये हमें प्रेम का सहारा अवश्य लेना पड़ता है । क्योंकि जिस सीमा पर पहुंच कर बुद्धि की उड़ान समाप्त होती है वहीं से प्रेम की सीमा शुरू होती है ।

"ज़माना अक्ल को समझा हुआ है मिश्अलेराह
किसे खबर कि जुनूँ भी है साहबे इदराक ।"[2]

---

1. कुलयाते इकबाल , पृ० 353
2. - वही - पृ० 359

उर्दू शायरी में अधिकतर प्रेम को कर्म और बुद्धि का हरीफ़ अर्थात दुश्मन के तौर पर प्रयोग किया गया है । अल्लमा इकबाल इस बात को तो स्वीकार करते हैं, बुद्धि के नजदीक प्रेम एक तुच्छ वस्तु है । परन्तु वह मानते हैं, प्रेम के द्वारा ही मनुष्य का जीवन साकार होता है, इनका कहना है कि मुझसे कोई कहे कि प्रेम के बदले तख्ते जम ले लो तो मैं न लूं --

"गर च: मताये इश्क़ रा अक़्ल बहाये कम नेहद
मन न देहम तख़्ते जम आहे जिगर गुदाज़ रा ।"

ऊपर के शेर में शायर का कहना है, हालांकि प्रेम का परिणाम घुटन और बेचैनी के अतिरिक्त कुछ न हो लेकिन यही बेचैनी मनुष्य के हृदय को गर्मी पहुंचाती है ।

अल्लमा इकबाल का यह कहना है कि बुद्धि बेकार की चीज नहीं । बुद्धि का कार्य है उसके द्वारा हम पेचीदा गांठ को खोले, बुद्धि वह शक्ति है जो प्राकृतिक तौर पर मनुष्य को अपने अस्तित्व के पहचान के लिए मिली हुयी है । परन्तु जीवन की वास्तविकता और मानव हृदय के अन्दर उठनेवाले विचारों का अध्ययन हम प्रेम के ही द्वारा कर सकते हैं । अपना पांव आगे बढ़ाते समय हमें कहीं-न-कहीं बुद्धि का सहारा लेना पड़ता है और पांव आगे बढ़ा लेने के उपरान्त हम प्रेम के ही द्वारा आगे की मंज़िल तय कर सकते हैं । इकबाल ने बुद्धि और प्रेम को एक दूसरे का विरोधी न मानते हुए उन्हें एक दूसरे का हमदम व हमक़दम बताया है । इकबाल का कहना है कि अगर प्रेम के साथ-साथ थोड़ी सी बुद्धि का भी सहारा लेकर मनुष्य अपने लिये जो रास्ता निश्चित करेगा वह रास्ता अवश्य ही उसे मंजिल तक पहुंचा देगा । वह मानते हैं ज्ञान और बुद्धि मनुष्य को मंज़िल के निकट तो ले जा सकती है परन्तु मंजिल को तय मनुष्य प्रेम के ही द्वारा कर सकता है --

"अक्ल गो आस्तां से दूर नहीं
इसकी तक़दीर में हज़ूर नहीं
इल्म में भी सरूर है लेकिन
यह वह जन्नत है जिसमें हूर नहीं
दिले बीना भी कर खुदा से तलब
आँख का नूर दिल का नूर नहीं ।"[1]

इकबाल को हमेशा अपने समकालीन कवियों से यह शिकायत रही है कि, वह इस जनून से वंचित है जो बुद्धि को कर्म की राह दिखा सके । अर्थात् जो प्रेम की गर्मी को सीमित से असीमित बना दे, सांसारिक प्रेम को अध्यात्मिक प्रेम में परिवर्तित कर सके ।

"तेरे दश्तो दर में मुझको वह जुनूं नज़र न आया ।
कि सिखा सके खिरद को रहो रस्मे कार साज़ी ।"[2]

इकबाल का कहना है कि बगैर प्रेम के मनुष्य कुछ नहीं कर सकता । बुद्धि भावनाओं के बुतकदे तो बना सकती है परन्तु जीवन का सही मार्ग नहीं चुन सकती ।

"अक्लो दिलो निगाह का मुरशदे अव्वलीं है इश्क़
इश्क़ न हो तो शरओ दीं बुदकदये तसव्वुरात ।"[3]

इकबाल का कहना है कि बुद्धि की सबसे बड़ी दुर्बलता यह है कि इसमें पागलपन की हदतक उमंग और जोश नहीं होता और प्रेम जब तक इसके पीठ रूपी घोड़े पर सवार होकर चाबुक का काम न करे तब तक वह आगे पांव बढ़ाने में हिचकिचाहट अनुभव करती है ।

---

1. कुलयाते इकबाल, पृ० 335
2. - वही -
3. - वही -

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कभी कोई ऐसा महान कार्य हुआ जिसने किसी जाति के जीवन में अथाह परिवर्तन ला दिया हो और उस जाति को सोचने समझने का ढंग ही बदल गया हो, वहां कहीं न कहीं प्रेम का भाव मौजूद पाया गया है। प्रेम तो बेझिझक आग में कूद पड़ने की इजाजत दे देता है।

"बेखतर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महवे तमाशये लबे बाम अभी।"[1]

अर्थात् खुदा के प्रेम में बेधड़क हजरत ईसा नमरूद द्वारा सुलगायी हुयी आग में कूद पड़े।

इकबाल का कहना है, मनुष्य के दु:खी दिल पर मरहम का काम बुद्धि नहीं कर सकती, प्रेम के ही द्वारा मनुष्य के दु:खी दिल को संतोष प्राप्त हो सकता है, किसी के दु:खी दिल को बुद्धि की नहीं प्रेम की आवश्यकता होती है। उनका कहना है प्रेम तो वह धागा है जो टूटे हुए दिल को जोड़ सकता है --

"वह पुराने चाक जिनको अक़्ल सी सकती नहीं
इश्क सीता है इन्हें बे सोज़नो तारे रफू।"[2]

इकबाल ने प्रेम के मुकाबले में बुद्धि को बहुत चालाक बताया है।

"अक़्ल अय्यार है सौ भेस बदल लेती है
इश्क़ बेचारा न मुल्ला है न ज़ाहिद न हकीम।"[3]

---

1. कुल्याते इकबाल,
2. कुल्याते इकबाल,
3. कुल्याते इकबाल,

इतना सब होते हुए भी कई जगह देखा गया है, इकबाल बुद्धि के महत्व को भी स्वीकार करते हैं। उनका कहना है, यदि सृजन और कर्म पर बुद्धि रोक न लगाये तो यह संसार नष्ट हो जायेगा, इकबाल का कहना है कि प्रेम में गिरावां चाक करके निकल खड़े होना तो मामूली सी बात है, बड़ी बात तो तब है जब प्रेम भी हो और गिरावां भी सलामत रहे, तभी प्रेमी सही अर्थों में प्रेमी कहलाने के योग्य है। इकबाल कहीं-कहीं यह मानने पर मजबूर हुए हैं कि अपने निखरे हुए रूप में बुद्धि और प्रेम एक हो जाते हैं। प्रेम और बुद्धि दोनों का सहारा लेकर मनुष्य आगे बढ़े तो वह अवश्य अपनी मंजिल तक पहुंच जायेगा, जीवन की पूर्णता: को प्राप्त करने के लिये दोनों का साथ आवश्यक है। इकबाल का कहना है --

"है ज़ौके तजल्ली भी इसी खाक में पिन्हाँ
गाफिल तू निरा साहबे इदराक नहीं है।"[1]

मनुष्य के हृदय की अलग-अलग स्थिति होती है और हर स्थिति दूसरी स्थिति से जुड़ी होती है और बगैर कहे एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेता है। अर्थात् मनुष्य के मन में एक के बाद एक तरह-तरह के विचार आते जाते हैं और विचारों की हेरा फेरी से मनुष्य के अन्दर क्षमता पैदा होती है और वह कुछ करने को उत्साहित होता है। अब बुद्धि क्योंकि हर विचार को अलग-अलग करके समझना चाहती है इसलिए वह उन विचारों की नजाकत को नहीं समझती। जो कोई कलाकार आगे पाँव बढ़ाते समय अनुभव करता है।

---

1. कुल्याते इकबाल, पृ. 325

यह तो सभी जानते हैं कि आज मनुष्य चांद सितारों तक पहुंच चुका है और साइंस की नयी खोज हमेशा बुद्धि का पक्ष लेती है जो जीवन को सूखा, फीका और बे-रंग समझता है । परन्तु इकबाल इसको जीवन के लिए हानिकारक समझते हैं । उनका यह विचार है कि मनुष्य जब तक प्रकृति की सभी वस्तुओं को रूचि के साथ न देखें उससे प्रेरणा न ग्रहण करें उसका जीवन बेकार है । इसलिए मानव जीवन तब ही साकार अथवा पूर्ण कहा जा सकता है जब उसमें बुद्धि और प्रेम दोनों का मिश्रण हो । इकबाल ने अपनी शायरी में जगह-जगह यह बात कही है कि मैंने बुद्धि को दिल के नूर से चमकाया है फिर बुद्धि को हृदय की कसौटी पर कसा तभी मेरे सामने जीवन की पूर्ण तस्वीर खड़ी हुयी अर्थात् उनके कथनानुसार बुद्धि और प्रेम का मिश्रित रूप ही जीवन के लिए नया संदेश है ।

o दिनकर जी एवं डा० इकबाल के यहां नारी संबंधी प्रेम :

अगर हम दिनकर जी और डा० इकबाल की नारी संबंधी भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहे तो यह कठिन कार्य है, दिनकर जी के यहां नारी भावना जहां-तहां बिखरी हुयी है । इनकी प्रथम कृति "रेणुका" के राजरानी नामक शीर्षक कविता में ही इनकी नारी भावना की झलक मिल जाती है और इसी भावना का विकसित रूप उर्वशी में हुआ है, कवि ने इस कविता द्वारा पुरूषों पर व्यंग्य करते हुए नारी के त्याग और सहिष्णुता की भावनाओं का चित्रण किया है । दिनकर जी ने नारी के हर रूप का चित्र खींचा है, सुहागन नारी का चित्र जो प्रसन्नता से झूमती चलती है

"बालिका से वधू में" दिनकर जी ने एक सुहागिन नारी का जो चित्र खींचा है, उसमें कितनी स्वाभाविकता है, दिनकर जी सुहागिन को आशिर्वाद देते हैं --

"छाया करती रहे सदा तुझको सुहाग की पोर
सुख दुख में ग्रीवा के नीचे हो प्रियतम की बांह
पल पल मंगल लग्न जिन्दगी के दिन दिन त्योहार
उर का प्रेम फूटकर हो आंचल में उजली धार ।"[1]

यहां नहीं पिता का घर छोड़ते समय वधू की जो स्थिति होती है उसका भी बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्र दिनकर जी ने खींचा है । एक ओर तो वधू की आंखों में आंसू होते हैं, परिवार और सब जनों से बिछुड़ने का, दूसरी तरफ वह प्रिय के मिलन के सुख से आत्म-विभोर हो जाती है ।

"पी चुपके आनन्द उदासी
भरे सजल चितवन में
आंसू में भीगी माया
चुपचाप खड़ी आंगन में

भीग रहा मीठी उमंग से
दिल का कोना-कोना ।"[2]

0 मानव सृष्टि के विकास में नारी का योगदान :

इस संसार के विकास और विस्तार में जितना योगदान नारी का है उतना पुरूष का नहीं है । दिनकर जी ने नारी के केवल प्रेमिका

1. रसवन्ती - दिनकर - पृ. 21
2. - वही - पृ. 17

या वधू रूप को ही महत्व नहीं दिया, उनके काव्य में नारी के अन्य रूप भी उभर कर सामने आये । इकबाल की तरह दिनकर जी भी यह मानते हैं कि सृष्टि के विकास में पुरूष की अपेक्षा नारी का योगदान अधिक है क्योंकि यह स्त्री ही है जो एक से एक वीर और सुंदर पुरूष को जन्म देती है । उनमें संस्कार भरती है, उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित करती है, नारी पुरूष का अमूल अस्तित्व है, वह स्वयं आँसू भी पाती है, तब भी पुरूष के वन को हरा भरा रखती है । दिनकर जी की दृष्टि में नारी त्याग और करूणा की मूर्ति है तो वह शक्ति का भी प्रतिक है । पुरूषों को वह द्वन्द्वों से मुक्त रखती है, कर्म की तरफ प्रेरित करती है ।

"छिटकी तुम विद्युत शिखा हुआ उजियाला
तुमने विकल सैनिकों में संजीवन डाला
हल्दी घाटी हुंकार उठी जब रानी
तुम धधक उठीं बनकर जौहर की ज्वाला
राजा की स्मृति बन ज्योति खिली जौहर में
अग्नि वह चमकी रानी की प्रिया समर में ।"[1]

डॉ० इक़बाल और दिनकर जी दोनों ही मानते हैं कि मानव सृष्टि के विकास में पुरूष से कहीं अधिक योगदान नारी का है । वह नारी ही है जो जगत के भविष्य को कोख में पालती है, उनमें संस्कार भरती है, वह एक से एक शक्तिशाली मानव को जन्म देती है --

"कितनी सह यातना पालती त्रिया भविष्य जगत का
कह सकता है कौन पूर्ण महिमा इस तपश्चरण की ।"[2]

- -

1. रेणुका - दिनकर - पृ. 43
2. उर्वशी - दिनकर - पृ. 91

कवि का कहना है नारी ही वह सेतु है जिसके कारण मानव श्रृष्टि का विकास निरन्तर जारी है --

"नारी ही वह महासेतु जिस पर अदृश्य से चलकर
नये मनुज नव प्राण दृश्य जग में आते रहते हैं ।"[1]

कवि का कहना है, मानव सृष्टि के विकास में पुरूष क्या करता है, वह तो नारी है जो कठिनाइयों को उठाकर मानव सृष्टि का विकास करती है --

"सच पूछो तो प्रजा सृष्टि में क्या है भाग पुरूष का
यह तो नारी ही है जो सब यज्ञ पूर्ण करती है
.. ..
शुभे सदा शिशु के स्वरूप ईश्वर ही आते हैं
महापुरूष की जननी ही प्रत्येक जननी होती है ।"[2]

o <u>माता का रूप :</u>

भारत की संस्कृति में नारी प्रेम का सबसे महान उदाहरण मातृ प्रेम है, अनादि काल से हमारे समाज और साहित्य दोनों में माता को गौरव का स्थान प्राप्त है । वास्तव में देखा जाय तो माँ रूप ग्रहण किये बगैर नारी अपूर्ण है । यद्यपि दिनकर जी को इस बात का ज्ञान है कि माता का रूप ग्रहण करने में नारी को असह्य वेदना एवं कष्ट उठाने पड़ते हैं, माँ बनना किसी तपस्या से कम नहीं, स्त्री को माँ बनने के पहले स्वयं को मिटाना पड़ता है, फिर भी कवि नारी के माता रूप के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं ।

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 91
2. - वही - पृ. 92

उर्वशी में कवि ने सुकन्या के माध्यम से गर्भवती नारी के बारे में महाऋषि च्यवन के विचारों को अत्यन्त मानवीय ढंग से व्यक्त किया है --

"और नारियों में भी शल्य गर्भिणी सत्वशीला को
देख मुझे सम्मान पूर्ण करूणा सी हो जाती है
कितनी विवश किन्तु कितनी लोकोत्तर वह लगती है ।"[1]

इसी तरह एक अन्य जगह रम्भा जब माँ के रूप को भर्त्सना करती है । क्योंकि इससे स्त्री सौन्दर्य नष्ट होता है तो मेनका उसे माँ के महत्व के बारे में बताती है ।

"पर रम्भे क्या कभी बात यह भी मन में आती है
माँ बनते ही त्रिया कहाँ से कहाँ पहुंच जाती है ?
गलती है हिमशिला, सत्य है गठन देह की खोकर
पर हो जाती है वह असीम कितनी पयस्विनी होकर
युवा जननी को देख शान्ति कैसी मन में जगती है
रूपमती भी सखी ! मुझे तो वही त्रिया लगती है
जो गोदी में लिये क्षीर मुख शिशु को सुला रही हो
अथवा खड़ी प्रसन्न पुत्र का पलना झुला रही हो ।"[2]

इतना ही नहीं दिनकर जी ने माँ के नैसर्गिक गुणों का भी चित्रण सुंदर ढंग से किया है ।

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 90
2. - वही - पृ. 12

"वह सब होगा सत्य, लाल मेरा यह कभी उगेगा
पिता सदृश ही अपर सूर्य बनकर अखंड भूतल में
और बनेगा पुण्यवान यह माता का गुण लेकर
उर अन्तर अनुरक्त प्रजा का शीतल हरियाली से ।"[1]

हर माता की तरह उर्वशी चाहती है, अपने पुत्र को संसार का हर सुख दे --

"यही सोचती थी त्रिलोक में जो भी शुभ सुंदर है
बरस जाय सब एक साथ मेरे अंचल में आकर
मैं समेट सब को रच दूं मुसकान एक पतली सी
और किसी भी भांति जोड़ दूं इसके अधरों पर ।"[2]

मां के प्रेम का अद्भुत दृश्य दिनकर जी सोचते हैं --

"और स्पर्श में यह तरंग सी क्या है सोम सुधा की
अंक लगाते ही आंखों की पलकें झुक जाती है ।"[3]

केवल इतना ही नहीं दिनकर जी को यह विश्वास है कि मां का रूप हर स्त्री में कहीं न कहीं छुपा होता है, जो समय पर उभरता है । औशनरी जब उर्वशी पुत्र आयु को देखती है तो उसके मन में ममता की भावना उमड़ पड़ती है ।

"कितना भव्य स्वरूप ! नयन नासिका, ललाट चिबुक में
महाराज की आकृतियों का पूरा बिम्ब पड़ा है ।"[4]

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 94
2. - वही - पृ. 93
3. - वही - पृ. 124
4. - वही - पृ. 121

औशनरी में ममता का अद्भुत रूप देखने को मिलता है --

"फला न कोई शस्य प्रकृति से जो भी अमृत मिला था ।
लहर मारता रहा टहनियों में सूनी डालो में
किन्तु प्राप्त कर तुझे आज बस यही भान होता है
शस्य भार से मेरी सब डालियां झुकी जाती हैं
हाय पुत्र ! मैं भी जीवन भर बहुत बहुत प्यासी थी ।
शीतल जल का पात्र अधर से पहले पहल लगा है ।"[1]

o नारी का पत्नी का रूप :

दिनकर जी केवल नारी के माता रूप के प्रति ही श्रद्धा व्यक्त नहीं करते अपितु इन्होंने नारी के पत्नी रूप को भी सराहना की है । पत्नी के रूप में नारी महान त्याग सेवा और कर्तव्य पालन की जीती जागती मूर्ति दिखायी देती है । वह पति सुख के लिये स्वयं को मिटाती है । वह पति के पथ का एक एक कांटा स्वयं चुनती है और उसके पथ को प्रकाशमय बनाती है चाहे फलस्वरूप उसे तिरस्कार और घृणा ही सहनी पड़े । पत्नी अपने आंसुओं से पुरूष के रास्तों को सींचती है --

"राजा के वन में कैसे कुसुम खिलेंगे ।
सींचो न धरा यदि तुम आंसुओं के जल से ।"[2]

नारी पति सुख के लिये सब कुछ न्योछावर कर देती है, उर्वशी में औशनरी के माध्यम से दिनकर जी ने ऐसी ही नारी का चित्र खींचा है --

- -

1. उर्वशी - दिनकर, पृ. 121
2. रेणुका - दिनकर - पृ. 42

"पुरूष चूमता है हमें अर्द्ध निद्रा में पाकर
पर हो जाता विमुख प्रेम के जग में हमें जगाकर,
और जगी रमणी प्राणों में लिये प्रेम का ज्वाला
पंथ जोहती हुयी पिरोती हुयी बैठ अश्रु कोमल ।"[1]

औशनरी पति के विरह से कितनी व्याकुल रहती है इसका सुंदर चित्र दिनकर जी ने खींचा है --

"कौन कहे यह प्रेम हृदय की बहुत बड़ी उलझन है
जो अलभ्य जो दूर उसी को अधिक चाहता मन है ।

यद्यपि पति, पत्नी को दुख देता है फिर भी पत्नी हमेशा उसके सुख की कामना करती है --

"दुख दर्द जतलाओ नहीं
मन की व्यथा गाओ नहीं
नारी । उठे जो हूक मन में जीभ पर लाओ नहीं
तब भी मरूत अनुकूल हो
मुझको मिले जो शूल हो
प्रियतम जहां भी हो बिछे सर्वत्र पथ में फूल हो ।"[2]

---

1. उर्वशी - दिनकर - पृ० 24
2. - वही - पृ० 29

o नारी का प्रेमिका रूप :

डॉ० इकबाल की नज़्मों में नारी के प्रेमिका रूप का चित्रण नहीं के बराबर मिलता है, लेकिन दिनकर जी के काव्य में नारी का प्रेमिका रूप बहुत ही उच्च रूप में हमारे सामने आया है। उर्वशी में स्थान-स्थान पर नारी के प्रेमिका रूप का भव्य चित्रण हुआ है, वैसे भी श्रृंगार न केवल हिन्दी साहित्य बल्कि दूसरी भाषाओं के भी साहित्य का प्रमुख विषय रहा है और श्रृंगार काव्य का प्रमुख पात्र नारी ही होता है। उर्वशी काव्य में दिनकर जी ने नारी प्रेम को अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है। उर्वशी की प्रणय भावना, प्रिय मिलन की बेचैनी, पुरूरवा के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और इस प्रेम के लिए सब कुछ न्योछावर कर देनेवाली भावनाओं का चित्रण करने में दिनकर जी ने लेखनी का कमाल दिखाया है।

उर्वशी पुरूरवा से प्रेम करती है। इस प्रेम में कहीं-कहीं वासना की गहरी झलक दिखाई पड़ती है, फिर भी यह प्रेम कितना स्वाभाविक, कितना मर्मभेदी है -- उर्वशी पुरूरवा की बाहों में सब कुछ भूलकर खो जाना चाहती है --

"तू मनुज नहीं, देवता कान्ति से मुझे मंत्र मोहित कर ले
फिर मनुज रूप धर उठा गाढ़ ले अपने आलिंगन में भर ले
मैं दो विटपों के बीच मग्न नन्हीं लतिका सीसी जाऊँ
छोटी तरंग सी टूट उरस्थल के महीध्र पर खो जाऊँ

रस मयी मेघमाला बन कर मैं तुझे घेर छा जाऊँगी
फूलों की छांह तले अपने अधरों की सुधा पिलाऊँगी ।"[1]

कहीं-कहीं उर्वशी का प्रेम चरम सीमा तक पहुँचता दिखायी देता है ।

"तुम पर्वत मैं लता तुम्हारी बलवल्लर बाहों में
विह्वल रस आकलित क्षोभ में मुर्च्छित हो जाऊँगी ।"[2]

उर्वशी में दिनकर जी ने नारी के रहस्यमय रूप को भी व्यक्त किया है और इस रहस्यमय रूप पर से आवरण हटाने के लिये पुरूरवा बेचैन दिखायी देता है --

"यह तुम्हारी कल्पना है प्यार कर लो
रूप सी नारी प्रकृति का चित्र है सबसे मनोहर
ओ गगन चारी ! यहाँ मधुमास छाया है
भूमि पर उतरो
कमल, कपूर, कुंकुम से, कुटज से
इस अतुल सौन्दर्य का श्रृंगार कर लो ।"[3]

प्रणय की उत्कंठा केवल उर्वशी तक ही सीमित नहीं है, पुरूरवा भी उर्वशी के प्रेम में विभोर दिखायी देता है --

"मैं तुम्हारे बाण का बींधा हुआ खग
वक्ष पर धर शीश मरना चाहता हूँ ।

- -

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 44
2. - वही - पृ. 41
3. - वही - पृ. 38

मैं तुम्हारे हाथ का लीला कमल हूं,
प्राण के सरसे उतरना चाहता हूं ।"[1]

अथवा

मैं तुम्हारे रक्त कण में समा
प्रार्थना के गीत गाना चाहता हूं ।"[2]

अनादिकाल से यह माना जाता रहा है कि नारी पुरुष कार्य में बाधक है और नारी माया है और उसके कारण मनुष्य परम-सत्ता को नहीं प्राप्त कर सकता लेकिन दिनकर जी, इस भावना से कहीं ऊपर उठते दिखाया देते हैं उनका मनुष्य तो नारी प्रेम के ही द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की ओर अग्रसित होता है --

"कवि प्रेमी एक ही तत्व है, तन की सुन्दरता से
दोनों मुग्ध, देह से, दोनों बहुत दूर जाते हैं,
उस अनन्त में जो अमूर्त धागों से बांध रहा है
सभी दृश्य सुषमाओं को अविगत अदृश्य सत्ता से ।"[3]

इस प्रकार दिनकर जी के काव्य में नारी प्रेमिका के रूप में अपने समस्त गुणों के साथ आया है।

0 इक़बाल के काव्य में नारी भावना :

मानव सृष्टि के विकास में नारी का योगदान :-

- -

1. उर्वशी - दिनकर - पृ. 41
2. - वही - पृ. 42
3. - वही - पृ. 43

इकबाल इस बात को हृदय से स्वीकार करते हैं कि इस संसार की सारी रंगीनियाँ, सारी चंचलता नारी के ही कारण है, उसकी मुट्ठी भर धूल सुरय्या अर्थात कृत्तिका से बढ़ कर है। क्योंकि प्रत्येक उत्तमता इसी सीप का मोती है। यद्यपि वह स्वयं अफलातून (प्लेटो) के कथोपकथन न लिख सकी परन्तु अफलातून की चिंगारी इसी शोले की ज्वाला से निकली है।

"वजूदे ज़न से है तस्वीरे कायनात में रंग
उसी के सोज़ से है ज़िन्दगी का सोज़े दुरूँ
शरफ़ में बढ़ के सुरय्या से मुश्ते खाक इसकी
कि हर शरफ़ है इसी दर्ज का दुरे मकनूं
मुकालेमाते फ़लातूँ न लिख सकी लेकिन
इसी के शोले से टूटा शरारे अफ़लातूँ।"[1]

कहने का तात्पर्य यह है कि मानव सृष्टि का विकास नारी के ही अस्तित्व से जुड़ा हुआ है, वह नारी ही है जो एक से सुंदर और सुशील पुत्र को जन्म देती है। इकबाल मानते हैं कि नारी के अस्तित्व का महान लक्ष्य मानव सृष्टि का विकास और मानव सृजन है --

"आतिशीं लज़्ज़ते तक़्लीफ़ से है इसका वजूद।"[2]

इकबाल की दृष्टि में सुकरात व अफलातून बन जाना नारी को इतना शोभा नहीं देता जितना की सुकरात और अफलातून को जन्म देना और उनको इस योग्य बनाना।

- -

1. कुलयाते इकबाल - पृ. 550
2. - वही - - पृ. 569

O नारी का माता का रूप :

इकबाल के काव्य में कहीं दिनकर जी की तरह, माता का रूप तो नहीं मिलता, परन्तु यह अपनी माता को बहुत महत्व देते हैं जब इनकी माताजी की मृत्यु हुयी तब यह 37 बरस के थे, परन्तु माँ ने इन्हें इतना प्यार दिया था कि उनकी मृत्यु को इन्होंने उस बालक की तरह अनुभव किया था जो अभी अभी युवावस्था को पहुँचा हो। वास्तव में माँ का ही आकर्षण इन्हें छुट्टियों में सियालकोट से लाहौर ले जाता था, जब यह घर जाते तो इनकी माता जी से यह घंटों बातें करते। माँ के साथ इनकी बचपन की बहुत सारी यादें जुड़ी हैं। लिखते हैं -- "जब मैं सियालकोट जाता था वालिदा प्रसन्नता के साथ कहती थी -- मेरा बाला आ गया" तो मैं उनके सामने अपने आपको एक नन्हा सा बालक समझने लगता।"[1]

इकबाल की माताजी उनकी दृष्टि में एक आदर्श माँ थीं और उनके काव्य में एक आदर्श माँ का रूप उनकी माता जी ही है। इकबाल स्वीकार करते हैं कि किसी जाति की परम्पराओं के पालन का सबसे बड़ा माध्यम उस जाति की मातायें है, जाति को जीवित रखने का कर्तव्य वास्तव में माताओं का है और यह संसार के सब कर्तव्यों में सबसे महान कर्तव्य है।

"हाफ़िज़े रमज़े अख़ूवत मादराँ
क़ूवते क़ुरानो मिल्लत मादराँ।"[2]

अर्थात् भाई-चारे के रहस्य को मातायें ही जानती हैं एवं कुरान और मिल्लत की शक्ति भी माताएं ही हैं, नारी का माता का रूप सब रूपों से उत्तम और पवित्र है।

---

1. जिन्दा रूप, भाग 2, जावेद इकबाल, पृ. 205
2. "इकबाल मातरी की नजर में" विकार अज़ीम, पृ. 40

अपनी नज़्म ॑ वालिदा-ए-मरहूमा की याद में ॑ में इक़बाल ने जीवन और मृत्यु की समस्या पर प्रकाश डाला है । साथ ही इन्होंने अपनी माता जी के लिये हार्दिक प्रेम भी व्यक्त किया है :-

"याद से तेरी दिले दर्द आशना मामूर है,
जैसे काबे में दुआओं से फ़िज़ा मामूर है,
मुख़्तलिफ़ हर मन्ज़िले हस्ती की रस्मो राह है,
आख़िरत भी ज़िन्दगी की एक जौलां गाह है,
ज़िन्दगानी थी तेरी महताब से ताबिन्दातर
ख़ूबतर था सुबह के तारे से भी तेरा सफ़र
आसमां तेरी लहद पर शबनम अफ़शानी करे
सब्ज़ये नौरिस्ता इस घर की निगहबानी करे ।"[1]

अर्थात् तेरा जीवन तो चाँदनी से भी अधिक उज्ज्वल था । तेरी यात्रा सुबह के तारे से भी सुन्दर थी । आकाश तेरी समाधी पर ओस की बूंद छिड़के और हरी भरी घास इसकी रखवाली करे ।

उर्वशी में रम्भा को मेनका माँ का महत्व समझाती है । जो माँ बनना सुंदरता में बाधा समझती है । लेकिन इक़बाल के काव्य में स्वयं इक़बाल कहते हैं कि योरोपीय सभ्यता के रंग में पड़ कर जो औरतें माँ नहीं बनना चाहती, वह गलत रास्ते पर चल रही हैं । माँ बनना गर्व की बात है --

"तहज़ीबे फ़िरंगी है अगर मर्गे उमूमत
है हज़रते इन्सां के लिये इसका समर मौत ।"[2]

---

1. कुल्लियाते इक़बाल - पृ॰ 236
2. - वही - पृ॰ 558

0 नारी का प्रेमिका का रूप :-

उर्दू शायरी की पुरानी विधा गजल है । "गजल" का अर्थ होता है "औरत से बात करना" और इकबाल इस तरह की शायरी को पसन्द नहीं करते थे, वह प्रकृति के तौर पर प्रेम के कवि न थे और वह शायरी "जुज वेस्प अज पैगम्बरी" (अर्थात् शायरी को पैगम्बरी का कार्य करना चाहिये) पर विश्वास करते थे इसलिए नारी प्रेम को उनके काव्य में सही स्थान न मिल सका, उनको तो अपने समकालीन कवियों से शिकायत थी कि वह औरत से आगे बढ़े ही नहीं, वह उनकी आलोचना इस प्रकार करते हैं ।

"हिन्द के शायरो सूरतगरो अफ़सानानवीस
आह बेचारों के आसाब पे औरत है सवार,

इतना सब होते हुए भी डॉ0 इकबाल के कलाम में नारी प्रेम की भावना कहीं-कहीं मिल जाती है, लेकिन अगर वास्तविकता में नारी प्रेम की खोज डॉ0 इकबाल के कलाम में करना है तो उनके निजी जीवन के कुछ पृष्ठों में झाँकना पड़ेगा ।

डॉ0 इकबाल की पहली विवाह 19 वर्ष की आयु में करीम बी से हुआ था । दोनों परिवारों में असमानता थी और साथ ही इकबाल के ससुर अतामुहम्मद धनी थे । इकबाल इस विवाह से सहमत न थे । पति-पत्नी के स्वभाव में भी अन्तर था । योरोप से वापसी के बाद दोनों में अलगाव हो गया । कुछ उस समय इकबाल के घर का वातावरण भी ऐसा था जिसमें अलगाव आश्चर्य की बात नहीं । यह वातावरण किस प्रकार का था इसका अनुमान अब्दुल मजीद सालिक के शब्दों से हो जाता है ।

"एक दिन मौलाना गिरामी[1] लाहौर पधारे तो मुझे कार्यालय से उठाकर इकबाल के यहां ले गये। अलीबख्श से पता चला अल्लामा बीमार हैं। धुस्सा लेकर लेटे हुए थे। दाढ़ी बढ़ी हुयी, चेहरा उतरा हुआ, आंखे धंसी हुयी थी। देखते ही गिरामी की आंखों में पानी आ गया। पूछा खैरियत है, मालूम हुआ अमीर[2] की मां ने मुलाकात पर रोक लगा दी है। पिछले तीन दिनों से मुलाकात न हो सकी। गिरामी खिलखिलाकर हंस दिये। पंजाबी में कहा -- "ओ छड्ड यार तू भी गजब करता ऐ वह तैनों अपना हट्टी किस तरह देवे" अर्थात् तुम भी गजब करते हो यार वह तुम्हें अपना हाट कैसे दे दे। -3

अल्लामा अत्यधिक दुःखी थे, गिरामी ने अली बख्श से कहा गाड़ी तैयार करो। मुझे साथ लिया और उस बाजार की तरफ रवाना हो गये। अमीर के मकान पर पहुंचे। दस्तक दी अमीर की मां ने गिरामी को देखा तो प्रसन्न हृदय से स्वागत किया -- कहा -- "आप और यहाँ सुस्वागतम, गिरामी ने अमीर की मां से शिकायत की तुमने हमारे शायर को समाप्त कर देने की ठान ली है। तो उसने कहा -- "मौलाना शायरों के पास क्या है, चार रदीफ़, दो क़ाफ़िये। क्या मैं अपनी लड़की हाथों देकर भूखों मर जाऊं? आप का शायर तो हमारे यहां सेंध लगाने आता है। मेरा लड़का चला गया तो कौन जिम्मेदार होगा। गिरामी ने उनकी दाढ़ी का वास्ता दिया और दो घंटे की व्यक्तिगत जमानत देकर अमीर को साथ ले आये।

---

1. गिरामी - शायर और इक़बाल के दोस्त
2. अमीर बेगम - लाहौर की प्रसिद्ध गायिका- उर्दू-फारसी का ज्ञान रखनेवाली। इसी कारण इक़बाल उनसे प्रभावित थे।
3. जिन्दारूद भाग-दो, जावेद इक़बाल, पृ. 176

अल्लामा के पास पहुंचे तो गिरामी ने झिंझोड़ते हुए कहा -- "उठोजी आ गई अमार" "सचमुच !" अल्लामा ने आश्चर्य से पूछा अमार सामने खड़ी थी यकायक उनका मुंह जगमगा उठा, ।"[1]

इसी समय के आस पास 1944 में अपनी एक नज़म -- "सरगुज़िश्ते आदम के" दिवान से निकाल दिये गये एक शेर में इकबाल ने अपने इस हार्दिक संबंध को इस प्रकार व्यक्त किया है --

"अजीब शै है सनम खान्ये जमीर इक़बाल
मैं बुत परस्त हूं रख दी कहीं जबीं मैंने ।"

इसी समय की एक और नज़म "जाहिद और रिन्दाक" से भी इकबाल के इस समय की प्रतिकूलता पर प्रकाश पड़ता है । जाहिद इकबाल के बारे में कहते हैं --

"पाबन्दीये एहकामे शरीयत में है कैसा
गो शेर में है रश्के कलीमे हमः दानी
समझा है कि है राग इबादात में दाख़िल
मक़सूद है मज़हब की मगर ख़ाक उड़ानी
कुछ आर उसे हुस्न फ़रोशों से नहीं है
आदत यह हमारे शोअरा की है पुरानी
गाना जो है शब को तो सहर को है तिलावत
इस रमज़ के अब तक न खुले हम पे मआनी
लेकिन यह सुना अपने मुरीदों से है मैंने
बे दाग़ है, मानिन्दे सहर उसकी जवानी
मजमूअये अज़दाद, है इक़बाल नहीं है

1,2. "उस बाजार में" शोरिश काश्मीरी - प्राप्त शायर बंबई, इकबाल, नवंबर, 1988, पृ. 540-41, 542

दिल दफ़्तरे हिकमत है, तबीयत ख़फ़ाक़ानी
हिन्दी से भी आगाह शरीयत से भी वाक़िफ़
पूछो जो तसव्वुफ़ की तो मंसूर का सानी ।[1]

नज़्म के अन्त में इक़बाल कहते हैं --

"मैं ख़ुद भी नहीं अपनी हक़ीक़त का शनासा
गहरा है मेरे बहरे ख़्यालात का पानी
इक़बाल भी इक़बाल से आगाह नहीं है
कुछ इसमें तमस्ख़ुर नहीं वल्लाह नहीं है ।[1]

इस समय के कुछ ऐसे कलाम है जो शायद इक़बाल की दृष्टि में निकाल देने योग्य थे । मगर किसी तरह बच गये । उनका उदाहरण देखिए :--

"न जाते हमें इसमें तकरार क्या था
मगर वादा करते हुए आर क्या थी
तुम्हारे पयामी ने सब राज़ खोला
ख़ता इसमें बन्दे की सरकार क्या थी ?
भरी बज़्म में अपने आशिक़ को ताड़ा
तेरी आँख मस्ती में होशियार क्या थी
ताम्मुल तो था उनको आने में क़ासिद
मगर यह बता तर्ज़े इंकार क्या थी ।"

यह उस पतनशील समाज का परम्परागत काव्य है जिसके प्रतिनिधि दाग़ से जिसमें गजल अपने प्रारम्भिक चरण से आगे न बढ़ सकी है । और जहाँ वह नारी से बातचीत और वह भी काफी ओछी बात-चीत के लिये प्रयोग में आती थी और बस ।

---

1. कुल्याते इक़बाल - पृ० 59-60
. - वही - पृ० 98-99

स्पष्ट है कि इस समय से ही इकबाल इस परम्परागत शायरी को छोड़ रहे थे। उनको अनुमान था कि नारी प्रेम भी संकीर्ण विचारों के मनुष्य के बस का कार्य नहीं।

"मुहब्बत के लिये दिल ढूंढ कोई टूटनेवाला
यह वह मय है, जिसे रखते हैं नाज़ुक आबगीनों में।"[1]

योरोप में निवास के समय इकबाल के जीवन में कम से कम एक ऐसा स्त्री-चरित्र प्रवेश करता है जिसने अपने चरण चिह्न इकबाल के काव्य और चिट्ठियों में छोड़ा है। यह थीं, अतिया फैजी। अतिया फैजी उच्च शिक्षा प्राप्त और उत्तम स्वभाव की महिला थी। जिनका संबंध बंबई के पास की एक रियासत जंजीरा के शासक परिवार से था। इकबाल से अतिया फैजी की भेंट 1907 में हुयी। कैम्ब्रिज और लन्दन में कभी किसी प्रोफेसर के घर और कभी स्वयं अतिया फैजी के यहाँ महफिल जमती और इकबाल इन महफिलों की जान होते। इन महफिलों का विस्तार से ब्योरा अतिया फैजी की प्रकाशित डायरी में मिलता है। इकबाल ने विश्व साहित्य के विषय पर लिखा हुआ अपना निबन्ध भी अतिया फैजी को आरम्भ से अन्त तक सुनाया, अतिया फैजी अपनी डायरी में लिखती है :--

"जब मैंने एक दो रिमार्क किये तो कहा कि --
"हर व्यक्ति एक वस्तु को अपने विचार के अनुसार देखता है मगर मैं विश्व के इतिहास को इस प्रकार देखता हूं। माशा अल्लाह क्या स्मरणशक्ति है इकबाल साहब की मैं़िर है उन्होंने इतिहास नये दृष्टिकोण से लिखा।"[2]

---

1. कुल्लयाते इक़बाल, पृ. 104
2. शायर बंबई - 1988, पृ. 535

इकबाल 1907 के ग्रीष्म में हाईडिलबर्ग (जर्मनी चले गये (वहाँ वह जर्मन सीखना चाहते थे ताकि म्यूनिख युनिवर्सिटी में अपने शोध कार्य के लिये मौखिक परीक्षा जर्मन भाषा में दे सके । यहाँ इनका गुरु एक अल्प आयु महिला वेगेनास्त था । यहाँ इकबाल के निमंत्रण पर अतिया फैज़ी 20 अगस्त 1907 को आयी और 4 सितम्बर तक रही । लेक्चरों से फुर्सत मिलने के बाद यह लोग कॉफी हाउस में बैठते कभी जर्मन फलसफे पर बहस होती, यह लोग पहाड़ों पर चढ़ते, फूल चुनते इस तरह यह दो सप्ताह हाइडल बर्ग के आसपास पहाड़ों की सैर करते रहे, बाग-बगीचों से फूल तोड़ते, लोक-नाच में भाग लेते, खुले रेस्तोरां में खाना खाते और अस्त्र-शस्त्र के संग्रहालयों में घूमते गुजर गये । जब 4 सितम्बर को अतिया फैज़ी के विदा होने का समय आया तो सब लोग एक पंक्ति में खड़े हो गये और बैंड बाजे के साथ इकबाल के नेतृत्व में जर्मन भाषा में लिखा हुआ उनका गीत कोरस में साथ गाया गया :-

"अन्ततः हिन्दुस्तान के अत्यन्त चमकदार तारे को
खुदा हाफ़िज़ कहने का समय आ ही गया ।
वह तारा जो यहां चमकता था और नृत्यमय रहता था
और दूर, पास की सभाओं को उज्ज्वल करता था
जो शान्ति और शक्ति के झंडे की तरह रक्षा करते हुए
क्रोधित स्वभाव वालों को शान्त करता था
हमारी उत्तम दुआयें और आशिर्वाद अपने साथ लेती जा
हमारी शुभ कामनायें तेरे साथ रहेंगी
नदियों, सागरों और झीलों को पार करते समय ।"[1]

---

1. शायर बंबई - इकबाल - नवंबर, 1988, पृ. 535

इकबाल के विवाहित जीवन में योरोप से वापसी के बाद जो संकट आया और जो पत्नी के अलगाव पर समाप्त हुआ उससे इकबाल का जो मानसिक स्थिति हुआ उसका पता उनकी अतिया फैज़ी के नाम चिट्ठी 9 अप्रैल, 1909 से पता चलता है। "मेरा जीवन अजीरन है -- यह लोग मेरी पत्नी को ज़बरदस्ती मुझ पर मढ़ देना चाहते हैं। मेरी इच्छा है अति शीघ्र इस देश से भाग जाऊं ..... एक मनुष्य होने के नाते मुझे प्रसन्नता प्राप्ति का अधिकार है और समाज यह अधिकार मुझे देने से इन्कार कर रहा है। केवल एक ही उपाय है। मैं सदैव के लिये मादरापान की शरण ले लूं। पुस्तकों के यह निष्प्राण और बन्जर पृष्ठ मुझे प्रसन्नता नहीं दे सकते और मेरी आत्मा के अन्दर इतनी आग भरा हुआ है कि मैं इन पुस्तकों को, समाजी परम्पराओं को और संस्कारों को जलाकर राख बना सकता हूं। ..... मैं सहानुभूति नहीं चाहता। केवल आत्मा का बोझ उतारना चाहता हूं।'[1]

इस समय की विनिष्ट होने से बच जानेवाली नज़मों में "विसाल" "हुस्न और इश्क" "फूल का तोहफा' अता होने पर" है इन पर यदि ध्यान दिया जाय तो इस वास्तविकता से इंकार नहीं किया जा सकता कि उस समय की बेचैनी वास्तव में एक असफल प्रेम या प्रेम के प्यासे हृदय की बेचैनी है और इस बात की पुष्टि उनकी अतिया फैज़ी के नाम चिट्ठियां भी दबी ज़बान में करती हैं। जिनमें से एक का कुछ भाग ऊपर दिया गया है।

इन चन्द नज़मों और अतिया फैज़ी के नाम चिट्ठियों से कुछ लोग इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि शायद इकबाल को एक नारी से प्रेम हुआ और वह अतिया फैज़ी थी और शायद इकबाल उन्हें अपना जीवन साथी बनाना चाहते रहे होंगे। लेकिन उनके परिवार के साधारण से रहन-सहन में एक ऐसी महिला का गुज़र उन्हें असंभव लगा होगा। इसके अतिरिक्त

---

1. ज़िन्दा रूद - जावेद इक़बाल, भाग 2, पृ. 31,32

उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी असंतोषजनक थी और निश्चित रूप से उन्होंने संघर्ष का जीवन अभी आरंभ किया था । इन सबके अतिरिक्त वह अतिया फैजी जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त महिला की बौद्धिक क्षमता और उन्नति का आदर कर सकते थे, परन्तु ऐसे स्वभाव की महिला जिस प्रकार की स्वतंत्रता को अपना अधिकार समझती है उसके भुगतान का सामर्थ्य इकबाल में नहीं था । इसके फलस्वरूप वह प्रेम असफल रहा ।

इसी समय की एक नज़्म "नवाये ग़म" इस योग्य है कि इसकी कुछ पंक्तियों पर दृष्टि डाली जाय :--

"ज़िन्दगानी है मेरी मिस्ले रबाबे ख़ामोश
जिसकी हर रंग के नग़मों से है लबरेज़ आग़ोश ।
बरबते कौनो मकां जिसकी ख़मोशी पे निसार
जिसके हर तार में हैं सैकड़ों नग़मों के मज़ार ।
आह उम्मीद मुहब्बत की बर आयी न कभी
चोट मिज़राब की इस साज़ ने खायी न कभी ।
मगर आती है नसीमे चमने तूर कभी
सिम्ते गर्दूं से हवाये नफ़्से हूर कभी ।
छेड़ आहिस्ता से देती है मेरा तारे हयात
जिससे होती है रिहा रूहे गिरफ्तारे हयात ।"
नग़मये यास की धीमी सी सदा उठती है
अश्क के क़ाफ़ले को बाँगेदरा उठती है ।
जिस तरह रफ़अते शबनम है मज़ाक़े रम से
मेरी फ़ितरत की बुलन्दी है नवाये ग़म से ।"[1]

---

1. कुलयाते इकबाल, पृ० 124-125

इकबाल के जीवन तन्तु (तारे ख्यात) को अतिया फ़ैज़ी ने छेड़ा या नहीं इसका उत्तर निश्चित रूप से तो कोई नहीं दे सकता परन्तु इसमें संदेह नहीं कि 1911 में इकबाल अपना पहला उर्दू काव्य प्रकाशित करना और उसे अतिया फैजी के नाम समर्पित करना चाहते थे। पुस्तक के समर्पण की भाषा काव्यमय होनी थी जिसकी दो पंक्तियां निम्नलिखित नजम की (पंक्ति तीन और चार) है। अतिया फैजी को इकबाल ने लम्बा चिट्ठा 1911 में लिखी पूरी नज़्म "रोजगारे फकीर" भाग-दो 1964 में सम्मिलित है --

"नग़मये रंगीं समझ या नालये पैहम समझ
इस नवा को या नवाये बरबते आलम समझ
पेशकश है दर्दमन्दों की यही दो चार अश्क
ख्वाह मोती ख्वाह सब्ज़े इश्क़ की शबनम समझ
ख़न्दा है बहरे तिलिस्मे गुंचा तमहीदे शिकस्त
तू तबस्सुम से मेरी कलियों को नामहरम समझ
दर्द के पानी से है सरसब्ज़िये किश्ते सुख़न
फ़ितरते शायर के आइने में जौहर ग़म समझ
दिल को लेकिन मानेये ख़िदमत नहीं अफ़सुर्दगी
इस नमीं को ता अबद ज़िन्दानिये ख़ातम समझ
है तेरे दम से शरर आबाद ख़ाकिस्तर मेरी
वास्ते तेरे तबीयत है चमन परवर मेरी
ज़ख़्मये उल्फ़त से है तारे रगे जां नग़मा ख़ेज़
यानी तेरे सेहर से पैदा हुआ अफ़्सूं मेरा
है तेरी मिन्नत तलब मेरी बहारे शायरी
ताज़ातर है मेरे दामन में गुले मज़्मूं मेरा

इश्क़ लेकिन दर्दे महरूमी से पाता है कमाल
हिज्रे लैला से हुआ आवारा तर मजनूँ मेरा
है तेरे नूरे खुफ़ी से महफ़िल अफ़रोज़ी मेरी
तेरे क़दमों पर तसद्दुक़ है जिगर साज़ी मेरी ।"[1]

इस तरह देखा जाय तो दोनों कवियों के काव्य में प्रेम संबंधी भावना किसी न किसी रूप में मिल जाता है । आध्यात्मिक प्रेम दिनकरजी और डॉ० इक़बाल दोनों के ही काव्य में स्थान-स्थान पर मिल जाता है । लेकिन दिनकर जी इस संसार से संतुष्ट दिखायी देते हैं लेकिन इक़बाल खुदा से शिकायत करते करते दिखायी देते हैं -- नारी संबंधी प्रेम दिनकर जी के काव्य में बहुत अधिक और बहुत मनोवैज्ञानिक और स्वाभाविक ढंग से हुआ है जबकि डॉ० इक़बाल की शायरी में नारी संबंधी प्रेम बहुत ढूंढने से शायद कहीं-कहीं मिल जाय ।

- -

1• शायर , बंबई - इक़बाल नम्बर, 1988, पृ• 533

उ प सं हा र

दिनकर जी और डॉ. इकबाल दोनों के विचारों को तुलना करते हुये हम देखते हैं कि दोनों ही कवि अपने युग के सृष्टा हैं, हमारे समाज के पथ प्रदर्शक है। दोनों ही कवियों का संदेश कर्म का संदेश है दोनों कर्म के राह पर निरन्तर अग्रसर रहने के नाम को जीवन कहते हैं और कर्म-हीन जीवन को अभिशाप बताते हैं। दोनों ही मानते हैं "सितारे से आगे जहाँ और भी है" और इस जहाँ को पाने के लिये संघर्ष ही जीवन का नाम है। दोनों कवियों के काव्य में जगह जगह इस तरह के विचार पाये जाते हैं। तुलना करते समय इसकी मुख्या समानता जो दोनों कवियों के यहाँ है वह है मानवतावादी जीवन दर्शन, दोनों कवियों ने परस्पर मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करने का संदेश दिया है। हाँ इतना अवश्य है कि राष्ट्रीय भावना सम्बन्धी विचारों में दोनों कवियों को तुलना करते समय यह देखा जा सकता है कि शायद, राष्ट्रीयभावना की परिभाषा दोनों कवियों के काव्य में कहीं कहीं अलग हो जाता है। दिनकर जी स्वतंत्रता की प्रबल आकंक्षा के लिये सब कुछ बलिदान कर देने को तैयार है। उन्होंने भारतवासियों के दिलों में राष्ट्रीय भावना पैदा करने के लिये यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है, जबकि इकबाल की राष्ट्रीय भावना मातृभूमि के गुण गान के साथ कहीं न कहीं कर्म से जुड़ जाती है क्योंकि उनके विचार में कर्म के ही द्वारा भाग्य को उलटा जा सकता है। अन्त में मैं यही कहना चाहिए। आज आवश्यकता है कि हम भारत वासियों के दिलों में इस तरह के विचार पैदा करें जैसा इन कवियों ने किया है।

शक्ति भी शान्ति भी भक्तों के गीतमें हैं
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है।

ग्रन्थ सुची

हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ सुची (दिनकरजी के ग्रन्थों सहित)

1.	आत्मा की आँखें	-रामधारीसिंह दिनकर	-नेशनल पब्लीशिंग हउस दिल्ली 1985
2.	आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्या प्रवृत्तियाँ	-ए. नगेन्द्र	-गौतम बुक डिपो दिल्ली
3.	इतिहास के आँसू	-रामधारीसिंह दिनकर	-उदयांचल मार्ग पटना 1976
4.	उर्वशी	-रामधारीसिंह दिनकर	- [illegible] 1975
5.	उर्वशी विचार और विश्लेषण	-ए. वचन कुमार	-बिहार ग्रंथ पटना
6.	उर्वशी उपलब्धी और सीमा	-बिजेन्द्रनारायणसिंह	-अशोक राजपद पटना
7.	कुरुक्षेत्र	-रामधारीसिंह दिनकर	-उदयांचल मार्ग पटना 1967
8.	काव्य की भूमिका	-रामधारीसिंह दिनकर	-उदयांचल मार्ग पटना
9.	कोयल और कवित्र	-रामधारीसिंह दिनकर	-नेशनल पबलिशिंग हउस दिल्ली
10.	कुरुक्षेत्र एक अध्ययन	-नेमीचन्द्र जैन	-
11.	चकुपाल	-रामधारीसिंह दिनकर	-उदयांचल मार्ग पटना
12.	दिनकर के काव्य में परम्परा और आधुनिकता	-नीरव जयसिंह	-
13.	दिनकर के काव्य	-लालधर त्रिपाठी	-आनन्द पुस्तक भवन वराणासी
14.	दिनकर के काव्य में मानववादी प्रेमचेतना	-णिर्धायी मधुलता	

15. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना -गोस्वामी रविकान्त -

16. दिनकर वैचारिक क्रान्ति के परिवेश में -प्रो. अदेश्वर राव -

17. दिनकर व्यक्तित्व और कवित्व -जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी -

18. दिनकर के साहित्य में व्यक्तित्व का अभिव्यक्ति -रमारानी सिंह -

19. दिनकर सृष्टि और दृष्टि -छोटेलाल दीक्षित -

20. दिनकर शिव बालक राय -युनिवर्सल प्रेस प्रयाग

21. दिनकर के काव्य में जीवन दर्शन -डॉ. मधुबालाशर्मा -सामयिक प्रकाशन दिल्ली

22. दिनकर पुनर्मूल्यांकन-बिजेन्द्र नारायणसिंह -परिमल प्रकाशन इलाहाबाद

23. दिनकर -सवित्रा सिंहा -राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली

24. दिनकर एक सहज पुरुष -शियसागर मिश्र

25. दिनकर का रचना संसार -छोटेलाल दीक्षित -अभिलाषा प्रकाशन कानपुर

26. दिनकर के वीर काव्य -धर्मपाल सिंह

27. दिनकर काव्य कला और दर्शन -प्रतिमाजैन ग्रन्थम प्रकाशन-राम बाग कानपुर

28. दिनकर की उर्वशी

29. दिनकर की काव्य भाषा -प्रवीन्द्र विनारा -पुस्तक संस्थान कानपुर

30. दिनकर की साहित्यिक दृष्टि -सुशीला मिश्रा -अनुपम प्रकाशन पटना 1983

31. दिनकर की डायरी -रामधारीसिंह दिनकर -नेशनल पब्लीशिंग हाउस दिल्ली

32. दिनकर की सूक्तियाँ -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

33. दिनकर के काव्य में क्रान्तिमयी चेतना - निशा भार्गव

34. प्रान्त गीत -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

35. दिनकर वैचारिक क्रान्ति के परिवेश में -आदेश्वर राय

36. धूप और धुआं - दिनकर

37. नीलकुसुम -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

38. प्राणभंत्र तथा कविताएँ -रामधारीसिंह दिनकर -दिल्ली

39. भारत की सांस्कृतिक कहानी - दिनकर चक्रधार प्रकाशन, पटना

40. भारतीय एकता -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

41. मृत्यू तिलक -रामधारी सिंह दिनकर -नेशनल पब्लीशिंग हाउस दिल्ली

42. युगचारण कवि दिनकर -पन्ना लाल

43. युगधारण कवि दिनकर -सावित्री सिन्हा नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

44. रश्मिरथी -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना 1985

45. रश्मि लोक -रामधारीसिंह दिनकर -हिन्दी बुक सेन्टर दिल्ली।

46. रेणुका -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग दिल्ली

47. राष्ट्र कवि दिनकर और उनकी काव्य कला -शेखर जैन

48. राष्ट्र कवि दिनकर और उनकी साधना -प्रतापचन्द जैसवाल

49. रसवन्ती -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

50. विचार और विश्लेषण -नगेन्द्र -नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली

51. वट पीपल -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

52. वेणुवन -रामधारीसिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

53. शुद्ध कविता का खोज -रामधारी सिंह दिनकर -नेशलन पब्लीशिंग हाउस दिल्ली

54. संस्कृत के चार अध्याय -रामधारी सिंह दिनकर -नेशनल पब्लीशिंग हाउस दिल्ली

55. संचयिता -रामधारी सिंह दिनकर -उदयांचल मार्ब पटना

56. सामधेनु -रामधारी सिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

57. हारे को हरि राम -रामधारी सिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

58. हुंकार -रामधारी सिंह दिनकर -उदयांचल मार्ग पटना

59. हिन्दी साहित्य का इतिहास -डॉ. नगेन्द्र -

60. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास - नवम भाग ना. प्र. सभा, काशी

उर्दू संदर्भ ग्रन्थ सूचि (डॉ. इकबाल की पुस्तकों सहित)

61. अदबी तहरीरें -डॉ. सय्यद मोहिउद्दीन कादरी ज़ोर -अदबीयात उर्दू हैदराबाद

62. अनवारे इकबाल -बशीर अहमद -इकबाल एकादमी लाहौर

63. इकबाल और कौमी यकजहती -सय्यद मुजफ्फर हुसैनबरनी -हरयाना साहित्य एकादमी चंडीगढ़ 1984

64. इकबाल और मशरिक -सं. आलअहमद सरूर -इकबाल इंस्टट्यूट कश्मीर युनिवर्सिटी

65. इकबाल आइने खाना में -सं. आफाक अहमद -मध्यप्रदेश उर्दू एकादमी भोपाल 1979

66. इकबाल और उसका अहद -जगननाथ आजाद -इलाहाबाद 1968

67. इकबाल -अतिय बेगम अनुवाद जियउद्दीन अहमद बरनी -इकबाल एकादमी करोची

68. इकबाल शनासी -अली सरदार जाफरी -मकतबे जामदा नई दिल्ली 1978

69. इकबाल की तलाश -जोर अन्सारी -मकतबे जामदा नई दिल्ली 1978

70. इकबाल मासरीन की नजर में -विकार अज़ीम -एजूकेशन पब्लीशिंग हाउस 1963

71. इकबाल अहवालो अफकार -इबादत बरेलवी -मकतबेनयीम व 1981

72. इकबाल जादू गरे हिन्दी नजात -अतीक सिद्दीक -मकतबे जामया

73. इकबाल नयी तशकील -अजीज अहमद

74. इबतेदायी कलाम इकबाल -ज्ञानचन्द्र जैन -उर्दू रीसर्च सेन्टर आबिद हैदराबाद

75. इकबाल की फारसी शायरी का तनकीदा जायजा -डॉ. अबुलशुकुटअहमद -इकबाल एकादमी लाहौर

76. इकबाल कशिश और गुरेज-आलम अन्दमीरी -इकबाल एकादमी हैदराबाद

77. इकबाल के नसरी अफ्कार-अब्दुल गफ्फार -अंजुमन तरक्की उर्दू

78. इकबाल और इंसान -सय्यद अशफाक हुसैन

79. इकबाल सक तजयाती मुतालया -साहिल अहमद

80. इकबाल का नफसियाती मुताअला -सलिक अख्तर -मकतबे आलिया लाहौर

81. इकबाल के कलासिकी नकूश -अनवर साजिद -इकबाल एकादमी लाहौर

82. इकबाल का सियासी कारनामा -मुहम्मद अहमद खाँ

83. इकबाल की शख्सियत और शायरी -प्रो. हमीद अहमद खाँ

84. इकबाल का शओरे फन्न -कमर रईस -उर्दू डिपार्टमेन्ट देहली युनिवर्सिटी

85. उर्दूशायरी में कौमी यकजहती की बुनियाद -डॉ. राय अतर राज-मकतबया जायजा नई दिल्ली

86. उर्दूशायरी में कोमी यकजहती के अनासिर -सय्यद मुजाफिर हुसैन -उत्तर प्रदेश

87. कुलयाते इकबाल उर्दू - -एजूकेशनल बुक हाउस अलीगढ़ 1975

88. खद्दे खाले इकबाल - मो. मोईन जुबारी -गुलशन इकबाल कराउडी.

89. जिन्दारूद पहलाभाग -जावेद इकबाल -शेख गुलाम अली रोड। 977

90. जिन्दारूद दूसराभाग -जावेद इकबाल -शेख गुलाम अली रोड। 981

91. जिन्दारूद तीसराभाग -जावेद इकबाल -शेख गुलाम अली रोड। 98..

92. जावेदनामा मैशुरा	-प्रो. युसुफ सलाम चिश्ती	-एतकाद पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 1978
93. नक्शे इकबाल	-असलूब अहमद अन्सारी	-मक्त बे जायदा नई दिल्ली
94. नकदे इकबाल	-मैकश अकबरीबादी	-मकतब जामया नई दिल्ली 1979
95. फिक्रे इकबाल	-खलीफा अब्दुल हकीम	-एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़ 1977
96. जिक्रये इकबाल	-काबुल मजीद सालिक	-धमन बुक डिपो उर्दू बाजार नई दिल्ली
97. मुकद्दमा शेरोशायरी	-अलताफहाली हुसैन	-
98. मकामे इकबाल	-सय्यद अफ्वाक हुसैन	
99. मजलूम इकबाल	-शेख इजाज अहमद	-करीची
100. रूहे इकबाल	-डॉ. युसुफ हुसैनखान	-इदारा इशायते उर्दू हैदराबाद
101. शायर	-इकबाल नम्बर	-बम्बई 1988

- - -